सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

७९

(१ जनवरी, १९४५ – २४ अप्रैल, १९४५)

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार

भूमिका

प्रस्तुत खण्डमें १ जनवरीसे २४ अप्रैल, १९४५ तक चार माससे कम समयकी सामग्रीका समावेश है, जो इससे पूर्वकी अवधिकी सामग्रीसे वस्तुत. भिन्न नही है। सन् १९४२ में गिरफ्तार किये गये कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्यो सहित कांग्रेसके हजारों सक्रिय कार्यकर्ता जेलोंमें निष्क्रिय पड़े हुए थे। (स्वयं सरकारने राजनीतिक कैदियोकी संख्या फरवरीमें १५ हजारके इर्द-गिर्द होना स्वीकार किया था)। सभी प्रान्तोमें समस्त राजनीतिक गतिविधियोके दमनकी नीति अभी बरकरार थी। जनताका दमन जारी रहने और कठोर कानूनोके लागू किये जाने से खासकर बंगाल, सिन्ध और कुछ हदतक बिहारमें स्थिति और अधिक बिगड़ गई थी, जिसके कारण गतिरोध-समाप्तिकी कोई भी पहल करना सर्वथा असम्भव-सा हो गया था।

संवैधानिक रूपसे कुछ महत्त्वकी बात केवल यह हुई कि भूलाभाई देसाई और तेजबहादुर सप्रूने गतिरोध-समाप्तिके लिए व्यक्तिगत रूपसे पहल आरम्भ की, लेकिन अन्तमें उससे भी कुछ अधिक उपलब्ध न हो सका। केन्द्रीय विधान-सभामें कांग्रेस-दल के नेता भूलाभाई देसाईने केन्द्रमें मिली-जुली सरकार बनाने के उद्देश्यसे बनाये गये एक फार्मूलेपर मुस्लिम लीगके नेता लियाकत अली खाँके साथ चल रही बातचीतके लिए गांधीजी से सहयोग माँगा। गांधीजी उसके प्रति शंकाशील थे। मगर वे चाहते थे कि राजनीतिक गतिरोध समाप्त हो जाये। इसके लिए वे कार्य-समितिके सदस्योंकी रिहाईके लिए लीगका समर्थन प्राप्त करना चाहते थे। उन्होंने भूलाभाईसे कहा कि "तुम जैसा ठीक लगे वैसा करना। मेरा अपना मन तो संसदसे उलटी दिशामें चलता है।" उन्होंने यह शर्त पेश की कि "लीगको कार्य-समितिको छुड़वाने के प्रयासमें हाथ बँटाना चाहिए" (पृ० ११)। मगर भूलाभाईके प्रस्तावोंके अन्तर्गत कार्य-समितिके सदस्योंकी रिहाई अन्तरिम सरकार बन जाने के बाद होनी थी। वाइसरायके सलाहकारोको इन प्रस्तावोमें "दक्षिणपन्थी कदम" दिखाई दिया जिससे अंग्रेजोंको कांग्रेसमें दरार पैदा करने का एक सुनहरा मौका मिल गया था। मगर ब्रिटिश सरकार भूलाभाईको प्राप्त अधिकारोंके बारेमें आश्वस्त नही थी। वह कांग्रेसको वचनबद्ध करना चाहती थी, मगर भूलाभाईके पास ऐसा करने के अधिकार नही थे।

इस अवधिकी एक महत्त्वपूर्ण घटना २५ अप्रैलको सान फ्रान्सिस्कोमें आयोजित एक सम्मेलन था, जिसमें सयुक्त राष्ट्र संघका सूत्रपात हुआ। इस सम्मेलनके पूर्व जारी किये एक वक्तव्यमें गांधीजी ने यह आशंका व्यक्त की कि "विश्व सुरक्षाका जो ढाँचा खड़ा करनेका प्रयत्न किया जा रहा है उसकी तहमें वह अविश्वास और डर मौजूद है जो युद्धको जन्म देता है।" उन्होंने मित्र-राष्ट्रोसे अनुरोध किया कि वे "युद्ध और उसके साथ चलनेवाले घोर छल-कपटकी उपयोगितामें विश्वास" छोड़ें

"और सब जातियों और राष्ट्रोंकी स्वतन्त्रता और समानतापर आधारित वास्तविक शान्ति स्थापित करने का दृढ़ संकल्प करें।" गांधीजी ने पूर्ण निरस्त्रीकरणके लिए जोर दिया और कहा कि "शान्तिकी यथासम्भव आसान-से-आसान शर्तें हों, जिन्हें लागू करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय पुलिस दलकी स्थापना की जाये।" यह घोषणा करते हुए कि "युद्ध-मात्रकी सम्भावना मिटा देने को प्रयत्नशील दुनियामे एक राष्ट्रके द्वारा दूसरेका शोषण करने या दूसरेपर प्रभुत्व जमाने के लिए कोई स्थान नही हो सकता", उन्होंने कहा कि "भारतको विदेशी नियन्त्रणसे सर्वथा मुक्त कर दिया जाये" (पृ० ४२०-२१)।

गांधीजी के स्वास्थ्यमें कुछ गड़बड़ी पैदा हो गई थी। इससे सारा राष्ट्र चिन्तित हो उठा। प्रस्तुत खण्डके आरम्भमें ही हम गांधीजी को अपने स्वास्थ्यके बारेमें चिन्तित जिज्ञासुओंको यह सूचित करते हुए पाते है कि मेरे स्वास्थ्यमे अब सुधार हो रहा है, सिर्फ "मेरे पुराने बैरी" अमीबा और हुकवर्म रह गये हैं और "मैं जहर बाहर निकाल रहा हूँ।" उन्होंने लिखा कि "आयुर्वेदसे खिलवाड़ करके मैंने जो पाप किया है, उसका परिणाम मैं भुगत रहा हूँ।" उन्होंने दूध और हर रोज एनीमा लेने की सलाह मानने से इनकार करते हुए कहा कि मेरा "रोज अथवा बार-बार एनीमा लेने में भी विश्वास उठ गया है" (पृ० १ और ९)। उन्होंने खूराकसे और मिट्टीके प्रयोगसे अधिक लाभ होते देखा (पृ० १, २, ६, ९, १३, १६ और बादके पृष्ठ)। उन्होंने लिखा: "मैं अपनेको सबसे बड़े चिकित्सक ईश्वरके इलाजमें रखने और उसीके मार्ग-दर्शनमें चलने की कोशिश कर रहा हूँ। अगर मैं उसके मार्ग-दर्शनका गलत अर्थ लगाऊँगा तो भी वह इतना उदार है कि भूल-सुधार कर देगा" (पृ० २८)। उन्होंने नैसर्गिक उपचारमें विशेष रुचि लेते हुए लिखा कि "नैसर्गिक उपचारका अर्थ ही निसर्ग, कुदरत, ईश्वरकी ओर जाना है। देखें मैं कहाँ पहुँचता हूँ" (पृ० १९)। नैसर्गिक उपचारमें दिलचस्पी लेनेवाले दिनशा मेहता, ए० एन० शर्मा, कामेश्वरराव शर्मा और आनन्द हिंगोरानीको लिखे गांधीजी के पत्रोंसे स्पष्ट हो जाता है कि गांधीजी नैसर्गिक उपचारको गरीबोंकी सेवाका साधन बनाना चाहते थे। उन्हें इस बातका दुःख था कि प्राकृतिक चिकित्सक "परस्पर सहमत नही होते, हठी होते है, बल्कि आलसी भी" (पृ० ५८)।

गांधीजी को यह आभास हो गया था कि भारतको राजनीतिक आजादी प्राप्त करने में अब बहुत समय नहीं लगेगा। लेकिन केवल राजनीतिक आजादी ही भारतकी विभिन्न समस्याओंका जवाब नहीं होगा। उन्होंने कहा कि "आजादी तो जरूर मिलेगी, वह आ रही है, परन्तु केवल राजनीतिक आजादीसे मुझे सन्तोष नही। . . . मेरी कल्पनाकी आजादीका अर्थ है अपने भीतर परमात्माके राज्यको प्राप्त करना तथा इस संसारमे उसकी स्थापना करना। मैं इस स्वप्नकी पूर्तिके लिए काम करते हुए मर जाना पसन्द करूँगा, भले वह कभी प्राप्त न हो" (पृ० ३२३)। गांधीजी के अनुसार "यह एक बड़े राष्ट्रके जीवनके सभी क्षेत्रोंमें एक नैतिक अहिंसक क्रान्ति है, जिसके अन्तमें जात-पाँत और अस्पृश्यता . . . को मिट जाना है, हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीचके मतभेदों को अतीतकी वस्तु बन जाना है . . . देशी नरेशों तथा पूँजीपतियोंको उनके पास जो भी धन-सम्पत्ति है उसके जनताकी ओरसे नियक्त वास्तविक और कानूनी थातीदारोंकी

हैसियतसे भारतके सम्पूर्ण जन-साधारणके बीच पूर्ण मित्रोंके रूपमे रहना है . . ." (पृ० १४४-४५)। सही शब्दोंमें इसका अर्थ देहातोका पुनरुद्धार होगा। देहात सही मायनोंमें "समृद्ध होंगे"। वह समृद्धि बाहरसे नही आयेगी, मगर भीतरसे, हमारे प्रत्येक देहातीके शुद्ध उद्योगसे आयेगी (पृ० २६)। इस प्रकार मुख्य काम ग्रामीण भारतके विशाल जन-समूहकी सृजन-शक्तिको काममें लाने का था। गांधीजी को विश्वास था कि यह उद्देश्य केवल रचनात्मक कार्यक्रमको तेजीसे कार्यान्वित करके ही पूरा किया जा सकता है। प्रस्तुत खण्डमें मुख्य विषय रचनात्मक कार्यक्रमके विभिन्न संगठनों—अ० भा० चरखा संघ, अ० भा० ग्रामोद्योग संघ, कस्तूरबा निधि, और हिन्दुस्तानी तालीमी संघ आदिमें सुधार लाने से सम्बन्धित है। गांधीजी के अनेक पत्रोके अलावा उपर्युक्त संस्थाओंकी बैठकोंमें दिये गये उनके अनेक भाषण इस खण्डकी मुख्य सामग्री है।

ब्रिटिश सरकार रचनात्मक कार्य-पुनर्गठनके प्रयासोंको सन्देहकी नजरसे देखती थी। सरकार समझती थी कि यह सविनय अवज्ञा आन्दोलन छेड़ने की तैयारी है और कांग्रेसको, जो कि १९४२ में गैर-कानूनी घोषित हो चुकी थी, दूसरा नाम देकर किसी भी तरह फिरसे जिन्दा करने की कोशिश है। वाइसराय चिन्ताजनक रिपोर्टें लन्दन भेज रहे थे। वहाँसे प्रशासनको निर्देश प्राप्त हुए कि रचनात्मक कार्योंको बर्दाश्त न किया जाये। जब संयुक्त प्रान्त और बिहारमे बेबुनियाद आरोप लगाकर जाने-माने नेताओंको गिरफ्तार किया जाने लगा तो गाधीजी विरोध प्रकट करने के लिए मजबूर हो गये। उन्होंने कहा, "वर्तमान परिस्थितियोंमें किसी भी प्रकारकी सार्वजनिक सविनय अवज्ञा करनेकी कोई योजना नही है।" गाधीजी ने सरकारको जुल्म-ज्यादती करने के खिलाफ चेतावनी देते हुए एक वक्तव्यमें कहा, "यदि घटना-क्रम उसी तरह चलता रहा जैसा कि आज भारतमें चल रहा है. . .तो भारतकी बलि चढाकर प्राप्त की गई विजयका मतलब यह होगा कि फासीवाद, नाजीवाद और जापानी सैन्यवादके ध्वंसावशेषमें से एक ऐसे दानवका उदय होगा जो अपने सामनेकी सभी वस्तुओंको अपना ग्रास बना लेना चाहेगा और इस प्रयत्नमें वह खुद ही कालका ग्रास बन जायेगा। वह अपने पीछे क्या छोड़ जायेगा कहा नही जा सकता" (पृ० १४५-४६)।

गांधीजी ने रचनात्मक कार्यक्रमके कार्यकर्ताओंसे कहा कि "जो श्रद्धालु हैं वे अपनी श्रद्धाको जबानसे नहीं बल्कि अपने कामोसे बतायें" (पृ० ३२९)। वे अपनी सारी शक्ति रचनात्मक कार्यक्रमको सफल बनाने में लगा दें, मगर उसे राजनीतिक कार्यके साथ न मिलायें। उन्होंने कहा, "दोनों कामोको एक-दूसरेमें मिलाने से एक भी काम अच्छी तरह नही हो पाता। मैं इससे पूरी तौरपर सहमत हूँ कि रचनात्मक कार्यके साथ पूरा न्याय करने के लिए उसे अपने पाँवपर खड़ा होने देना चाहिए। सियासी कामके साथ उसे जोड़ना नही चाहिए" (पृ० ३१९)। रचनात्मक कार्यक्रममे खादीपर हमेशा जोर दिया गया। गाँधीजी चाहते थे कि "निर्धनके लिए खादी एक धन्धा" बनकर न रह जाये (पृ० २०४), बल्कि खादीको शोषणसे मुक्त एक नैतिक सामाजिक व्यवस्थाका प्रतीक बनना चाहिए। गांधीजी ने रचनात्मक कार्यकर्ताओंसे कहा कि वे अम्बेडकर दलके लोगों द्वारा विरोध होनेके डरसे अस्पृश्यता-निवारणका काम बन्द न

करे। उन्होंने कहा, "... उससे हमें उत्तेजित नहीं होना चाहिए या उसकी वजहसे हमें काम बन्द भी नहीं करना चाहिए। हमें उनके दिलोंमें पहुँचकर उनकी भावनाओंको समझना चाहिए। .. लेकिन इसके साथ यह भी ठीक है कि जो अस्पृश्यता-निवारणको कांग्रेसकी राजनीतिका एक अंग-मात्र मानते हैं, उनको भी पूरा अधिकार है कि वे कांग्रेसके एक कार्यक्रमके तौरपर उसे अमलमें लायें।" राजनीतिक और सामाजिक कार्यक्रम पृथक्-पृथक् हैं, लेकिन दोनों ही "धार्मिक" कर्तव्य हैं। गांधीजी ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा, "धर्म और कर्तव्य यह बहुत सूक्ष्म और सम्मिश्र चीज है। यह कोई बाजारकी वस्तु नहीं कि उसे यान्त्रिक तौरपर खरीदा और बेचा जा सके। इसे खोज निकालने के लिए लगातार आत्म-निरीक्षणकी जरूरत होती है" (पृ० ३२०-२१)।

बंगालमें चावलका भरपूर भंडार होने के बाद भी वहाँके लोग भूखसे तड़प रहे थे। गरीबोंको तन ढाँकने के लिए एक चिथड़ा भी नसीब न था। बड़े भारी क्षेत्रमें मलेरियाने महामारीका रूप धारण कर रखा था। मिदनापुर और चटगाँव आदि कुछ जिलोंमें लोगोंके कष्ट सहन-शक्तिसे बाहर थे। गांधीजी का मन जल्द ही बंगाल पहुँचकर वहाँकी भूखसे तड़पती मूक जनताके लिए काम करने के लिए बेचैन हो उठा। उन्होंने लिखा, "मैं तो लोगोंके पास रहना और उनकी क्षीण होती अस्थियोंका स्पर्श करना चाहता हूँ" (पृ० ३३)। गांधीजी बंगालकी यात्रा न कर सके। दिल्लीसे निर्देश मिलने पर गवर्नरने उन्हें मिदनापुर जाने की अनुमति नहीं दी और गांधीजी ने इस शर्तको मानने से इनकार कर दिया।

गांधीजी अधिक समय सेवाग्राममें ही रहे, आश्रमके कार्यकलापसे उनका गहरा सम्बन्ध रहा। उन्होंने लिखा, "मेरा सच्चा देह तो आश्रम है। अगर वह कुछ नहीं है तो मैं कुछ नहीं हूँ" (पृ० ३४७)। सेवाग्रामके आश्रमवासियोंमें जब-तब मतभेद और आपसी झगड़े पैदा हो जाते थे और गांधीजी को उनमें मध्यस्थता करनी पड़ती थी। गांधीजी मौन-दिवसके समय अपनी सलाह पुर्जेपर लिखकर देते थे। ऐसे ही एक अवसरपर गांधीजी ने एक साथी कार्यकर्ताको लिखकर सलाह दी कि लोगोंपर एकदम आरोप कदापि नहीं लगाना चाहिए। "यह जल्दबाजी और झुंझलाहटकी निशानी है", (पृ० ६६), "स्थिरता" पैदा करो और "समाजके नियमोंके अधीन रहकर उनका पालन करते हुए रहना चाहिए" (पृ० ९२)। बातचीतमें "चाहे जैसे हो तुम्हें अपनी आवाजको नियन्त्रित करना चाहिए" (पृ० १३४)। "पहले खूब सोच लेना चाहिए तब बोलना चाहिए ..जहाँतक बने मौन रहना चाहिए" (पृ० २५९)। गांधीजी ने उन्हें लिखा कि "अपने प्रति कृपणता और साथियोंके प्रति उदारता, यह सरल जीवनका मन्त्र है" (पृ० ४६)। गांधीजी उन्हें ब्रह्मचर्य-पालनके बारेमें (पृ० ५०, ८० और १६४) और इसके लिए मसाले तथा सम्भव हो तो नमक भी न खाने की सलाह देते हैं (पृ० ८०)। आश्रमके एक अन्य साथी कार्यकर्ताकी "मनोदशा" को समझकर गांधीजी उन्हें कुछ समयके लिए बाहर चले जाने की सलाह देते हुए लिखते हैं, "इतने दिन बाहर रहने से फायदा ही होगा" (पृ० २९५)। गांधीजी आश्रम-व्यवस्थाकी छोटी-छोटी बारीकियाँ

पर भी ध्यान देते थे। कौन-सा वर्तन किस व्यक्तिका है इस बारेमें वे लिखते है, "वर्तनोंपर नाम खुदवाने से बेहतर होगा वर्तनोंपर संख्या डलवा देना। जेलमें यही रिवाज है।..." व्यय कम करने के लिए दोने भी बनाये जा सकते हैं। हर व्यक्ति अपने लिए लकड़ीके चम्मच बना सकता है (पृ० ३३४)।

गांधीजी कभी-कभी सोचने लगते थे कि अगर वे आश्रममें न रहें तो शायद आश्रमके लोग अधिक अच्छी तरह रह सकें। वे एक आश्रमवासीको लिखते है, "मेरे यहाँसे भागने के इरादेकी जडमें भी तुम्ही सबके सुभीतेका खयाल है" (पृ० १६५)। इन्ही आश्रमवासीको एक अन्य पत्रमे गांधीजी लिखते हैं, "अगर आश्रमको भंग करना चाहो तो उसमें भी अपनी सहमति दूंगा" (पृ० ९२)।

गांधीजी यह स्पष्ट रूपसे समझते थे कि भारत जैसे महान राष्ट्रमें जबतक अंग्रेजी के स्थानपर, जिसे बहुत-थोड़े पढ़े-लिखे लोग ही समझ पाते हैं, राष्ट्रीय कामकाजके लिए किसी भाषाका विकास नही होगा तबतक भारत महत्त्वपूर्ण प्रगति नही कर सकेगा। गांधीजी को यह स्पष्ट प्रतीत होता था कि प्रचलित हिन्दी या उर्दू ही ऐसी सामान्य भाषाका स्थान ग्रहण कर सकती है। मगर उर्दू शैलीका सम्बन्ध मुसलमानोसे और हिन्दीका हिन्दुओसे माना जाता था। इस तरह भाषा-विवाद हिन्दू-मुसलमानोके बीच आपसी वैमनस्य बढाने का माध्यम बन गया था। हिन्दुस्तानी प्रचार सभा सम्मेलन में अपने तीन भाषणोमें (पृ० १८४-८५, १९०-९१ और १९१-९४) गांधीजी ने उत्तरी भारतके हिन्दू और मुसलमानोंकी दो विभिन्न लिपियोंमें लिखी जानेवाली हिन्दुस्तानीको सामान्य भाषा बनाने का विचार प्रतिपादित किया। उन्होंने कहा, "हिन्दुस्तानी आज भी मौजूद है। मगर हम उसे काममें नही लाते। यह जमाना हिन्दीका और उर्दूका है। वे दो नदियाँ है। उनमें से हिन्दुस्तानीकी तीसरी नदी प्रकट होनेवाली है" (पृ० १९३)। गांधीजी ने सब लोगोंसे देवनागरी तथा फारसी लिपि सीखने के लिए कहा। वे कहते हैं, "दक्षिणकी भी एक लिपि तो सीख ही लो" (पृ० १९१)।

इस अवधिकी संगृहीत सामग्रीमें सक्रिय ब्रह्मचर्य व्रत-पालनपर विशेष रूपसे ध्यान केन्द्रित रहा, जिसे गांधीजी ने अपने "प्रयोग" की संज्ञा दी। जिस प्रकार खिलाड़ी कीर्तिमान स्थापित करने के लिए अपने लक्ष्यको दुर्गम-से-दुर्गम करते चले जाते है, उसी प्रकार गांधीजी ने भी अपने इस प्रयोगमें ऐसे हालात पैदा कर लिये जिसमें कि उन्हें अधिक-से-अधिक प्रलोभनके अवसर मिलें और तब उनके ब्रह्मचर्य-व्रतकी परीक्षा हो। ब्रह्मचर्यकी यह परिकल्पना प्रचलित भारतीय परम्परामें कोई नई बात नही है। यह हमें प्राचीन ऋषियो द्वारा बताये गये असिधारा व्रत, अर्थात् तलवारकी धारपर खड़े होने जैसे व्रतकी याद दिलाता है। वर्तमान युगके भारतके लोगोंको इससे धक्का तो पहुँचता, जैसे कि सेवाग्राममें गांधीजी के सहयोगियोंके संग हुआ। उन्होंने तो इसके विरोधमें आवाज भी उठाई। गांधीजी अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए लिखते हैं, "मैं जान-बूझकर मनसे नपुंसक बनना चाहता हूँ। ऐसे बना तो शरीरसे बन जाता ही हूँ" (पृ० २०७)। गांधीजी ने बताया कि मैं पूरी तरह वासनासे मुक्त होना चाहता हूँ, ताकि मैं जगत-कल्याणमें ज्यादा हिस्सा ले सकूँ (पृ० २३८)। लेकिन यदि

मेरे एक भी साथी कार्यकर्ता मुझसे सहमत नहीं है तो वे मुझे छोड़कर जा सकते हैं। उन्होंने कहा, "जिसे जाना हो उसे जाने की छूट है। कोई यह न समझे कि रहना उसका कर्तव्य है। अपना मन मारकर या मेरा लिहाज करके कोई न रहे" (पृ० २३४)।

गांधीजी कुष्ठ-राहत-कार्यमें हमेशा दिलचस्पी रखते थे। जब टी० एन० जगदीशन् और डॉ० आर० बी० कोचरेन ने कस्तूरबा-कोष के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रोंमें कुष्ठ-राहत-कार्य चलाने के लिए गांधीजी से सहायता माँगी तो गांधीजी ने कहा: "यह तो जानकार को राह दिखानेवाली बात हुई। . . . आप एक विशद योजना भेजें, जिसमें यह भी बताया जाये कि बोर्डको कितना खर्च पड़ेगा।. . . धन्यवादकी क्या आवश्यकता है?" (पृ० १२६)। इस प्रकार जो बीज डाला गया था वह दक्षिणके अर्काट जिलेमें कस्तूरबा कुष्ठ निवारण निलयमके रूपमें प्रस्फुटित हुआ।

फ्रांसके प्रसिद्ध विद्वान रोमाँ रोलाँकी मृत्युपर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए गांधीजी ने लिखा: ". . . रोमाँ रोलाँ मरे नहीं हैं। . . . सत्य और अहिंसा . . . के लिए वे जिये। वे हरएकके दुःख और कष्टसे दुःखी होते थे। युद्धके नामसे होनेवाले मनमाने नर-संहारके विरुद्ध उनका मन विद्रोह करता था" (पृ० २०)।

गांधीजी अंग्रेजी धार्मिक काव्यसे गहन रूपसे प्रभावित थे, जैसा कि मुन्नालाल शाहके नाम लिखे एक पत्रमें उन्हें "हाउण्ड ऑफ हैवन" पढ़ने की सलाह देने से मालूम पड़ता है। गांधीजी लिखते हैं: "हाउण्ड" से विमुख होकर तुम कहीं सुखी नहीं होगे (पृ० २४३)।

गांधीजी के छिटपुट विचार इस प्रकार हैं: "मैं भूत-प्रेत नहीं मानता। . . . भणसालीभाई भले माना करें। इससे उनकी साधुतामें कोई अन्तर नहीं आता। लेकिन साधु-पुरुष जो-कुछ कहते हैं वह शत-प्रतिशत सही ही होता है, यह मानने की जरूरत नहीं है। . . . 'प्लांचेत' शुद्ध ढोंग है" (पृ० ३९)।

आभार

इस खण्डकी सामग्रीके लिए हम निम्नलिखित संस्थाओं, व्यक्तियों, पुस्तकोंके प्रकाशकों तथा पत्र-पत्रिकाओंके आभारी हैं:

संस्थाएँ: साबरमती आश्रम संरक्षक तथा स्मारक न्यास और संग्रहालय, नवजीवन ट्रस्ट और गुजरात विद्यापीठ ग्रन्थालय, अहमदाबाद; राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय और राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली; गांधी सेवा संघ, सेवाग्राम; भारत कला भवन, वाराणसी; नेशनल लाइब्रेरी और विश्वभारती लाइब्रेरी, कलकत्ता; इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी, लन्दन; असम सरकार, गौहाटी और उड़ीसा सरकार, भुवनेश्वर।

व्यक्ति: श्रीमती अमृतकौर; श्री अमृतलाल चटर्जी, कलकत्ता; श्री आनन्द तोताराम हिंगोरानी, इलाहाबाद; श्री एस० आर० मसानी, बम्बई; श्रीमती कंचन मु० शाह, सेवाग्राम; श्री कन्हैयालाल मा० मुन्शी; श्री कानम गांधी, श्री कान्तिलाल गांधी, बम्बई; श्री के० आर० नारायणन, नई दिल्ली; श्री गजानन कानिटकर; श्रीमती गोमती मशरूवाला; श्री घनश्यामदास बिड़ला, कलकत्ता; श्री जीवनजी डाह्याभाई देसाई; श्री जे० शिवषण्मुगम पिल्लै; श्री नन्दलाल पटेल; श्री नारणदास गांधी, राजकोट; श्री प्यारेलाल, नई दिल्ली; श्री प्रभाकर पारेख; श्रीमती प्रेमा कंटक, सासवड; श्री ब्रजकृष्ण चाँदीवाला, नई दिल्ली; श्रीमती मंजुला म० मेहता, बम्बई, श्रीमती मीराबहिन, आस्ट्रिया; श्री मुन्नालाल गंगादास शाह, सेवाग्राम; श्रीमती रामेश्वरी नेहरू; श्रीमती लक्ष्मी गांधी; श्रीमती लीलावती आसर, बम्बई; श्रीमती विजया म० पंचोली, मनोसरा; श्रीमती सरयू धोत्रे, वर्धा और श्रीमती शारदा गो० चोखावाला, सूरत।

पुस्तकें: 'अमारा बा'; 'कॉरस्पॉण्डेन्स बिट्वीन महात्मा गांधी ऐण्ड पी० सी० जोशी'; 'गांधीजी: एक झलक'; 'गांधीजी' कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४२-४४'; 'चरखा संघका नवसंस्करण'; 'पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद'; 'प्रैक्टिस ऐण्ड प्रिसेप्ट्स ऑफ जीसस'; 'बापुना पत्रो – ४: मणिबहेन पटेलने'; 'बापुनी प्रसादी'; 'बापूकी छायामें'; 'बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष'; 'बापूके आशीर्वाद'; 'महात्मा गांधी – द लास्ट फेज', जिल्द १, भाग १; 'राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी', 'वर्णव्यवस्था'; 'विप्रवर करुणाशंकरने श्रद्धांजलि' और 'समग्र नई तालीम'।

पत्र-पत्रिकाएँ : 'बॉम्बे क्रॉनिकल'; 'हितवाद'; 'हिन्दुस्तान टाइम्स'; 'हिन्दू'; 'विश्व-भारती' और 'सारिका'।

अनुसन्धान और सन्दर्भ-सम्बन्धी सुविधाओंके लिए सूचना और प्रसारण मन्त्रालयका अनुसन्धान और सन्दर्भ विभाग, राष्ट्रीय अभिलेखागार और श्री प्यारेलाल, नई दिल्ली हमारे धन्यवादके पात्र हैं। प्रलेखोंकी फोटो-नकल तैयार करने में मदद देने के लिए हम सूचना और प्रसारण मन्त्रालयके फोटो-विभाग, नई दिल्लीके आभारी हैं।

पाठकोंको सूचना

हिन्दीकी जो सामग्री हमें गांधीजी के स्वाक्षरोंमें मिली है, उसे अविकल रूपमें दिया गया है। किन्तु दूसरों द्वारा सम्पादित उनके भाषण अथवा लेख आदिमें हिज्जों की स्पष्ट भूलें सुधार दी गई हैं।

अंग्रेजी और गुजरातीसे अनुवाद करते समय उसे यथासम्भव मूलके समीप रखने का पूरा प्रयत्न किया गया है, किन्तु साथ ही भाषाको सुपाठ्य बनाने का भी पूरा ध्यान रखा गया है। जो अनुवाद हमें प्राप्त हो सके हैं, उनका हमने मूलसे मिलान और संशोधन करने के बाद उपयोग किया है। नामोंको सामान्य उच्चारणोंके अनुसार ही लिखने की नीतिका पालन किया गया है। जिन नामोंके उच्चारणमें संशय था, उनको वैसा ही लिखा गया है जैसा गांधीजी ने अपने गुजराती लेखोंमें लिखा है।

मूल सामग्रीके बीच चौकोर कोष्ठकोमें दिये गये अंश सम्पादकीय हैं। गांधीजी ने किसी लेख, भाषण आदिका जो अंश मूल रूपमें उद्धृत किया है, वह हाशिया छोड़कर गहरी स्याहीमें छापा गया है। लेकिन यदि ऐसा कोई अंश उन्होंने अनूदित करके दिया है तो उसका अनुवाद हाशिया छोड़कर साधारण टाइपमें छापा गया है। भाषणों की परोक्ष रिपोर्ट तथा वे शब्द जो गांधीजी के कहे हुए नही हैं, बिना हाशिया छोड़े गहरी स्याहीमें छापे गये है। भाषणों और भेंटकी रिपोर्टोंके उन अंशोंमें जो गांधीजी के नही हैं, कुछ परिवर्तन किया गया है और कही-कही कुछ छोड भी दिया गया है।

शीर्षककी लेखन-तिथि दायें कोनेमें ऊपर दे दी गई है; लेकिन जिन लेखों, टिप्पणियों आदिके अन्तमें लेखन-तिथि दी गई है उनमे उसे यथावत् रहने दिया गया है। जहाँ वह उपलब्ध नही है, वहाँ अनुमानसे निश्चित तिथि चौकोर कोष्ठकोमे दी गई है, और आवश्यक होने पर उसका कारण स्पष्ट कर दिया गया है। जिन पत्रोंमें केवल मास या वर्षका उल्लेख है, उन्हें प्रसंगानुसार मास तथा वर्षके अन्तमे रखा गया है। शीर्षकके अन्तमें साधन-सूत्रके साथ दी गई तिथि प्रकाशन की है। गांधीजी की सम्पादकीय टिप्पणियाँ और लेख, जहाँ उनकी लेखन-तिथि उपलब्ध है अथवा जहाँ किसी दृढ़ आधारपर उनका अनुमान किया जा सका है, वहाँ लेखन-तिथिके अनुसार और जहाँ ऐसा सम्भव नही हुआ है, वहाँ उनकी प्रकाशन-तिथिके अनुसार दिये गये हैं।

साधन-सूत्रोंमें 'एस० एन०' संकेत साबरमती संग्रहालय, अहमदाबादमें उपलब्ध सामग्रीका, 'जी० एन०' राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नई दिल्लीमें उपलब्ध कागज-पत्रोंका, और 'सी० डब्ल्यू०' सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय (कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी) द्वारा संगृहीत दस्तावेजोंका सूचक है।

सामग्रीकी पृष्ठभूमिका परिचय देने के लिए मूलसे सम्बद्ध कुछ परिशिष्ट दिये गये हैं। अन्तमें साधन-सूत्रोंकी सूची और इस खण्डसे सम्बन्धित कालकी तारीखवार घटनाएँ दी गई हैं।

विषय-सूची

१. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

सेवाग्राम
१ जनवरी, १९४५

प्रिय सी० आर०,

तुमसे बातचीत करने के बजाय मैं पहली जनवरीको यह पहला पत्र तुम्हें लिख रहा हूँ। साढ़े सात बजे प्रार्थना आरम्भ करते समय ही मेरा मौन टूटेगा। आयुर्वेदसे खिलवाड़ करके मैंने जो पाप किया है, उसका परिणाम मैं भुगत रहा हूँ। अभी मैं कमजोर हूँ क्योंकि प्राकृतिक विज्ञानके नियमानुसार मैं जहर बाहर फेंक रहा हूँ। तुम मेरी चिन्ता मत करना।

स्नेह।

बापू

श्री च० राजगोपालाचारी
बजुल्ला रोड
त्यागराय नगर
मद्रास

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१००) से

२. पत्र : देवदास गांधीको

सेवाग्राम
१ जनवरी, १९४५

चि० देवदास,

पहला पत्र राजाजी को लिखा और यह दूसरा तुझे। मेरे बारेमें तनिक भी चिन्ता न करना। मैंने पाप किया। आयुर्वेदिक इलाज जरूरतसे ज्यादा करवा लिया, सो भोगना पड़ा। अब धीरे-धीरे सब जहर निकाल रहा हूँ। इसलिए कमजोर खूब हो गया हूँ। देखता हूँ क्या होता है। हुकवर्म और अमीबा, ये वैरी तो है ही।

यह तो जो जहर खाया है, उसे निकाल रहा हूँ। अभी और क्या भोगना पड़ेगा सो मालूम नहीं। ईश्वर जो करवायेगा सो करते जाऊँगा। तू चिन्ता न करना। रामदास[1] तो आ ही गया है। अभी नीमू[2] भी आई।

बापूके आशीर्वाद

देवदास गांधी
नई दिल्ली

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
१ जनवरी, १९४५

चि० राजकुमारी,

मेरे तीन पोस्टकार्ड भेज चुकने के बाद आज शामके चार बजे तुम्हारा पत्र आया। यह सिर्फ उसके उत्तरके तौरपर लिख रहा हूँ। इसलिए यह पत्र लिख तो रहा हूँ आज, लेकिन भेजा जायेगा शायद कल।

हाँ, नया वर्ष तुम्हारे लिए सुखमय हो — यानी अपने अन्दरसे जितना सुख प्राप्त कर सको उतना सुखमय हो। क्योंकि जहाँतक मैं देख सकता हूँ बाहर कहीं कोई सुख नहीं है।

तुम्हारी भेजी दो धोतियाँ मिलीं। उन्हें पहन भी रहा हूँ। बड़ी अच्छी हैं। लेकिन उनकी असली अच्छाई तो इस जानकारीमें है कि जहाँतक सूतका सम्बन्ध है, वे तुम्हारी दस्तकारीके परिणाम हैं।

सस्नेह तुम्हारा,
बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६९४) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ६५०३ से भी

१. रामदास गांधी, देवदास गांधीके अग्रज
२. निर्मला, रामदास गांधीकी पत्नी

४. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

१ जनवरी, १९४५

तू चिन्ता मत कर। मैं अपने पापोंके कारण बीमार पड़ा हूँ। आयुर्वेदके चक्करमें पड़कर सब उलट-पलट हो गया और झटका खा गया। अब प्रकृतिके नियमानुसार उस जहरको निकाल रहा हूँ और खटियामें पड़ा हुआ हूँ। मैं अच्छा हूँ। तू जल्दी अच्छा हो जा।

[गुजरातीसे]
बापुनी प्रसादी, पृ० २०५

५. पत्र : ई० डब्ल्यू० आर्यनायकम्‌को

सेवाग्राम
३ जनवरी, १९४५

प्रिय आर्यनायकम्,[1]

सुना है तुम अकबरके भेजे किसी आदमीको रखना चाहते हो, साथ ही यह भी चाहते हो कि उसका खर्च आश्रम उठाये। यह गलत बात है, और मेरे जाने के बाद यह सब चलनेवाला नही है। ऐसा नही होना चाहिए। पहले चौदह वर्ष अन्तमे कुछ दे सकते हैं, लेकिन बिलकुल अन्तमें ही। लेकिन प्रौढ़ शिक्षा और स्कूली शिक्षकों के तैयार किये जाने के कामका खर्चा तो निकलना चाहिए — बेशक स्थायी शिक्षकोका खर्चा छोड़कर। मैं दलील देकर इसे सही सिद्ध कर सकता हूँ, लेकिन अभी मैं यह नही करूँगा। इससे मुझे नाहक परेशानी होगी। मेरा खयाल है कि हमने अबतक जितने लोगोंको रखा है, इसी आधारपर रखा है।

और यदि ऐसा नही हुआ है तो इस मामलेपर फिरसे विचार किया जाना चाहिए। मैंने भी इस सारे महीनेके दौरान अपने दिमागको खाली नही रहने दिया है।

तुम्हारा,
मो० क० गांधी

आर्यनायकम्
सेवाग्राम

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. सेवाग्राममें नई तालीम योजनाके प्रधान

६. पत्र : यशवन्त महादेव पारनेरकरको

सेवाग्राम
३ जनवरी, १९४५

भाई पारनेरकर,

जिस नये व्यक्तिको अखिल भारतीय गोसेवा संघके लिए भेजा गया है वह यदि मजबूत और कामका हो और यदि हमें उसकी जरूरत हो, तो उसे उसकी योग्यताके मुताबिक काम दिया जाना चाहिए तथा उसे उसीके अनुपातमें अपना खर्च लेना चाहिए। उसका यह खर्च गोशालाको उठाना चाहिए। यदि वह व्यक्ति कामका नही हुआ तो वह गोसेवा संघपर भाररूप होगा और कुछ सीख नही पायेगा। यदि हम ऐसी नीति नही अपनायेंगे तो अन्ततः गोसेवा संघ भी परोपजीवी संस्था बनकर रह जायेगी और हमें ऐसा नही होने देना चाहिए। क्योकि मेरे मरणोपरान्त ऐसी सारी चीजे खत्म हो जायेंगी। ऐसा हमें कभी नही होने देना चाहिए। मै चूंकि बोल नही सकता, इसलिए अपने विचार लिख दूं, यही अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

पारनेरकर
गोशाला
सेवाग्राम

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७. पत्र : सत्यवतीको

सेवाग्राम
३ जनवरी, १९४५

चि० सत्यवती,[1]

मुझे, दुःख है तुम्हारा व्याधी बढ़ता चला है। लेकिन ईश्वर इच्छा यही होगी। उसे क्या? शरीर तो क्षणभंगुर है। एक रोज तो जाना ही है। बन पड़े इतना करें।

अवश्य सब हूकम तोड़ो, साफ-साफ कह दो तुम्हारे घर जाना है, वहां इलाज भी हो सके तो कराना है। यहां आना है तो आ जाओ। मै तो कुछ अपंग-सा हूं उसकी हरज नहीं। यहां दा० सुशीला तो है, दूसरे मित्र भी है। अब तो हवा भी

१. स्वामी श्रद्धानन्दकी पोती

अच्छी है। मेरे हाथोंमें मरोगी तो भी मैं राजी हूं। जीयोगी तो पूछना क्या था? बाकी सब चांद लिखेगी।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० १०२३५) से। सौजन्य: ब्रजकृष्ण चाँदीवाला

८. पत्र : मोहन परीख और अनसूया पारेखको

सेवाग्राम
४ जनवरी, १९४५

चि० मोहन[1] और अनसूया,[2]

मेरा दुर्भाग्य है कि जिस पत्रका यह जवाब मैं लिख रहा हूँ, उसे सुनने के बावजूद मैंने देखा तक नहीं और वह फट गया।[3] लेकिन तुम दोनो विवाह करनेवाले हो, यह अच्छी खबर है। मेरे लिए विवाह भोगके लिए नहीं, बल्कि धर्मके लिए हैं। चारों आश्रमोंके धर्मोंमें यह एक महान् आश्रम-धर्म है। किन्तु मुश्किलसे ही कोई इसे धर्म मानता है, हालाँकि सब लोग भोग तो मानते ही हैं। मुझे आशा है कि तुम दोनों इसे धर्म मानोगे और इसकी बाध्यताको स्वीकार करके दोनों एक-दूसरेको सेवाधर्ममें प्रेरित करोगे।

तुम दोनोंको
बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१९०) से

९. पत्र : कुँवरजी पारेखको

सेवाग्राम
४ जनवरी, १९४५

चि० कुँवरजी,

तुम्हारा पत्र मुझे सोकर उठते ही मिला। प्यारेलालने वह पढ़कर सुनाया और रद्दीकी टोकरीमें डाल दिया। उसके बाद नरहरिके आने पर उस पत्रकी याद आई। मुझमें भी शक्ति आ गई और मैं यह लिखने बैठ गया। इस सम्बन्धके प्रति मेरी

१. नरहरि द्वा० परीखका पुत्र

२. कुँवरजी पारेखकी पुत्री

३. तथापि नरहरि परीखने लिखा है कि पत्र बादमें मिल गया था और गांधीजी ने उसे पढ़ लिया था।

पूरी सहानुभूति तो होनी ही चाहिए। अनसूयाके लिए इससे अच्छे सम्बन्धकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता। मैं इसके लिए हार्दिक आशीर्वाद देता हूँ। मोहन और अनसूयाको मैंने पत्र लिखा है।[1] उसकी नकल भी भाई नरहरि तुम्हें भेजेंगे। और भी जो आवश्यक होगा, करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७५२) से। सी० डब्ल्यू० ७३१ से भी; सौजन्य: नवजीवन ट्रस्ट

१०. पत्र: सीता गांधीको

सेवाग्राम
४ जनवरी, १९४५

चि० सीता,[2]

तेरे कुछ पत्र मिले थे। मेरा महीना[3] पूरा हो गया, इसलिए अब ये दो अक्षर लिख रहा हूँ। अब यह मेरी शारीरिक कमजोरीका महीना शुरू हुआ है। मैंने अपने हाथों अपने पैरपर कुल्हाड़ी मारी है। मैंने आयुर्वेदिक दवा बिना विचारे ली और उसका फल भोगना पड़ा। अब जहर बाहर निकाल रहा हूँ। तबीयत रोज सुधरती जा रही है। शक्ति बढ़ रही है। खाँसी अब नाम-मात्रको रह गई है। पसलियो का दर्द भी नामको रह गया है। यह पत्र पढ़कर और दूसरोंको पढ़वाकर नेटाल भेज देना, इससे एक और पत्र नहीं लिखना पड़ेगा।

चि० मणिलालने मेरी बहुत सेवा की। अब देखें, सुशीला कब उसकी जगह लेने आती है।

तू खूब पढ़ती है, यह मुझे अच्छा लगता है। अपना स्वास्थ्य ठीक रखते हुए जितनी मेहनत हो सके उतनी करना, भले ही उसमें थोड़ा अधिक समय क्यों न लग जाये।

वहाँ सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९४३) से

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. मणिलाल गांधीकी पुत्री
३. कार्योपवासका

११. पत्र : सुमित्रा गांधीको

सेवाग्राम
४ जनवरी, १९४५

चि० सुमी,[१]

तेरा पत्र तो नहीं आया, लेकिन चि० रामदासने तेरे विषयमें कहा था।

एक तो जहाँतक तेरी आँखोंका सवाल है, तुझे परीक्षा पास करने में उतावली नहीं करनी चाहिए। आँखों और शरीरको बचाकर जितनी मेहनत हो सके उतनी करनी चाहिए। तू निठल्ली नही रहती, इतना तेरे लिए पर्याप्त होना चाहिए।

दूसरी बात है सोनेकी चूड़ियोंकी। सोनेकी चूड़ियोंका तू क्या करेगी? चूड़ियाँ तो सूतकी, सीपकी, काँचकी, ताँबेकी, चाँदीकी, सोनेकी, मोतीकी और हीरेकी बनती हैं। लेकिन वे तेरे किस कामकी? तेरी चूड़ी तो तेरे हृदयमें ही होनी चाहिए। यही सच्चा और स्थायी शृंगार है। बाकी सब झूठा है। फिर भी यदि तुझसे न रहा जाये तो तुझे जैसी चूड़ियाँ चाहिए और जैसी तेरे माता-पिता तुझे दिलवा सकें वैसी चूड़ियाँ अवश्य पहन। गरीबोंका क्या होगा, इस बातपर विचार करना। तेरा दिल जो कहे वही करना। मै जो कहूँ उसे सिर्फ सुनना है। मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

सुमित्रा रामदास गांधी
पिलानी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. रामदास गांधीकी पुत्री

१२. पत्र : बालिका विद्यालय, पिलानीकी मुख्याध्यापिकाको

सेवाग्राम
४ जनवरी, १९४५

मुख्य अधिष्ठात्री,

इसके साथ चि० सुमित्रा गांधीका खत[1] है। उसे समजना और उसको दीजिये। उसका खोराककी कालजी आवश्यक है क्योंकि उनकी आंख खराब है।

लक्ष्मीबहिन[2] और चि० मथुरी[3] मुझे पत्र लिखें।

आपका,
मो० क० गांधी

मुख्य अध्यापिका
पिलानी स्कूल

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१३. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

सेवाग्राम
५ जनवरी, १९४५

प्रिय कु०,

तुम्हें रिहा कराने में मुझे बहुत परेशानी उठानी पड़ी है।[4] तुम इतने बीमार हो जाओ, यह बुरी बात है। बेचारी सुशीला[5] तुम्हारे पीछे भाग रही है। उसने यहाँसे सम्पर्क करना चाहा था। अब वह और मुन्नालाल आगे जाने से पहले नागपुर में तुमसे या झवेरभाईसे सम्पर्क करने की कोशिश करेंगे।

तबतक, स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१६७) से

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. साबरमती आश्रम-निवासी नारायण मोरेश्वर खरेकी विधवा
३. नारायण मोरेश्वर खरेकी पुत्री
४. जे० सी० कुमारप्पा जबलपुर जेलमें थे।
५. सुशीला नैयर

१४. पत्र : टॉमस कुक ऐण्ड सनको

५ जनवरी, १९४५

विषय : आपका पत्र, सं० टी-टी/सी-बी २७०८ (विदेशी मुद्रा विभाग),
दिनांक ११-१२-१९४४

प्रिय महोदय,

आपके उपर्युक्त पत्रके सन्दर्भमें, जिसके साथ मेरे नामपर उसी तारीखकी ३,००० रुपयेकी दोहरी रसीद भी है, मैं आपको सूचित करना चाहता हूँ कि मैंने सर्वश्री वच्छराज ऐण्ड कम्पनी लि०, बम्बईको, आपसे यह राशि लेने का अधिकार दे दिया है।

आपका सच्चा,
मो० क० गांधी

सर्वश्री टॉमस कुक ऐण्ड सन, लिमिटेड
पो० आ० बाक्स नं० ४६
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१५. पत्र : दिनशा मेहताको

सेवाग्राम
५ जनवरी, १९४५

चि० दिनशा,

तुम्हारे तार मैंने पढ़े है। मुझे अच्छे लगे। अपनी मूर्खताके कारण मैं बीमार पड़ा। अब तो जो मैं जानता हूँ, केवल वही नैसर्गिक उपचार कर रहा हूँ। आयुर्वेदका जहर निकाल रहा हूँ। रोज अच्छा होता जा रहा हूँ। अब यदि तुम्हे बुलाऊँगा तो मैं तुम्हारा पूरा उपचार करूँगा। लेकिन दूधके उपचारपर मेरा विश्वास नहीं जमता और रोज अथवा बार-बार एनीमा लेने में भी मेरा विश्वास उठ गया है। खुराकसे और मिट्टीके प्रयोगसे अधिक-लाभ होता है, ऐसा मैं मानने लगा हूँ। केवल मालिशके लिए मैं तुम्हारा समय नही लूँगा। जरूरत महसूस हुई तो पत्र द्वारा

तुमसे सलाह-मशविरा करूँगा। तुम अपना काम करते रहना। मैं विचार कर रहा हूँ। अरदेशिर[1] आनन्दपूर्वक होगा।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० दिनशा मेहता
पूना

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१६. पत्र : देवदास गांधीको

सेवाग्राम
५ जनवरी, १९४५

चि० देवदास,

तेरे तार आदि मिले हैं। तूने धीरज रखा है, यह बात मुझे अच्छी लगी है। तू यहाँ होता तो हँसता। मैंने मूर्खताका फल भोगा। डॉक्टरोंकी तरह आयुर्वेद भी मेरे लिए नहीं है। अपने ही उपायसे मैं विषसे मुक्त हो रहा हूँ। ठीक होने के बाद देखूँगा कि हुकवर्म और अमीबाके लिए क्या करना है। रोज स्वस्थ होता जा रहा हूँ।

जान पड़ता है कि डॉ० दिनशाके ट्रस्टकी अभी स्थापना नहीं हुई है। अब यदि तुरन्त ही उसकी स्थापना हो जाये तो अच्छा हो। बहुत समय लग गया।

लक्ष्मी और बच्चे अच्छे होंगे।

चि० सुमीको मैंने पत्र लिखा है।[2]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. डॉ० दिनशा मेहताके पुत्र
२. देखिए पृ० ७।

१७. पुर्जा : भूलाभाई देसाईको[1]

५ जनवरी, १९४५[2]

तुम जो कहते हो वह मैं पूरी तरह समझ गया हूँ। तुमपर मुझे विश्वास है। संसदके लोगोंकी विचारधारासे तुम परिचित ही हो, और अपने लोगोंको भी तुम जानते हो। इसलिए तुम जैसा ठीक लगे वैसा करना। मेरा अपना मन तो संसदसे उलटी दिशामें चलता है। किन्तु मै यह जानता हूँ कि कांग्रेसमें दोनों तरहकी विचार-धाराओंके लिए स्थान है और रहेगा। इसलिए तुम तो निर्भय होकर लगे रहो। इस पुर्जेका उपयोग कोई अपने बचावके लिए न करे। प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र रूपसे विचार करके निर्णय करे और तदनुसार काम करे। किन्तु उन्हे यह बता देना कि मै इसके विरुद्ध नही हूँ। इस पुर्जेका उपयोग किया जा सकता है।

हिन्दू-मुस्लिम समस्याके बारेमें तुमसे जो हो सके सो करना। जैसाकि मैंने सुझाव दिया है, यदि उस तरहसे कांग्रेस-लीगका मन्त्रिमण्डल बने तो मुझे अच्छा लगेगा, और यदि संसदीय कार्यक्रमके मामलेमें वे सहयोग करें तो भी मुझे अच्छा लगेगा, किन्तु उसके लिए तुम्हे कार्य-समितिसे अधिकार प्राप्त करना चाहिए। उसके बिना कोई अन्तिम समझौता करने में खतरा है। लीगको कार्य-समितिको छुड़वाने के प्रयासमें हाथ बँटाना चाहिए। मेरे विचारसे तो यह उनकी ईमानदारीकी परीक्षा भी होगी। मैं यह नही चाहता कि तुम कैसी भी शर्तें कबूल कर लो।

यह मसौदा तुम्हारे देखने के लिए है। इसमें तुम जो परिवर्तन-परिवर्धन करना चाहो सो मुझे सुझाना। यदि वह मुझे रुचेगा तो मैं तदनुसार परिवर्तन कर दूंगा।

अब मैं थोड़ा आराम करना चाहता हूँ। इस बीच तुम इन सब चीजोंपर विचार करके मुझे बताना।[3]

मूल गुजरातीसे : भूलाभाई देसाई पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. केन्द्रीय विधान-सभामें कांग्रेस दलके नेता भूलाभाई देसाईकी केन्द्रीय विधान-सभामें मुस्लिम लीगके उपनेता लियाकत अली खाँसे बातचीत चल रही थी, और उन्होंने केन्द्रमें कांग्रेस और लीगकी संयुक्त सरकार बनाये जाने के बारेमें गांधीजी की सलाह माँगी थी। इसका उत्तर गांधीजी ने लिखित रूपमें दिया था।

२. गांधीजीनी दिनवारी से

३. अन्तरिम सरकारके गठनके बारेमें सुझाये गये उपायोंके लिए देखिए परिशिष्ट १।

१८. पत्र : राघवदासको

सेवाग्राम
५ जनवरी, १९४५

भाई राघवदास,[१]

यह क्या बात है? सुवर्णा दवा तो रामनाम है। हृदय से लो। स्थानिक वैद्य जो दवा-देना चाहे मुझको लिखें। मेरे पास अच्छे वैद्य भी है। अच्छे हो जाओ।

बापुकी दुआ

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१९. पत्र : बलवन्तसिंहको

सेवाग्राम
५ जनवरी, १९४५

भाई ब० सिं०,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं अच्छा हूं। तुम्हारा काम तो अच्छा चलनेवाला था ही। तुम्हारी मेहनतमें तो कभी कमी नहीं पाई है। [स]तीश बाबूका काम अधूरा मत रखो।

थोड़े दिनोंके लिये वहांसे अवश्य खुर्जा जाओ और फिर यहां आओ। यहां काम है भी, नहीं भी। अच्छा हो लो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. बाबा राघवदास, महाराष्ट्रके एक गांधीवादी कार्यकर्ता, जो उत्तर प्रदेशके गोरखपुर जिलेमें बस गये थे।

२०. पत्र : मीराबहिनको

सेवाग्राम
७ जनवरी, १९४५

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र पढ़ गया।

तुम विश्वास करो कि मैंने पूरी सजगताके साथ अपनेको ईश्वरके कृपामय हाथोंमें डाल रखा है और इसलिए मुझे लेकर परेशान मत होओ। मैंने आयुर्वेदिक चिकित्सकोपर जरूरतसे ज्यादा विश्वास करके जो अपराध किया उसका दण्ड मुझे मिल गया है। अब मैं अपना इलाज आप ही कर रहा हूँ और अपने शरीरसे मैंने बहुत-सा जहर निकाल दिया है। सचमुच अब मैं काफी बेहतर हूँ।

लेकिन तुम तो खुद ही अस्वस्थ हो। मगर मैं फिक्र नहीं करता। तुमपर भी वही नियम लागू होता है जो मुझपर। तुम फिर स्वस्थ हो जाओगी।

जो परिवर्तन सुझाये गये हैं उनमें मुझे कोई हर्ज नहीं दिखता। अनुभवसे तुम बहुत कुछ सीखोगी और अन्तमें सही रास्तेपर आ जाओगी। जब भी आ सको, अवश्य आओ। यहाँ तुम्हारा अच्छा चलेगा और बहुत-सी नई चीजें देखने को मिलेंगी तथा तुम शायद कुछ कार्यकर्त्ता भी चुन सकोगी।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६५०२) से; सौजन्य : मीराबहिन। जी० एन० ९८९७ से भी

२१. पत्र : मध्यप्रान्त सरकारके मुख्य सचिवको

७ जनवरी, १९४५

मख्य सचिव, मध्यप्रान्त सरकार
नागपुर

विषय : नालवाड़ी और पवनार आश्रम

महोदय,

मेरी कार्योपवासकी अवधि पूरी हो चुकी है, इसलिए मैं अपने २०-११-१९४४ के पत्रकी[1] याद दिलाने के लिए आपको यह लिख रहा हूँ। उसका उत्तर भेजने की कृपा करें। वह सम्पत्ति न केवल उत्तरोत्तर बरबाद होती जा रही है, बल्कि जिसे मानवोचित विचारशीलताका अभाव कहा जा सकता है उसके कारण बहुत अधिक उपयोगी और सृजनात्मक श्रमका भी नाश हो रहा है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२२. पत्र : परमानन्द कुँवरजी कापड़ियाको

[७ जनवरी, १९४५][2]

यह तो केवल तुम्हें आशीर्वाद देने के लिए है। मैं शोक व्यक्त नहीं करूँगा। पिताजी शरीर-रहित हो गये, अर्थात् व्यापक हो गये, इसमें रोने की क्या बात है?

बापूके आशीर्वाद

श्री परमानन्द कुँवरजी कापड़िया
भावनगर

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११५८९) से

१. इस पत्रमें गांधीजी ने मध्यप्रान्त सरकार द्वारा जब्त कर लिये गये नालवाड़ी और पवनार आश्रमको उनके न्यासियोंको वापस देने का अनुरोध किया था; देखिए खण्ड ७८, पृ० ३४४-४५।

२. यह इसी तारीखको नरहरि द्वा० परीखको लिखे पत्रके पुनश्च लेखके रूपमें लिखा गया पत्र था।

२३. पुर्जा : तारा मशरूवालाको

सेवाग्राम
७ जनवरी, १९४५

जिसे भाई किशोरलालने अपनी महोर लगाई है उसमें मुझे क्या सुधारणा करनी है? इस योजनाके पीछे मेरे आशीर्वाद हैं ही। विशेषतया यों कि योजना स्त्री-उन्नति के लिये है।

बापुके आशीर्वाद

ताराबहन मशरूवाला
अकोला

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२४. पत्र : ए० एन० शर्माको

सेवाग्राम
८ जनवरी, १९४५

प्रिय शर्मा,

तुम्हारी प्रेरणासे मैंने हमारे मित्रकी[1] आध्यात्मिक और प्राकृतिक चिकित्सा-सम्बन्धी उपलब्धियोंपर बहुत भरोसा किया है। अब मुझे मालूम हुआ है कि रोगियोंने उपवास तो ठीकसे किया, लेकिन अब उनमें फिरसे शक्ति नहीं आ रही है। जैसाकि तुम्हें मालूम है, ये रोगी चुने हुए रोगियोंमें से हैं। मैं तो नहीं ही जानता, लेकिन तुम्हें यहाँकी प्रतिक्रिया जाननी चाहिए और जो जरूरी हो, करना चाहिए।

तुम्हें मालूम है कि चक्रैयाके उपयुक्त कुछ किया जा रहा है; उसके पत्र यही बताते हैं।

१. कृष्णराजू, जो आनन्द तो० हिंगोरानी, गोखले और बाबाजी मोघेकी प्राकृतिक चिकित्सा कर रहे थे। देखिए खण्ड ७८, पृ० ४०९।

जहाँतक मेरा सम्बन्ध है, मैं तो स्पष्ट ही अपनी प्राकृतिक चिकित्साके बल पर ही खूब प्रगति कर रहा हूँ।

स्नेह।

तुम्हारा,
बापू

डॉ० ए० एन० शर्मा
प्रकृति आश्रम
भीमवरम् (आन्ध्र)

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्मसे; सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य: प्यारेलाल

२५. पत्र: हीरालाल शर्माको

सेवाग्राम
८ जनवरी, १९४५

चि० शर्मा,

तुम्हारा पत्र मिला है। तुमारी बातको मानता रहुंगा लेकिन तुम्हारी शक्तिके बारेमें मेरा विश्वास कम हो रहा है। मै पाता हूं कि तुम किसी नैसर्गिक उपचारक से नही मिलते हैं। अब यहां आने से झीझकते हो। मेरा ख्याल रहा है कि नैसर्गिक उपचार[क]में ऐसे गुण होने चाहिये कि वे सबसे मिल सके और उसमें अहंकार और क्रोध मुछल[1] नहीं हो। तुमारेमें वे दोनों काफी मात्रामें है ऐसा मुझे लगता है।

फिर भी तुम्हारा कार्य करते रहो। परिणामसे मेरे तर्क-वितर्कको दूर करो। पैसे दिये हैं सो तो दिये। अब मै फिर किसीसे तुमारे बारेमें भिक्षा नहीं मागुंगा। तुमारी शक्ति पैसा पैदा करने की काफी है, सो पैदा करो काम चलाओ। ट्रस्टीका विश्वास संपादन करो। मेरा मौन चलता है।

बापुके आशीर्वाद

हीरालाल शर्मा
खुर्जा, संयुक्त प्रान्त

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. बिलकुल

२६. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
९ जनवरी, १९४५

चि० अमृत,

मुझे लेकर कोई चिन्ता नही होनी चाहिए। मैं ईश्वरके हाथोंमें हूँ और यह बिलकुल काफी होना चाहिए। मेरे स्वास्थ्यमें दिन-ब-दिन सुधार होता जा रहा है।

तो बेरिलकी व्यवस्था हो गई है। उसने मुझे हस्तलिखित 'खलील जिब्रान' नामक एक पुस्तक भेजी है, और खादी भी।

मैंने अबतक उसे पत्र नही लिखा है। यदि तुम यह समझो कि मैं अब लिख सकता हूँ तो तुम सलग्न पत्र[1] उसे दे सकती हो।

स्नेह।

बापू

[पुनश्च:]

अपने बारेमें भी चिन्ता मत करो; जो होना होगा, सो होगा। मुझे तुमसे, तुम्हारी वर्फसे ईर्ष्या होती है।

यह शिमलाकी सबसे अच्छी जगह कही जाती है। वालजी देसाईने ऐसा ही कहा था।

राजकुमारी अमृतकौर
शिमला

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए अगला शीर्षक।

२७. पत्र : बेरिलको

सेवाग्राम
९ जनवरी, १९४५

प्रिय बेरिल,

तो आखिरकार तुम्हारी व्यवस्था हो गई। उम्मीद है कि पसन्द अच्छी है। मुझे सब-कुछ लिखना।

तुम्हारे द्वारा भेजी खादी और विशेष रूपसे तुम्हारी हस्तलिखित 'खलील जिब्रान' मेरे लिए बहुत कीमती है। मैंने इसे पढ़ना शुरू कर दिया है।

माँके बारेमें मुझे सब-कुछ लिखना। उन्होंने बहुत कष्ट पाया है। रा० कु० [राजकुमारी] ने मुझे उनके बारेमें सब-कुछ बताया है।

स्नेह और चुम्बन।

बापू

बेरिल
मार्फत राजकुमारी अमृतकौर
शिमला

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२८. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

सेवाग्राम
९ जनवरी, १९४५

चि० घनश्यामदास,

तुमारे सब खत पढ़ता हूं या पढ़ाये जाते है।

मैं अशास्त्रीय पद्धतिसे आयुर्वेदमें नहीं फसा हूं। जो कुछ है हमारा धन वही है। इसलिये अगर हम देहातोंमें आयुर्वेदको ले चलें तो अच्छा है। पं० शिवशर्म्मा पर मेरा विश्वास जमा और मैंने उनके उपचार किये। दूसरी तरह मैं उनकी मर्यादा जान नहीं सकता था। मर्यादा जान लिया तो मैंने सोचा की जहां मैंने भूल की वहांसे तो हट जाऊं। इसलिए मैं मेरे निसर्गपर जा बैठा। उसमें तो भूलकी जगह बहूत अल्प है। मैं तो रोज लाभ ही पाता हूं। यहां आकर देखो तो जो डर तुमको होता है वह सब निकल जायगा। सचमुच मुझे बहूत अच्छा है। हुकवर्म और एनीमा [अमीबा] के

बारेमें तो मैंने डाक्तरोंको कह दिया है कि उनके उपचार करूंगा। आजकी जो थोड़ी सी भी कमजोरी है वह निकल जाने पर ज्यादा विचार सकूंगा।

मुझे स्थल फेरकी आवश्यकता नही है। होगी तो अवश्य मुंबई या पंचगनी जाऊंगा। पुना भी हो सकता है।

दिल्ही जाना अच्छा लगेगा लेकिन झिझकता भी हूं लेकिन मेरा आग्रह नही रहेगा। क० बा० निधिके बारेमें दिल्ही ले जाओगे तो वहां जाऊंगा। जहां ले जाओगे वहां जाऊंगा।

दिनशाके बारेमें दस्तावेज होना चाहीये।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०६३) से। सौजन्य: घनश्यामदास बिड़ला

२९. पत्र: आनन्द तोताराम हिंगोरानीको

सेवाग्राम
९ जनवरी, १९४५

चि० आनंद,

तेरा खत मिला है। कान अच्छा हो तो क्या, न हुआ तो क्या? हम जितना ईश्वरपर विश्वास करेंगे इतना ही हम सुख पावेंगे। वैद्य वगैरह है लेकिन वे लोग हमको ईश्वरसे विमुख करते है। वही कारण था कि मैंने तुम तीनको वहां भेजना पसंद किया। नैसर्गिक उपचार हमको ईश्वरकी ओर ले जाते है। अगर इससे भी छटे तो मुझे कोई आपत्ति नही है लेकिन हम उपवाससे क्यों हटें?[1] नैसर्गिक उपचार का अर्थ ही निसर्ग, कुदरत, ईश्वरकी ओर जाना है। देखें मैं कहां पहुंचता हूं। स्वभावसे होगा वहीं करूंगा।

तुमको सबको
बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

१. देखिए "पत्र: ए० एन० शर्माको", पृ० १५-१६।

३०. श्रद्धांजलि : रोमाँ रोलाँको[1]

वर्धा
१० जनवरी, १९४५

एक बार धोखा खाने के बाद अब मैं रोमाँ रोलाँकी मृत्युके समाचारपर विश्वास करने में हिचक रहा हूँ। लेकिन लगता है कि यह रिपोर्ट सही है। तथापि मेरे लिए और मेरी ही तरह लाखों लोगोंके लिए रोमाँ रोलाँ मरे नहीं हैं। वे अपनी विख्यात पुस्तकों और लेखोंके रूपमें और उससे भी ज्यादा अपने कितने ही अनाम कार्योंके रूपमे जीवित है। उन्होंने सत्य और अहिंसाको समय-समयपर जिस रूपमें देखा और माना, उस रूपमे उन्हीके लिए वे जिये। वे हरएकके दु:ख और कष्टसे दु:खी होते थे। युद्धके नामसे होनेवाले मनमाने नर-संहारके विरुद्ध उनका मन विद्रोह करता था।

[अंग्रेजीसे]
हितवाद, १२-१-१९४५

३१. पत्र : कुंदर दीवानको

१० जनवरी, १९४५

भाई कुंदर,

इसके साथ मेरे दो शब्द हैं।[2] उसे नाम देना है सो दे दो। और छापना है तो छापो। तुम्हारी प्रस्तावना तो अच्छी है ही। वह तो भले रहे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. ३० दिसम्बर, १९४४ को वेजली, फ्रांसमें रोमाँ रोलाँका देहान्त हो गया था।
२. देखिए अगला शीर्षक।

३२. प्रस्तावना : 'तुकारामकी राष्ट्रगाथा' की

सेवाग्राम

१० जनवरी, १९४५

दा० इंदुभूषण भिंगारेने 'संत तुकारामकी राष्ट्रगाथा' का एक विभाग तो प्रगट किया था। मजकुर विभाग दूसरी आवृत्ति है। मेरा मरेठी भाषाका ज्ञान बहुत अल्प है। तुकाराम मुझे बहुत प्रिय है। लेकिन उनके अभंग मैं थोड़े ही विना परिश्रम पढ़ सकता हूं। इसलिये मैंने दा० भिंगारेकी पसदगी भाई कुंदरजी दिवानको दी और उन्होंने वड़े परिश्रमसे सारा चुनाव देख लिया।

गाथाके लिये सचोट चित्र भी चाहिये था। दा० भिंगारेने तो वाजारी चित्र लिया था, मुझे बहुत चुभा। मैंने उसे शांतिनिकेतनके प्रसिद्ध कलाकार श्री नंदलाल बोसको भेजा। उन्होने अभंगके साथ तुकारामके चार चित्र भेजने की कृपा की है। उनमें से जो मुझे सबसे उचित लगा वह भाई भिंगारेको भेजा और वह चित्र इस संस्करणके साथ प्रसिद्ध होगा।

मेरी उम्मीद है कि यह सस्करण लोगोंको आदरणीय लगेगा।

मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३. एक प्रस्तावना

१० जनवरी, १९४५

'ईशावास्य' ने त्रावणकोरकी हरिजन-यात्रामें[1] मुझको जिकड लिया। मेरे सब व्याख्यानोमें 'ईशावास्य' का पहेला मंत्र आता ही था। यह सब ईश्वररूप है। उनका है इसलिये तेरा कुछ नही है। और है भी। लेकिन ऐसी झनझटमें भी क्यों फंसेगा? सब छोड तो सब तेरा ही है। अगर कुछ भी तेरा मानेगा तो तेरे हाथमें कुछ नही रहेगा। यह ध्वनीसे त्रावणकोरकी यात्रा मैंने खतम की और ऐसा मान बैठा की मुझको बड़ा धन मिला। विनोबाको यह वात सुनाई और मैंने उनसे प्रार्थना की 'ईशावास्य' का सरल हिन्दी अनुवाद दें। उन्होंने दस्तूरके मुताबिक मेरी प्रार्थनाका स्वीकार किया। फलस्वरूप यह अनुवाद है।

मो०-क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. जनवरी, १९३७ में; देखिए खण्ड ६४।

३४. पत्र : अमतुस्सलामको

सेवाग्राम
१० जनवरी, १९४५

चि० बेटी अ० स०,

सु० बहिन पर तेरा खत पढ़ गया।

यहां आना ही है तो फुरसद मिलने पर आ जा।

तू बीमार पड़ती है सो अच्छा नही है और हमारे करारके विरुद्ध है। मर जाना कोई आदर्श तो नही है। ऐसे काम करते रहना मिथ्या मोह है। उसमें से तुझे छूट जाना है।

मीटीगमें तू सदर बनती है तो बन। लेकिन यहांसे नोट भेजे और तू व्याख्यान दे वह निकम्मा है। जो तूने हजम किया है वह तू मिटीगको दे।

अफसरने तुझको बगैर शर्तके पैसे भेजे है तो उसे लेने में यहांसे मैं तो कुछ दोष नहीं पाता।[१] ज्यादा समजने के बाद कुछ और कह सकुं दूसरी बात है। मेरी तबीयत की फिकर करती है वह बताता है कि न तू ईश्वरको जानती है, न मुजको। ईश्वर को जाने तो समजेगी कि तू, मैं और दूसरे सब उसीके मातहत हैं। मुझे जाने तो समज कि मैं तो बहूत ईत्तेहातसे रहता हूं। तो भी गलतीयां बन जाती है उसका क्या इलाज। यों भी मेरी तबीयत अच्छी है। किसी हालतमें तुझे फिकर नहीं करना है।

फिर लिखता हूं जब आना है तब आ जा।

२६ जनवरीसे तुझे कोई तालुक नही। तू तो हमेशा वही काम करती है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८९) से

१. कोमिल्लाके कलक्टरने कस्तूरबा सेवा मन्दिरको राहत-कार्यके लिए एक हजार रुपये भेजे थे।

३५. पत्र : कृष्णचन्द्रको

१० जनवरी, १९४५

चि० कृष्णचंद्र,

तुमारे दो खत मेरे सामने हैं। साथ खत रखे हैं। पारनेरकरका भांजा मर गया, खेदकी बात है। अनन्तरामजीका समजा। वे भाजी पैदा करेंगे तो अच्छा होगा। जमीन आर्यनायकमजीको कहां और कितनी चाहीये देख लो। मेरा तो अभिप्राय है कि जो उनको चाहीये सो उनको देना चाहीये। दूसरा उत्तर रहता होगा लेकिन आज तो इतना ही।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४५४) से

३६. प्रश्नोत्तर

[११ जनवरी, १९४५ के पूर्व][1]

[प्रश्न]: यदि कार्य-समितिके सदस्योंसे मिल सकना सम्भव हो, तो क्या आप कार्य-समितिको यह योजना[2] स्वीकार करने के लिए राजी करने का प्रयत्न करेंगे?

[उत्तर]: हां।

प्र०: इस योजनाके पक्षमें आपके तर्क क्या हैं?

उ०: जिन्नाके साथ मेरी बातचीतके बाद जिन्नाने कई लोगोसे कहा कि गांधीने तो अर्न्तरिम सरकारका जिक्र तक नही किया। भूलाभाईकी कोशिश इसीका जवाब है। लेकिन यदि लीगकी मंशा सच्ची नही है तो इससे कोई परिणाम नही निकलेगा।

प्र०: यदि वाइसराय कांग्रेस और लीग, दोनोंकी उपेक्षा करके अपने निषेधाधिकारका प्रयोग करें तो क्या होगा?

उ०: वैसी स्थितिमें भूलाभाई और लियाकत अलीके बीच एक समझौता रहेगा कि सरकार इस्तीफा दे देगी।

[अंग्रेजीसे]

महात्मा गांधी — द लास्ट फेज, जिल्द १, भाग १, पृ० ११९

१. साधन-सूत्रके अनुसार यह बातचीत भूलाभाई-लियाकत अली समझौता होने से पहले हुई थी। समझौता ११ जनवरी, १९४५ को हुआ था।

२. केन्द्रमें कांग्रेस-लीगकी मिली-जुली सरकार बनाने की; देखिए परिशिष्ट १।

३७. पत्र : कृष्णचन्द्रको

सेवाग्राम
११ जनवरी, १९४५

चि० कृ० चं०,

मैं तो सब पढ़ गया। अच्छा है। कई जगह ऐसी है जहां पुनरावृत्ति है उसे बचा सकते हो। कुछ चीज घट गई है उसकी तो हरज नहीं।

रामजीभाई वाला खत उसे भेज देता हूं। अच्छा लगता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४५५) से

३८. पत्र : रामजीभाईको

सेवाग्राम
११ जनवरी, १९४५

भाई रामजी,

मेरी बीमारीके कारण मैं शीघ्र पत्रोत्तर नही भेज सका। तुमारा रोष मिथ्या है। तुम जबरदस्त काम करनेवाले हो सो काम तो करोगे ही और यह अच्छा है। तो भी चि० कृष्णचंद्रका निखालस पत्र तुमको भेजता हूं। उसे पढ़ने के बाद अगर आना हो तो आ जाना।

बापुके आशीर्वाद

रामजीभाई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९. पत्र : इन्दुभूषण भिंगारेको

सेवाग्राम
११ जनवरी, १९४५

भाई भिंगारे,

अब संस्करण, मेरे दो शब्द[1] और एक चित्र भेजता हू। मेरे दो शब्दोंके प्रूफ मुझे भेजिये।

दूसरे चित्र हैं। अगर सब अपनी-अपनी जगहपर प्रगट करना चाहते है तो कहीये मैं भेज दूंगा।

आपका,
मो० क० गांधी

डॉ० भिंगारे
महाल
नागपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०. भाषण : हिन्दुस्तानी तालीमी संघके सम्मेलनमें[2]

सेवाग्राम
११ जनवरी, १९४५[3]

डॉ० जाकिर साहब, आर्यनायकम्‌जी, श्रीमती आशादेवी और अन्य भाई-बहिनो,

मेरी उम्मीद तो थी कि इस मजलिसको खोलते हुए मैं दो शब्द बोलकर कहूँगा लेकिन ईश्वरने और ही सोचा था, मुझको खाँसी वगैरहके कारण गूँगा बनाना था, इसलिए जो कहना चाहता था सो लिख लिया है।

आजतक अगरचे हमारी तालीम तो नई थी तो भी हम एक उपसागरमें रहे। खुले समुद्रसे उपसागर सुरक्षित है। उसकी और कुछ रक्षा रहती है। हमारा

१. देखिए पृ० २१।
२. यह "गांधीजी का सन्देश" शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था। सम्मेलन चार दिन चला था और इसमें २०० से अधिक शिक्षाशास्त्री शामिल हुए थे। अध्यक्षता जाकिर हुसैनने की थी। उन दिनों गांधीजीका मौन चल रहा था। इसलिए उनका भाषण जाकिर हुसैनने पढ़कर सुनाया था।
३. ११ जनवरी, १९४५ के हिन्दू से

कार्यक्रम बँधा हुआ था। अब हम उपसागरको छोड़कर भरे समुद्रमें फके जा रहे हैं। वहाँ ध्रुवतारेको छोड़कर हमारा कोई रक्षक नहीं। वह ध्रुवतारा हाथका ग्रामोद्योग है। अब हमारा क्षेत्र सातसे चौदह सालके बालक नहीं हैं लेकिन माँके पेटमें [से] पैदा होते हैं वहाँसे लेकर, मरते हैं वहाँतक, हमारा अर्थात् नई तालीमका क्षेत्र है। इसलिए हमारा काम बहुत बढ गया है। लेकिन काम करनेवाले तो वही रहे।

इसकी हम परवाह न करें। हमारा सच्चा साथी सत्यरूप ईश्वर है। वह हमको कभी धोखा नहीं देगा। वह सत्य हमारा साथी तभी बन सकता है जब हम किसी की परवाह न करके उस सत्यपर डटे रहेंगे। उसमें न आडम्बरको जगह है न अहंकारको, न राग-क्रोधको। हम सब देहातियोंके शिक्षक बनते हैं, यानी देहातियोंके सच्चे सेवक बनते हैं। इसमें इनाम काम है तो वह हमारे दिलका साक्षी, बाहरका कोई नहीं।[1] सत्यकी खोजमें हमें साथी मिले तो भी सही, न मिले तो भी सही।

यह नई तालीम पैसोंपर निर्भर नहीं है। नई तालीमका खर्च तालीमसे ही निकलता है, भले कैसी भी टीका हो। मैं जानता हूँ कि सच्ची तालीम स्वाश्रयी है। इसमें शर्म नहीं है लेकिन नयापन है। अगर हम इसे बना सके और कह सके कि उसीमें मन याने मस्तकका सच्चा विकास होता है, तो आज जो हमारी हँसी उड़ाते हैं वही नई तालीमकी तारीफ करेंगे और नई तालीम सर्वव्यापक बनेगी। और आजके सात लाख देहात जो हमारी सब प्रकारकी निर्धनता बताते हैं वही देहात समृद्ध होंगे — वह समृद्धि बाहरसे नहीं आवेगी मगर भीतरसे, हमारे प्रत्येक देहातीके शुद्ध उद्योगसे, आवेगी। यह स्वप्न हो या सच्चा खेल।

नई तालीमका यह उद्देश्य है। इससे छोटा कुछ नहीं। इस उद्देश्यको सही करने में सत्यरूपी ईश्वर हमें मदद दें।

मैं हमारे हिसाबका विवरण पढ़ गया हूँ। उससे पता चलता है कि हमने सब खर्च देख-भालकर ही किया है। हिसाब छोटा है, मेरी आशा है सब पढ़ेंगे।

अगरचे भाषाकी दृष्टिसे भाषा नई तालीमका विषय नहीं है तो भी आजकी हालतमें माध्यम तो मातृभाषा ही है। इसपर जोर देना ही होगा। इसी तरह राष्ट्र-भाषा है, वह अंग्रेजी कभी नहीं हो सकती। अंग्रेजी राजभाषा है, व्यापारकी है। राष्ट्रभाषा हिन्दी-हिन्दुस्तानी ही है। दो रूप समझने के लिए और स्वभावसे एक बनने के लिए आज हमें हिन्दी और उर्दू देवनागरी और फारसी लिपिमें सीखना ही होगा। इसकी खोह [कमी] मैं तो मेरे आसपास ही देख रहा हूँ। हमारी सब पढ़ाई दोनों लिपिमें होनी चाहिए और हममें कोई ऐसे या ऐसी नहीं होना चाहिए जो दोनों रूप आसानीसे बोल न सके या दोनों लिपिमें आसानीसे लिख न सके।

एक और बातपर आपका ध्यान खींचूं। नई तालीमके लिए यह केन्द्र सबसे अच्छा है क्योंकि यहाँ चरखा संघके मुख्य प्रयोग चलते हैं। दूसरे ग्रामोद्योग यहाँ याने वर्धामें चलते हैं। सच्ची गोसेवा याने पशुकी उन्नति यहाँ होती है।

१. साधन-सूत्रके अनुसार

सेवाग्राम तो एक देहात नहीं है। उसके इर्द-गिर्दमें करीब तीस देहात है। इसलिए नई तालीमका शुद्ध प्रयोग अगर कही चल सकता है तो यही। इसमें सब पोषक संस्थाएँ साथ मिलती हैं। किसीको किसीका तरीफ [प्रतिद्वंद्वी] नही बनना है। सबको मदद-रूप ही बनना है। यही तो प्रेम[मय] इन्कलाबका निशान है।

समग्र नई तालीम

४१. एक पत्र[1]

[१२ जनवरी, १९४५ के पूर्व][2]

२६ जनवरीके लिए किसी उग्र कार्यक्रमके प्रति मुझे कोई मोह नही है। मेरे विचारके अनुसार तो रचनात्मक कार्यक्रम ही सच्चा कार्यक्रम है। अतः इसे दूने उत्साहके साथ कार्यान्वित किया जाये। झण्डा-अभिवादन और स्वतन्त्रताकी प्रतिज्ञा[3] को दोहराना तो इसका एक अभिन्न अंग बन चुका है। अतः इसे कायम रखा जाये।

लेकिन मैं चाहूँगा कि जन-सभाओं और जुलूसोंसे बचा जाये। मेरी सलाह दिल-दिमागको ठीक लगे तभी मानी जाये। फिर भी, यदि रचनात्मक कार्यक्रमके महत्त्वको अच्छी तरह समझ लिया गया है, तो मुझे विश्वास है कि मेरी सलाह लोग खुशीसे मानेंगे।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १५-१-१९४५

१ और २. एक कांग्रेसी कार्यकर्ताको सम्बोधित इस पत्रको प्यारेलालने १२ जनवरी, १९४५ को अखबारोंको जारी किया था।

३. स्वतन्त्रताकी प्रतिज्ञाका मसौदा सर्वप्रथम गांधीजी ने जनवरी, १९३० में तैयार किया था; देखिए खण्ड ४२, पृ० ३९५-९७। दिसम्बर, १९३९ में कार्य-समितिने इसका संशोधन और अनुमोदन किया; देखिए खण्ड ७१, परिशिष्ट १। ११ जनवरी, १९४१ को गांधीजी ने इसमें एक अनुच्छेद और जोड़ दिया; देखिए खण्ड ७३, पृ० ३०५। फिर जनवरी, १९४३ में जब गांधीजी आगाखाँ महलमें नजरबन्द थे तब उन्होंने "स्वतन्त्रता दिवस मनाने" के लिए एक अन्य प्रतिज्ञापत्र तैयार किया; देखिए खण्ड ७७, पृ० ५०।

४२. पत्र : मिर्जा इस्माइलको[1]

सेवाग्राम
१२ जनवरी, १९४५

प्रिय मित्र,

आपके मैत्री-भावकी मैं कद्र करता हूँ। आशा है, हम किसी दिन मिल भी सकेंगे। फिलहाल, आप चिन्ता न करें। मैं अपनेको सबसे बड़े चिकित्सक ईश्वरके इलाजमें रखने और उसीके मार्ग-दर्शनमें चलने की कोशिश कर रहा हूँ। अगर मैं उसके मार्ग-दर्शनका गलत अर्थ लगाऊँगा तो भी वह इतना उदार है कि भूल-सुधार कर देगा। अगर आप मेरे बारेमें इस दृष्टिसे विचार करें तो पायेंगे कि मैंने अवैज्ञानिक ढंगसे कुछ नहीं किया है।

आप सबको स्नेह।

आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१८७) से

४३. पत्र : गोप गुरबख्शानीको

सेवाग्राम
१२ जनवरी, १९४५

प्रिय गुरबख्श,

यदि आप दोनोंको आना ही है तो आ जाइए; लेकिन इतना जान लीजिए कि मैं सारा दिन मौन रहता हूँ। लेकिन आप पूरी जगह और उसके निवासियोंको देखकर यह तय कर पायेंगे कि आप क्या भूमिका निभा सकते हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

डॉ० गोप गुरबख्शानी
१७, हसन बिल्डिंग
निकल्सन रोड
दिल्ली

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. मैसूरके दीवान

४४. पत्र : रिचर्ड साइमंडको

सेवाग्राम
१२ जनवरी, १९४५

प्रिय साइमंड,[१]

आपका अच्छा-सा पत्र मिला। मैं सुजातासे[२] मिला और मैंने उसकी बातें सुनी तथा मुझे जो कहना था, लिखकर उसे दे दिया। मेरा सारा दिन मौन रहता है, स्वास्थ्यके कारण। मुझे यह रास आता है।

डेविसने "चोरी की" है। अब उन्हें अपनेको इस "चोरीके" योग्य सिद्ध करना है।

आलोचनाकी परवाह न करें। मैं जानता हूँ कि आप अपनी आत्माके मार्ग-दर्शनपर काम करेंगे और यह आपके लिए कल्याणकारी ही होगा। आप वह कर सकते है जो करना अन्य लोगोंके लिए मुनासिब न होगा और इसलिए जिसे उन्हे करना भी नही चाहिए। मैं यह आपको समझा ही चुका हूँ।

जब आ सकें तब अवश्य आइए।

आप दोनोंको स्नेह।

आपका,
मो० क० गांधी

फ्रेंड रिचर्ड साइमंड
मार्फत सुजाता डेविस

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. फ्रेंड्स एम्बुलेन्स यूनिटके
२. रिचर्ड साइमंडके साथी कार्यकर्ता क्लैन डेविसकी भारतीय पत्नी

४५. पत्र : अब्दुल मजीद खाँको

सेवाग्राम
१२ जनवरी, १९४५

प्रिय प्रोफेसर,

सौभाग्यसे आपने मुझे मेरे पिछले सन्देशकी एक नकल भेज दी है।

मैं इससे बेहतर कुछ नहीं लिख सकता। आपको साहसके साथ खड़ा होना चाहिए और जीतना चाहिए। वे लोग आपको मनुष्यके रूपमें किये आपके कार्यके लिए चुनेंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

प्रो० अब्दुल मजीद खाँ
लाहौर

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४६. पत्र : सुशीला गांधीको

सेवाग्राम
१२ जनवरी, १९४५

चि० सुशीला,

तेरा पत्र मिला। तू मेरी चिन्ता बिलकुल मत कर। मुझे ईश्वरके भरोसे छोड़ दे। उसे जो करना होगा सो करेगा। तू जल्दी आ जा।

वैसे है तू मजबूत। इतने बच्चोंको सँभालने की शक्ति तुझमें है, यह भगवानकी कृपा ही है न? क्योंकि तू अपना अन्य काम करते हुए भी, इतने बच्चोंकी देखभाल करती है, उन्हें खिलाती-पिलाती है आदि।

सीताका तो सब ठीक ही चल रहा है। वह वहाँ ठीक व्यवस्थित हो गई है। वह बहुत मिलनसार है। उसने बहुत-सी सखियाँ बना ली हैं।

शेष सब दूसरे पत्रोंमें से।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९४४) से

४७. पत्र : लीलावती आसरको

सेवाग्राम
१२ जनवरी, १९४५

चि० लीली,

तेरा पत्र मिला। मैं रोज-रोज अधिकाधिक शक्ति प्राप्त कर रहा हूँ। इस बार तुझे सन्तोष रहा, यह मुझे अच्छा लगा है। तूने मेरी बहुत सेवा की, और अब समयपर वहीं पहुँच भी गई। कुछ दिन चाहे व्यर्थ गये हों, लेकिन तूने अपने अध्ययनमें असावधानी नहीं की। लेकिन तू जहाँ है वहाँ भी मेरी ही सेवा कर रही है। यदि तू इसी दृष्टिसे काम करेगी, तो जरूर पास होगी।

तेरा मुझसे पहले कूच कर जाने की बात सोचना अधर्म है। अगर सभी कार्य-कर्त्ता ऐसा सोचें, तो क्या होगा?

मैंने तो कभी नहीं कहा कि ९ को[1] हड़ताल की जाये। विद्यार्थियोंको तो उस रोज और ज्यादा सेवा-कार्य करना चाहिए। इससे शिक्षक भी प्रसन्न होंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९५९९) से। सी० डब्ल्यू० ६५७१ से भी; सौजन्य : लीलावती आसर

४८. पत्र : सत्यवतीको

सेवाग्राम
१२ जनवरी, १९४५

चि० सत्यवती,

तेरा खत मिला। कुछ अच्छी है यह भी मेरे लिये संतोष कि बात है।

बा, महादेव इत्यादिकी कथा लिखना चाहती है तो लिख। इतना शरीर अच्छा है क्या? दुसरोंकी ओरसे साहित्य मांगेगी तो तेरी कृति हार्दिक नहीं होगी। यह तो हुआ मेरा अभिप्राय। अब दील चाहे सो कर।

१. तथापि १९ नवम्बर, १९४४को गांधीजीने सूर्यकान्त परीख नामक एक विद्यार्थी नेताको लिखा था : "हर ९ तारीखको विद्यार्थी पाठशालामें न जायें, यह इष्ट है। शर्त यह है कि उस दिन वह आत्मशुद्धि करे और सारा दिन सेवा-कार्यमें लगाये।" देखिए खण्ड ७८, पृ० ३३९-४०।

मेरा खत तो तेरे ही लिये था। पिताने पुत्रीको लिखा उसे अखबारमें क्या देना? लेकिन अखबारमें देनेसे तेरा कुछ हित होता है तो दे।

वाकी दुसरे लिखेंगे।

बापुके आशीर्वाद

सत्यवती देवी
लाहौर

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

४९. पत्र: अनाथनाथ बसुको

सेवाग्राम
१४ जनवरी, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका निवन्ध मैं पढ गया हूँ। पढ़ने मे तो वह अच्छा है, लेकिन उसमें कही वातें मुझे वहुत हदतक अव्यावहारिक जान पड़ती हैं। मुझे लगता है कि यह नये ढंगकी चीज जरा ज्यादा कड़ी धातुकी वनी हुई है और सच्चे अर्थोमें क्रान्तिकारी है। मैं चाहूँगा कि आप और गहराईसे तथा गाँवोके करोड़ों भूखोंको ध्यानमें रखकर विचार करें।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री अनाथनाथ वसु
मार्फत श्री आर्यनायकम्

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२४८) से

५०. पत्र : डॉ० नीरद मुखर्जीको

सेवाग्राम
१४ जनवरी, १९४५

प्रिय मित्र,

आपने मुझे जो चीज दी है उसका एक-एक शब्द मैं पढ़ गया हूँ। उससे मुझे बहुत दु.ख हुआ है। हालाँकि आपके अपने कथनानुसार आपकी संस्थाका कार्य लोकोपकारी है, यह समस्याका एक कोना भी नहीं छूता। समस्याका चिकित्सा-सुविधा से बहुत थोडा सम्बन्ध है। आपके चिकित्साकी सुविधा सुलभ कराने के प्रयत्नके बावजूद स्थिति खराब ही होती जायेगी। आपको मात्र स्वास्थ्यसेवा कार्यकर्त्ताओंकी हैसियतसे नहीं, बल्कि सहृदयता और हिम्मतके साथ मनुष्योंकी तरह काम करना है। आपको जनताका प्रतिनिधित्व करना है और शासकोंको सत्यसे परिचित करवाना है। मुख्य रोग तो भुखमरी है, जो मलेरिया तथा न जाने और किन-किन रूपोंमें प्रकट होता है। इसमें बाहरी लोगोंसे बहुत कम मदद मिलेगी, पैसेसे तो और भी कम। लोगोंको दूध और अन्य खाद्य पदार्थ दीजिए, उन्हें उनके लिए घर तथा नावें मुहैया कीजिए। फिर मुझे विश्वास है कि किसी दवाकी जरूरत नहीं होगी।

आपकी रिपोर्ट पढ़कर मेरा मन जल्द ही बंगाल पहुँचने और वहाँकी भूखसे तड़पती मूक जनताके लिए काम करने के लिए अधिकाधिक बेचैन हो रहा है। लेकिन मुझे मालूम है कि मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं जेल-जैसा महल नहीं चाहता। मैं तो लोगोंके पास रहना और उनकी क्षीण होती अस्थियोंका स्पर्श करना चाहता हूँ।

आपके विवरणपर मेरी यही प्रतिक्रिया है। और यह सोचकर कि मैं अभी कमजोर हूँ, मैं और भी दु.खी हो उठता हूँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

डॉ० नीरद मुखर्जी
मार्फत श्री आर्यनायकम्

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५१. पत्र : बारबराको

सेवाग्राम
१४ जनवरी, १९४५

प्रिय बारबरा,

चूंकि तुम कमसे-कम फिलहाल यहां रहने का वादा कर रही हो, इसलिए नायकम् के कुछ दिनोंके लिए बाहर जाने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। मैं तुम्हारे साथ हूँ।

स्नेह।

बापू

बारबरा
मार्फत नायकम्‌जी
सेवाग्राम

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५२. पत्र : ई० डब्ल्यू० आर्यनायकम्‌को

१४ जनवरी, १९४५

चि० आर्यनायकम्,

बारबराकी चिट्ठी पढ़ो। खुद खुद यहीं रहना चाहती है तो थोड़े दिनोंके लिये दोनो होशंगाबाद जाओ तो अच्छा होगा। मैं तो यहां हूं ही। तुम्हारा दोनोका शरीर अच्छा नहीं रहेगा तो सब काम बिगड़ेगा।

बापुके आशीर्वाद

नायकमजी
सेवाग्राम

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३. पत्र : विजया म० पंचोलीको[1]

१४ जनवरी, १९४५

तुम दोनोंके[2] बारेमें हम लोग यहाँ बहुत बातें करते रहे हैं। तुम लोग कब आओगे?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१५०) से। सी० डब्ल्यू० ४६४२ से भी; सौजन्य . विजया म० पंचोली

५४. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

सेवाग्राम
१४ जनवरी, १९४५

भाई जाजुजी,

अगर सच्चा सेवक एक भी कोई भी ग्राममें जायेगा तो मैं जानता हूं कि वह थोडे अर्सेमें स्वावलंबी बन जायेगा। जब हम उसका निजी खर्च देते हैं तो बाकी कुछ देनेकी आवश्यकता नहीं होगी। सरजाम नहीं देंगे क्योंकी देहाती ही चीजें पैदा करेंगे। सेवक अपने साथ तकली रखेगा। बांसकी सबसे अच्छी। अपना चाकु तो उनके साथ रहेगा ही। वह जाकर कुछ नहीं तो बच्चोंको सिखायगा। बच्चे बासकी तकली बनायेंगे और कातेंगे। अगर उस देहातमें कपास ही नहीं होगा तो दूसरा घंदा चुनेगा। लेकीन हम शुरु तो वहीं करेंगे जिस जगह कपास होता है। मैं मानता हूं कि आरंभके लिये मैंने काफी दिया है। और चाहिये तो प्रश्न पूछो। मैं जानता हू कि बात नयी है लेकिन मैं जानता हू कि विश्वास होगा तो बात आसान भी है।

बापुके आशीर्वाद

जाजूजी
खादी विद्यालय
सेवाग्राम

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह किसन घुमटकर द्वारा विजयाबहिनको लिखे पत्रपर "पुनश्च" के रूपमें लिखा गया था।
२. विजयाबहिन पंचोली और उनके पति मनुभाई पंचोली

५५. पत्र : सीता गांधीको

सेवाग्राम
१५ जनवरी, १९४५

चि० सीता,

तेरा पत्र मुझे अच्छा लगा। पत्र स्पष्ट और प्रासंगिक है। तू जो सोचती है, वह ठीक है। तब तो सुशीलाको जल्दी आना चाहिए।

तेरा अध्ययन ठीक ढंगसे चल रहा है, यह भी मुझे अच्छा लगा। अपने स्वास्थ्य को खूब अच्छा बनाकर जितनी उन्नति करते बने किये जा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९४५) से

५६. पुर्जा : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१५ जनवरी, १९४५

मैं जब शामको रोगी महिलाको देखने जाता हूँ, तब देखता हूँ कि तथाकथित नौकर व्यर्थ पानी फेंकते हैं और भोजन करनेवाले थालीमें साग वगैरह छोड़ देते हैं। तुम्हें इसकी जाँच करनी चाहिए। मेहमानोंसे भी नम्रतापूर्वक कहा जा सकता है। इसके लिए जो कई नोटिस लगाये जा चुके हैं वे भी उन्हें दिखाये जा सकते हैं। परोसते समय पूछा जा सकता है। कंचन बीमार रहा करती है, यह ठीक नहीं लगता। कल तो उसे केवल बुखार ही था। लेकिन बुखार क्यों रहता है, इसकी जाँच होनी चाहिए। आश्रममें सर्वत्र स्वच्छता और शान्ति होनी चाहिए।

बापू

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ५८१२) से। सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

५७. पत्र : कृष्णचन्द्रको

१५ जनवरी, १९४५

चि० कृ० चं०,

भाई दास्ताने[1] यह लिखते है। तुम जाने को तैयार है तो उनको लिख दो जाओगे। यहां वालोको पूछकर ही जाओगे ना?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४५६) से

५८. पत्र : सत्यवतीको

सेवाग्राम
१५ जनवरी, १९४५

चि० सत्यवती,

तेरा खत अच्छा है। तुझे ठीक हो जायगा, एक जीत ही होगी। हां इतना तो है ही जब दिल चाहे तब मेरे पास आ जायगी।

बाकी सब खु०[2] बहन आदिसे।

बापुके आशीर्वाद

सत्यवती देवी
टी० बी० अस्पताल
लाहौर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. विठ्ठल दास्ताने
२. खुर्शेद

५९. पत्र : कोण्डा वेंकटप्पय्याको

१६ जनवरी, १९४५

प्रिय देशभक्त,

तुम्हारे दो पत्र मिले। श्री सीताराम शास्त्रीको मैंने पूरा सन्तोष दिया है। तुम्हें पूरा विवरण उन्हींसे मिलेगा। इस उम्रमें भी तुममें इतना उत्साह और इतनी स्फूर्ति है, यही आश्चर्य है। बेशक, मैं तुम्हारी बेटीसे मिला था।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२२८) से

६०. पत्र : ग्लैडिस ई० सन्वानीको

सेवाग्राम
१६ जनवरी, १९४५

प्रिय बहिन,

आपका मामला ऐसा है कि मैं चाहूँगा कि आप मुझे अंग्रेजीमें लिखें; तभी मैं उपयोगी उत्तर दे सकता हूँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

ग्लैडिस ई० सन्वानी
मार्फत डी० ई० डीन
रायपुर

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६१. पत्र : कानम गांधीको

सेवाग्राम
१६ जनवरी, १९४५

चि० कानम,

तेरा पत्र मिला। तेरी इच्छानुसार वह पत्र वापस भेज रहा हूँ। पिताको दाँत मिल गये, यह अच्छा हुआ। लेकिन अब चाहे जो खाकर वह उनका दुरुपयोग न करें।

तेरी तैयारी मुझे ठीक मालूम होती है। ऐसा लगता है कि यहाँ थोड़ा-बहुत जो तुझे सिखाया गया था, वह फलदायी हुआ है।

जिस निबन्धमें तूने नागपुर और सेवाग्रामकी तुलना की है वह मुझे भेजना। मेरी तबीयत तो ठीक है, लेकिन काम बहुत रहता है। इसलिए मैं निबन्ध फुर्सतसे सुधारकर वापस भेजूंगा।

मैं भूत-प्रेत नहीं मानता। यह मेरा अपना अनुभव है। भणसालीभाई भले माना करें। इससे उनकी साधुतामें कोई अन्तर नही आता। लेकिन साधु-पुरुष जो-कुछ कहते है, वह शत-प्रतिशत सही ही होता है, यह मानने की जरूरत नही है। कोई मनुष्य सर्वज्ञ नही है। 'प्लेन्चेट' शुद्ध ढोंग है, उसके चक्करमें तू कभी मत पड़ना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९५१५) से। सौजन्य : कानम गांधी

६२. पत्र : शारदा गो० चोखावालाको

सेवाग्राम
१६ जनवरी, १९४५

चि० बबुड़ी,

अपने माता-पिताको लिखा तेरा पोस्टकार्ड मैंने पढ़ा। तेरा दिमाग खराब हो गया है। वल्लभरामभाई तुझे डाकसे दवा भेजें, यह न उनके लिए उचित है, न तेरे लिए। होमियोपैथीका प्रयोग तो तूने करके देख लिया; यहाँ डाक्टर हैं, वैद्य भी हैं। शायद होमियोपैथ भी आ सकें। और मैं तो हूँ ही। इसलिए हिम्मत कर सके तो यहाँ आ जा। लेकिन यह निश्चय करके आना कि स्वस्थ होकर ही लौटूंगी, या

फिर मै हाथ टेक दूँगा तब। लेकिन मैं कह रहा हूँ, इसलिए मत आना। मेरी बात सौ फीसदी तेरे गले उतर जाये तभी आना और तभी लाभ होगा।

तुम दोनोंको,
बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००५०) से। सौजन्य: शारदा गो० चोखावाला

६३. पत्र: इन्दु मशरूवालाको

[१६ जनवरी, १९४५][1]

चि० इन्दु,[2]

तू आशीर्वाद माँगती है? मैंने गोमतीको तो ना कर दिया। वह समझ गई। अपनी ही जातिमें तेरे विवाह करने में क्या नई बात है? फिर भी तू मेरा आशीर्वाद माँगती है तो ले। भले ही एक जाति हो लेकिन दोनों जातिके बन्धन तोड़ना, अपने नियम रचना और उनका पालन करना तथा सेवा करना। दोनों अच्छी तरह रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

६४. पुर्जा: इन्दुलाल याज्ञिकको[3]

१६ जनवरी, १९४५

१. सहजानन्दका तो मैं देख लूँगा।

२. तुम्हारे बारेमें समझा। ठक्कर बापा, कानजीभाई, मावलंकर आदि तुम्हारी पीठपर हैं, इसलिए कुछ कहने की जरूरत नहीं है। सबको यदि थोड़ा-बहुत अविश्वास हो तो उसे सहन करना और अपने व्यवहारसे उसे दूर करना। मेरा आशीर्वाद तो प्रत्येक शुभ कार्यमें है ही। तुमपर मेरा विश्वास तो तभीसे है जब तुमसे मेरा परिचय हुआ था। मैं तुम्हें १९१५ से जानता हूँ। मैंने तुम्हारे साथ काम किया है। तुमसे ग्रहण किया है। कड़वे-मीठे प्रसंग आये हैं। तुममें मैंने गुण देखे हैं। तुममें अस्थिरता का अनुभव किया है। इसीसे मैं डरता हूँ। लेकिन तुम्हें मेरा, एक सत्याग्रहीका, डर होना ही नहीं चाहिए। क्योंकि तुम्हारे अच्छे कार्यमें मैं हस्तक्षेप नहीं करूँगा। मेरा

१. साधन-सूत्रमें इस पत्रको १६ जनवरी, १९४५ के पत्रके बाद और १७ जनवरी, १९४५ के पत्रसे पहले रखा गया है।

२. किशोरलाल मशरूवालाकी भतीजी

३. यह इन्दुलाल याज्ञिकके साथ गांधीजी की बातचीतका अंश है।

यह भी अनुभव है कि अच्छा काम अपने साथ जगत्का आशीर्वाद रखता है। इसलिए तुम निर्भय होकर अपने कर्त्तव्यका पालन किये जाना।

३. लडकोंके बारेमें तुम्हारा जो कहना है, वह मुझे अच्छा लगता है। उसपर विचार करूँगा हालाँकि मै उसमें व्यावहारिक कठिनाइयाँ देखता हूँ। मैने एक लाखकी माँग नही की है। मुझे तो यदि एक हजार खरे युवक मिलें तो अपना सौभाग्य समझूंगा। मैं तो उनकी तलाशमें रहता हूँ।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६५. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

सेवाग्राम
१७ जनवरी, १९४५

बापा,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं पंचगनी जाऊँगा ही, ऐसा-कुछ नही है। २२ फरवरी[1] तो बीत ही जायेगी। इसलिए उद्घाटन करने की बात खत्म हो गई। मुझे तो सबके अनुकूल होना है। इसलिए जहाँ सभा होगी, वहाँ मै उपस्थित होऊँगा। तुम्हें मेरी सुविधाका विचार छोड़ देना चाहिए। सबकी सुविधामें ही मेरी सुविधा समझनी चाहिए। इसीमें मेरा और स्मारकका भी कल्याण है। तुम्हे जिम्मेदारी न उठानी हो तो सबसे पूछना और जैसी सबकी राय हो वैसा करना।

बापू

ठक्कर बापा
पूना

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. कस्तूरबा गांधीकी पुण्य-तिथि

६६. पत्र : रतिलाल मगनलाल वोराको

सेवाग्राम
१७ जनवरी, १९४५

भाई रतिलाल,

तुम्हारा ५-१०-१९४४ का पत्र यहाँ पड़ा रहा। आज हाथ आया। मेरी बीमारी और इधर-उधर आने-जाने के दौरान ऐसा होता ही रहता है। मुझे उम्मीद है कि तुम्हारे दामाद वहाँ मौजूद होंगे और स्वस्थ भी होंगे। तुम मुझे समाचार दोगे तो मुझे अच्छा लगेगा। मैंने फोटो अपने आशीर्वादके साथ भेजी है।

बापूके आशीर्वाद

रतिलाल मगनलाल वोरा
दूसरी मंजिल, कमरा नं० ६२, ४७ गोस्वामी बिल्डिंग
पिंजरापोल गली
बम्बई–४

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६७. बातचीत : प्रह्लाद मेहताके साथ[1]

१७ जनवरी, १९४५

प्रह्लाद मेहता : छात्रों और कांग्रेसजनोंको इस समय क्या करना चाहिए?

गांधीजी : उन्हें जल्दीसे-जल्दी स्वतन्त्रता प्राप्त करने का तरीका और उपाय ढूंढ़ना चाहिए और रचनात्मक कार्यक्रममें जुट जाना चाहिए।

प्र० मे० : कांग्रेसको मजबूत बनाने के लिए छात्रोंको क्या करना चाहिए?

गां० : छात्रोंको राष्ट्रीय कांग्रेसके लक्ष्यों और आदर्शोंको अपनाना चाहिए और उसके अंग बनकर उन्हें विदेशी सत्ताके खिलाफ संघर्ष जारी रखना चाहिए।

प्र० मे० : छात्र-संगठनोंका अपना पृथक् अस्तित्व होना चाहिए अथवा उन्हें विभिन्न राजनीतिक दलोंके साथ सम्बद्ध हो जाना चाहिए?

गां० : छात्रोंको इस मामलेमें वही करना चाहिए जो उन्हें अपने संगठनके हकमें उचित और लाभदायक लगे, और यदि अनुभवसे सिद्ध हो कि किसी दलसे

१. अखिल भारतीय छात्र कांग्रेसके

सम्बद्ध होना ठीक नही है, तो उन्हें ऐसा सम्बन्ध त्याग देना चाहिए। छात्रोंके लिए यह उचित नही है कि वे दूसरी विचारधारावाले छात्रोंको अनावश्यक रूपसे भला-बुरा कहें। तथापि उन्हें भारतीय राष्ट्रीय काग्रेसको मजबूत बनाना चाहिए और मौन सेवाके द्वारा स्वतन्त्रताकी अन्तिम लड़ाईके लिए उसे तैयार करना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १९-१-१९४५

६८. भेंट : टी० वी० कुन्हीकृष्णन्को[1]

१७ जनवरी, १९४५

टी० वी० कुन्हीकृष्णन् : आप जानते हैं कि १९४२ में और उसके बाद छात्रोंकी राजनीतिक प्रवृत्तियोंके प्रति साम्यवादियोंने शत्रुताका रुख अपनाया था। भारतीय छात्र कांग्रेस (इंडियन स्टुडेंट्स कांग्रेस) कुछ हदतक उन छात्रोंकी आस्था और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करती है जो साम्यवादी वर्गके रुखके विरोधी हैं। ये रहे हमारे कुछ प्रश्न :

क्या हमें साम्यवादियोंको बाहर रखने और उनके रुख और चालोंका विरोध करने का अधिकार है? कृपया हमें यह मत बतायें कि यह एक मामूली प्रान्तीय सवाल है। हम इस मामलेमें आपका मार्ग-दर्शन चाहते हैं।

गांधीजी : किसी व्यक्तिके किसी वर्ग या समूह-विशेषसे जुड़े होने के कारण उसे बाहर रखने की बात मुझे नापसन्द है। लेकिन आप अपने विवेकसे काम लें।

टी० वी० कु० : हम एक नया अखिल भारतीय छात्र संगठन बना रहे हैं। क्या यह ठीक है?

गां० : आप ठीक कर रहे हैं, बशर्ते कि यह संगठन काग्रेससे मेल खाता हो।[2]

टी० वी० कु० : आपकी रायमें रचनात्मक कार्यक्रमके किस कार्य-विशेषको छात्र लोग सबसे अच्छे ढंगसे कर सकते हैं?

गां० कितने ही कार्य हैं, जिनमें से चुनाव किया जा सकता है। छात्रोंको स्वयं चुनाव करना चाहिए।

टी० वी० कु० : क्या भारतीय छात्र कांग्रेस अपना एक अलग झण्डा रख सकती है? क्या आप हमारे लिए कोई झण्डा सुझा सकते हैं?

१. अध्यक्ष, केरल छात्र कांग्रेस। गांधीजी ने पूछे गये प्रश्नोंके लिखित उत्तर दिये थे।
२. यह वाक्य साधन-सूत्रमें जिस रूपमें मिलता है उसमें कुछ शाब्दिक परिवर्तन करके अनुवाद किया गया है।

गां० : मैं कांग्रेसके झण्डेसे बेहतर और कोई झण्डा नही सुझा सकता। यह सारी जरूरतें पूरी करता है।

टी० वी० कु० : आपने कहा था कि कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओंको १२ वर्षसे कम उम्रके छात्रोंको अपने हाथमें लेना चाहिए। क्या आप अपने इस कथनको स्पष्ट कर सकते हैं?

गां० : मैंने जिन शब्दोंका प्रयोग किया था, ठीक उन्ही शब्दोंको उद्धृत कीजिए तो आप उसका अर्थ खुद ही समझ जायेंगे।

टी० वी० कु० : आपने छात्रोंसे प्रत्येक महीनेकी ९ तारीख मनाने के लिए कहा था।[1] साम्यवादियोंने इसको "पीछेके दरवाजेसे सत्याग्रह" करने की सलाह बताया है। क्या आप छात्रोंको ९ तारीखको कक्षाओंसे अनुपस्थित रहने की अनुमति देंगे?

गां० : मैं अपने वक्तव्यको खुद देखूंगा तभी कह सकता हूँ। मैं नही समझता कि मैंने ऐसी कोई बात कही है। कोई और बात होगी। एक छात्र और अखबार-नवीसके नाते आपको बिलकुल ठीक-ठीक बात ही कहनी चाहिए। मुझे मेरे वक्तव्य भेज दें।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६७८) से

६९. तार: चन्द्रपाल सिंह दत्तको

१८ जनवरी, १९४५

चन्द्रपाल सिंह दत्त
पिलर्स
सियालकोट

तार मिला। उम्मीद है पिताजी बेहतर होंगे। उनके स्वास्थ्यमें प्रगतिकी खबर देना।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए "पत्र : लीलावती आसरको", पृ० ३१ की पा० टि० १ और खण्ड ७८, "पत्र : सूर्यकान्त परीखको", पृ० ३३९-४० भी।

७०. पत्र : मीराबहिनको

सेवाग्राम
१८ जनवरी, १९४५

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र अभी मिला है। मुझे उम्मीद है कि इसके पहले तुम्हें मेरा काफी विस्तारसे लिखा पत्र मिल गया होगा।

बलवन्तसिंह यहाँ नही है। वह सतीश बाबूके पास है। तुम्हारे पास वह आ सकेगा, इसकी मुझे कोई उम्मीद नही दिखती। यदि उसकी थोड़ी-सी भी इच्छा होगी तो मैं उसे प्रोत्साहित करूँगा। मै जानता हूँ कि तुम्हारे लिए वही उपयुक्त आदमी होगा।

खैर, तुम्हे खुद ही यहाँ आकर देखना चाहिए कि तुम यहाँसे किसीको स्थायी तौरपर या कुछ दिनोके लिए भी अपने साथ ले जा सकती हो या नही। यहाँ बहुत-से लोग हैं। इसलिए जब भी आ सको, तुम्हे आ जाना चाहिए।

फरवरीके अन्तमें मेरे दिल्ली आने की बहुत थोड़ी-सी सम्भावना दिखाई देती है। अगर आती हो तो जितनी जल्दी आ सको उतना अच्छा होगा, क्योंकि गर्मी रोज बढ़ती जा रही है।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६५०३) से; सौजन्य: मीराबहिन। जी० एन० ९८९८ से भी

७१. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१८ जनवरी, १९४५

मैं तो पूरा पढ़ गया हूँ। तुमने इसमें अपना हृदय उँड़ेल दिया है, यह ठीक ही किया है। तुम अब भी अस्थिर हो। अस्थिरता दूर करने के लिए तुम्हें संस्थामें और संस्थाका होकर रहना चाहिए। इसलिए चाहे जाजूजी हों अथवा चिमनलाल या मैं, तुम्हारे लिए सब समान होने चाहिए। जो प्रमुख हो वह जैसा कहे तुम्हें वैसा ही करना चाहिए। तुम्हारा निर्माण इसीमें निहित है। इसके बावजूद यदि तुमसे सहन न हो तो तुम दोनों अलग रहो, इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं। अलग रहकर तुम ब्रह्मचर्यका पालन कर सकोगे, इसमें मुझे सन्देह है। लेकिन न कर सको तो भी क्या? यह कोई गुनाह नहीं है। तुम दोनों विवाहित हो और तुम दोनों जो चाहो वह करने की छूट तुम्हें होनी चाहिए। जो भी करना वह दोनो मिलकर, विचार पूर्वक और दृढ़ताके साथ करना।

संस्थामें रहकर भी तुम लोगोकी सेवा तो करोगे ही; बल्कि उसमें रहकर ज्यादा अच्छी तरहसे कर सकोगे। इसमें भी तुम्हें जैसा उचित जान पड़े वैसा करना। यदि तुम मेरे मार्ग-दर्शनके अनुसार ही काम करना चाहो तो वह तुम्हे माँगने-भरसे मिल जायेगा।

तुमने जिन कठिनाइयोंकी चर्चा की है यदि तुम उनके बारेमें विस्तारसे लिखो तो कदाचित् मैं उनका समाधान कर सकूँ। तुमने जिस अनियमितताकी बात लिखी है वह असह्य है। मुझे पूरा विवरण दो। जो अनिवार्य होगा उसे हम सहन करेंगे। लेकिन जिसे सहन करेंगे उसे भी सोच-समझकर ही सहन करेंगे। नानावटीकी बात मैं समझ सकता हूँ। वह बीमार है, लेकिन तपा-परखा आदमी है। मैं मानता हूँ कि जो खाया जाये वह स्वादके लिए नहीं।

चिमनलाल बहुत पुराना है। बीमार हो या स्वस्थ वह बराबर डरा हुआ है। मौन रहकर काम करता जाता है। उसकी सेवाकी कद्र करना। अपने प्रति कृपणता और साथियोंके प्रति उदारता, यह सरल जीवनका मन्त्र है। तुम्हें कोई गोपनीयता बरतने की क्या जरूरत है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८१४) से। सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

७२. पत्र : वसुमती पण्डितको

सेवाग्राम
१८ जनवरी, १९४५

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। तेरे पहले पत्र भी मिल गये थे। यह पत्र मैं जोहराको दे रहा हूँ।

मैं ठीक हूँ। मेरी तनिक भी चिन्ता न करना।

तू गई है, यह अच्छा है। खूब अनुभव मिलेगा। अकबर तेरी देख-भाल तो करेगा ही। तू बहुत ज्यादा दवाएँ नहीं ले गई, यह अच्छा ही हुआ। बहुत-सी बीमारियाँ तो सहज उपचारसे ही दूर हो जाती हैं। दवा दी ही जानी चाहिए, ऐसा मानना बहुत बड़ा वहम है। स्थानीय वनस्पति [के द्वारा उपचार करना] एक भिन्न बात है। पेटदर्द हो तो उपवास करना और गर्म पानी पीना तथा उसका सेक लेना चाहिए। दस्त हो तब तो उपवास करना ही चाहिए। यदि रोगी कुछ माँगे ही तो उसे चुटकी-भर सोडा अथवा नीमकी बुकनी देनी चाहिए। यदि सिरदर्द हो तो सिरपर मिट्टीकी पट्टी रखनी चाहिए, खूब पानी पीना चाहिए, आदि। यह तो मैंने थोड़ा-सा रास्ता बता दिया है। धीरज रखना, चिन्तन-मनन करना, रामनाम जपना और लोगोंसे भी जपवाना।

बापूके आशीर्वाद

वसुमतीबहिन पण्डित
समौ
डाकखाना पुराना डीसा, उत्तर गुजरात

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७३. पत्र : शिव शर्माको

सेवाग्राम
१८ जनवरी, १९४५

भाई शिव शर्मा,

खु[र्शेद] वहिनपर तुम्हारा खत पढ़ा। मै इतना तो कह दूं कि न वनफशा कि वातसे न वारामूला हलवा खाने से मेरा मन आयुर्वेदपर से उठ सकता है या तुमपर से। आयुर्वेदकी स्वतन्त्र किम्मत मेरे पास है रहेगी। आयुर्वेदका सच्चा वैद्य मै ढूंढ़ रहा हूं। उन वहुत थोड़ेमें से तुम हो। तुम्हारा क्षेत्र घनिकोमें है। देहातीओकी ओर कहांतक तुमको ला सकुंगा देखता हूं।

तुम अपनी तवीयत अच्छी कर लो और फुरसत पाकर यहां आओ। . . .[1]का प्रयोग वालकृष्णपर और हरिइच्छापर चला रहा है। दो दिनके लिये वे अपने दर्दीओंके लिये गये हैं।

बापुके आशीर्वाद

सारिका, (अप्रैल, १९६४) में प्रकाशित पत्रकी प्रतिकृतिसे

७४. आश्रमकी टिप्पणी

१९ जनवरी, १९४५

वात यह है कि हम अपना जीवन विचारमय करें। काम कम करना है तो कम करें, लेकिन जो करे सो बन पड़े वहाँ तक सम्पूर्ण करें। इसलिए मैंने कहा है कि अगर हम अपने [जीवनको (भजनमें) गाते है ऐसा करें और सेवाग्रामको आदर्श वना सकें तो हमने सब किया।

बापु

बापूकी छायामें, पृ० ३८८

१. साधन-सूत्रमें नाम अस्पष्ट है।

७५. पत्र : अब्दुल मजीद खाँको

१९ जनवरी, १९४५

प्रिय प्रोफेसर अब्दुल मजीद खाँ,

पंजाब विश्वविद्यालय फेलोशिपके आगामी चुनावोंमें[1] आपको हिम्मतके साथ खड़ा होना चाहिए। वे राष्ट्रवादीके नाते आपकी योग्यताके कारण आपको चुनेंगे। मैं आपको हृदयसे आशीर्वाद देता हूँ।

चूंकि आपको सभी प्रमुख कांग्रेसियोंका समर्थन प्राप्त है, इसलिए यदि आप चुनाव हार जाते हैं तो उसका अर्थ यह होगा कि स्नातक मतदाताओके बहुमतका मानस कांग्रेसी नही है। इससे यह भी पता चलेगा कि कमसे-कम आपके प्रान्तमें शिक्षित वर्गपर कांग्रेसका प्रभाव जितना होना चाहिए उतना नही है।

मुझे उम्मीद है कि आपकी विजय होगी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

प्रो० अब्दुल मजीद खाँ
६-बी, कपूरथला हाउस
लेक रोड, लाहौर

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१९ जनवरी, १९४५

तुमने लिखा सो ठीक किया। इतना सब तुम एक ही पन्नेपर लिख सकते थे। सक्षेपमें लिखना एक कला है। यदि तुम इस कलाका विकास कर सको तो तुम्हें अपना मन स्थिर करने का एक साधन मिल जायेगा। लेकिन यदि संक्षेपमें लिखना सम्भव न हो तो भले लम्बा हो, लेकिन जो कहना हो वह कहना चाहिए।

गोपनीयताके बारेमें समझा।[2] मुझे यह कारण समुचित नहीं लगता। आलोचना करनेवाले लोग भले आलोचना करें। लेकिन तुम्हारी इच्छाका तो जबतक तुम चाहोगे तबतक मैं सम्मान करता रहूँगा।

१. देखिए पृ० ३० भी।
२. देखिए पृ० ४६ भी।

जबतक तुम्हें चिमनलालमें दोष दिखाई दें तबतक तुम उन्हें छिपाओ, ऐसा मैं नही चाहूँगा। मैंने तो केवल अपनी राय बताई थी। उससे कदाचित् कुछ मदद मिले। यही बात नानावटीके बारेमें भी है। जो-कुछ तुमने लिखा है वह तो चौंकाने-वाला है। यदि वह यहाँ होता तो विस्तारसे पूछता। बादमें आयेगा तो सही।

जो-जो व्यक्ति भूल करता है, काम नही करता उसे यदि तुम छोटी-छोटी चिट्ठियाँ लिखो तो अच्छा होगा। मै तो केवल मदद करना चाहता हूँ। लेकिन तुम जो लिखते हो, यदि मै उसे छिपाऊँ, उनके नाम न जानूं, भूलोंको नही जानूं तब तो सुधार करना मुश्किल होगा न?

तुम्हारा काम निश्चित होना चाहिए। और वह है, ऐसा मैंने माना है। लेकिन यदि वैसा नही है तो तुम जो मदद चाहोगे वह मै करूँगा।

मैं तुम्हारे सम्मुख जो नये विचार व्यक्त करता हूँ उनका तुम्हें स्वागत करना चाहिए। वे नये जान पड़ते है, लेकिन नये है नही। वे सब हमारे जीवनके मूलमें हैं। यदि मै उन्हें व्यक्त नही करूँगा तो मेरी यहाँ उपस्थिति ही व्यर्थ है। उनमें से किनपर अमल किया जा सकता है और किनपर नही, यह एक अलहदा बात है। यह तो तुम्हें देखना है।

ब्रह्मचर्यके बारेमे पढ़कर[1] मैं तो बहुत खुश हुआ हूँ। मै ऐसा मानता हूँ कि यह बात तुम दोनोंपर लागू होती है। यह मेरे लिए नई बात है, और आनन्ददायक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८१६) से। सौजन्य: मुन्नालाल गंगादास शाह

७७. पत्र : जयसुखलाल गांधीको

सेवाग्राम
१९ जनवरी, १९४५

चि० जयसुखलाल,

तुम्हें यह पत्र लिखनेमें थोड़ी देर हो गई।

चि० मनुका कामकाज ठीक चल रहा है। परिचर्याका काम वह बहुत मेहनत के साथ सीख रही है। उसके साथ दो और लड़कियाँ भी है। उसे यह काम बहुत पसन्द है। उसे सुशीलाबहिन और प्रभाशंकर सिखाते है। साथ-साथ भणसालीभाई आदिसे अंग्रेजी वगैरह भी सीखती है। लेकिन अभी अल्हड़ है। मुझे उससे पूरा सन्तोष नहीं है। तीन-एक दिन तो मैंने उसे अपने नजदीक सुलाया। इरादा तो ज्यादा दिन

१. मुन्नालाल शाहने लिखा था कि यद्यपि उन्हें पूरा भरोसा था कि वे अपनी पत्नीके साथ आश्रमसे बाहर रहकर भी ब्रह्मचर्यका पालन कर लेंगे तथापि उनका अलग-गृहस्थी बसानेका कोई इरादा नहीं था।

सुलाने का था, तब मैं उसके सोने का ढग ठीक कर सकता। लेकिन उसे सर्दी हो गई। अब वह माताजीके पास सोने जाती है। अब मेरे पास कब आयेगी, कौन जाने। चिन्ता की कोई बात नही है। उसका कब्ज अभी गया नही है। देखता हूँ, क्या होता है।

मैं जबतक न मँगाऊँ तबतक मेवा मत भेजना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२४) से

७८. पत्र : मंगलदासको

सेवाग्राम
१९ जनवरी, १९४५

भाई मंगलदास,

तुम्हारा पत्र और चेक मिला। तुम्हारा रक्तचाप ठीक हो गया, यह अच्छा हुआ। कैसे ठीक हुआ? अब इसे टालते ही रहना।

बापूके आशीर्वाद

मेसर्स मंगलदास ऐण्ड सन्स बुकसेलर्स
भागा तालाब
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

७९. पत्र : हीरालाल शर्माको

सेवाग्राम
१९ जनवरी, १९४५

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। मैंने अबतक तुमारी कही सब बात गाडोदियाजीको[1] लिखी नही है। कारण तो अनावकाश ही था। लेकिन ऐसी बात होते हूए तुम उनके मातहत जाना चाहते हो? क्या यह अच्छा नही कि तुम जैसे हो ऐसे रहो। वे लोग दखल न दें और तुम अपने धनिक मरिजोसे धन पैदा करो और वहां काम करो और आगे कदम चलो।

यहां आना है तो अवश्य आ जाओ। लेकिन मैं अनावश्यक मानता हूं। खतोंसे सब काम हो सकेगा।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० ३२६ और ३२७के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

१. लक्ष्मीनारायण गाडोदिया

८०. पत्र : सोन्या श्लेसिनको

सेवाग्राम
२० जनवरी, १९४५

प्रिय कुमारी श्लेसिन,[१]

मैं नहीं समझता कि मेरे दक्षिण आफ्रिका आने अथवा अमेरिका जाने की कोई सम्भावना है। लेकिन मैं जाऊँ अथवा न जाऊँ, यह आशा जरूर करता हूँ कि तुम किसी दिन यहाँ आओगी और अपने जीवनके शेष दिन भारतमें ही बिताओगी। अलबत्ता यह हो सकता है कि कैलेनबैक और हैनाकी[२] तरह यहाँकी आबोहवा तुम्हें भी माफिक न आये।

मणिलाल और उसकी पत्नीके बारेमें मैं तुमसे सहमत हूँ। सीता अपनी परीक्षाके लिए बहुत परिश्रम कर रही है।

तुम्हारा,
मो० क० गांधी

कुमारी सो० श्लेसिन
डाकघर बॉक्स नं० २२३४
जोहानिसबर्ग
दक्षिण आफ्रिका

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

८१. पत्र : रिचर्ड बी० ग्रेगको

सेवाग्राम
२० जनवरी, १९४५

प्रिय ग्रेग,

तुम्हारा पत्र पढ़कर खुश भी हुआ और उदास भी। खुश तुम्हारी आस्था और उत्साहके कारण और उदास राधाकी[३] उस बीमारीके बारेमें जानकर जिसे तुम लाइलाज बताते हो। मैं आशा कर रहा हूँ कि कमसे-कम उसकी बीमारीके बारेमें तुम गलत साबित होंगे। फिर भी तुम और मैं कह सकते हैं कि "हमें

१. एक यहूदी महिला जिसने दक्षिण आफ्रिकामें गांधीजी की निजी सचिव और स्टेनो-टाइपिस्टके रूपमें काम किया था।

२. हरमन कैलेनबैककी भतीजी

३. गांधीजी ने ग्रेग और उनकी पत्नीको गोविन्द और राधा नाम दिया था।

नही बल्कि उसे जो मंजूर हो, हो।" मैं यह भी मानता हूँ कि जिसे दुर्भाग्य कहा जाता है वह हमेशा दुर्भाग्य ही नही होता। वैज्ञानिक प्रगतिके बावजूद हम इन बातो के बारेमें बहुत कम जानते हैं।

तुम्हारी पुस्तकका[1] संशोधित संस्करण आने पर उसे मैं न भी पढ़ूँ तो भी प्यारेलाल या अन्य लोग पढ़कर उसके बारेमें मुझे बता देंगे।

तुम दोनोंको प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६७६०) से

८२. पत्र: जमशेदजी नौशेरवानजी मेहताको

सेवाग्राम
२० जनवरी, १९४५

भाई जमशेदजी,[2]

खुर्शेदबहिनको आपने जो लिखा है वह उसने मुझे कल दिखाया। आपने जो लिखा है वह ठीक है लेकिन सिन्ध सरकारके हस्तक्षेप करने से मामला बिगड़ गया। उसे यह आदेश वापस ले लेना चाहिए। तभी आप और मुझ-जैसे लोग काम कर सकते हैं। मैंने तो आर्य समाजको इस बारेमें खूब कहा है। लेकिन यह सरकारका काम नही था। अब क्या होता है, यह विचारणीय है।

बापूके आशीर्वाद

जमशेदजी नौशेरवानजी
बोनस रोड
कराची

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. इकनॉमिक्स ऑफ खद्दर, जिसका दूसरा संस्करण दिसम्बर, १९४६ में प्रकाशित हुआ था।
२. पारसी उद्योगपति और लोक-सेवक

८३. पत्र : रामकुमार भुवालकाको

सेवाग्राम
२० जनवरी, १९४५

भाई रामकुमार,

मेरे आशीर्वाद तो वर-वधुको है ही। दोनों देशके सच्चे सेवक बनें।

बापूके आशीर्वाद

आर० के० भुवालका
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८४. पत्र : कमला बेंकलको

सेवाग्राम
२१ जनवरी, १९४५

प्रिय कमला,

तो तुम और प्रशिक्षण ले रही हो। तुम अपनेको पूर्ण सेवाके उपयुक्त बनाओ और जमकर काममें लग जाओ, तो यह मेरे लिए काफी है।

मैं डोनल्डसे मिला तो था और उन्हें मेरे बारेमें सब-कुछ मालूम था।

उम्मीद है, तुम स्वस्थ होगी।

स्नेह।

बापू

कमलाबाई बेंकल

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८५. पत्र : के० जी० सयीदैनको

सेवाग्राम
२१ जनवरी, १९४५

प्रिय मित्र,

मुझे आपका पुर्जा मिला था। सम्मेलन काफी सफल रहा; उसमें मुझे आपकी कमी खटकती रही। मैं आपके वचनकी कीमत जानता हूँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

डॉ० के० जी० सयीदैन
प्रधान, शिक्षा विभाग
श्रीनगर
कश्मीर

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

८६. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
२१ जनवरी, १९४५

चि० अमृत,

तुम्हारा पत्र आज ही मिला और जवाब दे रहा हूँ। पत्रोंकी नकल तुम्हारे लिए तैयार कराई जा रही है। के० और एस० ने तुम्हारा पत्र पढ़ा है। वैसे, यहाँ पत्रको कौन पढ़ता है इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह सर्वथा तुम्हारे योग्य है. . .।[1]

बर्फके मौसममें तुम्हें कष्ट झेलना पड़ा। मुझे ईर्ष्या होती है। जबतक वह सब चलता रहा, कष्टकर तो रहा ही, लेकिन यह अनुभव योग्य था। परिचारक भी बड़े अच्छे थे। वह मानव-स्वभावका सर्वोत्कृष्ट रूप था। हम बहादुरीके साथ

१. इस अनुच्छेदका शेष अंश काट दिया गया है।

मुस्कराते हुए जितना अधिक कष्ट सहेंगे, उतने ही अधिक मजबूत बनेंगे। जब ईश्वर की इच्छा होगी, तुम मुझसे मिलोगी। इस बीच ढेर सारा प्यार।

बापूके आशीर्वाद[1]

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१५०) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७७८५ से भी

८७. पत्र : जे० शिवषण्मुखम् पिल्लैको

सेवाग्राम
२१ जनवरी, १९४५

प्रिय पिल्लै,

आपका १३ तारीखका पत्र मिला। मैं फिर वही कहूँगा जो पहले कह चुका हूँ।[2] उससे आगे नहीं जा सकता। मुझे इसका अधिकार ही नही है। इसलिए मैं आपको यही राय दूंगा कि आप कोई शिष्टमण्डल न लायें। आपको यह भी मालूम होना चाहिए कि अभी मेरा मौन चालू है। इसलिए मैं अपना सारा काम लिखकर करता हूँ, और जरूरी है कि यह कमसे-कम हो।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री जे० शिवषण्मुखम् पिल्लै, एम० ए०, एम० एल० ए०
मद्रासके भूतपूर्व महापौर
लक्ष्मी विलास, कुट्टी (स्ट्रीट)
नगम्बकम, मद्रास
दक्षिण भारत

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५६) से। सी० डब्ल्यू० ५०६६ से भी; सौजन्य: जे० शिवषण्मुखम् पिल्लै

१. सम्बोधन और हस्ताक्षर हिन्दीमें हैं
२. देखिए खण्ड ७८, पृ० १९६।

८८. पत्र : म्यूरियल लेस्टरको

सेवाग्राम
२१ जनवरी, १९४५

प्रिय म्यूरियल,

मुझे तुम्हारा खबरोंसे भरा चटपटा पत्र मिला। तुमने जिन लोगोंका जिक्र किया है उनमें से अधिकांश जेलोंमें हैं और मैं उनतक पत्रों द्वारा भी नही पहुँच सकता। लेकिन यही तो सत्याग्रहियोंकी नियति है।

बेशक, डोरिस तुम्हारे लिए शक्तिका स्तम्भ है। मैं इस बातकी कल्पना बखूबी कर सकता हूँ कि वह हर परिस्थितिमें अपने कर्त्तव्य स्थलपर डटी हुई है।

मैं काफी अच्छा हूँ।

शेष समाचार प्यारेलालसे।

तुम सबको प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८९. पत्र : सहजानन्द सरस्वतीको

सेवाग्राम
२१ जनवरी, १९४५

प्रिय स्वामीजी,

आपके पत्रके लिए बहुत धन्यवाद। इन्दुलाल मुझसे मिले है।[1] आपका पत्र देने के अलावा उन्होंने कोई नई बात नही कही। मै प्रोफेसर रंगाको[2] एक लम्बे अर्सेसे जानता हूँ। जब उन्होने कांग्रेसियोंके सहयोगसे आन्ध्रमें किये जानेवाले किसान-कार्यकी चर्चा की तब मैंने बेझिझक उनकी योजनाका अनुमोदन कर दिया। आपके

१. देखिए "पुर्जा: इन्दुलाल याज्ञिकको", पृ० ४०-४१।
२. एन० जी० रंगा

कार्यकलापके बारेमें समाचारपत्रोंके अलावा और किसी स्रोतसे मुझे कोई जानकारी नहीं है। आप कृपया बिहारके कांग्रेसजनोके साथ सम्पर्क स्थापित करें।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

स्वामी सहजानन्द सरस्वती
अध्यक्ष, अखिल भारतीय किसान सभा
सीताराम आश्रम, बिहटा, पटना

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९०. पत्र : एल० कामेश्वरराव शर्माको

सेवाग्राम
२१ जनवरी, १९४५

प्रिय कामेश्वर शर्मा,

मैंने आपका पूरा पत्र पढ़ लिया है। आप जब चाहें तब आ सकते है। मेरा मौन चल रहा है, लेकिन आप डॉ० सुशीला नैयर और रोगियोंसे मिल सकेंगे। आप अपना उपचार आजमाकर देख सकते है।

डॉ० नैयरने मेरे बारेमें जो-कुछ कहा है, उस सबका मै समर्थन करता हूँ। मैंने जो कहा है वह कठिन अनुभवका परिणाम है। मुझे आपके पितासे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मैंने उन्हें सरदार वल्लभभाईके लिए बुलाया था। वे कुछ नहीं कर सके। उनकी स्वीकारोक्तियाँ आँख खोलनेवाली थीं। मै अधिकांश प्राकृतिक चिकित्सकोसे मिल चुका हूँ। वे परस्पर सहमत नही होते, हठी होते है, बल्कि आलसी भी।

अब आप देख सकते है कि यदि मै वह सारा काम कर भी सकता तो भी सम्मेलनकी अध्यक्षता क्यों नही कर सकता अथवा उसमें भाग क्यों नही ले सकता। न ही मैं आपको कोई उपयोगी सन्देश भेज सकता हूँ। वह आलोचनात्मक होगा। लेकिन आप निजी तौरपर इसका जो उपयोग करना चाहे, कर सकते हैं। मै चाहता हूँ कि प्राकृतिक चिकित्सा सच्ची प्रगति करे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

डॉ० एल० कामेश्वर शर्मा, एम० ए०, बी० एस० सी०
द इंडियन इन्स्टिट्यूट ऑफ नेचुरल थेरेप्यूटिक्स
पुडुकोट्टई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९१. पत्र : महेन्द्र भोगीभाई दवेको

सेवाग्राम
२१ जनवरी, १९४५

चि० महेन्द्र,[1]

तेरा पत्र मिला। भोगीभाईका पूरा नाम और पता मुझे भेजेगा तो मैं उन्हें लिखूंगा। तू क्या करता है? तुम लोग कितने भाई-बहिन हो? उतावलीमें अदालतमें न जाना। मुझसे जो बन सकेगा, मैं करूँगा। तू कहांतक पढ़ा हुआ है?[2]

बापूके आशीर्वाद

महेन्द्र भोगीभाई
केवलराम मावजीका मकान
राजकोट

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९२. पत्र : दिनशा मेहताको

सेवाग्राम
२१ जनवरी, १९४५

चि० दिनशा,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं ठीक हूँ। मैं दिनको मौन रखता हूँ। वह शक्तिका संचय करने के लिए करता हूँ।

दूधकी चिकित्सा (उपाय) पर मेरा विश्वास अभी नहीं बैठा है। तथापि यदि मुझे तुम्हारे पास रहने का अवसर मिले तो तुम्हारी देखरेखमें मैं वह चिकित्सा अवश्य कराऊँ। अभी तो यहांसे निकलने की इच्छा ही नही होती। यहांका काम भी करता हूँ। ईश्वर जब वहाँ ले जायेगा तब आऊँगा।

हमारे बीच कुछ मतभेद हैं। लेकिन उसकी मुझे तनिक भी चिन्ता नही। तुमसे मैं काम ले सकता हूँ। मेरे लिए इतना ही काफी है।

देवदासको लिखा तुम्हारा पत्र तीखा है। लेकिन तुमने लिखकर ठीक ही किया। तुम यही लिख सकते थे। मैंने तो उसे तुमसे पहले लिखा था।[3] ट्रस्ट तो बनेगा।

१. केवलराम मावजी दवेके पोते
२. देखिए "पत्र : शामळदास गांधीको", १०-२-१९४५।
३. देखिए पृ० १-२।

लेकिन वह बने या न बने, काम करने लायक भी जमीन मिल जाये तो काम तो करना ही है। यह न हो पाये तब भी तुम कोई खाली तो बैठे नहीं हो।

अरदेशिर बढ़ रहा होगा। जिन्ना साहबके बारेमें समझा।

बापूकी दुआ

डॉ० दिनशा मेहता
६, ताड़ीवाला रोड
पूना

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

९३. पत्र: सरलादेवी साराभाईको

सेवाग्राम
२१ जनवरी, १९४५

प्यारी बहिन,[1]

आपके दोनों लेख शुरूसे अन्ततक पढ़ गया। मुझे वे अच्छे लगे। उनसे आपकी सावधानी और सुघड़ताका परिचय मिलता है। यदि यह आपकी अकेलीकी ही मेहनत है तो इसमें आपने कितना अधिक समय लगाया होगा। हालाँकि बहिन मोन्तेस्सौरीको मैं खूब अच्छी तरह जानता हूँ, फिर भी कहा जा सकता है कि मैंने उनकी लिखी कोई भी चीज नहीं पढ़ी है।

आपका लेख आशादेवी और आर्यनायकमजीके लिए बहुत उपयोगी है, इसलिए मैंने उन्हें दे दिया है। बादमें बापाको भेजूंगा।

इसका यदि हिन्दुस्तानी अनुवाद करवा सकें तो करवाकर भेजना। नहीं तो मैं यहीं करवा लूंगा।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

सरलादेवी साराभाई
रिट्रीट
शाहीबाग
अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. अम्बालाल- साराभाईकी पत्नी

९४. पत्र : जयदेवीको

सेवाग्राम
२१ जनवरी, १९४५

चि० जयदेवी,

मैंने तुमको आशीर्वाद १ली तारीखको भेजने का कहा था लेकिन मैं भूल गया। जिस लड़कीको मैंने कह रखा था उसने आज कहा। तुम सब अच्छे होंगे।

बापूके आशीर्वाद

जयदेवी
८, एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९५. पत्र : डॉ० सैयद महमूदको

सेवाग्राम
२२ जनवरी, १९४५

प्रिय महमूद,

मुझे तुम्हारे लम्बे पत्रपर कोई आपत्ति नहीं है। इसमें तुमने अपने मनकी बात साफ कह दी है। तुम्हारे लिए इतना काफी है।

किसी भी लीगीको मेरे पास आने की जरूरत नहीं है। सर ना० के[1] इतना-भर लिखने की जरूरत है कि मैं बंगालमें — उसके मिदनापुर और चटगाँव[2] जिलोंमें भी — प्रवेश कर सकता हूँ और यह कि मेरे काममें कोई हस्तक्षेप नहीं करेगा; फिर तो मैं तुरन्त चला जाऊँगा, चाहे स्वस्थ होऊँ अथवा कमजोर। लेकिन उन्होंने मुझे सन्देश भेजा है कि वे मेरा स्वागत नहीं कर सकेंगे और सरकारपर उनका कोई प्रभाव नहीं है।

जहाँतक साम्यवादियोका प्रश्न है, तुम्हे समाचारपत्र देखने चाहिए। मैंने उनकी बात मानने और उनसे मैत्री करने की जितनी चाहिए उससे ज्यादा कोशिश की। लेकिन जोशीने आदेशात्मक ढगसे लिखा कि अब मुझे उन्हे पत्र नहीं लिखना चाहिए।[3]

१. अप्रैल १९४३ से बंगालके मुख्यमन्त्री ख्वाजा नाजिमुद्दीन

२. मिदनापुर और चटगाँव क्षेत्रोंमें भयंकर अकाल था और फलस्वरूप वहाँकी आर्थिक व्यवस्था नष्ट-भ्रष्ट हो गई थी।

३. पूरणचन्द्र जोशीके साथ हुई गांधीजी की बातचीत और पत्र-व्यवहारके लिए देखिए खण्ड ७७, पृ० ३२९-३० और "पत्र : पूरणचन्द्र जोशीको", ५-२-१९४५।

वे चाहते थे कि मैं उनसे भूलाभाई, श्रीमती नायडू अथवा सी० आर० की मार्फत बात करूँ। सी० आर० ने मना कर दिया। मामला भूलाभाईके पास है। उसमें कुछ दिक्कत है। जो भी हो, मैंने सार्वजनिक रूपसे यह घोषणा कर दी है कि यदि वे कांग्रेसके प्रतिज्ञा-पत्रपर हस्ताक्षर कर देते हैं तो उन्हे प्राथमिक सदस्यतासे वंचित नहीं रखा जा सकता। व्यक्तिगत रूपसे मैं तो चाहूँगा कि हबीबकी[1] तरह उनमें से कोई भी मेरे पास आकर रहे। उनसे बने तो वे मुझे अपने विचारोंका कायल कर सकते है। उनमें से कुछ लोग यहाँ आकर रहे भी हैं। क्या मैं इससे ज्यादा कुछ कर सकता हूँ? और क्या मुझे करना चाहिए?

जहाँतक नरीमानका प्रश्न है, तुम नही जानते कि मैंने क्या किया है।[2] मुझे तुम्हें सारी कहानी नही लिखनी चाहिए। तुम चाहो तो पी० से जान सकते हो। अब मै कुछ नही कर सकता। केवल कार्य-समिति ही कार्रवाई कर सकती है। मेरे विचारमें इसका हल खुद नरीमानके ही हाथोंमें है।

मेरा खयाल है कि तुम मुझसे जो-कुछ जानना चाहते थे, सब मैंने लिख दिया है। यदि कुछ रह गया हो तो पूछना, लिखकर अथवा बोलकर। आजकी रात मुझसे जयपुर राज्यके हीरालाल शास्त्री मिलने आयेंगे।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०६७) से

९६. पत्र : कृष्णचन्द्रको

सेवाग्राम
२२ जनवरी, १९४५

चि० कृ० च०,

तुमारा खत पढ़ गया। मुझे कुछ नाऊमेदी नहीं है। तुमसे हो सके मुझे देते ही . . .।[3] अवश्य सं[घ]में ही काम करो। तुम्हारा वर्णन अच्छा है। ता[लीमी] सं[घ]में जो हो सके करो। मैं मानता हूं कि तुमारे कुछ न कुछ पढ़ना चाहीये। थोड़ा समय निकाले। थोड़ा करवा अपने लिये अवश्य निकालो। इतना तो पक्का करो। चक्कीमें सुधारणाको अवकाश है, लेकिन वह काम आज तुम्हारा नहीं है। जो है वह ठीक है। मुझे लिखा करो। पूछना है सो पूछो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४५७) से

१. सैयद महमूदके पुत्र

२. नरीमान-काण्ड के ब्योरेके लिए देखिए खण्ड ६६, पृ० ६२-६३, २५७-५९, २७५-७६, ३०७-८ और खण्ड ६७, पृ० २६० ।

३. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ अस्पष्ट है।

९७. पत्र : वसन्तलाल मुरारकाको

सेवाग्राम
२२ जनवरी, १९४५

भाई वसतलाल,

११ फॅवरवारीके[1] बारेमें मेरे आशीर्वाद चाहते हो? मेरे आशीर्वाद तो जमनालालजीके बारेमें जो-कुछ किया जाय उसमें है ही। जो-कुछ बन सके सो करो, करवाओ।

बापुके आशीर्वाद

वसंतलाल मुरारका
नवजीवन सघ
१३२१, हैरिसन रोड
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९८. तार : वी० के० कृष्ण मेननको[2]

अविलम्बनीय

२३ जनवरी, १९४५

कृष्ण मेनन
इंडिया लीग, १६५ स्ट्रैण्ड
लन्दन, डब्ल्यू० सी० २

स्वाधीनता विश्व-शान्तिके लिए और भारतकी शान्तिके लिए भी आवश्यक है। यह तो मिलकर ही रहेगी लेकिन यदि इंग्लैण्ड और अन्य शक्तियाँ इस स्पष्ट बातको समझ ले तो जल्दी मिलेगी। मोहीउद्दीन पुलिन सीलको सूचित करें।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल। हिन्दू, २६-१-१९४५ से भी

१. जमनालाल बजाजकी पुण्य-तिथि
२. यह तार लन्दनमें स्वाधीनता-दिवस (२६ जनवरी) मनाये जाने के सिलसिलेमें भेजा गया था।

९९. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

सेवाग्राम
२३ जनवरी, १९४५

चि० मुन्नालाल,

अखबारोंसे सम्बन्धित शिकायत मेरे पास आई है। ऐसा लगता है कि अखबारों का धन्धा होने लगा है। इसलिए यह जरूरी है कि आदेशके अनुसार अखबार वापस आयें। यहाँसे तो मैं यह देखता हूँ कि कब वापस आते हैं। तुम मुझे मामला समझाना। जैसा तुम कहोगे करूँगा। सभी काम सरल और सीधे ढंगसे चलने चाहिए। यह मामला तो बहुत जल्दी निबटाया जा सकता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४६७) से। सी० डब्ल्यू० ७१८२ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गंगादास शाह

१००. पत्र : शारदा गो० चोखावालाको

सेवाग्राम
२३ जनवरी, १९४५

चि० बबुड़ी,

तूने जो लिखा है, ठीक है। लेकिन इसके बावजूद मैं थोड़ी-बहुत देखभाल तो करूँगा ही। और शकरीबहिन भी तेरी देखभाल करेगी ही। फिर भी मैं यह जानता हूँ कि तेरा सही स्थान जहाँ चोखावाला हो वही है। और अगर तेरी तबीयत ठीक रह सकती हो तब तो मुझे कुछ कहना ही नही है। इसलिए मेरे विचार जान लेने के बाद तुझे जैसा ठीक लगे वैसा करना। इतना-भर समझ ले कि यहाँ तू जब आना चाहे निःसंकोच आ सकती है। मेरे पास आने में संकोचकी बिलकुल जरूरत नहीं है।

तुम दोनोंको,
बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००५१) से। सौजन्य: शारदा गो० चोखावाला

१०१. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

२३ जनवरी, १९४५

देते रहो। मुझे बताते रहो। ता [लीमी] स [घ] होना चाहिए। मतलब यह है कि मैं तुमको से [वाग्राम] से बाहर नही भेजुगा। और क्योकि संघमें [कार्य] शुरू किया है, अब जल्दी छोडना नही है। सो तो अवी नही होगा लेकिन उनको समझा-कर ही कार्य संकुचित करना। सब हालतमें तैयारी तो नयी तालीमकी ही करना है। करघा काममें भी दृष्टि वही मेरी तो है। हर प्रवृत्ति नयी तालीमके ढाचेमें डालना। एक पैंदा कर लेना।[1] बनाना है तो बनाना भी। जब चाहीये तब मिल सकता है तो ठीक है। तुमारे खतमें ऐसा पाया कि आठ घंटेके लिए।[2]

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४५८) से

१०२. पत्र : ए० एन० शर्माको

सेवाग्राम

२४ जनवरी, १९४५

प्रिय शर्मा,

तुम हिन्दी जल्दी सीख लोगे, ऐसी मुझे आशा है।

तुम जो कहना चाहते हो वह मैं समझ गया हूँ। मैं जो चाहता हूँ कि हमारे मित्र सभी मरीजोसे समान व्यवहार करे वह इस अर्थमें कि जिसको जितनी जरूरत हो उसी हिसावसे उसकी ओर ध्यान दिया जाये। किसीकी भी ओर उसके दर्जेके हिसावसे विशेष ध्यान नही दिया जा सकता। इसलिए हमारे मित्रको सहायकों और तीमारदारोके मामलेमें भी अपनी मर्यादासे वाहर नही जाना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि कोई प्राकृतिक चिकित्सक उतनी पूर्णता हासिल् करके दिखाये जितनी कि सम्भव है।

तुम्हें जब फुरसत मिले तब मुझे उनकी चिकित्साके बारेमें सविस्तार बताना।

मेरी प्राकृतिक चिकित्सा मेरे लिए पर्याप्त प्रभावकारी सिद्ध हुई है।

स्नेह।

तुम्हारा,

ए० एन० शर्मा

भीमावरम्

अंग्रेजीकी नकलसे। सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

१ और २ साधन-सूत्रके अनुसार

१०३. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

सेवाग्राम
२४ जनवरी, १९४५

चि० मुन्नालाल,

साथका पत्र कुछ पंक्तियोंको रेखांकित करके वापस भेज रहा हूँ। इतना हिस्सा दोनोंमें खराब है। लोगोंपर एकदम आरोप कदापि नहीं लगाना चाहिए। यह जल्दबाजीकी और झुंझलाहटकी निशानी है। मेरे पास जो चन्द मिनट खाली थे उनमें मैंने इतना लिख दिया है। मुझसे शामको या सवेरे सवा आठ बजेसे पहले मिल जाना। तब चर्चा करके बाकी सब बातें भी साफ कर लेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६४५) से

१०४. पत्र : भूलाभाई देसाईको

सेवाग्राम
२४ जनवरी, १९४५

भाई भूलाभाई,

अखबारोंके विवरणोंने मुझे चौंका दिया है। जिन्ना कुछ कहते हैं, लियाकत अली कुछ। मेरे बारेमें भी कहा जाता है कि मेरी इच्छा है कि कार्य-समितिकी उपेक्षा करके संयुक्त मन्त्रिमण्डल बनाया जाये। इस सबका क्या मतलब है? मुझे तुमपर पूरा विश्वास है। इस बातका ध्यान रखना कि कार्य-समितिकी सहमतिके बिना कुछ नहीं हो। मैंने तुम्हें गुजरातीमें[1] जो लिखा था, मैं उसपर निर्भर हूँ। उसमें तो ऐसा कुछ नहीं है जिससे इन अखबारोंकी बातोंको समर्थन मिलता हो।

सब कदम साथ-साथ उठाये जायें, यह बात मैं समझ सकता हूँ। लेकिन कार्य-समितिकी सम्मतिके बिना हम एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते, यह बात स्पष्ट कर देना।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजरातीसे : भूलाभाई देसाई पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. देखिए पृ० ११।

१०५. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

सेवाग्राम
२४ जनवरी, १९४५

चि० घनश्यामदास,

तुम्हारा खत मिला। खासी तो कवसे चली गई है। दौर्बल्य है। वह भी धीरे २ जा रहा है। इस वक्त तो उपचार मेरा नैसर्गिक ही हो रहा है। हवा फेरके लिये उत्साह बहूत कम है। आवश्यकता होगी तो जाऊंगा।

फंडकी सभाके बारेमें मेरा आग्रह ही नही। जहां होगी वहां जाउंगा। वापा, मृदुके साथ पत्र व्यवहार हो रहा है।

नई तालीमके बारेमें जब मिलोगे तव तुमारे विचार सुनुगा। मैंने शिक्षकोंसे चर्चा तो की है। उद्यो[ग] द्वारा जो शिक्षण दिया जाय उसे स्वावलम्बी होना ही है।

दिनशाके व्यौराकी प्रतीक्षा क्या? तुमारे कहने का तो तात्पर्य ही [वही] था। हजारकी ही वात होगी। उसमें जितनी वृद्धि करनी है वह हो जायेगी।

वापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०६४) से; सौजन्य: घनश्यामदास विड़ला। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य: प्यारेलाल

१०६. एक पुर्जा

२४ जनवरी, १९४५

काका साहवको कहो अपनी तवीयत विलकुल सरस कर ले। मुं[ह]में चांदा नही पड़ना चाहीये। यहांके वैद्यने दवा भेजी है उसका परिणाम वतावे। दर्दकी पूरी विगत लाना।

जो अभ्यास करते है सो मुझे प्रिय है लेकिन मै चाहता हूं कि उर्दु लिपि अच्छी तरह समज ले और उर्दु भाषा भी अभ्यास करे। अमृतलाल ठीक काम कर रहा है। सिर्फ काकाके ही नामसे और काकाका काम समजकर। इसलिये जव वाहर आवेंगे तव हिंदी-उर्दुका काम तो उनको करना ही होगा। लेकिन जेलमें उसका भी विचार न करे। मुझे कुछ जल्दी नही है। दिल चाहे तव सरकार छोड़े। जनताके शान्त अहिंसामय वलसे छोड़े सो दूसरी वात है। ऐसा समय अब तो नही पाता। लेकिन सत्याग्रहीको छुटनेके साथ संवंध ही नही। छुटे तो भला, न छुटे तो भला।

मैं पाता हूं विनोबा और काका खूब काम किया है। साथमें है, वह भी मुझे बहूत प्रिय है। मेरी इनकी इच्छा है सही कि दोनों अच्छे रहे और जब निकलें तब ताजे निकलें। मुझे दुःख है कि मैं ऐसा नहीं रह सका। उसका मुझे शर्म है। वह शर्ममें दूसरे तो न पड़े। मैंने तो सबके लिये और कमसे-कम मेरे लिये सात वर्ष माना था। इतनेमें बुखारने[1] मुझे छुड़वाया। काका विनोबाके लिये मुझे यह नहीं चाहीये।

बापु

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६११) से

१०७. पत्र : विट्ठल दास्तानेको

सेवाग्राम
२४ जनवरी, १९४५

भाई दास्ताने,

तुम्हारा कार्यक्रम मैं पढ़ गया। मुझे पसंद है और मेरे आशीर्वाद भी है। मेरा एक खत मिल गया होगा।

बापुके आशीर्वाद

दास्ताने वकील
भुसावल

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१०८. तार : चण्डीप्रसाद वैद्यको

सेवाग्राम
२५ जनवरी, १९४५

चण्डीप्रसाद वैद्य
बिड़ला मन्दिर दवाखाना
बिड़ला मन्दिरके पास
नई दिल्ली

तुमने बहुत ज्यादा समय लगा दिया है। हरिइच्छाके स्वास्थ्यमें कोई सुधार नहीं।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. गांधीजी को मलेरिया हो गया था।

१०९. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

सेवाग्राम
२५ जनवरी, १९४५

प्रिय कु०,

तुम्हारी पुस्तिका[1] आद्योपान्त पढ गया। उसकी प्रस्तावना,[2] या उसे तुम जो-कुछ भी कहो, तुम्हें भेज दूंगा। मुझे पुस्तिका बहुत पसन्द आई है।

जल्दीसे बिलकुल अच्छे हो जाओ। भारतानन्द कैसा है?

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१६८) से

११०. पत्र : विलियम क्यू० लैशको

सेवाग्राम
२५ जनवरी, १९४५

प्रिय फादर लैश,

आप आये, इस बातकी मुझे बड़ी खुशी है। कृपया सभी अंग्रेज मित्रोंको बता दें कि हम सब परिणामकी चिन्ता किये बिना अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं। एक अंग्रेज धर्म-पुरुषने भी तो कहा है कि "जिस प्रकार कर्जकी अदायगी दान नही है उसी प्रकार कर्त्तव्यका पालन कोई पुण्य-कार्य नहीं है"। अहिंसा, जिसका मतलब है प्रेम, मानव-जातिका सर्वोच्च नियम है उसमें अपवादके लिए अवकाश नही है। मै इतने वर्षोंसे उसी नियमके अनुसार जीने की कोशिश करता रहा हूँ और आशा करता हूँ कि मेरी मृत्यु भी इसी अवस्थामें होगी।

आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४१) से

१. प्रैक्टिस एण्ड प्रिसेप्ट्स ऑफ जीसस
२. देखिए "प्रस्तावना: 'प्रैक्टिस एण्ड प्रिसेप्ट्स ऑफ जीसस' की", २१-३-१९४५।

१११. पत्र: छगनलाल जोशीको

सेवाग्राम
२५ जनवरी, १९४५

चि० छगनलाल,

तुम आशीर्वाद तो भविष्यमें तुम्हें जो विजय मिलेगी उसके लिए माँगते हो न? तुम्हें विजय मिलेगी, इसीमें मेरा आशीर्वाद निहित है। एक ओर तुम अवर्णों की भारी सेवा कर रहे हो तो दूसरी ओर सवर्णोंकी भी सेवा कर रहे हो, अर्थात् उन्हें अवर्ण बनाने की कोशिश कर रहे हो। ये लोग किस मुँहसे शेखी मारते हैं? क्या ये लोग हिन्दू धर्मको चितापर चढ़ाने के लिए तैयार हो गये हैं?

बापूके आशीर्वाद

छगनलाल जोशी
राजकोट

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

११२. पत्र: राजदेवको

सेवाग्राम
२५ जनवरी, १९४५

भाई राजदेव,

मेरे आशीर्वाद तो है। प्रयत्न करना हमारा काम है। पीछे फांसी चढ़ो या छूटो। उसे हम क्या करें।

मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

११३. पत्र : रामनरेश त्रिपाठीको

सेवाग्राम
२५ जनवरी, १९४५

भाई रामनरेश,[1]

लड़कीके विवाहमें तुम्हें आशीर्वाद क्यों? तुम्हारे और मेरे लिये तो जन्म, मरण, विवाह एक ही वस्तुका रूपानंतर है ना? तो भी आशीर्वाद चाहिये तो लो।

बापुना आशीर्वाद

रामनरेश त्रिपाठी
सुलतानपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

११४. पत्र : आनन्द तोताराम हिंगोरानीको

सेवाग्राम
२५ जनवरी, १९४५

चि० आनन्द,

तुम्हारा पत्र मिला। आशा रखें कि तुम सबको अंतमें वहां जाने से लाभ ही होगा। मुझको कुछ पता नही चलता। शर्माने[2] लंबा खत लिखा है। उनको पूरा विश्वास है। अगर उपचारक कहते हैं कि तुम उसे छोड सकते हो और उपचार घर पर भी हो सकता है तो अवश्य फेबरवारीमें आ जाओ। जैसा तुमको ठीक लगे वैसा करो। मेरा कहीं जाना फेबरवारीमें नही होगा लेकिन वह अलग बात है।

मुझे अच्छा है। मुझे तुम तीनके लिए ख्याल रहता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार तथा आनन्द तो० हिंगोरानी

१. हिन्दीके कवि
२. ए० एन० शर्मा

११५. पत्र : कृष्णचन्द्रको

सेवाग्राम
२५ जनवरी, १९४५

चि० कृ०,

तुमारा संबंध ता[लीमी] सं[घ]से कुछ अधिक है। वे मुक्ति दे इतना लेना। उसीमें तुम्हारा और उनका भला है। पारमार्थिक दृष्टिसे संबंध बढ़ाना नहीं, घटाना —*वह उनसे मश्विरा करके।*

मैं बताता रहूंगा जब आवश्यकता होगी। रोजनिशि बनाते रहो। गबराहट तो छोड़ो ही। न० [ई] ता[लीम] पर पूरा काबू पाना है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४५९) से

११६. पत्र : श्रीमन्नारायणको

सेवाग्राम
२५ जनवरी, १९४५

चि० श्रीमन्,

तुम दोनोंका प्रेम अवर्णनीय है। प्रेमके खातर भी तुमारे यहां जानेका दिल होता है।[1] शिबिर[2] चलता है तब तक तो यहांसे छुट नहीं सकता। मौन तो रुचिकर है मै बच जाता हूं। कामपर तो चढ गया हूं ऐसा मानो। तो भी तुमारे यहां जाने का दिल रहेगा ही।

बापुके आशीर्वाद

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३०३

१. *श्रीमन्नारायण और उनकी पत्नी मदालसाने गांधीजीको वायु-परिवर्तनके लिए वर्धामें अपने* यहाँ आने का निमन्त्रण दिया था।

२. कनु गांधी द्वारा आयोजित समग्र ग्रामसेवा शिविर

११७. पुर्जा: श्रीमन्नारायणको

[२५ जनवरी, १९४५ के पश्चात्][1]

मेरा आने का समजमें आया न? जलदीमें जलदी २३ को आ सकता हूं। २५ तो है ही।[2] पीछे देखुगा कहां तक ठेर सकुंगा। यहां काम काफी पड़ा है। तुमारे यहां आने के खातिर ही आना है। मुझे यह बात प्रिय है।

सुदरलालजीसे खूब बातें कर लो। कुछ नाम दा० के[3] बताये। मैंने कहा श्रीमनको बताओ, वे कहेगा वही मै मंजुर करुंगा। एक भाई या बहन कहते थे तुमारे पुस्तकने[4] उनको मदद दी।

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३०३

११८. पत्र: जी० सीताराम शास्त्रीको

सेवाग्राम
स्वाधीनता दिवस, २६ जनवरी, १९४५

प्रिय सीताराम शास्त्री,

देशभक्त वेंकटप्पय्या[5] उम्रमें मुझसे बड़े हैं। लेकिन उनमें पहले जैसी बुद्धि और शक्ति दिखाई देती है। ईश्वर करे, वे दीर्घायु हों और अन्ततक काम करते रहें। वे इसके योग्य हैं।

स्नेह।

तुम्हारा,
बापू

सीताराम शास्त्री
विनय आश्रम
जिला गुण्टूर

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें यह पत्र श्रीमन्नारायणको लिखे २५ जनवरी, १९४५ के पत्रके पश्चात् रखा गया है; देखिए पिछला शीर्षक।

२. हिन्दुस्तानी प्रचार सभाका सम्मेलन २५ और २६ फरवरीको वर्धामें होनेवाला था।

३. दाखला तरीके यानी उदाहरणार्थ

४. द गांधीयन प्लान ऑफ इकनॉमिक डेवलपमेन्ट फॉर इंडिया

५. जो जल्द ही अस्सी वर्षके होनेवाले थे

११९. पत्र : रंगनायकीको

सेवाग्राम
२६ जनवरी, १९४५

चि० रंगनायकी,

तुम्हारा अच्छा-सा पत्र मिला। यदि तुम अपनी लड़कीकी प्रथम और योग्य विद्यार्थी बन सको तो कितना अच्छा हो। तब तुम मुझे हिन्दुस्तानीमें लिखोगी।

मुझे खुशी है कि तुम्हारी उदासी दूर हो गई है।

बेशक, मैं यह मानता हूँ कि बावजूद इसके कि स्त्रियोंको पुरुषोंके समान नागरिक अधिकार प्राप्त हैं, गर्भवती स्त्रियाँ विशेष छुट्टियोंकी हकदार हैं। एक भली और नेक महिला अपने लिए नहीं वरन् विश्वके लिए गर्भ धारण करती है, इसलिए छुट्टी कोई विशेष सुविधा नहीं है।

मैं फोटोपर अपने आशीर्वाद लिखकर उसे वापस भेज रहा हूँ।

अमतुल सलाम कलकत्तामें महान सेवा-कार्य कर रही है।

जब तुम आओगी तब तुम इस जगहको बहुत फैला हुआ पाओगी।

स्नेह।

बापू

रंगनायकी
श्रीरंगम

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२०. पत्र : गोरखपुरके जेल अधीक्षकको

सेवाग्राम
२६ जनवरी, १९४५

अधीक्षक
जेल, गोरखपुर (संयुक्त प्रान्त)

प्रिय महोदय,

मेरे पास लगातार इस आशयके पत्र आ रहे हैं कि बाबा राघवदास आपकी हिरासतमें हैं और विक्षिप्त हो गये हैं। यदि आप मुझे सही स्थिति बताने और कोई चिकित्सक अथवा वैद्य भेजने की अनुमति देने की कृपा करें तो मैं आपका बड़ा आभारी होऊँगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२१. पत्र: विट्ठल ल० फड़केको

सेवाग्राम
२६ जनवरी, १९४५

चि० मामा,

तुम्हारा पत्र मिला। शान्तिकुमार और उसकी पत्नीके[1] बारेमें जो तुम कहते हो वही ठीक है। उसकी सेवाका बदला ईश्वर ही देगा। यह न हमारे बूतेकी बात है न तुम्हारे।

यहाँ जब आना चाहो तब आ जाना। जैसा करना चाहो वैसा करना।

घड़ियाँ सभी महँगी हैं। घड़ीका मोह छोड़ दो तो मुझे तो अच्छा लगे। एन्ड्रयूज घड़ीके बिना काम चला लेते थे।

उनके जैसे और सेवक भी हैं। सवेरा, दोपहर और शामका पता तो सहजमें ही चल जाता है। लेकिन अगर घड़ीका मोह न छूटे तो मुझे लिखना, मैं कहींसे प्राप्त करके तुम्हें दूँगा। अगर चाहिए ही हो, तो लिखना कैसी चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८४६) से

१२२. पत्र: मथुरादास त्रिकमजीको

सेवाग्राम
२६ जनवरी, १९४५

चि० मथुरादास,

तेरा पत्र मिला। तू क्यों इतना ज्यादा मोह रखता है? सब-कुछ हरकिशनको सौंपकर निश्चिन्त हो जा तो कितना अच्छा हो। 'शकुन्तला' का अनुवाद तू क्यो कर रहा है? इसका ज्योत्सना क्या उपयोग करेगी? किस प्रकारसे करेगी? अन्ततः यह तो नाटक है। इसमें बहुत सारा भाग मधुर है। आज जैसा जीवन है उसके लिए नाटक नही चाहिए। यह जीवन तो खरा खेल है। अधिकसे-अधिक तू उसे प्रासंगिक भाग उपलब्ध अनुवादोंमें से पढ़ जाने के लिए कह दे। लेकिन तूने तो मेहनत की है। इसलिए अब तो मैं इतना ही कह सकता हूँ कि वह सफल हो, और इसमें तनिक भी सन्देह नही कि मैं चाहूँगा कि ज्योत्सना इससे शिक्षा आदि ग्रहण करे। यह

१. सुमति मोरारजी

ज्योत्सनाके लिए मेरा आशीर्वाद है। तू अच्छा हो जा, मैं तो अच्छा हूँ ही। विवाहमें प्यारेलाल अथवा सुशीला कैसे आ सकते हैं? दोनों काममें लगे हुए हैं। यहाँ शिविर चल रहा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१२३. पत्र: गजानन नायकको

सेवाग्राम
२६ जनवरी, १९४५

चि० गजानन,

तुम्हें स्वामित्वसे काम है या उपयोगसे? अमुक भाड़ेपर इस मकानके उपयोगका हक मिल सके तो? तुम ऐसा तो नहीं मानते हो न कि मैं जो चाहे सो कर अथवा करवा सकता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गजानन नायक
गुलवाड़ी
सेवाग्राम

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१२४. पत्र: शीलाको

सेवाग्राम
२६ जनवरी, १९४५

चि० शीला,

तेरा पो[स्ट] का[र्ड] मिला। तेरा वर्णन अच्छा है। आज स्वतंत्रता दिन है। तुझे स्मरण है? तू उर्दू लिखती है? नहीं तो सीख लो। मेरे तरफसे और खत शीघ्र नहीं मिलेंगे।

बापुके आशीर्वाद

शीला
मार्फत निर्मलस्वरूप
प्रेमपुरी, रेलवे रोड
मेरठ, संयुक्त प्रान्त

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१२५. भाषण: प्रार्थना-सभामें

सेवाग्राम
२६ जनवरी, १९४५

भारतकी स्वाधीनताके साथ विश्वकी समस्त शोषित मानव जातिकी स्वतन्त्रता जुड़ी हुई है — यहाँतक कि शोषकोंकी भी, अर्थात् साम्राज्यवादी इंग्लैण्ड और अन्य साम्राज्यवादी देशोंकी [जनताकी] स्वतन्त्रता भी।

उस दिन सुबह आश्रमके सामने घटित हुई एक घटनाकी, जिसमें पुलिसने कार्यकर्त्ताओंके सामान्य ग्राम-सफाई कार्यक्रममें हस्तक्षेप करने की कोशिश की थी, चर्चा करते हुए गांधीजी ने कहा कि यह बात बार-बार घोषित की जा चुकी है कि स्वाधीनता दिवसके अवसरपर कोई उग्र कार्यक्रम नहीं आयोजित किया जायेगा, और उसके बाद किसीके लिए सविनय अवज्ञा करना सम्भव नहीं था। उन्होंने कहा कि सेवाग्राममें विभिन्न संस्थाओंके सदस्य मेरे मार्ग-निर्देशनमें काम करते हैं।

गांधीजी ने कहा कि मैंने रचनात्मक कार्यक्रम देशके सामने वर्षों पहले रखा था, और सत्य तथा अहिंसाके जरिये पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने का एकमात्र यही तरीका है। मैं उग्र ढंगका कार्यक्रम नहीं चाहता, लेकिन मैंने यह भी कहा है कि यदि कोई रचनात्मक कार्यक्रमको लागू करने के काममें हस्तक्षेप करता है, तो वैसी स्थितिमें मैं लोगोंसे अपेक्षा करता हूँ कि वे मर मिटें, लेकिन पीछे नहीं हटें। ऐसा ही एक अवसर आज सवेरे उपस्थित हुआ। एक जत्था[1] कुदालें, फावड़े, झाड़ू और टोकरियाँ लेकर चुपचाप कामपर जा रहा था। उस जत्थेको रोक दिया गया। जत्थेवालोंके पास हथियार कोई लड़ाईके नहीं थे। लेकिन फिर भी पुलिसने जिद की कि वे कतार तोड़कर चलेंगे तभी उन्हें आगे बढ़ने दिया जायेगा। ऐसी परिस्थितियोंमें यदि वे सत्ताके सामने झुक जाते तो वैसी अहिंसाका मतलब शुद्ध कायरता होता। गांधीजी ने आगे कहा कि आज शामके लिए जो भजन रखा गया, वह बहुत ही ज्यादा समीचीन है और उसका मुख्य भाव यह है कि सच्चा सुख दुःखके गर्भमें ही छिपा होता है। सुननेवालोंके लिए इसका मतलब यह था कि सच्चा सुख, अर्थात् स्वराज्य, दुःख, अर्थात् कष्ट-सहनसे ही आता है। स्वयंसेवकोंने कतार तोड़ने से इनकार करके और साथ ही पुलिसका घेरा न तोड़कर बिलकुल ठीक किया। हालाँकि पुलिसवालोंके पास बन्दूक आदि थे, लेकिन स्वयंसेवकोंके शालीन और दृढ़ रुखके सामने वे व्यर्थ हो गये।[2] हमें न तो गोली चलाने का कारण उपस्थित करना चाहिए और न उससे बचने की ही

१. इस जत्थेमें सेवाग्रामकी विभिन्न संस्थाओंके २५० सदस्य थे।
२. दो घण्टेके बाद पुलिस हट गई और सफाईका कार्यक्रम पूरा किया गया।

कोशिश करनी चाहिए, और हमारे लिए सच्ची सत्ता हमारे दिलकी आवाज ही है, जिसे मैं ईश्वर या सत्य कहूँगा।

मेरे लिए सच्ची स्वतन्त्रता और ईश्वर एक ही चीज है। तिलकने "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" मन्त्र दिया है। यह एक सीधा-सरल मन्त्र है। इसमें मैं इतना ही और जोड़ूँगा कि इस मन्त्रको सत्य और अहिंसाके जरिये ही साकार किया जा सकता है और मेरा दावा है कि यह तरीका तभी सम्भव है, जब लाखों लोग रचनात्मक कार्यक्रमको लागू करने में लग जायें।

अन्तमें गांधीजी ने स्वयंसेवकोंको चेतावनी दी कि वे अपनी सफलतापर फूल न जायें, क्योंकि यदि वे वैसा करेंगे तो उनका घमण्ड ही उन्हें ले डूबेगा। विनम्रता ही उनकी कसौटी होनी चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २९-१-१९४५

१२६. पत्र: भारतन् कुमारप्पाको

सेवाग्राम
२७ जनवरी, १९४५

प्रिय भारतन्,

तुम्हारी डाक्टर बहिनने नौकरी छोड़कर ठीक ही किया।[1] वहाँ सब-कुछ व्यवस्थित कर देने के लिए जितना जरूरी हो उतने दिन बेशक वहीं बने रहो। हाँ, मेरे स्वास्थ्यमें सुधार होता जान पड़ रहा है।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५९८) से

१. डॉ० प्रेमा कुमारप्पाने बीमारीके कारण नीलगिरि चाय बागानकी नौकरी छोड़ दी थी।

१२७. पत्र : गणेश वासुदेव मावलंकरको

सेवाग्राम
२८ जनवरी, १९४५

भाई दादा,

आनन्दशंकरभाईसे[1] सम्बन्धित तुम्हारा निबन्ध[2] कल पूरा कर पाया। चि० पुरुषोत्तमका तर्जुमा[3] भी पसन्द आया। तुम उनके इतने बड़े भक्त हो, यह तो तुम्हारी पुष्पांजलि पढकर ही समझमें आया। आशा है, तुम्हारा सब ठीक चल रहा होगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री गणेश वासुदेव मावलंकर
स्पीकर, असेम्बली
अहमदाबाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७१८) से

१२८. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२८ जनवरी, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र मैं अथ से इति तक पढ़ गया। समाचारपत्रोंका मैंने कुछ प्रबन्ध किया तो है। तुम बम्बईके अलावा अन्य स्थानोसे प्रकाशित समाचारपत्र भी माँगते हो। तुम्हें बम्बईका 'क्रॉनिकल' भी उसी दिन नही मिल पाता। उसके ऐसे बहुत-से ग्राहक है जिन्हें ना नही कहा जा सकता। यही बात 'पत्रिका' के बारेमें भी है। ये दोनों तुम्हें मिल तो सकते है लेकिन देरसे। यदि गुजराती, हिन्दी, मराठीके समाचारपत्र [पढ़ने] को मिलें तो तुम्हें फिर अंग्रेजीका आग्रह नही रखना चाहिए।

यदि तुम अपना सारा पत्र मुझसे सम्बद्ध व्यक्तियोको दिखाने दो तो मेरा काम सहज हो जाये। मैंने तो तुम्हारे मना करने के कारण इसे किसीको नहीं दिखाया है।

१. आनन्दशंकर बापूभाई ध्रुव, गुजराती साहित्यकार और संस्कृतके विद्वान

२. मूलतः यह लेख समाज पत्रिका के लिए मराठीमें लिखा गया था। बादमें यह पुस्तिकाके रूपमें प्रकाशित हुआ था।

३. देखिए खण्ड ७८, पृ० २९२।

तुम्हारी बात मैं समझता तो हूँ, लेकिन जबतक मैं गहराईमें नही उतरूँ तबतक तुम्हारा ज्यादा मार्ग-दर्शन नही कर सकता। आज मेरे सम्मुख जो घटना घटी वह देखने लायक थी। तुम दोनों गर्म हो गये थे और तुम दोनोंको इसकी खबर नही थी। तुम दोनों ही एक-दूसरेके दोष देख सके, अपने नही। यह बात सबपर लागू होती है। सबमें मैं भी आ गया। तुम गाँवमे जाकर बस जाओ, यह मै नही चाहता। सेवाग्रामका वातावरण बहुत दूषित हो गया है, इसलिए तुम वहाँ जाओ, यह भी मैं नहीं चाहता। मै [स्थितिको] स्वयं देख रहा हूँ। मैंने तो सुझाव दिया है कि यदि तालीमी संघसे कोई जाये तो पर्याप्त है। उसे प्रथम स्थान दिया ही जाना चाहिए। उससे जो बने सो वह करे। यदि वह नही करता तो देखा जायेगा। लेकिन मै देखता हूँ कि तुम्हारे स्वभावको तुम्हारे साथी पी नहीं पाये है। वे तुम्हारी पूरी कीमत नहीं आँक सकते। इसलिए मैं यह चाहता तो जरूर हूँ कि अब चूँकि तुम दोनों अकेले रहकर भी ब्रह्मचर्यका पालन करने योग्य बन गये हो, इसलिए यही कहीं आसपास चार एक मील दूर कोई गाँव पसन्द करके वहाँ बैठकर बिलकुल स्वतन्त्र रूपसे कोई काम करो। मै तो तुम जिस तरहसे चाहोगे उस तरहसे तुम्हारा मार्ग-दर्शन करता ही रहूँगा। यह तो मेरी इच्छा हुई। लेकिन निश्चय तो तुम दोनोंको मिलकर स्वतन्त्र रूपसे करना है, मेरी इच्छाके विरुद्ध हो तो भी।

हल्दी, नमक डाल सकते हो, काली मिर्चके बारेमे मुझे शक है। ऊपरसे कोई लेना चाहे तो ले। वैद्यने[1] सामान्य व्यक्तिके लिए कहा है। मेरे मतानुसार ब्रह्मचारीके लिए यह सब त्याज्य है। नमक-हल्दी तक लेना ही पड़े तो औषधके रूपमें ले, षड्रसके लिए नही। लेकिन इसमें मेरा कोई आग्रह नहीं है, बन्धन नही है। मेरा अनुभव गलत भी हो सकता है। मैंने तो ४० वर्षसे भी अधिक समय बिना मसालेके बिताया। नमकके बिना भी लगभग ३० वर्ष बिताये। इसमें भूल हो सकती है।

रामदासको क्या हुआ है?

अब भी कुछ बाकी हो तो कहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८१८) से। सौजन्य: मुन्नालाल गंगादास शाह

१. गणेश शास्त्री जोशी, जिनका कहना था कि आहारमें षड्रस — मीठा, नमकीन, कड़वा, तीखा, कसैला और खट्टा — होने चाहिए।

१२९. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२८ जनवरी, १९४५

चि० कृ०,

पिन साथ रखो। चिट्ठी ले लो। गन्ना चूसने में इतना समय नही देना चाहीये। १५ मिनिटमें आरामसे चूसा जाय इतना काफी समजना।

शौच तीन बार क्यों? समय तो नही जाता है?

मलयाली लिपि तो सीख ही लो। मन पड़े तो सब। उर्दुका तो अच्छा अभ्यास होना है।

बापुके आ०

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४६०) से

१३०. पत्र : हीरालाल शर्माको

सेवाग्राम
२८ जनवरी, १९४५

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। अगर तुमारे सब कुछ गाडोदीयाजीके हस्तक करना है तो करो। तब मुझे उसमें मत डालो। मैं तो उनको तुमको कहा था ऐसा ही खत लिख सकता हूं। अब मैं कुछ नही लिखुगा। तुमारे करना है सो करो। मुजको इजाजत दोगे तो मै जरूर लिखुंगा। तब वो सब कारोवार छोड़ देंगे। जैसे कहो ऐसा करुं।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० ३२६ और ३२७ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

१३१. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२९ जनवरी, १९४५

चि० [मुन्नालाल],

मैं सब पढ गया। थोड़ी पूछताछ भी की। तुम्हारे पत्र मैं तो समझ सकता हूँ, लेकिन हो सकता है, दूसरे न भी समझें। अतः सामान्य तौरपर वे भले मेरे लिए ही हों और मैं ही उन्हें पढ़ूं। लेकिन इतना याद रखो कि जिन्हें हमने मित्रके रूपमें, चाहे वेतन देकर ही, कामपर रखा है, उनमें सुधार होना मात्र हमी लोगोंपर— मुख्यतः तुमपर और चि [मनलाल] पर—निर्भर है। यह काफी विचारणीय है। अब और अधिक नहीं लिखता। समय भी नही है। यदि तुम कुछ पूछोगे तो लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८२०) से। सौजन्य: मुन्नालाल गंगादास शाह

१३२. पत्र : जयाको

सेवाग्राम
२९ जनवरी, १९४५

चि० जया,

वसन्तके[1] न रहने की तो कोई बात ही नहीं है। टाइफाइड कोई भयंकर बीमारी नहीं है। सेवा-शुश्रूषासे रोगी जरूर अच्छा हो जाता है। हिम्मतसे काम ले और वसन्तको भी हिम्मत बँधा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२३) से

१. जयाका पुत्र

१३३. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

२९ जनवरी, १९४५

. . . [1] तीन. . .[2] की आदत है तो भी कही गलती है। मैं भी तुम्हारे जैसे मानता था। वैद्योने मुझे भुल वताई। पुस्तक जो पढ़ा उसका नाम दो। . . .[3] जाओ। समय बचानेवालो में नही मानता, लेकिन यह दूसरी बार।

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४६१) से

१३४. पत्र : कमला लेलेको

सेवाग्राम
३० जनवरी, १९४५

चि० कमला,

तेरा खत मिला। यहाका दर्दी भी जिसकी चडीदासजी दवा करते है ज्यादा बीमार पडने से मैंने तार दिया।[4] वह कल आनेवाले थे। आज देखें। उनका पता लक्ष्मीनारायण मंदिर, न्यु दिल्ली है। तु अच्छी हो जा।

बापुके आशीर्वाद

कमला लेले
महिलाश्रम
वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१ और २. यहाँ कुछ शब्द पढ़े नहीं जा सकते। लेकिन लगता है, तात्पर्य "तीन बार शौच जाने की आदत" से है; देखिए "पत्र : कृष्णचन्द्रको", पृ० ८१।

३. यहाँ कुछ शब्द पढ़े नहीं जा सके।

४. देखिए पृ० ६८।

१३५. पत्र : आनन्द तोताराम हिंगोरानीको

सेवाग्राम
३० जनवरी, १९४५

चि० आनंद,

चि० चि [मनलाल] पर तुमारा खत पढ़ा। मुझको ही हिंदीमें ऐसा क्यों? इसमें कृत्रिमता है। तुमारे पास समय है। जो हिंदी जानते हैं उन्हे हिंदी, सिंघिको सिंघि, भले दूसरोंको अंग्रेजी।

मैंने तुमको लिखा है अवश्य आ जाओ। और मेरी सलाह है भले गोखलेजी और बावाजी भी आ जावे। जब सब कुछ एक ही है तो उन दो को वहां क्यों छोड़ना? वे भी तो उस जगहको जहल[1] मानते है। मैंने जहलमें तो नहीं भेजा है। तीनों आओ। अमतुल शायद कल आवेगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

१३६. पत्र : श्रीपाद जोशीको

वर्धा
[३० जनवरी, १९४५ के पश्चात्][2]

काकासाहबका मैं पढ़ चुका। मुझे अच्छा लगा है। यह पत्र मैंने अभी पढ़ा। मेरा खयाल रहा कि टाइप उसीकी नकल है। तुम्हारे दिलमें जो शंका आवे मुझे पूछो। लिखोगे ना? मैं लिखकर ही उत्तर दूंगा।[3]

बापु

गांधीजी : एक झलक, पृ० ४९

१. जेल

२. यह श्रीपाद जोशीके ३० जनवरी, १९४५ के पत्रके उत्तरमें भेजा गया था।

३. देखिए "पुर्जा : श्रीपाद जोशीको", २२-२-१९४५।

१३७. पत्र: गौरीको

सेवाग्राम
३१ जनवरी, १९४५

प्रिय गौरी,

मैं तुम्हें केवल तुम्हारे पिताकी मार्फत ही जानता हूँ। उन्होंने मुझे तुम्हारे आगामी विवाहके बारेमें बताया है। भगवान करे कि तुम और तुम्हारे पति सदा सुखी रहें और देशकी सेवा करें।

तुम्हारा,
मो० क० गांधी

गौरीबहिन
८१, विवेकानन्द रोड
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१३८. पत्र: खुर्शेद नौरोजीको

सेवाग्राम
३१ जनवरी, १९४५

प्रिय बहिन,[1]

तुम्हारे दो पत्र मिले। बेशक तुम तबतक रह सकती हो जबतक जरूरी हो, लेकिन उससे ज्यादा नहीं। मैं तुमसे सहमत हूँ। हमारे द्वारा समझौता किये जाने का कोई प्रश्न ही नहीं है और न होना चाहिए। लेकिन दूसरोंको अपने रास्ते जाने देना अहिंसाका अंग है। मेरा खयाल है, इस बातपर हम सहमत हैं। मैं ठीक हूँ।

तुम्हें और सभी बहिनोंको प्यार।

बापू

श्रीमती खुर्शेदबहिन
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें सम्बोधन गुजरातीमें है।

१३९. पत्र : रुक्मिणी बजाजको

सेवाग्राम
३१ जनवरी, १९४५

चि० रुक्मिणी,[1]

तेरा पत्र मुझे आज ही मिला। आखिर तू आ ही गई। तूने डॉ० जसावालाके बारेमें लिखा है। तेरे पास इतने पैसे हैं, यह जानकर मैं प्रसन्न हूँ। तू जरूर बम्बई में डॉ० जसावालाकी देखभालमें रहकर अच्छी हो जा। तेरा तर्क मैं समझता हूँ। अपना काम तो स्वस्थ हो जाना है, वह चाहे बम्बईमें हो या पूनामें।

मुझे बराबर लिखती रहेगी तो मुझे अच्छा लगेगा।

मेरी तबीयत ठीक है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

राधिका[2] अच्छी होती जा रही है, यह भी अच्छी खबर है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०६५) से

१४०. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

सेवाग्राम
३१ जनवरी, १९४५

चि० कान्ति,

तेरा पत्र मिला। मैं तेरी जरूरत समझ गया। मेरी सलाह है कि तू किताबों के बारेमें भी देवदासको लिख। लेकिन यदि तुझे यह ठीक न लगता हो, तो चि० कमलनयनको[3] लिख। वह मुझसे पूछेगा। यदि मैं जाकर उससे कहूँगा तो वह इनकार कदापि नहीं करेगा। तू कमलनयनको या तो किताबोंकी सूची भेज दे, या अमुक रकम के लिए लिख दे। कीमतके साथ किताबोंकी सूची भेजना अधिक शिष्ट होगा। मेरी यह इच्छा तो है कि भाई अमृतलाल सेठसे तू कोई मदद न ले। वे तो जो तू माँगेगा भेज ही देंगे। इस रकमकी जरूरतसे मालूम होता है कि यह तेरी आखिरी माँग नहीं

१. मगनलाल गांधीकी पुत्री, जिसका विवाह बनारसीलाल बजाजसे हुआ था।

२. राधा चौधरी, रुक्मिणी बजाजकी बहिन

३. जमनालाल बजाजके पुत्र

है। मेरे लिए तो यह इस बातका सूचक है कि आजकलकी पढ़ाई कितनी महँगी हो गई है। और अन्तमें इससे रोजी कमाने के सिवा और कुछ नहीं होता। अनेक डाक्टरोंके बारेमें सुना है कि उनका पूरा नहीं पड़ता। बिरले ही अपनी शक्तिके बूते ऊँचे उठे हैं। अनेकको तो पास होने के बाद भी प्रभावका सहारा लेना पड़ा है। यह लिखने का मेरा हेतु तेरी पढाई छुड़ाना बिलकुल नहीं है। अब तो तुझे यह पूरी करने पर निस्तार होगा। हाँ, हेतु यह जरूर है कि ऐसे महँगे ढंगसे प्राप्त ज्ञान का उपयोग तू परोपकारके लिए करना।

सुरूको तू जेवर आदिके मोहसे मुक्त रखता है, यह मुझे अच्छा लगता है। देखना यह है कि तू इसमें कहाँतक सफल हो पाता है।

बली[1] भले वहाँ आये, हालाँकि यह बात ऐसी नहीं है जो मुझे पसन्द हो। लम्बा सफर, पैसेका खूब खर्च, और अन्तमें क्षणिक सन्तोषके सिवा कुछ हाथ नहीं लगता। लेकिन बलीके तुझपर अनेक उपकार हैं। और वह बहुत स्नेही स्त्री है। तो तू उसे मजेमें आने दे। अपने पास आने का प्रस्ताव करके मैंने उसे रोकने का प्रयत्न तो किया था। फिर भी अब तेरे पास जाने की अनुमति दे दी है।

तुझे जब आना हो आ जाना और जबतक रहना चाहे रहना।

कताई आदिका काम तू बहुत अच्छा कर रहा है। इसी तरह दृढ़ बना रह। थोड़े किन्तु सच्चे आदमी ही अच्छे होते हैं।

मैं वहाँ आऊँ तो मुझे अच्छा तो लगेगा; लेकिन क्या करूँ, मेरा मन ही नहीं होता।

चि० कनु वहाँ आना चाहे तो मैं आने दूंगा। लेकिन वह वहाँ तेरी क्या मदद करेगा, यह समझमें नहीं आता।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्चः]

मैं अच्छा हूँ। पूरे दिन मौन रखता हूँ।

बम्बई जाने का इरादा छोड़ दे। वहाँ रहकर दक्षिणकी चारों भाषाओंपर अधिकार कर ले तो मुझे अच्छा लगेगा। सारे हिन्दुस्तानमें उत्तरका शायद तू ऐसा एक ही आदमी होगा। लेकिन और हों भी तो क्या हुआ?

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३७०) से। सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

१. बली अडालजा, कान्ति गांधीकी मौसी

१४१. पत्र : भूलाभाई देसाईको

सेवाग्राम
३१ जनवरी, १९४५

भाई भूलाभाई,

लियाकत साहबका तिन्नेवलीका भाषण[1] तुमने देखा होगा। उनसे समझौता कैसे हो सकता है? वे सर्वसाधारणके बीच जो मनमें आता है कहते हैं और फिर तुम्हारे साथ दूसरे ढंगकी बात करते हैं। और तुम तो मौन रहने को बाध्य हो। यह मैं तुम्हें सूचना और चेतावनीके रूपमें लिख रहा हूँ। करना वही जो तुम ठीक समझो। मैं तो दूर बैठे जो मुझे दिखाई देता है वह तुम्हें बता ही देता हूँ। मैं खुद तो यही देख पाता हूँ, और जो देख पाता हूँ, उससे भय होता है।[2]

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजरातीसे : भूलाभाई देसाई पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१४२. पत्र : सुरेशचन्द्र दासगुप्तको

३१ जनवरी, १९४५

भाई सुरेशबाबु,

आपका पत्र तीन भाषामें मिला। हिंदी काफी थी। चि० अन्नपूर्णा और उनके पति सुखी रहें और देशकी सेवा सच्चे भावसे किया करें।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८०१९) से

१. जिसमें उन्होंने इस बातसे इनकार किया था कि भूलाभाई देसाई और उनके बीच कोई समझौता हुआ था।

२. उत्तरमें भूलाभाई देसाईने लिखा था कि मैं फिर उनसे (लियाकत अलीसे) बात करूँगा और तब आपसे (गांधीजी से) मिलूँगा।

१४३. बातचीत: अनुग्रह नारायण सिंहके साथ

वर्धा
३१ जनवरी, १९४५

श्री सिंहने[1] महात्मा गांधीके साथ रचनात्मक कार्यकर्त्ताओंमें, चाहे वे श्रमिकोंके बीच काम करनेवाले हों या छात्रोंके बीच, अपेक्षित योग्यताओंकी चर्चा की। ऐसे कार्यकर्त्ताओंमें अपेक्षित योग्यताएँ निम्न प्रकार जान पड़ती हैं:

१. हर महीने नियमित रूपसे एक खास मात्रामें सूत कातना।

२. जो वस्तुएँ स्थानीय गृह-उद्योग द्वारा तैयार की जाती हों उन्हें निजी उपयोगमें प्राथमिकता देना।

३. अहिंसा और सत्यको जिस रूपमें गांधीजी ने समझा है उस रूपमें उनमें पूर्ण और क्रियात्मक विश्वासका होना।

बताया जाता है कि महात्माजी ने श्री सिंहसे कहा कि उपर्युक्त कसौटी अच्छी है तथा उसे सहज ही और कड़ा बनाया जा सकता है।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १-२-१९४५

१४४. पत्र: कोण्डा वेंकटप्पय्याको

सेवाग्राम
१ फरवरी, १९४५

प्रिय देशभक्त,

मुझे आपकी अपील नहीं जँची। जल्दबाजी करने की कोई जरूरत नहीं। उसमें सुधार किया जाना चाहिए। उसमें आश्रमकी पूरी सम्पत्ति, उसकी देनदारी, वार्षिक अनुदान, उसकी ठोस प्रवृत्तियों और उनसे होनेवाली आयका ब्योरा दीजिए। उसके बाद सम्भावित खर्च विस्तारसे बताइए।

क्या आश्रमके पास विभिन्न कार्योंके लिए पर्याप्त कार्यकर्त्ता हैं? सामान्य कार्यके लिए डाक्टर कौन है, पशु-चिकित्सक कौन है और प्रधान परिचारिका कौन है? क्या इन सभी विशेषज्ञोंको लाया जाना है? यह सारी चीज कल्पना-सी लगती है। उसे

१. बिहारके भूतपूर्व वित्तमन्त्री

व्यावहारिक होना चाहिए। यदि बोझ उठाया नहीं जा सकता तो अपीलको अभी रोक रखना चाहिए। पैसा आपको मिलेगा। लेकिन उसे अभिशाप न बनने दें। पैसा कार्यकर्त्ता पैदा नहीं कर सकता। लेकिन कार्यकर्त्ता आवश्यकतानुसार पैसा पैदा करेंगे।

स्नेह।

बापू

देशभक्त कोण्डा वेंकटप्पय्या
गुण्टूर

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१४५. पत्र: जयाको

सेवाग्राम
१ फरवरी, १९४५

चि० जया,

तेरा तार मिला। वसन्त नही रहा, क्या यह एक सपने-जैसा ही नहीं लगता। जो हो, मुझे कुछ नही लगता। मैंने वहुत-सी मौतें देखीं, वहुतेरे जन्म देखे। ये दोनों एक ही सिक्केके दो पहलू हैं: एक तरफ यदि मौत है, तो दूसरी तरफ जन्म। दोनों पहलुओंका मूल्य समान है, अर्थात् एकके पीछे दूसरा ही है। इसमें हर्ष या शोक क्या करना? विवाह करना, नाचना-कूदना, यह सव एक खेल ही तो है। तू फिरसे यह खेल खेलना शुरू कर दे। विवाह[1] रुकेगा क्या? मेरा वस चले तो मैं विवाह न रोकूं। धार्मिक विधि तो सव होने दूं। उत्सव आदि विलकुल वन्द कर दूं। लेकिन व्यवहारकी वात तू ज्यादा समझती होगी। हिम्मतसे काम लेना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२३) से

१. बिन्दु और चन्द्रकान्तका; देखिए खण्ड ७८ "पत्र: जयाको", पृ० ३९०।

१४६. पत्र : नृसिंहप्रसाद कालिदास भट्टको

सेवाग्राम
१ फरवरी, १९४५

चि० नानाभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। बचुके बारेमें समझा। घोघा तथा भावनगरके पास ही समुद्र है। क्या उसकी ठंडक पर्याप्त नहीं होगी?

मनुभाई[1] और विजयाके[2] आने के बाद सोचूंगा कि तुम्हारे लिए कितना रखना चाहिए? तुम्हारा बोझ जितना बन सके उतना हलका करने की पूरी कोशिश करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

नानाभाई भट्ट
आंबला
काठियावाड़

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१४७. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१ फरवरी, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुमने संक्षेपमें लिखने की कोशिश की, लेकिन लिख नही पाये। कुछ बातें तो खा ही गये हो। संक्षेपका अर्थ यह है कि जो कहना हो वह कमसे-कम शब्दोंमें कह दिया जाये। यह किसी समय अवसर मिलने पर मैं तुम्हे बताऊँगा।

बुरहानपुरके बारेमें मैंने चिढकर नही लिखा। मैं तुम्हें अथवा कंचनको वहाँ जाने देने में खुश नही था। लेकिन तुम्हारी मर्यादा जानकर मैं पूरी तरहसे उसके पक्षमें हो गया। तुम्हारे जाने के बाद तुम्हारे पत्रोंसे मालूम हुआ कि तुम्हारा वहाँ रहना सफल हुआ। तुम परिवारवालोंको खुश कर सके और कुछ सुधार भी कर सके। और वहाँ शहरमें भी काम तो है ही। इसलिए तुम्हें स्थिर देखने की खातिर और अनुकूल वातावरणकी खातिर भी मैंने यह सुझाव दिया। मेरा विचार तो यही है कि तुम यही

१ और २. मनुभाई पंचोली और उनकी पत्नी

रहकर अपना निर्माण करो। लेकिन ऐसे निर्माणमें भी स्थिरता तो चाहिए ही और तुम्हें समाजके नियमोंके अधीन रहकर उनका पालन करते हुए रहना चाहिए। यदि ऐसा न हो तो तुम्हारा निर्माण नही हो सकता। इसलिए मैंने अपने दिये सुझावोंमें इसकी भी चर्चा की है।

गोपालराव आदिको तुम माफ करो अथवा चाहे जो करो, लेकिन उनके दोष तो तुम्हें मालूम होने ही चाहिए। पाण्डुरंगके पत्रमें मैंने व्यंग्य देखा। मुझे यह पत्र अच्छा नही लगा। इस सबका कारण मुख्य रूपसे तुम दोनोंका अथवा कदाचित् चारोंका — तुम्हारा और कंचन, चिमनलाल और शकरीबहिनका — स्वभाव है। इन दोनोंको अन्य औरतोंसे अलग नही किया जा सकता। तुम नहीं जानते कि बा की मर्यादाओंके चलते मेरे कितने काम अटके। मुझसे जितना बन पड़ा उतना मैंने सख्तीसे काम लिया। तथापि मर्यादा तो अपना काम अवश्य करती है। यहाँ भी ऐसा ही जानो। मैंने तो तुम्हें नियम बताया है। इस नियमको जानने के बाद यदि तुम इस निर्णय पर पहुँचो कि तुम दोनोंको आश्रम चलाना है तो मै अपनी सहमति दूंगा। यदि तुम आजके ढंगसे नहीं, बल्कि भिन्न ढंगसे आश्रम चलाना चाहो तो भी मै चलाने दूंगा। या अगर आश्रमको भंग करना चाहो तो उसमें भी अपनी सहमति दूंगा। अच्छा और ठीक तो यह है कि अब जो कर रहे हो उसे करते हुए तुम चारों जाग्रत हो जाओ और जो बने सो करते जाओ। मेरी मददकी जरूरत हो तो लेते रहो।

प्रह्लादकी बात यदि चिमनलाल भी न समझ पाया हो तो फुर्सतके समय और जब वे दोनों उपस्थित हों तब मुझसे पूछना, बताऊँगा। उसके बारेमें लिखने से तो पत्र बहुत लम्बा हो जायेगा।

समाचारपत्रोंके बारेमें देखूंगा।

दुबारा नही पढ़ा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ५८९०) से। सौजन्य: मुन्नालाल गंगादास शाह

१४८. पत्र : दमयन्तीको

सेवाग्राम
१ फरवरी, १९४५

चि० दमयन्ती,

तेरा पत्र मिला। तूने लिखकर ठीक ही किया। तुझे बुलाना मुझे अच्छा लगेगा लेकिन नही बुलाता। यात्राकी परेशानी और पैसेका खर्च उठाना पड़ेगा, और फिर काम तो पत्र-व्यवहारसे भी चलेगा, इसलिए आने की बात रद्द कर दे।

तेरा पति क्या करता है? तेरे कितने बच्चे है?

साथका पत्र[1] भोगीभाईको पहुँचाना। इनका पता तो मेरे पास नही है। पत्र का यदि कोई परिणाम न निकले तो फिर तुम भाई-बहिनको जैसा ठीक लगे वैसा करना।

यदि कभी बम्बई आऊँ तो मिलना।

बापूके आशीर्वाद

दमयन्तीबहिन
गांधी निवास
घोड़बन्दर रोड
सान्ताक्रूज, बी० बी० ऐण्ड सी० आई० रेलवे

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१४९. पत्र: वि० गो० सहस्रबुद्धेको

सेवाग्राम
१ फरवरी, १९४५

भाई सहस्रबुद्धे,

पंचनामा वह जिसमें दोनोके दस्तखत रहे। शायद वह स्टांप भी मांगता है। टि० म० वि० का दावा, तुमारा उत्तर, दावेदारका प्रत्युत्तर राष्ट्रभाषा या राजभाषामें या मराठीमें भी मिल जायगा तो मैं फैसला दूंगा। ६ मासमें से कुछ तो कट गया। मुझको सब लिखितवार ही चाहिये। किसीकी हाजरीकी दरकार नही। तुमारी लडकी

१. यह उपलब्ध नहीं है।

के लिये मुझे खेद है। मेरा मौन चलता है। समय नहीं तो भी उस लड़कीको मैं देखुं तो शायद कुछ सलाह दे सकुं। कठिन काम है।

बापुके आशीर्वाद

वि० गो० सहस्रबुद्धे
महाल
नागपुर

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१५०. पत्र: ई० एस० पटवर्धनको

सेवाग्राम
१ फरवरी, १९४५

भाई पटवर्धन,

तुम्हारा खत मिला। दोनों पक्षके हस्ताक्षरका नियमानुसार पंचखत भेजो। तुम्हारा दावा, अण्णाका उत्तर, उसका प्रत्युत्तर और आवश्यक पुरावा मुझे भेजो। छ मासमें से कई दिन तो निकल गये। इतना डाकसे या किसीके साथ भेजो। तुम्हारे आने की आवश्यकता नहीं रहेगी। मैंने कहा है ना मैं लिखितवार कागद परसे लिखितवार केसका फैसला दूंगा। भाई महालकर क्यों तकलिफ लें। मेरा मौन तो चलता ही है। समय कट जाता है। तो भी आना चाहते ही है तो आवे।

बापुके आशीर्वाद

ई० एस० पटवर्धन
'तरुण भारत'
नागपुर

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१५१. पत्र : शंकरन नायरको

सेवाग्राम
१ फरवरी, १९४५

चि० शंकरन,

तुम्हारा खत मिला। अपना विचार दिल चाहे तब बताओ।

बा, महादेवकी समाधपर एक वखत गये सो काफी है। तुम्हारा कर्त्तव्य अभ्यासमें डटे रहने.का है।

तबियत अच्छी रखना।

लड़का खुश है। शकरीबहनके साथ रहता है। ता[लीमी] सं[घ]में जाता है।

बापुके आशीर्वाद

शंकरन नायर
कमरा नं० ३०, तीसरी मजिल
मोरारजी गोकुलदास सेनेटोरियम
पूना

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१५२. सलाह : मुहम्मद बेगको[1]

सेवाग्राम
[२ फरवरी, १९४५ के पूर्व][2]

यदि तुम सचमुच मुसलमान जनसाधारणकी सेवा करना चाहते हो तो मेरी एक ही सलाह है कि साम्प्रदायिक संस्थाओंसे बिलकुल अलग रहो।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ३-२-१९४५

१. खेडाके कांग्रेसी नेता मुहम्मद बेगकी गांधीजी से लम्बी बातचीत हुई थी। यह सलाह उसी दौरान दी गई थी।

२. यह रिपोर्ट दिनांक "सूरत, २ फरवरी, १९४५" के अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी।

१५३. पत्र : भूलाभाई देसाईको

सेवाग्राम
२ फरवरी, १९४५

भाई भूलाभाई,

तुमने जो लिखा है सही है। तुम जब आना चाहो तब चले आना। मुझे कोई भय नहीं है। मैंने तो केवल अखबारोंके[1] आधारपर तुम्हें चेतावनी दी है।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजरातीसे : भूलाभाई देसाई पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१५४. पत्र : भोलानाथको

२ फरवरी, १९४५

(१) सब कुछ कर सकते हैं, मेरे कहने से कुछ भी नहीं, मेरी सलाह है कि वहांकी परिस्थिति देखकर तुम ही विचार कर सकते है।

(२) सरोजिनी देवी बीमार पड गई है। दूसरे किसीको ले लो।

(३) सत्याग्रह करनेवाले हैं तो जागीरदारोंसे शुध्ध सत्याग्रह करो। अगर लोग तैयार नहीं है तो जो हजम हो सके वह करो।

(४) अगर मैं देहली जा सका तो अलवरवासीयोंसे अवश्य मिलुंगा।

(५) शासकोंसे मिलने में तनिक भी बाधा नहीं, अगर वे हमें सहाय करें।

इसमें कुछ भी मेरे नामसे प्रगट करने के लिये नहीं है, सिर्फ तुमारी समजके लिये हैं।

श्री भोलानाथ मास्टर[2]
प्रजामंडल
अलवर, राजपुताना

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १३१२) से

१. देखिए पृ० ८८।

१५५. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

२ फरवरी, १९४५

गन्नाकी बात बताता है हमारे दूसरोके प्रति कैसे उदार और निजके लिए कैसे कड़क होना चाहीये और बच्चोके पढाईके लिये कैसी योग्यता चाहीये।

बापु

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४६३) से

१५६. पत्र : श्रीकृष्ण सिंहको

सेवाग्राम
२ फरवरी, १९४५

भाई श्रीकृष्ण सिंह,

तुमको आश्वासनकी आवश्यकता होनी नही चाहिये। जन्मके साथ मृत्यु तो है ही। उसमें खेद क्या? तुम्हारी पत्नी तो दुःखसे छूटी। अब तो तुम्हारे लिये सेवा ही सेवा है, करो।

बापुके आशीर्वाद

श्रीकृष्ण सिंह
मुख्यमन्त्री
पटना

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१५७. पत्र : कमलेशको

सेवाग्राम
२ फरवरी, १९४५

भाई कमलेश,

तुमारा खत मिला। अगर मेरे लेखसे खलबल मची है तो मैं तो लाचार हूं। तुमारे कार्यसे मुझे सतोष नहीं हुआ है। कारणोंमें नही जाना चाहता। राष्ट्रभाषा संमेलन संकुचित है क्योंकि उर्दु नही सिखाता। उर्दूको जो स्थान होना चाहिये और जो देने की मैंने कोशीश की थी वह मिलता और रहता तो हिन्दुस्तानी प्रचार निरर्थक रहता। मुझको यह स्वयंसिद्ध लगता है। लेकिन मैं इस संवादमें क्यों पडु? जिसको जो चाहे वह करे तो झगडा कहां रहा?

बापुके आशीर्वाद

कमलेश
गु० प्रा० रा० भाषा प्रचार समिति
खाडिया
अहमदाबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१५८. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

दुबारा नहीं पढ़ा

सेवाग्राम
३ फरवरी, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारी द्वारकानाथवाली बात मैं नही समझ सका। मुझे समझाना।

तुम्हारी कठिनाइयाँ मैं समझता हूँ। लेकिन ये सब अनिवार्य हैं। धीरजके साथ उनमें से रास्ता निकालो। सबके साथ मिठाससे बात करनी चाहिए। यशोधरा[1] बहुत भली स्त्री है। उससे कह सकते हो। उसने हमारे अनेक कार्यकर्त्ताओंको सहारा दिया है। उदाहरणके लिए, वह नारायण और कान्तिकी मदद करती है। हमारे जो व्यक्ति वहाँ जाते हैं, उनके लिए उसका घर खुला है। वे लोग बड़े आदमी हैं। डॉ० महमूद

१. यशोधरा दासप्पा

वहाँ हैं, रामचन्द्रन्[1] भी है, यह भी अच्छा है। इन लोगोंसे बात करने के बाद भी अगर ये लोग मदद न कर सकें तो कोई दूसरा रास्ता निकालना। अगर तुमसे बात करते न बने तो दुःसाहस मत करना। कंचन पूरी तरह मदद नहीं करती यह तो आश्चर्यकी बात है। ऐसा वह जानबूझकर करती है या और कोई कारण है? आश्रम के कौन लोग मदद नहीं करते, यह बताओ तो मैं कुछ करूँ।

सब बातोंकी दवा है धीरज। सेवाग्रामकी बात अभी भूल जाओ। यह समझना कि आजसे शान्ताबहिनने जिम्मेदारी ली है। वह जो मदद माँगे, अगर दी जा सकती हो, तो देनी चाहिए।

महादेवीके बारेमें मैं अलगसे लिखने की सोचता हूँ। वत्सला काम करती है न? और भी कुछ पूछना चाहो तो पूछना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४६६) से। सी० डब्ल्यू० ७१८१ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

१५९. पत्र : दिनशा मेहताको

सेवाग्राम
३ फरवरी, १९४५

चि० दिनशा,

तुम्हारा पत्र, चेक, फोटो आदि मिले। फोटो अगली बार भेजूंगा।

मुझे बाहरसे कोई नहीं रोकता। दूधके इलाजपर मेरा विश्वास नहीं बैठता। बाकी तुम्हारे साथ रहना तो जरूर अच्छा लगेगा।

हममें मतभेद होंगे तो अपने-आप दूर हो जायेंगे।

घनश्यामदासकी रकमको तो गुप्त रहना ही चाहिए। इसे कोई नाम भी नहीं दिया जाये। जबतक निर्धारित रकम पूरी नहीं हो जाती तबतक वे देते रहेंगे। हमारे हाथमें यह रकम एकमुश्त नहीं आयेगी। दस्तावेजमें तो छोटी रकम लिखी जायेगी। यदि भिवण्डीवाला और फकरीयार जंगके नाम शामिल किये जायें तो मुझे अच्छा लगेगा। मैं इस बारेमें तुम्हें लिखूंगा। इस समय तो कुछ और लिखने की बात सूझ नहीं रही। लगता है, शक्तिसे ज्यादा काम कर रहा हूँ।

बापूकी दुआ

डॉ० दिनशा मेहता
पूना

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. जी० रामचन्द्रन्

१६०. पत्र : बजरंग सिंहको

सेवाग्राम
३ फरवरी, १९४५

भाई बजरंग सिंह,[1]

तुमारा खत मिला। प्रभु तुमको बचावे। लेकिन फांसी चडना ही पडे तो हृर्षित होकर चढो।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

बजरंग सिंह
फांसीघर, सेन्ट्रल जेल
नैनी, संयुक्त प्रान्त

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१६१. पत्र : लेडी छोटूरामको

सेवाग्राम
३ फरवरी, १९४५

प्रिय भगिनी,

मुझे खेद है कि सर छोटुरामने[2] चल दिया। चंद मासके पहले ही उन्होंने मुझे लिखा था। मेरेसे महोवत रखते थे। आपको क्या आश्वासन दूं? ईश्वर जैसे हमें रखें ऐसे रहे।

आपका,
मो० क० गांधी

लेडी छोटूराम
मार्फत डा० गोपीचन्द
लाहौर

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

1. [illegible] कानपुर सेन्ट्रल स्टेशन बमकाण्डके अभियुक्त थे।
2. एक प्रमुख [illegible]निस्ट पार्टीके नेता और पंजाबके राजस्व मन्त्री

१६२. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

३ फरवरी, १९४५

सबसे अच्छा होगा अगर दो-तीन दिनके लिये गन्ना बिलकुल छोड दो।

पढने के लिये कुछ पुस्तक चुन लो। चाहो तो मैं चुनुगा। मलयालमका परिचय नयी तालीममें बहुत काम देगा। इग्रेजी मार्फत तो काम लेना नही। आश्चर्य है कि इस साफ बात नही समजते।

बापु

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५६९) से

१६३. पत्र : भारतन् कुमारप्पाको

४ फरवरी, १९४५

प्रिय भारतन्,

तुम दोनोंके पत्र एकसाथ मिले। जबतक तुम्हारी बहिनको तुम्हारी जरूरत है, बेशक वही रहो। तुम जहाँ-कही भी रहोगे, अ० भा० ग्रामोद्योग संघके लिए काम करते रहोगे।

तुम सबको मेरा स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५९७) से

१६४. पत्र : वी० वेंकटसुब्बैयाको

४ फरवरी, १९४५

प्रिय मित्र,

मुझे आपका पत्र आज ही मिला। आप मुझे अपना ब्योरेवार बजट भेज दें। यदि वह मुझे ठीक लगा तो मैं उसे ट्रस्टके सामने रखूँगा। जहाँतक संस्थानकी योजना का प्रश्न है, क्या प्राकृतिक चिकित्सक इसपर सहमत होंगे? यदि आप काफी जवान हैं तो मैं चाहूँगा कि आप पहलेसे समय लेकर यहाँ आयें और प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा रोगियोंका उपचार करें। यहाँ प्राकृतिक चिकित्सा काम तो करती है, लेकिन मुझे खेदके साथ स्वीकार करना होगा कि बोलवाला केवल एलोपैथीका ही है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री वी० वेंकटसुब्बैया, एम० एल० ए०
कस्तूरीदेवी नगर
नेल्लूर (आन्ध्र)

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१६५. पुर्जा : वर्धाके पुलिस सब-इन्स्पेक्टरको[1]

सेवाग्राम
४ फरवरी, १९४५

उसने (जिसकी पुलिसको तलाश है) आकर मुझसे कहा कि मुझमें और मेरी शिक्षामें उसका विश्वास है और उसने आत्म-समर्पण कर देने का निश्चय किया है। इसीलिए उसने वह पुर्जा लिखा। मैं इतना और कह दूँ कि अगर उसने मेरे सामने अपना अपराध स्वीकार भी कर लिया होता तो भी मुझपर यह नैतिक बन्धन रहता ही कि मैं पुलिसको यह न बताऊँ। मैं सुधारक और मुखबिर, दोनों एक ही साथ नहीं हो सकता।

[अंग्रेजीसे]
महात्मा गांधी — द लास्ट फेज, जिल्द १, भाग १, पृ० ४०-४२

१. साधन-सूत्रके अनुसार एक भूमिगत कार्यकर्ता, जिसकी पुलिसको तलाश थी, गांधीजी के सामने आत्म-समर्पण करने को सेवाग्राम आया। पुलिसको इसका सुराग मिल गया। पुलिस सब-इन्स्पेक्टरने वहाँ आकर गांधीजी से वह पुर्जा माँगा जो उस भूमिगत कार्यकर्त्ताने उन्हें दिया था।

१६६. पत्र : अरुणचन्द्र गुहको

४ फरवरी, १९४५

प्रिय मित्र,

गांधीजी को लिखा आपका पिछली २६ तारीखका पत्र मिला। उन्हें यह पढ़कर बहुत खुशी हुई कि जेलमें भी आप अपनी प्रतिज्ञा और वफादारीकी शपथ दोहरा सके। रही उनके बंगाल जाने की बात, सो उनकी इच्छा तो बहुत है कि वे वहाँ जायें, लेकिन परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि अभी वे बंगाल जाने का साहस करना उचित नहीं समझते।

हृदयसे आपका,
नरहरि परीख

श्री अरुणचन्द्र गुह, सिक्योरिटी प्रिजनर
स्पेशल रिजर्व जेल
पो० ऑ० बकसाद्वार (जिला जलपाईगुड़ी)

अंग्रेजीके फोटो-नकल (जी० एन० ८६७१) से

१६७. पत्र : अमृतलाल नानावटीको

सेवाग्राम
४ फरवरी, १९४५

चि० अमृतलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम व्यर्थ ही घबराते हो। भले ही सब लोग मिलें। सब-कुछ तय हो जाने के बाद कार्यक्रममें परिवर्तन करना उचित नहीं जान पड़ता। मुझे तो कोई डर नहीं। हमें तो अपना काम करना है। तुम और मगनभाई आना। उम्मीद है, तुम्हारी तबीयत अच्छी हो गई होगी।

बापूके आशीर्वाद

अमृतलाल नानावटी
गुजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१६८. पत्र : कृष्णचन्द्रको

से[वाग्राम]
४ फरवरी, १९४५

चि० कृ० चं०,

तुमने गन्नाका व्रत भले लिये। स्वास्थ्यके लिए लेते थे तो हमेशाके लिये छोड़ने की आवश्यकता है नही। अगर स्वादके लिये तो छोड़ना ही चाहिए। उसमें स्वास्थ्य है, स्वाद भी। इसलिये मैंने समयकी कह बताई।

पुस्तकमें मारकसकी 'कैपिटल', अर्थशास्त्रपर मेरे सब लेख, श्रीमनजीका सब लेख, संपूर्णानंदके दो पुस्तक यह ठीक है तो इतना पढ़ो। बाकीका बताऊंगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४६४) से

१६९. पत्र : चन्द्रप्रकाशको

सेवाग्राम
४ फरवरी, १९४५

चि० चन्द्रप्रकाश,

तुम्हारे दो पत्ते मिले। अगरचे पिताजी भयमुक्त तो नहीं है तात्कालिक भयसे बच गये यह भी अच्छा है। ईश्वर उन्हें बिलकुल बचा ले।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

चंद्रप्रकाश
पिलर्स
सियालकोट

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१७०. पत्र : पूरणचन्द्र जोशीको

सेवाग्राम
५ फरवरी, १९४५

भाई जोशी,

तुम्हारा पत्र[1] मिला। उत्तर क्या राष्ट्रभाषामें दूं?[2]

तुम्हें पत्र इसलिए नही लिखा कि तुमने खुद ही लिखने से मना किया था। हाँ, तुम्हारी वात ठीक है, शिकायत मेरी ही थी। मै तुम्हारे निकट आना चाहता था। वात साफ करने के लिए मैंने तुमसे पूछा, तुम्हें लिखा। उसमें नाराज होने की कोई वात नही थी।

मैंने सब-कुछ भूलाभाईको दे दिया है। एक चीजके वारेमें कुछ कठिनाई थी। राजाजी ने इनकार कर दिया, क्योकि उन्हें तरफदार माना जाता है। मै अपना विचार वता ही चुका हूँ। तुमने तो इसे पढ़ा ही होगा। मै साम्यवादियोंके और निकट आना चाहता हूँ। लेकिन मेरे पास शिकायतें आती ही जा रही हैं। हवीवभाईको मैंने सब-कुछ वता दिया है। मोहनको[3] आने की जरूरत नही है। लेकिन चाहे तो आ सकता है।

तुम्हारा,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
कॉरस्पॉण्डेन्स विटवीन महात्मा गांधी ऐण्ड पी० सी० जोशी, पृ० ३९-४०

१७१. पत्र : मनु गांधीको

सेवाग्राम
५ फरवरी, १९४५

चि० मनु,

तेरे लिए मुझे वहुत चिन्ता होती है। तू रोती रहती है और वेचैन रहा करती है। तू कहती जरूर है कि मैं तेरे लिए माँ भी हूँ, वाप भी हूँ। लेकिन क्या कोई वच्चा माँ-वापके पास जाने में डरता या शरमाता है? तू तो यह दोनों करती है, तो आखिर फिर सच क्या है? तेरे लिए छिपाने की कोई वात क्यों होनी चाहिए?

१. देखिए परिशिष्ट २।
२. मूल हिन्दी उपलब्ध नहीं है।
३. मोहन कुमारमंगलम्

तू जो पत्र लिखती है, वे दूसरोंको दिखाने में कोई हर्ज नहीं होना चाहिए। इसलिए यद्यपि मैंने तेरे पत्र तुझे वापस भेज दिये, लेकिन वह मुझे अच्छा नहीं लगा। जो कहना हो वह सबके सामने कहने का साहस तुझमें होना चाहिए। गुनाह छोटा हो, तब भी उसे छिपाते हैं। सचाईको कोई नहीं छिपाता। लेकिन जहाँ सन्देह होता है कि कुछ छिपाया जा रहा है, वहीं वह प्रकट हो जाता है।

तुझे जो कहना हो वह सुशीलासे कह। उससे डरती क्यों है? जो कहना हो निर्भय होकर कह। वह कहती है कि तू मेरे पास सोती है, इसलिए उसने तुझे कक्षा में जाने से मना नहीं किया। उसने तो तेरे सुभीतेके लिए कहा था कि अभी अगर तू छुट्टी लेना चाहे तो ले ले, और स्वस्थ हो जा। तेरी जो पढ़ाई पिछड़ जायेगी, वह पूरी करा देगी।

यह पत्र तू प्यारेलाल, सुशीला या जिसे चाहे उसे दिखा सकती है। तू अच्छी हो जा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२४) से

१७२. पत्र : मणिलाल गांधीको

सेवाग्राम
५ फरवरी, १९४५

चि० मणिलाल,

मोम्बासासे लिखा तेरा पत्र मिला। तू मेरी बहुत चिन्ता करता है। मेरी चिन्ता करना छोड़ दे। मुझे ईश्वरके भरोसे छोड़ दे। फिलहाल तो मैं अच्छा हूँ। नियमानुसार चलता-फिरता हूँ, खाता-पीता हूँ। आजकल रक्तचाप रोज नहीं लिया जाता। खुर्शेदबहिन दस-एक दिनसे बम्बईमें है। अभी कुछ दिन और बाहर रहेंगी। वह अथवा और कोई तुझे निराश नहीं करेंगे। आजकल तो चि० किशोरलाल भी यहाँ है। नरहरि भी है। नरहरिके लड़केकी सगाई रामीकी पुत्री अनसूयाके साथ हो गई है। दोनोंने परस्पर एक-दूसरेको पसन्द कर लिया।

तुम सब लोग वहाँका सब काम व्यवस्थित करके आओ तो मुझे अच्छा लगे। लेकिन मैं जानता हूँ कि यह हो नहीं सकता। सीता प्रशिक्षित होकर वहाँ पहुँचे, तब हो सकेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९४६) से

१७७. पत्र : चाँदरानीको

५ फरवरी, १९४५

चि० चांद,

यह विदेसी है, मिलकी तो अवश्य। तू उसे क्यों रखेगी? तेरे पास तो खादी कागदकी पोथी चाहीये। इसे तू रख ले। कोई और काममें लेना या किसीको देना। फिर भी जो तू चाहे वही करना, मै कहुं वह नही।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकलसे: चाँदरानी पेपर्स। सौजन्य: गांधी स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१७८. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

५ फरवरी, १९४५

मलयालम दूर लगता है वही कारण सीखने का। भाषाका कनून सीखने पर मुश्केली नही। कब्जका उपाय आसन, पानी है। गन्नाके बदले गन्नाका रस पीके देखो।

बापुके आशीर्वाद

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४६६) से

१७५. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

सेवाग्राम
५ फरवरी, १९४५

चि० घनश्यामदास,

दिनशाने खरडा दे[वदास] को भेजा है। वह चाहता है कि भिवंडीवाला जिन्होंने उनको मदद दी थी और जो नैसर्गिक उपचारमें श्रद्धा रखता है उसे और फ[क्रीयार] जंग जो निझामका फिनान्स मिनिस्टर था और जो ऐसे उपचारोको मानता है उनको ट्रस्टीमें लें। मेरा ख्याल है उसमें कुछ हरज नही है। बाकी तो मैंने दिनशाको लिखा है। यही देवदाससे बताओगे तो मैं एक खतसे चला लुगा।

मुझे दिल्ली ले जाओगे तो पिलानी, मीराका स्थान और धर्मदेवका स्थानपर जाना होगा। रहना हरिजन निवासमें।

बापुके आशीर्वाद

बीरलाजी
न० दि०

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१७६. पत्र : बृजलाल नेहरूको

सेवाग्राम
५ फरवरी, १९४५

भाई ब्रिजलाल,

तुम्हारा स्नेहमय तार मिला। ऐसे ही भेजते रहो। अबतक मैंने कुछ नही लिया। लेकिन आयुर्वेदके लोग और नैसर्गिक भी कुछ न कर पायें तो क्या किया जाय? यही प्रश्न है। एलोपैथिक कुछ जल्दी तो नहीं करते। कहो क्या किया जाय?

बापुके आशीर्वाद

ब्रिजलाल नेहरू
अकाउन्टेंट जनरल
कश्मीर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८१. पत्र : शारदा गो० चोखावालाको

सेवाग्राम
६ फरवरी, १९४५

चि० बबुड़ी,

डॉक्टरने ठीक नही कहा। गर्म पानीमें मुसम्वीका रस डालकर आनन्दको[1] दिया जा सकता है। या मुसम्बीके रस[के वर्तन] को गर्म पानीमें रखकर और इस तरह कुनकुना करके दिया जा सकता है। गर्म पानीमें शहद और ऐसे ही शुद्ध गुड़ भी दिया जा सकता है। लेकिन शहद ज्यादा अच्छा है। साग-भाजीका रसा दिया जा सकता है। इससे दस्त होगा, पेट साफ हो जायेगा, और वह दूध स्वादसे पियेगा। खाँसी, सर्दी वगैरह सब शर्तिया जाती रहेगी। सेनेटोजन देकर अच्छा किया। उसका असर तो फौरन समझमें आयेगा। बच्चोको बीमारियाँ होती ही रहती है। उनसे घबराना बिलकुल नही चाहिए। और हर कोई दवा भी उन्हे नही खिलानी चाहिए। बच्चोंमें अपने-आपमें ही चंगे हो जाने की क्षमता होती है। इस बातका ध्यान रखना कि बच्चा क्या खाता है।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००५२) से। सौजन्य: शारदा गो० चोखावाला

१८२. पत्र : जबकबहिनको

सेवाग्राम
६ फरवरी, १९४५

चि० जबकबहिन,

चि० रसिकका पत्र आया है। त्र्यंबकलाल नही रहे। उनसे तो मेरा बहुत सम्पर्क नही हुआ। हाँ, पोपटभाई मेरे साथ काफी घूमे-फिरे, इसलिए उनकी खूब याद है। अब मैं तुम्हे क्या सान्त्वना दूं? परमात्मा सब देखता है और सबकी रक्षा करता है। हम सब अपने-अपने कर्मके अधीन है। जो आ पड़े उसे शान्तिसे सहन करना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

चि० रसिकको मैं अलगसे पत्र नही लिखता। उसका पत्र मुझे आज ही मिला है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०२१८) से

१. शारदा गो० चोखावालाका पुत्र

१७९. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

५ फरवरी, १९४५

जो चतुर मनुष्य लिपि सीखेगा वह वहां जाकर ठहरेगा नही। जो ठहरेगा वह हारेगा। लेकिन लिपि भी बहुत मदद देती है। उसी भाषा सीखने में मदद देती है। इससे उलटा भी सही है कि अगर सब कामकी चीज हिंदीमें ही लिखा जाय तो उचित रहेगा। लेकिन हम तो वस्तुस्थितिको पहोंचना चाहते हैं। ऐक्य सिध्ध करना चाहते है इसलिए जितनी लिपि जितनी यहाकी भाषा सीखे इतना ही हम ऐक्यके नजदीक पहोंचते है। इस दृष्टि ही लें तो भी नयी तालीमके ढांचेमें ऐसी चीजें आती है।

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४६५) से

१८०. पत्र : पी० श्रीरामुलुको

६ फरवरी, १९४५

प्रिय रामुलु,

तुम्हारा खयाल सही है। गलतीसे तुम्हारे पत्र मुझे दिखाये ही नही गये। सुधारके अनुरूप पुनर्विवाहकी खबर पाकर मैं खुश हुआ। आशा है, दोनों खुश होंगे और ठीक चल रहे होंगे। तुम अपनी प्रगतिके बारेमें अवश्य लिखते रहना। मैं जानता हूँ, तुम्हें कठिनाइयोंका सामना करना पड़ रहा है।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १११) से

१८५. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

६ फरवरी, १९४५

सूजन कहां? चक्कीका समय बदलो, छोड़ना नही। शास्त्रीय रूपसे करने में वड़ा फायदा है। मलयालममें बहूत खूबी पाओगे। समजने में आसान है। ग्रिमका कानून नही जानते हो तो समज लेना।

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४६७) से

१८६. पत्र : चक्रैयाको

सेवाग्राम
६ फरवरी, १९४५

चि० चक्रैया,

खत मिला। तकलीफसे मत हारो। थोड़े दूर तो हो। उसमें कुछ लाभ भी है। वच्चोंको लेना और सिखाना तो अच्छा होगा ही। तुमारी नयी तालीमका थोड़ा परिचय कर लेना। विनकाममें[1] और भी प्रावीण्य पाओ तो रस्ता साफ होगा। कृष्णदासने[2] डब्लिन करने का आसान तरीका ढूढ लिया है। उसे पत्रसे समज लो और करो। तव हाथ सूत मीलके सूतसे मुकावला कर सकता है। धीरजसे, ज्ञानसे और मेहनतसे सब मुसीवत जीतोगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९११४) से। सी० डब्ल्यू० ९१८३ से भी

१. बुनाई
२. छगनलाल गांधीके पुत्र

१८३. पत्र : रावजीभाई मणिभाई पटेलको

सेवाग्राम
६ फरवरी, १९४५

चि० रावजीभाई,

भाई गोकुलदास गये। इसके लिए उनके परिवारके पास सम्वेदना व्यक्त करना। वस्तुतः देखा जाये तो इसमें सम्वेदना व्यक्त करने-जैसी क्या वात है? उन्होंने तो वहुत काम किया। मै तो उन्हें अच्छी तरह जानता था। उनकी कमी तो महसूस होगी। उस कमीको पूरा करना पीछे रह जानेवालो का काम है।

बापूके आशीर्वाद

रावजीभाई मणिभाई पटेल
विट्ठल कन्या विद्यालय
नडियाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८४. पत्र : अभयकुमारको

सेवाग्राम
६ फरवरी, १९४५

भाई अभय,

ऐसी ज्ञानवार्ता तो मैंने वहुत सुनी है। उन सवका सारांश तो मैं मानता हूं। लेकिन किसीका यह मतलव नही है कि हमारेमें मत-भिन्नता न हो या किसीका दोष न देखे। दोष देखते हुए प्रेम करना मैं सीखा हूं। करता हूं और इससे संतोष है।

क्या यह काफी नही कि मै सत्यका चिन्तवन करता हूं। जैसे उसे देखता हूं ऐसे करता रहूं। ऐसी भी वात नहीं कि हम सव सत्यको एक ही तरह देखें। दृष्टि-कोण भी भिन्न रहता है।

बापुके आशीर्वाद

अभयकुमार
पोस्ट वाक्स ८५
नई दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८८. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

सेवाग्राम
७ फरवरी, १९४५

चि० मुन्नालाल,

मुझे ऐसा लगा कि ज्वारका दलिया ठीक पकता नही है। मैंने दो रोज खाया। यह तो फिरसे कुकरपर चढाने के बाद भी मुझे चवाने में मुलायम नही लगा। वल्कि सख्त भी लगा। मेरा सुझाव है कि जो पकाया जाये वह इतना पक जाना चाहिए कि मेरे-जैसे नकली दाँतवाले भी उसे खा सकें। मेरा दूसरा सुझाव यह है कि ज्वारकी महेरी बनाओ, दलिया नही। महेरी बनाना अर्थात् ज्वारका आटा पीसकर उस आटेको पकाना। मैं उसका प्रयोग करने की सोचता हूँ। जेलमें तो महेरी ही देते है और वह पच भी जाती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४६५) से। सी० डब्ल्यू० ७१८३ से भी, सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

१८९. पत्र : जयप्रकाश नारायणको

सेवाग्राम
७ फरवरी, १९४५

चि० जयप्रकाश,

तुमारे खत पढ़ने से हर्ष होता है। तुम खुश रहो और शरीर बिलकुल अच्छा करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २२२०) से

१८७. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम[१]
७ फरवरी, १९४५

चि० अमृत,

मैं तुम्हें उर्दूमें लिखना चाहता था। लेकिन समयाभावके कारण वैसा न कर सका।

तुम्हारा अंग्रेजीमे पूछा प्रश्न मिल गया है। मेरी निश्चित राय है कि पति-पत्नी अलग-अलग धर्मोके माननेवाले हों तो उनके बच्चोको पिताके धर्मकी शिक्षा दी जानी चाहिए। यह बात मुझे सबकी खुशी और सबके हितकी दृष्टिसे बिलकुल स्पष्ट लगती है। शिक्षा उदार किस्मकी होनी चाहिए, यह कहने की तो कोई जरूरत ही नही है। मैं सिर्फ धर्मके चुनावके सवालपर विचार कर रहा हूँ। बच्चे दो धर्म नहीं मान सकते। उन्हे माताके धर्मका आदर तो करना ही चाहिए। अगर मातामें इतना विवेक और अपने पतिके धर्मके प्रति इतना आदरका भाव नहीं हो तो विवाह सतही हो जायेगा। हाँ, अगर कोई पति इन चीजोके प्रति बिलकुल उदासीन हो तो बात दूसरी है। मै एक ऐसा मामला जानता हूँ। बात साफ हुई न? बी० से कहो कि वह चुप्पी न साधे रहे।

स्नेह।

बापूके आशीर्वाद[२]

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६९५) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ६५०४ से भी

१ और २. ये देवनागरी लिपिमें हैं।

१९२. एक पुर्जा

७ फरवरी, १९४५

मुझे आश्चर्य और दुःख होता है कि ऐसे सवाल मुझे बार-बार पूछे जाते हैं और कार्यकर्ता यहा आने का खर्च उठाते हैं और मेरा किमती समय रोकते हैं। सब सवालका जवाब एक या दूसरे रूपसे जो दिये हैं वही देख लेने चाहिये।

मो० क० गांधी

पुर्जेकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१९३. पुर्जा: श्रीमन्नारायणको

[७ फरवरी, १९४५ के पश्चात्][1]

मुझको यह सब पसंद है।[2] महिलाश्रमके विभाग कर लेना अच्छा है। मैं नहीं जानता कि सब विभागका एक कोई उपरी रहेगा या रहेगी या नही। अगर सब विभाग तुमारे मातहत रहे और शांताबहिनको तुम जिम्मेदार रहो तो मेरा ख्याल है सब ठीक हो जायगी। तीनकी कमिटी भले रहे लेकिन शांताबहिन तो तुमको ही पूछे और तुम ही सब जिम्मेदारी ले लो तो सब सरल हो जायगा।

पांचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३०४

१. साधन-सूत्रमें यह पुर्जा श्रीमन्नारायणको लिखे ७ फरवरी, १९४५ के पत्रके बाद रखा गया है।

२. श्रीमन्नारायणकी महिला आश्रम-सम्बन्धी योजना

१९०. पत्र : रामस्वामीको

सेवाग्राम
७ फरवरी, १९४५

चि० रामस्वामी,

अब मैं तुम्हें इंग्रेजीमे क्यों लिखु? इतने दिनोंमें हिंदी तो आना चाहिये।

तुमने जाने का निश्चय तो कर ही लिया है। सलतनत नही भेजे तो दूसरी तरह जाओगे। वह भी एक रास्ता है। जाओ। जो संबंध रख सकते है वह रखो। सच्चे सेवक बनो।

बापुके आशीर्वाद

रामस्वामी
तालीमी संघ
सेवाग्राम

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१९१. पत्र : श्रीमन्नारायणको

से[वाग्राम]
७ फरवरी, १९४५

चि० श्रीमन,

महिला आश्रमके बारेमें जो तुमने लिखा है पढ़ गया। अच्छा है।

उद्देश दो-तीन लाइनमें लिख सकते हो, लिखो।

इसमे जमनालालजी ने दिये हुए वचनका ख्याल करना। हो सके वहांतक हम उसका विचार व अमल करे।

बापुके आशीर्वाद

पांचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३०४

१९५. पत्र : लीलावती आसरको

सेवाग्राम
८ फरवरी, १९४५

चि० लीली,

मैं तुझे कुछ लिख तो चुका हूँ, लेकिन फिर भी तेरा एक पत्र मेरे पास पड़ा है, इसलिए यह लिख रहा हूँ। अध्ययन तू कभी मत छोडना, चाहे फिर वह कठिन ही क्यों न हो। तुझे समझ-बूझकर वहाँ पढ़ने के लिए भेजा है। अगर तू सफल हो गई तो जो खर्च हो रहा है और जो समय जा रहा है वह जरा भी नही अखरेगा। एक वार शुरू करने के वाद छोड़ा तो वही जाता है जिसे मूलतः अवांछनीय माना जाता है। यह काम ऐसा नही है। यह जो है उसे हम पहलेसे जानते थे। मेरी सेवाका मोह विलकुल नही करना चाहिए। आश्रमका भी नही होना चाहिए। अगर तू वादमें आश्रमसे एकरूप हो सकी तो आज जो कर रही है वह भी आश्रमका और मेरा ही काम है। अव फिरसे सव किये-धरेपर पानी मत फेर देना। सोच-विचार छोड़कर पढ़ाई (अध्ययन)में डूव जाना। मेरी तबीयत ठीक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९६००) से। सी० डब्ल्यू० ६५७२ से भी; सौजन्य : लीलावती आसर

१९६. पत्र : चिमनलाल नटवरलाल शाहको — अंश[1]

[८ फरवरी, १९४५][2]

...तो किताबोंमें होना चाहिए। इसलिए मैंने सोचा कि यह आँकड़ा आसान और सम्भव होना चाहिए।

महादेवीके स्वभावमें जो असंगति देखो वह मुझे वताना। मुझे उसे जानने की जरूरत है।

सरोजिनी वहिनवाला पैसा शायद तुम्हें न मिले। उसे वट्टे खाते डालकर जाने दो। मै उसे जो पत्र लिख रहा हूँ वह तुम देखना।

१. यह प्रभुदास गांधी द्वारा हस्ताक्षरित चरखा संघके हिसावके विवरणके नीचे लिखा हुआ मिला है। इसका इससे पहलेका अंश उपलब्ध नहीं है।

२. जी० एन० रजिस्टरसे

१९४. पत्र : तेजबहादुर सप्रूको

सेवाग्राम
८ फरवरी, १९४५

प्रिय डॉ० सप्रू,

हालाँकि कहने को मैं सुबहके सवा आठ बजेसे रातके सवा आठ बजेतक आराम करता हूँ, और मौन रखता हूँ, लेकिन दरअसल मैं खूब काम कर रहा हूँ। इसीलिए आपको उत्तर[1] देने में देर हुई।

अगर आपको ज्यादा तकलीफ न हो तो मैं चाहूँगा कि आप कायदे-आजमके साथ मेरी बातचीतके बारेमें साफ-साफ सवाल पूछें।[2] मैं सिर्फ उस सवालका ही जवाब दूँगा।

देखता हूँ, आपने तो बहुत बड़ा कार्यक्रम अपने हाथमें ले लिया है।[3] मैं आपकी पूर्ण सफलताकी और उस कामको पूरा करने के लिए आपको पूरी शक्ति प्राप्त हो, ऐसी कामना करता हूँ।

आशा है, रोगी[4] अब खतरेसे बिलकुल बाहर होगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधी-सप्रू पेपर्स; सौजन्य : नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता। जी० एन० ७५७१ से भी

१. सर तेजबहादुर सप्रूके पत्रके लिए देखिए परिशिष्ट ३।

२. उत्तरमें तेजबहादुर सप्रूने अपने १६ फरवरी, १९४५ के पत्रके साथ कुछ प्रश्न भेजे। देखिए "उत्तर : तेजबहादुर सप्रूके प्रश्नोंके", २६-२-१९४५।

३. तात्पर्य सर तेजबहादुर सप्रूकी अध्यक्षतामें गठित समझौता-समितिसे है। इस समिति का गठन विभिन्न दलोंके नेताओं और अन्य सम्बन्धित पक्षोंसे बातचीत करके "राजनीतिक तथा संवैधानिक दृष्टिसे पूरे साम्प्रदायिक और अल्पसंख्यकों-सम्बन्धी प्रश्नपर" विचार करने . . . और दो महीनेके अन्दर कोई समाधान ढूँढ़कर "गैर-दलीय सम्मेलनकी स्थायी समितिके समक्ष प्रस्तुत करने" के निमित्त किया गया था। इस समितिके अन्य सदस्य थे — मु० रा० जयकर, सर्वेपल्ली राधाकृष्णन्, गोपालस्वामी अय्यंगार और महाराज सिंह।

४. तेजबहादुर सप्रूके पुत्र

१९८. पत्र : कृष्णचन्द्रको

८ फरवरी, १९४५

चि० कृ० चं०,

शिक्षकोंकी निराशा तुम आसानीसे दूर कर सकते हो। उनका बड़ा दोष या रोग यह है कि वे उद्योगशील कारीगर नहीं है, न कारीगरीपर विश्वास है।

दा० महमूदसे कहो तुमारे पास समय नहीं है। वे क्यों किसीके साथ बात करना भी चाहते है? क्यों कुछ उद्योग नहीं करते? कुछ तो कर ही सकते है। तुनाइ करे, काते, भाजी साफ करे, साथ-साथ उर्दू सिखावे, हिन्दी खूब सीख ले। तुलसीदास पढ़े।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४६८) से

१९९. पत्र : डॉ० सैयद महमूदको

सेवाग्राम
८ फरवरी, १९४५

भाई महमूद,

तुमने मुझे अंग्रेजीमें क्यों लिखा? अगली बारसे हिन्दुस्तानीमें ही लिखना। तुम्हें माफी मांगने की जरूरत क्यों है। हम सब एक परिवारके सदस्य हैं। परेशान मत होओ; खुश रहो। अपनी सेहत ठीक करो।

तुम्हारा,
गांधी

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०९३) से

यहाँसे अनुपमाके जो ५००० रुपये तुम्हें भेजे गये हैं उन्हें अस्पतालके खातेमें जमा कर देना। मुझे अभी-अभी मालूम हुआ है कि उक्त राशि अस्पतालके विचारसे ही भेजी गई थी। मुझे बताया तो गया था लेकिन उस समय मेरा ध्यान कदाचित् कहीं और रहा होगा। अच्छा ही हुआ कि यह राशि मेरे खातेमें जमा की गई है, क्योंकि ऐसा होने से अब इसे चाहे जिस खातेमें जमा करवाया जा सकता है।

शारदा और आनन्द बदकिस्मत हैं। उनपर कोई-न-कोई कठिनाई बनी ही रहती है।

बजाज कम्पनीकी ओरसे मिले पैसेके बारेमें कनुने [तुम्हें] लिखा है।

इस तरह तुम्हारे पत्रकी सभी बातोंका मैंने उत्तर दे दिया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६१६) से

१९७. पत्र : कानम गांधीको

सेवाग्राम
८ फरवरी, १९४५

चि० कानम,

तेरे पत्रका उत्तर मैं तत्काल नही दे पाया। अगर तू यह समझ गया है कि भूत-प्रेत नहीं होता तो 'टाइम्स' के लेखका तुझपर कोई असर नहीं होना चाहिए। अखबारोंमें थोड़ा-बहुत सार्थक होता है, लेकिन अधिकांश कूड़ा होता है। इसलिए अखबार पढ़नेवालोंको सावधान रहना चाहिए। बीजगणितका सवाल हल करने की तेरी रीति उत्तम है। इससे मालूम होता है कि तेरी बुद्धि विकसित हो रही है। जिस रीतिका प्रयोग तूने किया है, सच पूछो तो वह अंकगणितकी रीति है। तुझे 'एक्स' (x)को एक कोई रकम मानने की आदत डालनी चाहिए। बादमें उसकी कीमतका पता चलता है।

अपनी लिखावट अभी और सुधार।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९५१६) से। सौजन्य : कानम गांधी

२०२. पत्र : रसिकलाल उमियाशंकर मेहताको

सेवाग्राम
९ फरवरी, १९४५

चि० रसिकलाल,

द० आ० जा और जितनी बन सके उतनी लोकसेवा कर। धनका लोभ नहीं करना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

रसिकलाल उमियाशंकर मेहता
जी/२०, सिक्कानगर
विट्ठलभाई पटेल रोड
बम्बई–४

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२०३. पत्र : हर्षदा दीवानजीको

९ फरवरी, १९४५

चि० हर्षदाबहिन,

सारा सूत और तुम्हारा पत्र भी मिला। वह आज ही बैगमें मिला। मेरे आशीर्वाद तो तुम्हें प्राप्त ही हैं। तुम नौकरोंसे क्यों कतवाती हो? हाँ, अगर वे समझ-बूझकर और स्वेच्छासे कातते हों तो बात अलग है। वैसे मेरे लिए तो यही काफी है कि तुम नियमपूर्वक दोनों हाथोंसे कातती हो।

मैं दीवानजीका चरखा रोज चलाता हूँ। वह मुझे पसन्द आ गया है। उसमें कुछ नुक्स हैं, लेकिन उन्हें मैं किसीसे सुधरवा लेता हूँ या खुद सुधार लेता हूँ। यदि मुझे ज्यादा वक्त मिले, तो उसे ज्यादा बारीकीसे देखूँगा।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती हर्षदाबहिन दीवानजी
१५वाँ रास्ता, खार
बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०२२२) से

२००. पत्र : मादलेन रोलाँको

सेवाग्राम
९ फरवरी, १९४५

प्रिय मादलेन,

जिस व्यक्तिकी[1] खातिर तुम जीती जान पड़ती थी उसके निधनपर मेरी हार्दिक समवेदना तुम्हारे साथ है। तथापि सही स्थिति तो यह है कि तुम्हें अब पहलेसे और भी ज्यादा काम करना चाहिए — मतलब कि अगर तुम्हारी सेहतको देखते हुए तुम्हारे लिए काम करना सम्भव हो तो।

स्नेह।

बापू

कुमारी रोलाँ

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२०१. पत्र : जालभाई रुस्तमजीको

सेवाग्राम
९ फरवरी, १९४५

चि० जालभाई,[2]

तुम्हारा पत्र मिला। मैं जवाब देना गोल कर जाता, लेकिन सोराबजीकी[3] बीमारी के बारेमें पढ़कर चौंक गया। यह बीमारी लापरवाही बरतने के कारण होती है। यदि वे नियमका पालन करें तो अवश्य चली जायेगी। मेरी दुआएँ तो हैं ही। मणिलालका काम ठीक चल रहा है।

सबको
बापूके आशीर्वाद

जालभाई रुस्तमजी
७४, विक्टोरिया स्ट्रीट
डर्बन, नेटाल

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. मादलेन रोलाँके भाई रोमाँ रोलाँ
२ और ३. पारसी रुस्तमजीके पुत्र

२०६. पत्र : शामलदास गांधीको

सेवाग्राम
१० फरवरी, १९४५

चि० शामलदास,

साथका पत्र[1] पढ जाना। उसमें [उल्लिखित मामलेमें] यदि तू न्याय दिलवा सके तो केवलरामभाईकी आत्मा जहाँ होगी, प्रसन्न होगी। अपने अन्तिम दिनोंमें तेरे पिताके समान केवलरामभाईने भी मेरे साथ आध्यात्मिक सम्बन्ध स्थापित किया था। दोनो [दक्षिण] आफ्रिका जाने के लिए तैयार हो गये थे, लेकिन दोनों चल बसे। दोनोंके लिए मैंने दक्षिण आफ्रिका जाने की तैयारी भी कर दी थी। लेकिन भाग्य तो दो कदम आगे ही चलता है न?

बापूके आशीर्वाद

शामलदास गांधी
मार्फत 'वन्दे मातरम्'
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२०७. पत्र : कमलनयन बजाजको

१० फरवरी, १९४५

चि० कमलनयन,

इसे[2] पढ और इसपर कार्रवाई कर। अब बहुत समय बीत गया। कार्रवाई करके पत्र मुझे वापस भेज। मुझे उत्तर देना है।

बापूके आशीर्वाद

कमलनयन बजाज
वर्धा

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह पत्र केवलराम दवेके पौत्र महेन्द्र भोगीभाईकी ओरसे लिखा गया था; देखिए "पत्र : महेन्द्र भोगीभाई दवेको" पृ० ५९।

२. शान्तिनिकेतनसे रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखा गया पत्र

२०४. पत्र : बाबा मोघेको

१० फरवरी, १९४५

भाई बाबाजी,

शर्माजी लिखते हैं[1] उपचारक राजूजी भी चाहते है कि तुमारे वही ठहर जाना। फायदा हुआ है और भी होगा। तुम तीनों मुझे प्रिय है, समझदार हो। मैंने यहां आ जाने की इजाजत तो दी है लेकिन गोखलेजी है तो तुम भी रह जाओ तो मुझे अच्छा लगेगा और तुमारा दर्द चला जायेगा। बार-बार ऐसा मौका नही मिलेगा। आनंद भले अकेला आवे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार तथा आनन्द तो० हिंगोरानी

२०५. पत्र : ए० एन० शर्माको

सेवाग्राम
१० फरवरी, १९४५

चि० शर्माजी,[2]

आशा है, हिन्दी सीखने में तुमने कुछ प्रगति की होगी।

तुम्हारी सलाहके मुताबिक बाबाजीसे[3] मैंने कहा है कि वे यहाँ रुकें और प्राकृतिक चिकित्साको अपने ऊपर पूरी तरह आजमाकर देखें।

तुम्हारा,

अंग्रेजीकी नकलसे। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

१. देखिए अगला शीर्षक।
२. सम्बोधन देवनागरी लिपिमें है।
३. देखिए पिछला शीर्षक।

२१०. भाषण: सेवाग्राममें

१० फरवरी, १९४५

महात्मा गांधीने सभाके सामने कुछ शब्द कहे।[1] उन्होंने कहा कि आपने शिविर के आयोजक श्री कनु गांधीको जो मानपत्र दिया है, उसे मैंने संयोगसे देख लिया है। आपने उसमें कुछ बहुत अच्छी-अच्छी बातें कही हैं। लेकिन जैसा कि अक्सर होता है, यदि मानपत्र देनेके साथ ही सब-कुछ खत्म हो गया और आप लोग शिविरसे कोई स्थायी मूल्यकी वस्तु अपने साथ नहीं ले गये तो यह सारी मेहनत बेकार जायेगी। मैं आपसे अपेक्षा करता हूँ कि आपने महीने-भरके प्रशिक्षणमें जो-कुछ सीखा है उसे सौगुना विकसित करें और नामसे ही नहीं, कामसे भी सच्चे ग्रामसेवक बनें। आप लोगोंको प्रशिक्षणके लिए बहुत सारे उम्मीदवारोंमें से चुना गया। यह आपकी जिम्मेदारी है कि आप अपने-अपने प्रान्तोंमें समग्र ग्रामसेवाके सन्देशवाहक और ज्योति-वाहक बनकर लौटें और इस प्रकार अपने चुनावको उचित सिद्ध करें। आप लोग भंगी बनकर गाँवोंमें जायें और वहाँ झाड़ू लगायें और सफाई करें तथा विनम्र सेवकोंकी भांति गाँववालोंकी सेवा करें। जो लोग सीखना चाहें, उन्हें आप यथा-सम्भव अच्छेसे-अच्छे ढंगसे कताई और अन्य ग्रामीण दस्तकारियोंकी शिक्षा दें। बाहरी मददके अभावमें आप कभी असहाय न अनुभव करें। आपको जो शिक्षा दी गई है, यदि आपने उसकी भावनाको सचमुच आत्मसात कर लिया है तो आपका काम आपके शरीरके साथ-साथ आपके दिल और दिमागको भी विकसित करेगा। इसलिए स्वभावतः आपके चरित्रका भी विकास होगा। आपकी सफलता आपकी दक्षता और ज्ञानसे ज्यादा आपके हृदयकी निर्मलतापर निर्भर करेगी। यदि आपके अन्दर नैतिक शुद्धताका अभाव है तो आप जिन गाँवोंमें जाकर रहेंगे उन गाँवोंके लिए आप वरदान न होकर अभिशाप सिद्ध होंगे।

गांधीजी ने कहा कि मुझे यह देखकर खुशी हुई है कि हालांकि आप लोग विभिन्न प्रान्तोंसे आये हैं, लेकिन आप सब लोग एक ही प्रकारका भोजन करके स्वस्थ रह सके। इससे हमें एक राष्ट्रके रूपमें अपनी एकताको और अधिक साकार करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। विभिन्न प्रान्तोंके रीति-रिवाज, पहनावा, भोजन और भाषामें कुछ हदतक फर्क होना लाजिमी है, लेकिन यदि हमें एक राष्ट्रके रूपमें अपनी नियतिको साकार करना है तो इस प्रत्यक्ष विविधताके पीछे जो बुनियादी

१. भारतीय पञ्चाङ्गके अनुसार कस्तूरबाकी पुण्य-तिथिपर २४ घन्टेका एक कताई-यज्ञ आयोजित किया गया था, जिसमें गांधीजी ने भाग लिया। उसी दिन कनु गांधीका समग्र ग्रामसेवा शिविर भी समाप्त हुआ था।

२०८. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

१० फरवरी, १९४५

आश्चर्य है। जिन्होंने पश्चिमकी तालीम पाई है या जो कारीगर नही है उनका [कारीगर] होने की इच्छा नही होगी, न शीघ्रता। मैंने तो ऐसे बहुत देखे हैं।

२. फुटकर चीजें होती रहेगी। वे सब सिलसिलेवार नही रहेगी। ठीक है।

३. चित्त उदास तो होना ही नही चाहिये। स्थितप्रज्ञ याद करो।

बापु

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४६९) से

२०९. सलाह : कुष्ठ-राहत कार्यकर्त्ताओंको[1]

१० फरवरी, १९४५

यह तो जानकारको राह दिखानेवाली बात हुई। कुष्ठ रोगियोसे सम्बन्धित काममें मेरी रुचि तभीसे है जब मै दक्षिण आफ्रिकामें रहता था। मै मानता हूँ कि यहाँकी संस्था (मनहर दीवान द्वारा संचालित दत्तपुर कालोनी)[2] तो आपने देखी ही होगी। मै चाहूँगा कि आप एक विशद योजना भेजे, जिसमें यह भी बताया जाये कि बोर्डको कितना खर्च पड़ेगा। धन्यवादकी क्या आवश्यकता है?

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १२-२-१९४५

१. मद्रासके कुष्ठ-राहत कार्यकर्त्ता टी० एन० जगदीशन् और वेल्लूरके डॉ० एम० आर० जी० कोन्चरेनने गांधीजी से मिलकर कस्तूरबा स्मारक कोषके अन्तर्गत स्त्रियों और बच्चोंके लाभके निमित्त गाँवोंमें कुष्ठ-राहत कार्यको संगठित करने का एक प्रस्ताव सामने रखा था। गांधीजी मौन रख रहे थे, इसलिए उन्होंने यह उत्तर लिखकर दिया।

२. देखिए खण्ड ७८, पृ० ४१३।

२१२. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

सेवाग्राम

११ फरवरी, १९४५

मैंने जो छोड़ने का लिखा है सकारण है। उसका मतलब यह नहीं की काम छोडना लेकिन इसका मतलब यह है सही कि अगर दिया हूआ वचन बोज-सा लगता है तो तुमारी आजादी कायम है। अर्थात श्रद्धाकी मतलब है उससे नित्य बल बढ़ता है, कम कभी नही हो सकता है। शिस्तके बारेमें यह है। शिक्षकोने शिष्योके हृदयमें प्रवेश नही किया है। पुराना ढंग छोड़ पाये नही है। उद्योगमें तल्लीन हो तो शिस्त अपने आप आती है। शिस्त कार्य-भिन्न न माना जाये।

बापु

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४७१) से

२१३. पत्र : कृष्णचन्द्रको

११ फरवरी, १९४५

चि० कृ० चं०,

घबराहट कैसे? मैंने तो सर्वसामान्य वस्तु लीखी थी। तुमारी आझादीकी रक्षा की। लेकिन उसमें ज्यादा अर्थ है ही नही। जो करते हो वह करते जाओ उसीको बढ़ाओ, अच्छे सशास्त्र विनकर[1] हो जाओ। आश्रममें जितना करते हो मै काफी समजता हूं। मेरे लिखने का सीधा अर्थ ही करो। अर्थ दूसरा हो ही नही सकता। जाग्रत हो जाओ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४७०) से

१. बुनकर

एकता है उसे पूरी तरह समझना होगा और एक कामचलाऊ किस्मका समान मानदण्ड विकसित करना होगा।

अन्तमें महात्मा गांधीने कहा कि आप सबको हिन्दुस्तानी सीखनी चाहिए और उर्दू तथा हिन्दी, दोनों लिपियोंमें दक्षता प्राप्त करनी चाहिए। हिन्दुस्तानीका अर्थ क्लिष्ट और संस्कृतनिष्ठ हिन्दी या फारसीनिष्ठ उर्दू नहीं है। हिन्दुस्तानीका अर्थ है एक सीधी-सरल जबान, जिसे उत्तर भारतके गाँवोंमें हिन्दू और मुसलमान दोनों बोलते हैं। ग्रामवासी क्लिष्ट हिन्दी या उर्दू नहीं समझते। उनकी जाति या धर्म कुछ भी हो, उनकी भाषा या तो सरल और सीधी हिन्दुस्तानी है या प्रान्तकी कोई बोली है। क्लिष्ट और कृत्रिम शैलीकी हिन्दी या उर्दू तो शहरोंकी बीमारी है, जो पारस्परिक अविश्वासके कारण पैदा हुई। जबतक यह स्थिति कायम रहती है तबतक आपके लिए हिन्दी और उर्दू, इन दोनों लिपियोंको सीखना जरूरी है। बेशक आपके मतभेदोंको तीव्र करने और उनका लाभ उठाने के लिए एक तीसरा पक्ष मौजूद है, लेकिन यदि आप सचमुच महसूस करते हैं कि हिन्दू और मुसलमान सगे भाई और एक ही कुटुम्बके सदस्य हैं तो संसारकी कोई शक्ति आपमें अलगाव नहीं पैदा कर सकती और न आपको एक-दूसरेसे अलग रख सकती है। कहावत है कि ताली दोनों हाथोंसे बजती है। मैं आपको सच बताता हूँ कि सच्ची अहिंसा इस बातकी प्रतीक्षा नहीं करती कि दूसरा पक्ष सद्भावका परिचय दे। यदि आप अपना कर्त्तव्य समझेंगे और उसके अनुसार कार्य करेंगे तो आपकी सफलता सुनिश्चित है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १४-२-१९४५

२११. आश्रमकी टिप्पणी

११ फरवरी, १९४५

मैंने कल सुना कि नागु जो आश्रममें छह बरससे काम कर रहा है उसे न दिशाका ज्ञान है न हिन्दुस्तानके इतिहास-भूगोलका। अगर ऐसा ही है तो हमारे सोचने की बात है। . . .[1]

बापु

बापूकी छायामें, पृ० ३८८

१. साधन-सूत्रके अनुसार

२१६. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

सेवाग्राम
१२ फरवरी, १९४५

प्रिय कु०,

सु[शीला] एक रोगीको देखने नागपुर गई है। आज रात उसके लौटने की सम्भावना है। अगर उससे स्टेशनपर मिलना चाहो तो मिल सकते हो।

इलाज मैं जानता हूँ। लेकिन देखें, डॉक्टर क्या कहते हैं। फिर अगर जरूरी हुआ तो मैं बताऊँगा।

तुम्हारी पुस्तकके बारेमें तुम्हारा पुर्जा मिल गया था। कुछ कामकी चीज दे सकूँगा, ऐसी आशा है।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१७०) से

२१७. पत्र : कृष्णचन्द्रको

सेवाग्राम
१२ फरवरी, १९४५

चि० कृष्णचन्द्र,

साथका पत्र पढ़कर कृष्णदासको देना। वह पढ़कर वापस मुझे दे।

१. अनावश्यक होने और इस स्थितिके बारेमें बता दिये जानेके बावजूद यदि कोई व्यक्ति मेरी सेवा करना चाहे तो उसके सन्तोषके लिए उसे सेवा करने दी जा सकती है, ऐसा मैंने अपने बारेमें माना है। इसीसे मैं लड़कियोंको अपने पाँव दबाने देता हूँ। दूसरोंको ऐसा नहीं करने दूंगा। भणसाली जो करता है उसमें कुछ हर्ज नहीं; क्योंकि मुझे उसपर पूरा विश्वास है। अधिकार कोई नहीं है। ऐसा अधिकार होता भी नहीं है। यह स्पष्ट होना चाहिए।

२. चम्पाको जो करने दोगे उसकी जिम्मेदारी तुम्हारी होगी। इसमें मैं तुम्हारा मार्गदर्शन नहीं करूँगा। उसके साथ तुम जितनी चाहो उतनी सख्ती बरत सकते हो। चम्पासे मैंने कहा है कि वह तुमसे जितनी चाहे उतनी छूट ले सकती है; लेकिन मुझसे नहीं, क्योंकि रोजकी देखरेखकी जिम्मेदारी मेरी नहीं है।

२१४. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

११ फरवरी, १९४५

चि० कुमारप्पा,

तुमारे १५ तारीखको ५ बजे शामको आना। तब दुसरा करेंगे। मिसिझ होपमेनका तब पूछो। हिंदीमें ठीक है ना?

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१६९) से

२१५. पत्र : श्रीमती दासको

सेवाग्राम
११ फरवरी, १९४५

प्रिय भगिनी,

महेशने मुझे कल ही तार बताया कि दासजी चले गये। उससे दुःख मत मानो। उनका कार्य हो गया और शरीर छुट गया। वह तो शरीर जाने पर भी जिन्दा है। लेकिन उनको हम जीवित रख सकते हैं, अगर उनका कार्य करें। यह बोज तुमारे सर सबसे ज्यादा समजो। दुःख मानकर श्वेत वस्त्र पहनकर उनको अपने जीवनमें जीवित नहीं करेगी, लेकिन सादगी कायम कर, नैसर्गिक उपचार हासिल कर और क्रोधादि शत्रुको जीतकर ही कर सकती है। मुझे लिखो क्या करती है, कैसा है? निमाई क्या करता है? दासका एक खत मेरे पर इन दिनोंमें आया था।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती दास

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२१९. भेंट : गोविन्द सहायको[1]

१२ फरवरी, १९४५

खबर है कि जो आरोप लगाये गये हैं उनके बारेमें पूरी छानबीन किये बिना और बगैर किसी निश्चित प्रमाणके गांधीजी ने अपनी राय देने में असमर्थता प्रकट की। इसलिए उनकी सलाह है कि हरएक अपने विवेकके अनुसार चले। उन्होंने कहा:

इससे कुछ गड़बड़ी पैदा हो सकती है, लेकिन उसमें कोई हर्ज नही।

[अंग्रेजीसे]
हितवाद, १३-२-१९४५

२२०. तार : दिनशा मेहताको

अविलम्बनीय

१४ फरवरी, १९४५

दिनशा मेहता
मार्फत प्राकृतिक चिकित्सालय
पूना

कभी भी चले आओ।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. अ० भा० कांग्रेस कमेटीके सदस्य गोविन्द सहायने गांधीजीसे पूछा था कि साम्यवादियोंके प्रति कैसा रवैया अपनाया जाये।

३. आश्रम-व्यवस्थापकको 'स्थितप्रज्ञ', 'गुणातीत' और 'भक्त' होना चाहिए। इसके बारेमें ['गीता'] का दूसरा, बारहवाँ और चौदहवाँ अध्याय पढ़ जाना।

४. विषयकी दृष्टिसे अंग्रेजी दूसरोंसे क्यों सुनी जानी चाहिए? अपने-आप पढ़नी चाहिए। भणसाली रामकृष्ण [का साहित्य] पढ़कर गुजरातीमें समझा सकता है। कोई अपने-आप अंग्रेजी पढ़ता है तो ऐसा करना निषिद्ध नहीं है। हिन्दुस्तानकी चाहे कोई भी भाषा सीखी जा सकती है और भणसाली उसे सिखा सकता है। जिन लोगोंको अंग्रेजी भाषाका ज्ञान है वे उसे भूल जायें, ऐसा मैं कदापि नहीं कह सकता। व्यंग्य में यदि मेरे मुँहसे ऐसा निकल जाये तो यह एक अलग बात है। मैं स्वयं अंग्रेजीका सजग भक्त हूँ, लेकिन उसका प्रयोग उचित स्थानपर ही होना चाहिए, अनुचित स्थानपर नहीं।

५. ओमप्रकाशको अपनी घड़ी आश्रमको दे देनी चाहिए। मैं समझता हूँ कि मैं उससे ३० रुपये बना सकता हूँ। यह उचित है। लेकिन यदि ओमप्रकाश ३० रुपये आश्रमको देकर स्वयं घड़ीका उपयोग करना चाहे तो वह ऐसा कर सकता है।

६. अवश्य। देशी अर्थात् मातृभाषा सीखना धर्म है।

७. सामान्यतया नियुक्त स्थानपर ही कक्षा चलाना ठीक होगा।

यह मैं गुजरातीमें लिख गया। समझमें आ जायेगा ना?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५७६) से

२१८. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

१२ फरवरी, १९४५

ग्रिमका कानून पुस्तकालयके व्याकरणमें से लो। प्या० से पूछो, श्रीमनसे पूछो।

मशीन जल्दी नहीं बिगड़ती। दुरस्त करना सीख लो।

म् ठीक होना है।

सात दिनके बाद गन्ना चूमने की आवश्यकता नहीं। अगर शरीरके लिए उसकी आवश्यकता न थी तो दांतोंके लिए नीम या बबूलका दतून बिलकुल काफी है।

मेरे पास आकर बैठो। अच्छा यह होगा की कातो उस समय मजदूरके बारेमें वार्तालाप करो।

अस्वस्थ नहीं होना है।

बापु

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४७३) से

२२३. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

सेवाग्राम
१५ फरवरी, १९४५

चि० मुन्नालाल,

मैंने दलिया चखा। मैंने तो रसोई-घरमें बना दलिया ही चखने के लिए माँगा था। जो भेजा गया वह तो दो घन्टे कुकरमें चढा रहा था। हालांकि वह फूल गया था, फिर भी कच्चा लगा। बिना सीझी ज्वार उसमें से निकली और मुंहमें चोकर के छिलके ज्यादा आये। मुझे लगता है कि गेहूँके दलियेकी तरह ज्वारका दलिया नही बनाया जा सकता। आटा छान लेने के बाद दलियेमें कोई सार नहीं रह जाता। इसलिए ज्वारका तो आटा पीसकर और उसे भिगोकर इसकी महेरी या काँजी ही बनाई जा सकती है। तुम 'गीताजी' बहुत धीमी गतिसे पढ़ते हो। इसकी भी कला होती है। तुम्हें तो जल्दी-जल्दी पढ़ना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४६३) से। सी० डब्ल्यू० ७१८५ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

२२४. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

१५ फरवरी, १९४५

पवनारका क्यों मोकुफ रहा लिखना चाही[ये]

"अउजो" नही है "औज"[1] ऐसा ख्याल है। जो मुस्लीमभाई पढ़ते हैं उनसे जान लो।

बापु

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४७५) से

१. शायद गांधीजी का तात्पर्य "वज़ू" से है।

२२१. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

सेवाग्राम
१४ फरवरी, १९४५

चि० मुन्नालाल,

जब मैं स्नानागारमें था, तो तुम्हारे और शकरीवहिनके बीच कुछ बहस हो रही थी। दोनों गला फाड़कर चिल्ला रहे थे। यह किसलिए? वात तो तुम दोनोके बीच ही हो रही थी। किसीको सुना तो रहे नहीं थे। इसे कैसे बरदाश्त किया जा सकता है? चाहे जैसे हो, तुम्हें अपनी आवाजको नियन्त्रित करना चाहिए। कहाँ, कितनी ऊँची आवाजमें वात करनी चाहिए, यह तो विलकुल साधारण समझदारीकी वात है। यह याद रखो कि जो तुम करोगे वही दूसरे करेंगे, और जिसका तुम उपदेश दोगे वह पानीपर लिखे जैसा होगा।

तुम मुझे अपना दलिया भेजनेवाले थे। क्या तुम भूल गये, या दलिया भेजने के लायक ही नहीं था? ज्वारके आटेकी महेरी या काँजी बनाकर तो देखो। क्या तुम्हें डर है कि वह किसीको अच्छी नहीं लगेगी? क्या सब इतने नाजुक हो गये हैं?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

एक और बात भी लिखने को है। लेकिन वह फिर कभी।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४६४) से। सी० डब्ल्यू० ७१८४ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

२२२. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

१४ फरवरी, १९४५

बैठना और कहना तुमारे और दूसरोंके सुभिता पर। दिल चाहे तब आओ। कोई एकांत चाहें तो हट जाना।

बापु

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४७४) से

२२७. भाषण: सेवाग्राममें[1]

१५ फरवरी, १९४५

एक करोड़ चौबीस लाखकी एकत्र की गई राशिका उल्लेख करते हुए गांधीजी ने कहा कि हालांकि मैं कामको और तेजीसे चलाने के लिए अधीर हूँ, लेकिन मैं कोष की राशिका अपव्यय नहीं होने दूंगा, और न उसे लापरवाहीसे खर्च करने दूंगा। यह कोष एक अनपढ़ और सरल-हृदया स्त्रीके नामपर एकत्र किया गया है। मेरे तो आलोचक भी हैं, लेकिन बा के नहीं हैं। इसलिए उनके नामपर जो काम किया जाये, वह शत-प्रति-शत ईमानदारी-भरा होना चाहिए। मुझे कार्यकर्त्ताओंकी संख्याकी परवाह नहीं है। यदि मुझे इस बैठकमें दो योग्य औरतें या मर्द भी मिल जायें तो मैं उन्हींकी मददसे काम शुरू कर दूंगा और जैसे-जैसे योग्य और उपयुक्त कार्यकर्त्ता मिलते जायेंगे, मैं उस कामको बढ़ाता जाऊँगा। जहाँतक मेरा सवाल है, मैं तो ट्रस्टके अधीन बनाई गई विभिन्न प्रान्तीय समितियोंमें से पुरुषोंको कतई अलग रखना और उनमें स्त्रियाँ भर देना चाहूँगा। लेकिन उन्हें तभी लूंगा जब वे पुरुषोंसे ज्यादा नहीं तो उनके समान ही योग्य हों। अन्यथा तो मैं उनका शोषण कर रहा होऊँगा। मैंने ऐसा कभी नहीं किया है। भारतके सात लाख गाँवोंमें वितरित करने पर तो एक करोड़ चौबीस लाखकी रकम सागरमें बूंद-जैसी है। भारत युद्धपर प्रति-दिन एक करोड़से अधिक रुपया खर्च कर रहा है, लेकिन स्त्रियों और बच्चोंकी सेवाके लिए एक करोड़ चौबीस लाखकी रकम हरएकको बहुत बड़ी लगती है। इससे सिर्फ यही पता चलता है कि हम किस हदतक एक औंधी स्थितिके आदी हो गये हैं।

कोषका धन किस प्रकार खर्च किया जाना चाहिए, इसकी चर्चा करते हुए गांधीजो ने उसे तीन मदोंमें विभाजित किया [और कहा कि] प्राथमिकताकी दृष्टिसे पहला तो है गाँवोंमें स्त्रियों और बच्चोंके लिए चिकित्सा-सम्बन्धी सहायता। जो योजनाएँ प्रस्तुत की गई हैं उनसे लगता है कि हर कोई जच्चा-घर और स्त्रियों तथा बच्चोंके लिए मुफ्त अस्पतालोंकी बात सोचता है। मैं इस प्रकारके कामकी जरूरत समझता हूँ, लेकिन मैं यह स्वीकार करूँगा कि अभी मुझे इसका ठीक अन्दाजा नहीं है। किस प्रकारकी चिकित्सा संस्थाएँ होनी चाहिए और किस चिकित्सा-पद्धतिको अपनाया जाये, ये टेढ़े सवाल हैं। मैं इसपर काफी विचार कर रहा हूँ और आप लोग भी इस प्रश्नकी ओर गम्भीरतासे ध्यान दें। जहाँतक मेरा सवाल है, मेरा सूत्र तो यह है कि "रोकथाम इलाजसे बेहतर चीज है"। यदि मेरी चले तो मैं स्वच्छता और सफाईको इस मदके अन्तर्गत सबसे मुख्य कार्यका दर्जा दूं। इससे कोई फर्क

१. गांधीजी कस्तूरबा राष्ट्रीय स्मारक कोषकी प्रान्तीय समितियोंके मन्त्रियोंकी बैठकमें बोल रहे थे।

२२५. एक पुर्जा

१५ फरवरी, १९४५

जो आश्रमवासी हैं उनपर ही ब्रह्मचर्य फर्ज है। दूसरोंके लिए नहीं [और] यह नौकरको नहीं लागू होगा। रामप्रसादको होना चाहिए लेकिन वह आश्रमवासी नहीं है। हमारा आश्रम सचमुच आश्रम नहीं रहा है। लेकिन जिधर मैं रहता हूं वहां आश्रम-सा हो जाता है। आश्रम नाम देने से भी मैंने विरोध किया था लेकिन सब वही नाम देने लगे और मैं खामोश रहा हूं। इसका यह मतलब हरगिज नहीं है कि जो व्रतधारी है वे व्रत छोड़ सकते हैं।

बापु

पुर्जेकी नकल (सी० डब्ल्यू० ५९०३) से। सौजन्य: मुन्नालाल गंगादास शाह

२२६. पत्र: बल्तहुस्नको[1]

१५ फरवरी, १९४५

बल्तहुस्न,

आपका खत मिला। मजबूर हूँ। मैं आ तो नहीं सकता। सिर्फ उर्दूकी या सिर्फ हिंदीकी हिमायत मुझमें नहीं रही। मैं दोनोंकी तरक्की चाहता हूँ। दोनों मैं ऐसे ही चाहता हूँ। उम्मीद है आप मेरी मुराद समझे होंगे।

आपका,

मो० क० गांधी

उर्दूकी फोटो-नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. यह पत्र २३ फरवरीको बम्बईमें आरम्भ होनेवाले अंजुमन-ए-तरक्की-ए-उर्दूके प्रथम सम्मेलनमें शामिल होने के निमन्त्रणके उत्तरमें लिखा गया था। बादमें इसे २६ फरवरीको हुई अखिल भारतीय हिन्दुस्तानी प्रचार सभामें अल्लामा कैफीने पढ़कर सुनाया था।

सबसे छोटे गाँवसे काम शुरू करें और फिर धीरे-धीरे बड़ी आबादीवाले गाँवमें जायें। मुझे गुजरातके कुछ गाँवोंका पता है, जो छोटे-मोटे शहर-जैसे हैं। शहरोंके धनी लोग अपने धनके साथ वहाँ जाकर बस गये हैं। कोषका रुपया ऐसे गाँवोंपर नहीं खर्च किया जाना है।

प्र० : गाँववालोंकी आर्थिक उन्नतिके लिए आप क्या उपाय सुझायेंगे?

उ० : गाँवोंकी सच्ची सर्वतोमुखी उन्नतिसे गाँववालोंकी आर्थिक स्थितिमें सुधार होना निश्चित है। जच्चा-कार्यके अलावा मैंने अन्य जो विषय बताये हैं, उनपर होने-वाले कार्यका प्रत्यक्ष फल उनकी आर्थिक उन्नतिके रूपमें भी प्रकट होगा।

प्र० : अगर आपपर एक जिलेका भार हो तो आप अपना काम किस प्रकार शुरू करेंगे?

उ० : जिला तो इतनी बड़ी इकाई है कि उसे सँभालना मेरे बूतेसे बाहरकी बात है। यदि मैं एक गांवमें सफलतापूर्वक कामका सगठन कर सकूं तो मुझे सन्तोष हो जायेगा। वह बाकीके सात लाख गाँवोंके लिए एक अनुकरणीय नमूना होगा। हमने अभीतक ग्राम-कार्यको सच्ची लगनसे हाथमें नहीं लिया है। हमने अनाड़ियोंकी भाँति यहाँ-वहाँ कुछ किया है, इससे ज्यादा नहीं। मैं स्वयं अनाड़ी था। लेकिन अब हम वेहतर काम करने के लिए कृतसकल्प हैं।

प्र० : कुछ लोग अपने राजनीतिक कार्यके गौण अंगकी तरह रचनात्मक कार्य करते हैं। परिणाम यह है कि वे दोनोंमें से किसीके साथ न्याय नहीं कर सकते। इसे रोकने के लिए समुचित देखभालकी जरूरत है।

उ० : मैं इस बातसे बिलकुल सहमत हूँ कि रचनात्मक कार्य और राजनीतिक कार्यको मिलाना नहीं चाहिए। मेरे लिए तो यदि रचनात्मक कार्यको ढंगसे किया जाये तो वही हर तरहसे काफी है। इसके बाद और किसी कार्यक्रमकी जरूरत ही नहीं रह जाती। जहाँतक देखभाल रखने की बात है, तो इसके लिए वह बूढ़ा आदमी, जो आपका मन्त्री है और वह युवती जो ट्रस्टकी संगठन-मन्त्री है, यहाँ है ही। मेरा मतलब ठक्कर बापा और मृदुलाबहिनसे है।

प्र० : आज तो प्रान्तीय समितियोंमें पुरुष सदस्योंकी भरमार है। आप इनके स्थानमें स्त्रियोंको रखने की आशा कबतक करते हैं?

उ० : यदि मैं कर सकता तो आज ही सारे पुरुषोंको निकाल देता और स्वयं भी निकल जाता। लेकिन मैं स्त्रियोंको उनके गुणोंके आधारपर लूंगा, सिर्फ इस कारण नहीं कि वे स्त्रियाँ हैं। यदि हमें योग्य और उपयुक्त कार्यकर्त्ता मिल जायें तो मैं चाहूँगा कि हमारे हाथमें जो पैसा है वह काफी तेजीसे खर्च किया जाये। जो भी हो, मैं आशा करता हूँ कि मौजूदा कोष-राशि समाप्त होने तक स्त्रियाँ अपने मामलोंको आप ही सँभालने की क्षमता प्राप्त कर लेंगी।

प्र० : यदि आपको उपयुक्त महिला कार्यकर्त्रियाँ नहीं मिलतीं, तो कोषके धनका उपयोग उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए क्यों न किया जाये?

नहीं पड़ता कि ऐसा करते हुए आपको कुछ ऐसे लोगोंकी ओर ध्यान देने का अवकाश न मिले जिन्हें सहायताकी बहुत अधिक आवश्यकता है। कुछ मरीज मर भी जा सकते हैं। मैं उनकी मृत्युकी तरफसे अपना जी कड़ा कर सकता हूँ, लेकिन एक भी स्वस्थ आदमीको बीमार पड़ते देखकर मेरा दिल टूट जाता है। हमारे गाँववालोंको अपने स्वास्थ्यकी देखभाल करने की शिक्षा मिलनी चाहिए। गरीबी और अज्ञान मूल कारण हैं। महत्त्वकी दृष्टिसे ये दो चीजें पहले आती हैं।

शिक्षा नई तालीमके ढंगपर होनी चाहिए। वस्तुतः नई तालीमकी व्याप्ति की मेरी जो कल्पना है उसकी दृष्टिसे दूसरी हर वस्तु उसमें शामिल है और हर चीज उसका एक अभिन्न अंग है।

हमें खादी और ग्रामीण उद्योगोंकी सहायतासे लोगोंकी आर्थिक स्थिति सुधारनी है। आज हमारे यहाँ औरतका एकमात्र काम बच्चे पैदा करना, अपने पतिके लिए खाना बनाना और गृहस्थीका काम-काज करना माना जाता है। यह बड़ी शर्मनाक स्थिति है। न केवल यह कि औरतको गृहस्थीकी गुलामीमें डाल दिया गया है, बल्कि जब वह मजदूरी करने जाती है उस समय भी हालाँकि वह पुरुषोंकी अपेक्षा ज्यादा मेहनत करती है, लेकिन उसे मजदूरी कम दी जाती है। बच्चोंको बहुत छोटी उम्रमें ही काम पर जाने को मजबूर किया जाता है। कुछ बच्चे तो मर्दोंसे भी ज्यादा काम करते हैं, लेकिन उन्हें औरतोंसे भी कम मजदूरी मिलती है। यह स्थिति समाप्त की जानी चाहिए। इस प्रकारके कामके लिए मुझे अभीतक कोई योजना प्राप्त नहीं हुई है। गाँवोंमें बच्चे छोटी उम्रसे ही कमाना शुरू कर देते हैं। उनके माता-पिता शहरी लोगोंकी तरह उन्हें स्कूल भेजने और उनकी शिक्षापर खर्च करने की स्थितिमें नहीं होते। उनकी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि वे किसी उद्योग-धन्धेको करने के योग्य बनें और अपने पैरोंपर खड़े हो सकें।

मैंने जैसे कामकी रूपरेखा बताई है, वह मौलिक और कठिन है। बहुत कम लोग इसे कार्यान्वित करने की योग्यता रखते हैं। बहुत-से लोगोंमें तो इस कामके लिए अपनेको प्रशिक्षित करने की इच्छा भी नहीं है। ऐसे लोगोंको कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक कोषकी समितियोंमें शामिल नहीं होना चाहिए, और यदि वे पहलेसे ही उनमें मौजूद हैं तो उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए और दूसरोंके लिए स्थान खाली कर देना चाहिए।

अन्तमें गांधीजी ने लोगोंसे प्रश्न पूछने को कहा, लेकिन अपील की कि आप लोग यथासम्भव मुझे बख्शें। मेरी शक्ति सीमित है। मैं आजकल प्रातः ३-१५ से रात ८-१५ तक प्रायः सारा दिन ही मौन रखता हूँ। केवल जब बैठकें चलती होती हैं तो थोड़े समयके लिए मौन तोड़ता हूँ।

एक मित्रने पूछा कि एक गाँवकी अधिकतम आबादी क्या मानी जाये। गांधीजी ने कहा कि फिलहाल मैं ज्यादासे-ज्यादा २००० की सीमा मानूँगा। बादमें इसमें जरूरत के मुताबिक परिवर्तन किया जा सकता है। मैं जानता हूँ कि भारतके अधिकांश गाँवोंकी आबादी ५०० और १००० या इससे भी कम है। मैं चाहूँगा कि आप लोग

प्र० : जो लोग पहलेसे ही रचनात्मक कार्य कर रहे हैं, उन्हींको कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक कोषके अन्तर्गत काम करने के लिए लिया जा रहा है। नये कार्यकर्त्ता आगे नहीं आ रहे हैं। कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक कोषके कार्यके प्रति न्याय करने की दृष्टिसे यह जरूरी है कि जो लोग ट्रस्टके अधीन काम करें उनके ऊपर और किसी कामका बोझ न हो।

उ० . यह सही है कि पिछले बहुत वर्षोंसे हम पर्याप्त संख्यामें नये कार्यकर्त्ता खींचने में असमर्थ रहे हैं, लेकिन मृदुलाबहिन मुझे बताती है कि पुरुषवर्ग यदि अपना फंदा ढीला कर दे तो स्त्री कार्यकर्त्रियोंकी कोई कमी नहीं है। मैंने उनसे कहा है कि मैं उनका पक्ष-समर्थन करूँगा और वे जितनी भी कार्यकर्त्रियाँ तैयार कर सकें उसमें मैं उनकी मदद करूँगा।

प्र० : बहुत-से लोग, जिन्होंने कोषके लिए बड़ी-बड़ी रकमें जमा की हैं या उसमें बड़े-बड़े चन्दे दिये हैं, चाहते हैं कि प्रान्तीय समितियोंमें उन्हें स्थान मिले। क्या हमें उन्हें ले लेना चाहिए?

उ० : सुनहरा नियम तो यह है कि धन जमा करने या चन्दा देने के कारण कोई व्यक्ति प्रान्तीय समितियोंका सदस्य होने के योग्य नहीं बन जाता, और यदि वह अन्यथा उसके योग्य है तो उस कारणसे अयोग्य भी नहीं बन जाता। लेकिन अगर कोई सोचता है कि उसने जो-कुछ जमा किया है या जो-कुछ चन्दा किया है उसीके कारण वह समितिमें शामिल होने का अधिकारी बन गया है तो ऐसे दावेपर ध्यान नहीं दिया जा सकता और उसे शामिल नहीं किया जाना चाहिए। हमारी समितियाँ बहुत बड़ी-बड़ी नहीं होनी चाहिए और जो लोग पहले ही किसी एक क्षेत्रमें कार्य कर रहे हैं ऐसे लोगोंको किसी दूसरे क्षेत्रमें नहीं लाना चाहिए। कुछ लोग ऐसे हैं जो संसदीय कामके लिए अच्छे हैं। इसके लिए उनपर कोई लांछन लगे, ऐसा मैं नहीं चाहता। लेकिन यदि वे अपना वह काम छोड़कर कोई ऐसा दूसरा काम हाथमें ले लें, जिसे करना फैशन समझा जाता है और जिसमें उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है, तो मैं उनकी ताड़ना करूँगा—ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि यदि वे रचनात्मक कार्यकी आड़में अपनी संसदीय महत्वाकांक्षाको आगे बढ़ाना चाहें तो मैं उनकी ताड़ना करूँगा।

प्र० : कुछ राज्योंमें स्त्रियोंकी गुलामीकी प्रथा अभी भी प्रचलित है। क्या उनके लिए कुछ करने की खातिर कोषका उपयोग नहीं किया जा सकता? जो भी इन स्त्रियोंकी मदद करना चाहता है, उसे झूठे आरोप लगाकर जेलमें डाल दिया जाता है।

उ० : इन स्त्रियोंको मेरे पास भेज दीजिए। मैं उनकी देखभाल करूँगा। जिन राज्योंमें उनके बुनियादी अधिकारोंसे उन्हें वंचित रखा जाता है, उन राज्योंको छोड़कर वे चली आ सकती हैं।

[अंग्रेजीसे]
हितवाद, २०-२-१९४५

उ० : हमारा उद्देश्य ठीक यही है, और इसी उद्देश्यके लिए आप सब यहाँ इकट्ठे हुए हैं। लेकिन हर चीज इस ढंगसे की जानी है जो उस स्त्रीकी स्मृतिके योग्य हो जिसके नामपर कोष जमा किया गया है।

प्र० : सिन्ध-जैसे प्रान्तमें क्या किया जाये, जहाँ स्त्रियोंके लिए बाहर निकलना और गाँवोंमें काम करना बहुत असुरक्षित है?

उ० : कहने की जरूरत नही कि जबतक स्त्रियाँ आगे नही आती तबतक पुरुषों को उनके स्थानपर काम करना है। लेकिन मुझे इस बातमें कोई सन्देह नही है कि आपको गाँवोमें जाकर काम करने के लिए स्त्रियाँ मिल जायेंगी। किसी भी सूरतमें मुसलमान औरतोंको सिन्धमें किसी प्रकारका भय करने की जरूरत नही है। बहरहाल, किसी स्त्रीके साथ खराबसे-खराब बात यही हो सकती है कि वह अपनी जान खो बैठे। मुझे पक्का विश्वास है कि जिस स्त्रीमें प्रतिरोध करने का संकल्प और इच्छा-शक्ति है और जो मरने से नही डरती, उसके साथ कोई भी आदमी बलात्कार नही कर सकता। मै एक युवा मिशनरी लड़कीको जानता हूँ, जो आफ्रिकाके जंगलोंमें नीग्रो लोगोंके बीच अकेली गई। फिर भी उसे कोई भय नहीं था और उसपर किसीने कभी बुरी नजर नही डाली। हमारे बीच भी ऐसी स्त्रियाँ है। उनमें से एक अभी दो दिन पहले मेरे साथ थी। जब ढाकामें हिन्दू और मुसलमान पागल हो उठे थे तब वह अकेली वहाँ गई। किसीने उसे हाथ लगाने का साहस नहीं किया। वस्तुतः कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक कोष योजनाके अन्तर्गत आपके कार्यका एक परिणाम यह होना चाहिए कि स्त्रियाँ अपना भय छोड़ दें और अविचल भावसे खतरेका सामना करने के योग्य बन जायें।

प्र० : यदि हम केवल एक ही गाँवमें काम करेंगे तो आसपासके इलाकोंके दबावसे हमारा काम रुँध जायेगा। जबतक पूरे क्षेत्रमें एकसाथ काम नहीं करते तबतक हम जरा भी आगे नहीं बढ़ सकते।

उ० : मेरा अनुभव भिन्न है। जबतक सब लोग तैयार न हो जायें यदि तबतक हम आवश्यक कदम न उठायें तो हम कभी आगे बढ़ ही नही सकते। हम अकेले हों तो भी हमारे अन्दर छलांग लगा देने का साहस होना चाहिए। रास्तेमें कुछ कठिनाइयाँ हैं, लेकिन हमें उनपर विजय प्राप्त करनी है। बहुत-सी कठिनाइयाँ, जो हमें विचलित करती है, केवल काल्पनिक है। उदाहरणके तौरपर सेवाग्राममें मेरे काममें कोई भी व्यक्ति बाधा नही डालता।

यदि मैं सेवाग्रामके निवासियोंका हृदय छू सकूँ, उसे स्पन्दित कर सकूँ, तो मुझे और कुछ करने की जरूरत ही नही है। यदि हम एक गाँवमें सफल नही हो सकते तो सौ गाँवोंमें भी नहीं हो सकते। जबतक खुद लोगोंके अन्दर जागृति नहीं हो तबतक अगर हम राज्यसे कोई कानून भी बनवा लें तो भी उस कानूनको लागू कौन करेगा? जागृति पैदा करने के लिए हमें एक गाँवसे शुरुआत करके अपने कामका धीरे-धीरे विस्तार करना होगा।

२३१. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

१७ फरवरी, १९४५

जब घट[1] है वह उसकी खूबी है और सीधा है। पहेला थान सामान्यतः तेड़ा रहता है और कही घट कही छूटा क्योंकि ठांक सीधी और एकसा नही लगती।

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४७७) से

२३२. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

वर्धा
१७ फरवरी, १९४५

कांग्रेसी-कार्यकर्त्ताओंको विहार सरकारने जो चुनौती दी है[2] उसपर मैंने अब-तक अपनी राय जाहिर नही की है। इस विलम्बका कारण मेरी यह आशा रही है कि यह तूफान एक छिटपुट किस्मकी भूल है जो स्वत. ही सुधर जायेगी। देखता हूँ, मैं गल्तीपर था। विहारकी घटनाओंपर से अब यह समाचार मिला है कि श्री पुरुषोत्तमदास टंडन फिर गिरफ्तार कर लिये गये है। विहारके कार्यकर्त्ता जाने-माने लोग है, और उनमें से एक वहांके भूतपूर्व मुख्यमन्त्री तथा दूसरे भूतपूर्व वित्त-मन्त्री है। टंडनजी संयुक्त प्रान्त विधान-सभाके अध्यक्ष है। अब खबर मिली है कि उड़ीसा-निवासी श्री गोपवन्धु चौधरीको भी, जो उतने ही जाने-माने व्यक्ति है, फिर गिरफ्तार कर लिया गया है।

एक तसवीर तो यह रही। दूसरी यह कि वाइसराय श्रीयुत भूलाभाई देसाईसे वार्त्ता चला रहे हैं। बड़े-बड़े परिवर्तनोंकी अफवाहे गर्म है। लेकिन जो समाचार मैंने संक्षेपमें यहां दिया है और जिससे लोग पहलेसे ही अवगत है उससे यह अफवाह मेल नही खाती।

विहारके कांग्रेसजन उस पन्द्रह-सूत्री कार्यक्रमको, जिसकी रूपरेखा मैंने बनाई थी, मेरे ही सुझाये ढंगसे कार्यान्वित करने के संगठित कदम उठाने का उपाय करने में व्यस्त थे; तभी अगुआ लोग गिरफ्तार कर लिये गये, हालांकि राजनीतिसे जो समझा

१. गफ

२. २८ जनवरी, १९४५ को बिहार सरकारने एक और संघर्षकी खुल्लम-खुल्ला तैयारीके आरोपमें बिहारके भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्रीकृष्ण सिंह, भूतपूर्व वित्तमन्त्री अनुग्रह नारायण सिंह, बिहार विधान-सभाके उपाध्यक्ष प्रोफेसर अब्दुल बारी, सर्चलाइट के सम्पादक मुरली मनोहर प्रसाद और प्रजापति मिश्रको नजरबन्द कर दिया था।

२२८. पत्र : बलवन्तसिंहको

१६ फरवरी, १९४५

चि० ब०,

मेरा दिल्ली जाने का नही होगा मुंबई जाना होगा सो भी मार्चकी आखरमें।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९५२) से

२२९. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

१६ फरवरी, १९४५

१. बच्चोंकी बात छोड़ना नही। उसमें तुमारी नयी तालीमकी समजकी परीक्षा हो जायगी।

२. बुद्धिमें जड़ता तो नही है लेकिन आस्तेपन है। कारण स्पष्ट है—न बहूत विचार किये है न बहूत कामकी पढ़ाई। तुमारे अपनेमें से निकल जाना है और काममें डट जाना है अर्थात् उसमें पूर्णता पाने के लिये जो पढ़ना है उसको पढ़ना भी।

बापु

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४७६) से

२३०. पत्र : शारदा गो० चोखावालाको

सेवाग्राम
१७ फरवरी, १९४५

चि० बबुड़ी,

गोरधनदासका कार्ड पढ़ा। आनन्द ज्यादा बीमार हो गया है, इसलिए शकरी-बहिन वहाँ जा रही है। वह रो रही है। अच्छा है, वहाँ पहुँच जाये। मुझे तो आशा है कि आनन्द अच्छा हो जायेगा। तू चिन्ता मत करना, न गोरधनदास करे।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००५३) से। सौजन्य : शारदा गो० चोखावाला

बीच पूर्ण मित्रोंके रूपमें रहना है। क्या इस प्रयत्नमें कोई बुराई है? जिस प्रवृत्ति की रूपरेखा मैंने तैयार की है उसे यदि सरकार ऐसी शर्तोंपर ही सहन कर सकती है जिन्हें स्वीकार करना असम्भव है, तो फिर भारतकी स्वतन्त्रताके बारेमें सरकार द्वारा बढ़-चढ़कर की जानेवाली बातोंका मतलब क्या है? उसके पास जो असाधारण सत्ता है उससे क्या उसे सन्तोष नहीं है? क्या यह जरूरी है कि वह बड़ेसे-बड़े और छोटेसे-छोटे भारतीयोंको उनपर मुकदमा चलाये बिना इस भयसे नजरबन्द रखे कि वे देशके एक छोरसे दूसरे छोरतक स्वतन्त्रता और उसकी प्राप्तिके निमित्त अहिंसक कार्रवाईका प्रचार कर सकते हैं? क्या यह आवश्यक है कि वह रिहा किये गये लोगोंको उसी क्षण फिरसे गिरफ्तार कर ले जिस क्षण वे स्वतन्त्र व्यक्तिकी तरह कोई ऐसी बात बोलें या ऐसा काम करें जो अधिकारियोंको अच्छा न लगे?

एक और भी कष्टकर अनुभवके दौरसे मैं गुजर रहा हूँ, जिसे मुझे जनता के समक्ष अवश्य प्रकट कर देना चाहिए। मेरे पास इस आशयकी बहुत-सी खबरें आ रही हैं कि कैदियोंसे जुर्म कबूल करवाने के लिए उन्हें मारा-पीटा जा रहा है और तरह-तरहसे सताया जा रहा है। ऐसे कुछ मामलोंकी जानकारी तो जनताको पहले से ही है — जैसे कि कोल्हापुरका प्रसिद्ध मामला।[1] बहुत-से और भी मामले, जो अपेक्षाकृत हालमें ही घटित हुए हैं, मेरे ध्यानमें लाये गये हैं। एक खास मामला, जो अभी मेरे ध्यानमें है, उस नौजवानसे सम्बन्धित है जिसने मेरी सलाहपर अपनेको इस कारण पुलिसके हवाले कर दिया कि पुलिसको उसकी तलाश थी। इस तरहकी जो खबरें सुनने को मिल रही हैं उनमें से कुछ शायद पूरी तरह सही नहीं हैं लेकिन मुझे विश्वास है कि बहुत-सी दूसरी खबरें बिलकुल सच्ची हैं। क्या समय नहीं आ गया है जब सत्ताधारियोंको कैदमें रखे जा रहे लोगोंको इस तरह सताने और उनके साथ दुर्व्यवहार करने के इस चलनके प्रति दृढ़ताके साथ असहमति प्रकट करनी चाहिए और इसे समाप्त कर देना चाहिए।

यदि अगस्त १९४२ में सत्ताधारियोंने जनताके साथ अनावश्यक रूपसे झगड़ा मोल लेने के बजाय कांग्रेसकी अनुनय-विनयको सुन लिया होता, तो आज भारत स्वतन्त्रताका उपभोग कर रहा होता और यह युद्ध मित्र-राष्ट्रोंके लिए सम्मानजनक ढंगसे तथा संसारके दलित राष्ट्रोंके लिए सुखद रीतिसे समाप्त हो चुका होता। अतीतका मेरा विश्लेषण तो यही है। यदि घटना-क्रम उसी तरह चलता रहा जैसा कि आज भारतमें चल रहा है तो मित्र-राष्ट्रोंको जो विजय मिलेगी वह तथाकथित विजय ही होगी, क्योंकि उस विजयके बाद यह भी होगा कि भारत और उसकी ही स्थितिमें पड़े दूसरे राष्ट्र रक्तरंजित अवस्थामें उनके चरणोंपर लोट रहे होंगे। ऐसी विजयका परिणाम तो यही हो सकता है कि निकट भविष्यमें ही एक और युद्ध भी भड़क उठे, जो मौजूदा युद्धसे भी अधिक खूनी होगा, यदि इससे

१. आरोप था कि कोल्हापुर रियासतके पुलिस अधिकारीने काशीबाई हनवरको अपने पुत्रके बारेमें, जिसे एक राजनीतिक फरार घोषित किया गया था, सूचना देने को विवश करने के लिए उन्हें निर्वसन कर दिया था और उनपर तरह-तरहके अत्याचार किये थे।

जाता है उस दृष्टिसे देखें तो उस कार्यक्रममें राजनीतिकी कोई गंध नहीं है। मैंने यह कहने में संकोच नहीं किया है कि यदि इस कार्यक्रमको भारतमें सर्वत्र व्यवहारतः अपना लिया जाये तो यह निश्चित है कि सविनय अहिंसक अवज्ञाके बिना, बल्कि यहाँतक कि संसदीय कार्यक्रमके भी बिना, हमें पूर्ण स्वराज्य प्राप्त हो जायेगा। इस कार्यक्रमके अपनाये जाने के बाद दोनोंमें से किसी भी कार्यक्रमकी आवश्यकता ही नहीं रह जायेगी। अंग्रेजोंको शासन करने के लिए भारतमें टिके रहने में कोई सार ही नहीं नजर आयेगा। अगर वे यहाँ टिकेंगे भी तो पूर्ण नागरिकोंकी हैसियत से ही। १९४२ की भाषामें कहें तो शासकोंके रूपमें वे भारतको छोड़ देंगे; क्योंकि उनके सिपाहियोंके पास कोई काम नहीं रह जायेगा और उनके उद्योगोंका कोई उपयोग नहीं रह जायेगा। शायद वह दिन न आये, लेकिन वह एक अहिंसक सिपाहीका सपना तो होना ही चाहिए, जिसे साकार करने के लिए उसे प्रतिदिन प्रयत्न करना चाहिए और यदि उस प्रयत्नमें बाधा पड़े तो उसके पास अहिंसक प्रतिरोधका — जिसे अन्यथा सविनय अवज्ञा और असहयोगके रूपमें भी अभिहित करते हैं — सम्बल तो है ही। अबतक सार्वजनिक सविनय अवज्ञाकी जिम्मेदारी सिर्फ मुझपर है। १९४२ में वह अवज्ञा नहीं की गई। जिसकी जन-साधारणमें पूरी पैठ नहीं है, ऐसा कोई भी व्यक्ति उस जिम्मेदारीको अपने सिर नहीं ले सकता। सच तो यह है कि उस हालत में जन-साधारण स्पन्दित ही नहीं होगा। यह निजी अनुभवपर आधारित मेरा विश्वास है। अबतक बिहारमें उठाये गये कदमका औचित्य श्री प्रजापति मिश्रके एक कथित भाषणके आधारपर सिद्ध किया जाता रहा है। उस भाषणका पाठ दबा दिया गया है।

रचनात्मक कार्यक्रमके कार्यान्वयनके सिलसिलेमें या अहिंसक प्रतिरोधके बारेमें उनके या किसी भी कांग्रेसजन द्वारा भड़कानेवाले भाषण दिये जाने का सवाल ही नहीं उठता — और हिंसाका सहारा लिये जाने अथवा, उसका अनुमोदन करने के बारेमें उनके द्वारा ऐसे भाषण दिये जाने का सवाल तो और भी नहीं उठता। मैंने यह स्पष्ट बता दिया है कि वर्तमान परिस्थितियोंमें किसी भी प्रकारकी सार्वजनिक सविनय अवज्ञा करने की कोई योजना नहीं है, और मैं जानता हूँ कि देश-भरके कांग्रेसजन मेरी इस सलाहपर चल रहे हैं। लेकिन प्रतिरोधकी सैद्धान्तिक सम्भावनाकी चर्चा आदिसे भी किसीको विमुख रहने पर मजबूर नहीं किया जा सकता — बल्कि इस तरहकी चीज रचनात्मक कार्यक्रमके कार्यान्वयनकी शर्त भी नहीं बनाई जा सकती। निस्सन्देह रचनात्मक कार्यक्रमका लक्ष्य राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्वतन्त्रता है। यह एक बड़े राष्ट्रके जीवनके सभी क्षेत्रोंमें एक नैतिक अहिंसक क्रान्ति है, जिसके अन्तमें जात-पाँत और अस्पृश्यता तथा ऐसे ही अन्य अन्धविश्वासोंको मिट जाना है, हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीचके मतभेदोंको अतीतकी वस्तु बन जाना है, अंग्रेजों या यूरोपीयोंके प्रति शत्रुताका भाव पूर्णतः विस्मृत कर दिया जाना है, और देशी नरेशों तथा पूंजीपतियोंको उनके पास जो भी धन-सम्पत्ति है उसके जनताकी ओरसे नियुक्त वास्तविक और कानूनी थातीदारोंकी हैसियतसे भारतके सम्पूर्ण जन-साधारणके

है। इसके अतिरिक्त, गाने-बजाने, चित्र बनाने और साहित्यका भी उसे शौक है। वह सार्वजनिक जीवनमें भी रस लेती है। उसके ये गुण महादेवकी नजरमें आये और उन्होंने उन्हें निखारने में खूब रस लिया। किन्तु वे तो हम सबको छोड़कर चले गये। उनका यह जीवन पूर्ण हो गया। पाठक इस चीजको ध्यानमें रखते हुए चि० सुशीलाके लेखको पढ़ें।

यह तो हुआ लेखिकाओंके बारेमें।

किन्तु इन दोनोंका कहना है कि जबतक मैं बा के विषयमें कुछ नहीं कहूँगा तबतक यह पुस्तक ही अधूरी मानी जायेगी। जब मैं ही इस संग्रहकी प्रस्तावना लिख रहा हूँ, बा के विषयमें मेरा कुछ लिख देना कदाचित् उचित ही माना जायेगा। समय मिलने पर तो विस्तारसे लिखने की मेरी इच्छा है। यहाँ तो बा के प्रति जनताके आकर्षणका कारण यदि खोजा जाये तो वह मुझे ही खोजना होगा। बा का बहुत बड़ा गुण केवल स्वेच्छासे मुझमें एकाकार हो जाने का था। ऐसा मेरे प्रयत्नसे नहीं हुआ, बल्कि बा में पहलेसे ही मौजूद यह गुण समय आने पर खिल उठा। मैं यह नहीं जानता था कि बा में यह गुण छिपा हुआ था। मेरे आरम्भिक जीवनके अनुभवके अनुसार बा बहुत हठी थी। मेरे जोर देने के बावजूद वह अपना मनचीता करती थी। इस कारण हम दोनोंके बीच क्षणिक या लम्बी कटुता पैदा हो जाती थी। किन्तु ज्यों-ज्यों मेरा सार्वजनिक जीवन उज्ज्वल होता गया त्यों-त्यों बा खिलती गई और संकल्पपूर्वक मुझमें अर्थात् मेरे काममें स्वयंको विलीन करती गई। समय बीतने के साथ-साथ ऐसा हुआ कि मुझमें और मेरे काममें — अर्थात् सेवामें — कोई भेद नहीं रहा। बा भी उसमें एकाकार होती गई। हिन्दुस्तानकी मिट्टीमें यह गुण कदाचित् अधिकसे-अधिक है। जो हो, बा की उपर्युक्त भावनाका मुझे तो यही मुख्य कारण जान पड़ता है।

बा के इस गुणके पराकाष्ठा तक पहुँचने का कारण था हमारा ब्रह्मचर्य। मेरी अपेक्षा बा के लिए यह कहीं अधिक स्वाभाविक निकला। बा को शुरूमें इसका भान भी नहीं था। मुझे यह विचार सूझा और बा ने उसे शिरोधार्य कर लिया तथा अपना बना लिया। परिणामस्वरूप हमारा सम्बन्ध सच्चे मित्रोंका-सा हो गया। सन् १९०६ से — असलमें देखा जाये तो सन् १९०१ से — बा सदा मेरे साथ रही और तबसे मेरे काममें हाथ बँटाने के अतिरिक्त बाहर उसका कुछ भी नहीं रहा। वह अलग रह सकती थी। अलग रहने में उसे कोई परेशानी न होती, किन्तु उसने मित्र होने के बावजूद स्त्री और पत्नीके रूपमें स्वयंको मेरे कार्यमें एकाकार कर देने को ही अपना कर्त्तव्य माना। इसमें उसने मेरी निजी सेवाको अनिवार्य स्थान दिया और मरते दमतक मेरी देखभालका काम कभी नहीं छोड़ा।

मोहनदास करमचन्द गांधी

सेवाग्राम, १८ फरवरी, १९४५

[गुजरातीसे]

अमारां बा

अधिक खूनी युद्ध सम्भव हो। कारण, जैसा कि मैंने अन्यत्र कहा है, भारतकी बलि चढ़ाकर प्राप्त की गई विजयका मतलब यह होगा कि फासीवाद, नाजीवाद और जापानी सैन्यवादके ध्वंसावशेषमें से एक ऐसे नये दानवका उदय होगा जो अपने सामनेकी सभी वस्तुओंको अपना ग्रास बना लेना चाहेगा और इस प्रयत्नमें वह खुद ही कालका ग्रास बन जायेगा। वह अपने पीछे क्या छोड़ जायेगा कहा नहीं जा सकता।

इस वक्तव्यको लिखते हुए मुझे कोई खुशी नहीं हुई है। मैं कह तो और भी बहुत-कुछ सकता हूँ लेकिन अभी इससे ज्यादा कुछ नहीं कहूँगा।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १९-२-१९४५

२३३. प्रस्तावना: 'अमारां बा' की[1]

भाई नरहरि परीख उन लोगोंमें से हैं जो कोचरबमें सत्याग्रह आश्रमकी स्थापनाके समयसे ही उससे सम्बद्ध रहे हैं। इसलिए चि० वनमालाने जो-कुछ पाया है वह आश्रममें ही पाया है। वह सरकारी पाठशाला और वहाँ दी जानेवाली शिक्षासे सर्वथा अछूती रही है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि वह मशक्कत करना जानती है। किन्तु उसने तो कस्तूरबाके जीवन-वृतान्तकी सामग्री जुटाने का साहस किया है। इसके लिए उसने दूसरोंसे भी लेख लिखवाये हैं। यह लिखते समयतक मैंने वे लेख नहीं देखे हैं। यह चि० वनमालाका आग्रह था कि उसके द्वारा लिखे हुए अंशपर मैं एक नजर डाल लूं। वह बेचारी लिखने तो चली थी कस्तूरबाके बारेमें, किन्तु बचपनमें वह मेरे चारों ओर दौड़ती-खेलती थी, इसलिए मुझे कैसे भूल सकती थी? मैं देखता हूँ कि उसने बिखरे हुए तथ्योंको एकत्रित कर उन्हें क्रमबद्ध रूपमें सँजोया है। उसकी भाषा बोलचालकी और सादी हैं। उसमें मुझे कहीं कृत्रिमता नजर नहीं आई। कुल मिलाकर चि० वनमालाका यह प्रथम प्रयास सफल हुआ है या निष्फल, इसका निर्णय तो पाठक ही कर सकेंगे।

चि० प्यारेलालकी बहिन चि० सुशीलाबहिनने बा के बारेमें जेलमें हुए अपने अनुभव लिखे हैं। चि० वनमालाने उसमें से अपने लेखके लिए कुछ अंश लेने का विचार किया, किन्तु पढ़ने पर उसे लगा कि सुशीलाबहिनके लेखमें सहज कला थी जिसे भंग करने की उसकी हिम्मत नहीं हुई। मूल हिन्दीमें है और उसका गुजराती अनुवाद इस संग्रहमें दिया जा रहा है। सुशीलाबहिन आखिर डिग्रीयाफ्ता डॉक्टर

१. सी० डब्ल्यू० ३०६९ और जी० एन० ५९४६ में भी इसका मसौदा उपलब्ध है, जिस पर ३ दिसम्बर, १९४४ की तारीख है। इसपर गांधीजीकी निम्न टिप्पणी लिखी हुई है: "मैंने उपर्युक्त लेख दुहराया नहीं है। यदि नरहरि उचित समझें, तभी इसे भेजा जाये। हर हालत में इसपर वनमालाकी सहमति अवश्य ले ली जाये।"

२३६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

सेवाग्राम
१८ फरवरी, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पुर्जा आज मिला। मैंने गेहूँका [दलिया] चखा। गेहूँके [दलिये] और ज्वारके [दलिये] में बहुत अन्तर पाया। ज्वारके [दलियेके] बारेमें मैंने जो कहा है, मैं उसपर कायम हूँ। गेहूँका दलिया कच्चा नही लगा। ज्वारकी महेरी या कांजीमें गुड़ जरूर डालो। उसमें गुड़ पक जाने के बाद उतारते समय ही डालना चाहिए।

'गीता' के सम्बन्धमें तुम जो कहते हो मैं समझ गया। यदि तुम शब्दोपर जोर देने के नियम न जानते हो, तो किसीसे जान लो। प्यारेलाल और सुशीलाको मालूम है। शुद्ध उच्चारणके लिए जल्दी-जल्दी बांचने की आदत अनिवार्यतः डालनी पड़ती है; क्योंकि इसके बिना जीभ मुड़ती ही नही। तुम्हारा कण्ठ कभी सुधरेगा ही नही, ऐसा बिलकुल मत मान बैठना। यदि तुम्हे डेमोस्थेनीजकी कहानी न मालूम हो तो प्यारेलालसे पूछना। तब भी न समझमें आये, तो मुझसे कहना।

रोटियोंके बारेमें स्थिति यह है। रोटियोंकी परत [तह] कर देने में बड़ा दोष यह है कि फिर उन्हें चबाना नही पड़ता। करारी रोटी अच्छी होती है। लोगोको निश्चित मात्रामें रोटी देने की आदत डालनी चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४६१) से। सी० डब्ल्यू० ५५६९ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गंगादास शाह

२३४. पत्र : अरुणचन्द्र गुहको

१८ फरवरी, १९४५

प्रिय मित्र,

आपके काते सूतसे बनी खादीकी चादर मुझे मिल गई। इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६७२) से

२३५. पत्र : सुमित्रा गांधीको

सेवाग्राम
१८ फरवरी, १९४५

चि० सुमी,

तूने नहीं, बल्कि नीमुने पत्र लिखा है, क्योंकि नीमुके कहने पर ही तूने पत्र लिखा। जबतक मनमें भाव न उठे तबतक पत्र क्यों लिखना चाहिए? तू सुखी रहे तो फिर मुझे पत्रसे क्या काम? जब मेरा मन होगा तब तेरे पत्रके बिना ही मैं तुझे लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

सुमित्रा गांधी
पिलानी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२३९. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

सेवाग्राम
१९ फरवरी, १९४५

प्रिय कु०,

उल्लिखित नारीगणकी बैठक बुला सकते हो। अभी मैंने प्रस्तावना, या उसे जो भी कहो, आरम्भ नहीं की है। काम पूरा होते ही पुस्तक लौटा दूँगा। तुम्हें मार्चमें बम्बई नहीं जाना पड़ेगा, यह अच्छी बात है।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१७१) से

२४०. पत्र : गुलजारीलाल नन्दाको

सेवाग्राम
१९ फरवरी, १९४५

चि० गुलजारीलाल,

नरहरिको लिखा तुम्हारा पत्र और उसके साथके कागज ध्यानपूर्वक पढ़ गया, ऐसा कहा जा सकता है।

अंग्रेजी पुस्तिकामें टीका व सुझाव हैं, वह देख जाना। जो सुधार करने लायक लगे उसे सुधारना। मेरे जिस कथनको हृदय अथवा बुद्धि स्वीकार न करे उसे त्याग देना।

पचकी प्रथा कब और कैसे बन्द हुई? चाहे जो हो, यदि उसके लिए लड़ना जरूरी हो तो लड़ लेना। अपनी ताकतका अन्दाजा लेना। इस बारेमें दादा मावलंकरकी सलाह लेना। कदाचित ली भी हो। तुम चाहो तो मैं इस सम्बन्धमें कस्तूरभाई[1] आदि मिल-मालिकोंको लिखने को तैयार हूँ।

मैं समझ गया कि प्रफुल्लबाबूके रिहा होने से आवश्यक संख्या पूरी हो गई।

१. लालभाई ग्रुप ऑफ मिल्सके कस्तूरभाई लालभाई

२३७. पुर्जा : दिनशा मेहताको[1]

[१८ फरवरी, १९४५][2]

अप्रैलमें तो मिलना ही है। गुलबहिनसे[3] कहना कि अप्रैलतक लिखती रहे। अरदेशिरको चुम्बन।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४६१) से। सी० डब्ल्यू० ५५६९ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गगादास शाह

२३८. पत्र : बाबा मोघेको

सेवाग्राम
१८ फरवरी, १९४५

भाई बाबा,

तुम्हारा खत मैंने अभी पढ़ा। मेरी दृष्टिमें तुम्हारा निर्णय दोषित है। मेरा अभिप्राय है कि तुम खानदेश अब जाओगे तो गलती है। तुम्हारा धर्म शरीरको अच्छा करने का। शरीर अगर ईश्वरका निवास है तो धर्म क्षेत्र है। चर्खा चलाने का शब्दार्थ न किया जाय, उसका अंतरार्थ किया जाय। यह सब मेरी दृष्टि। तुम्हें यह न जचे तो तुमारे लिये तुमारी ही सही।

तुम्हारी वापसीमें जो मैंने कहा सो विनोद ही था।

बापुके आशीर्वाद

मार्फत – प्रभाकर

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०२०) से

१ और २. यह पुर्जा १८ फरवरीको मुन्नालाल गंगादास शाहको लिखे पत्रमें हाशियेपर लिखा हुआ है; देखिए पिछला शीर्षक। पुर्जेमें लिखी बातोंसे लगता है यह डॉ० दिनशा मेहताको लिखा गया होगा।

३. डॉ० दिनशा मेहताकी पत्नी

२४३. भेंट : पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्तके शिष्टमण्डलको[1]

[१९ फरवरी, १९४५][2]

गांधीजी ने शिष्टमण्डलके सदस्योंसे कहा कि अन्य प्रान्तोंमें स्थिति जो भी हो, लेकिन मेरी पक्की राय है कि सीमाप्रान्तमें यदि अविश्वास प्रस्ताव पास हो जाये तो वहाँ कांग्रेसियोंको वैकल्पिक मन्त्रिमण्डल बनाना चाहिए। वे बिना कोई गतिरोध पैदा किये स्वतन्त्रताकी लड़ाईमें अपना पूरा योग दे सकते हैं। आपने, मेरी रायमें, अहिंसाके क्षेत्रमें जितनी प्रगति की है यदि उससे अधिक की होती तो मैं आपसे और सभी कांग्रेसियोंसे कहता कि आप विधानसभासे निकल आयें और पूर्ण असहयोग आरम्भ कर दें। लेकिन इस समय जैसी स्थिति है, उसको देखते इस प्रकारका कोई कदम उठाने में गम्भीर खतरा है। इसके लिए सही वातावरण नहीं है। इसलिए आप लोग अविश्वास प्रस्ताव पास कराकर कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल बना सकते हैं।

[अंग्रेजीसे]
महात्मा गांधी — द लास्ट फेज, जिल्द १, भाग १, पृ० १२२

२४४. तार : अमतुस्सलामको

अविलम्बनीय

२० फरवरी, १९४५

अमतुल सलाम
कस्तूरबा सेवा मन्दिर
बारकण्ठा

आशीर्वाद।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. मेहरचन्द खन्नाके नेतृत्वमें सीमाप्रान्तसे एक शिष्टमण्डल गांधीजी से मिलने सेवाग्राम आया था। उन्होंने गांधीजी को बताया कि वहाँ विधानसभाके अधिकांश सदस्य औरंगजेब खाँके मन्त्रिमण्डलके विरुद्ध अविश्वास प्रस्तावका समर्थन करनेको तैयार थे। गवर्नरने वचन दिया था कि यदि डॉ० खान साहब उनके स्थानपर मन्त्रिमण्डल बनानेको तैयार हों तो वह अविश्वास प्रस्ताव पेश करने की अनुमति दे देंगे।

२. २१-२-१९४५ के हिन्दू के अनुसार

मेरी तबीयत ऐसी नहीं है कि मैं रोजमर्राके जरूरी कामोको निबटा नही सकूँ। यह सही है कि मेरा मौन चल रहा है। मैं अपना बहुत सारा काम लिखकर करता हूँ। कोई दिक्कत नही होती।

उम्मीद है, तुम स्वस्थ होगे। शंकरलाल, अनसूया बहिन कैसे हैं?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२४१. पत्र : कान्ता रामप्रसाद व्यासको

१९ फरवरी, १९४५

चि० कान्ता,

तेरा खयाल तो बहुत बार आता है। आज ही सुना कि तेरी तबीयत अच्छी नहीं रहती। तुझे यहाँसे जाने देना मुझे अच्छा नही लगा, लेकिन मैं तो लाचार था। अब ईश्वर तेरी और तेरे बालककी रक्षा करे। मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

कान्ता रामप्रसाद व्यास
दोहद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२४२. पत्र : बलभद्रको

सेवाग्राम
१९ फरवरी, १९४५

भाई बलभद्र,

तुमारा पो० का० मिला। अच्छा हुआ तुमने लिखा। सत्यवती बहिनको मेरे आशीर्वाद तो है ही। देखे अब क्या होता है। मुझे खबर देते रहो। चांद मजेमें है।

बापूके आशीर्वाद

बलभद्र
६, प्यारेलाल बिल्डिंग
काश्मीरी गेट
दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२४७. पत्र : मुहम्मद यूनुसको

सेवाग्राम
२० फरवरी, १९४५

प्रिय यूनुस,

तुम्हारी सगाईके बारेमें जानकर प्रसन्नता हुई। मेरा आशीर्वाद लो। लाजने तुम्हारे और मेहरताजके बारेमें मुझे लिखा है। उम्मीद है, तुम अच्छे होगे और बादशाह खान भी। जब तुम्हारा विवाह हो जाये तो जरूर आओ — अर्थात् समय मिलने पर।

स्नेह।

बापू

मुहम्मद यूनुस
सेन्ट्रल जेल
हरिपुर
हजारा

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२४८. पत्र : भूलाभाई देसाईको

सेवाग्राम
२० फरवरी, १९४५

भाई भूलाभाई,

चि० देवदासने मुझे सब बात बताई है। वह तुम्हें विवरण देगा। लियाकत साहबके कारनामे देखकर और देशमें जो-कुछ हो रहा है उसे देखकर मैं तो घबरा गया हूँ।[1] उनसे तुम्हें भी भयभीत होना चाहिए, लेकिन करना वही चाहिए जो उचित और न्यायसंगत हो। बातचीत टूट जाये तो कोई बात नही।[2] तुम जो अन्तिम

१. देखिए "वक्तव्य : समाचारपत्रोंको", पृ० १४३-४६।

२. इससे पहले गांधीजी ने बातचीतके सिलसिलेमें एक मित्रसे कहा था : "गिरफ्तारियाँ फिर शुरू हो गई हैं और यह अशुभ लक्षण है। भूलाभाईको दृढ़ रुख अपनाना चाहिए और वाइसरायसे कह देना चाहिए कि यह सब नहीं चलेगा।"

२४५. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

सेवाग्राम
२० फरवरी, १९४५

प्रिय सी० आर०,

देवदास तुम्हारे यहाँ जा रहा है, इसलिए यह प्रेम-पत्र भेज रहा हूँ। यह इरादा करके गुसलखाने गया तो पी० ने तुम्हारा पत्र थमा दिया। मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ। मैं जानता हूँ कि लोग तुम्हारे बारेमें क्या कहते और क्या नही कहते हैं, इसका तुमपर असर नहीं होता। हमें तो तबतक वैसे ही चलना है जैसे चलते रहे हैं जबतक कि हममें दृष्टि-साम्य स्थापित नही हो जाता। सच्चे प्रेमकी यही माँग है। अपनेको स्वस्थ रखो।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१०१) से

२४६. पत्र : लाज रलिया रामको

सेवाग्राम
२० फरवरी, १९४५

प्रिय लाज,

तुम्हारा पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। क्या तुम उन्ही रलिया रामकी वेटी हो जिन्हें मैं जानता हूँ? तुमने अच्छा चुनाव किया है—या यूनुसने?

मैं मेहरताजके[1] बारेमें जानता हूँ।

मुझे खुशी है कि यूनुस बादशाह खानके[2] साथ है। मैं उसे पत्र लिख रहा हूँ।

स्नेह।

बापू

कुमारी लाज रलिया राम
५, मेसन रोड
लाहौर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. अब्दुल गफ्फार खाँकी पुत्री
२. अब्दुल गफ्फार खाँ

२५०. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

सेवाग्राम
२० फरवरी, १९४५

चि० कान्ति,

तेरा पत्र मिला। मैंने जो तुझे लिखा है वह तुझे मानना चाहिए। तेरा और लीलावतीका जितना खर्च आता है इतना आयेगा, यह मैं नहीं जानता था।[1] लेकिन जाना होता तो भी क्या होता? तू सफल होगा, इसका मुझे विश्वास है। सफल हुआ तो मुझे प्रसन्नता होगी।

तूने जो दो उदाहरण दिये हैं, ऐसे तो अनेक हैं। मेरी निराशाका अन्त नहीं है। लेकिन "लाखो निराशाओंमें भी अमर आशा छिपी हुई है"।[2] अतः इन सबके बावजूद मैं तरो-ताजा हूँ। भविष्यमें और भी निराशा होगी।

कनु और नारायणके बारेमें जो तू लिख रहा है वह ठीक है या नहीं, यह भी समय आने पर समझमें आ जायेगा। लेकिन मुझे उसका भी मोह नहीं है। वे भी आधुनिक शिक्षण लेना शुरू करें, तो क्या हुआ? मैं इस सबके लिए तैयार हूँ। मैं खुद इस प्रवाहमें न बह जाऊँ, इतना ही मेरे लिए काफी है। तू तो निश्चिन्त होकर अपना काम किये जा। कनु वहाँ आना चाहे, तो मैं उसे बिलकुल नहीं रोकूँगा। तुम सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

रामचन्द्रनकी माँ यहाँ आई है। सुन्दरम् भी यहीं है। कल सब चले जायेंगे।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३७१) से। सौजन्य : कान्ति गांधी

१. दोनोंने विश्वविद्यालयमें डाक्टरीकी पढ़ाई शुरू की थी।

२. मणिभाई नभुभाई द्विवेदीके गीतका उद्धरण, जो निम्न प्रकार है : "कंई लाखो निराशामां अमर आशा छुपाई छे।"

रूप दे रहे हो वह ठीक ही होगा, लेकिन इसके लिए पहले कार्य-समितिका अनुमोदन प्राप्त कर लेना चाहिए। तुम्हारी अंग्रेजीका मेरी गुजरातीसे मेल बैठना चाहिए। ठीक है न?

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजरातीसे: भूलाभाई देसाई पेपर्स। सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

२४९. पत्र: नारणदास गांधीको

सेवाग्राम
२० फरवरी, १९४५

चि० नारणदास,

तुम्हारा वक्तव्य अच्छा है। शिविरकी व्यवस्था करो। प्रत्येकको पूरे पैसे भरने चाहिए और सो भी पेशगी। यहाँ भी ऐसा ही किया गया था। जो पैसे न भर सके वह भले न आये। यदि ऐसे लोगोंका अपने इलाकेमें किसीपर प्रभाव हो तो वह व्यक्ति पैसे भेजे। यदि तुम वाहरके लोगोंको भी आने दोगे तो वे परेशान होंगे। यदि ऐसा कोई व्यक्ति लिखित सूचना पाये विना चला आये तो उस समय देख लेना। उम्मीदवारोंको जो शर्तें आदि पूरी करनी हैं वे तुमने नही भेजी। मै उन्हें देखना चाहता हूँ। इसमें सन्देह नही कि भाई खेर[1] अमूल्य रत्न है। यदि तुम्हारा शरीर साथ न दे तो तुम आगे वढ़कर भाग मत लेना।

प्रभु[2] तो अब भी वीमार रहता है। वह कल जाँच करवाने नागपुर जायेगा। इसलिए फिलहाल तो उसे छोड़ देना। कनैयो[3] अपना काम समेटने में जुटा हुआ है। जो भाषण आदि हुए थे उन्हें छपवाना है। इसके अतिरिक्त यहाँके भोजनालयको अपने हाथमें लेने की वात भी मैंने उसे सुझाई है। वह उस काममें भी पड़ेगा। अतः उसके लिए तुरन्त आना मुश्किल होगा। यदि शिविर लगा तो मैं समझता हूँ कि खेर साहव वहाँ एक महीना वितायेंगे। वक्तव्य उन्हें दिखाकर ही छापना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८६१९ से भी; सौजन्य: नारणदास गांधी

१. बाल गंगाधर खेर, बम्बईके भूतपूर्व मुख्य मन्त्री
२. नारणदास गांधीके भतीजे प्रभुदास गांधी
३. नारणदास गांधीके पुत्र कनु गांधी

अवश्य है, क्योंकि वह ग्राम-कार्य-जैसा है। लेकिन अब तो मुझे पता चला है कि उसमें भी दोष है। तथापि यदि वह शोध सही हो तो यह बहुत बड़ी बात है। तुम तुरन्त ही निष्कर्षपर पहुँच जाते हो, यह मुझे अच्छा नहीं लगता। ऐसा करोगे तो तुम कोई बड़ा काम नहीं कर पाओगे। गाँवोंकी सेवा तो नहीं ही कर पाओगे।

याद रखो कि मैंने तुम्हें सेवाग्रामकी जमीन आज भी दे रखी है। इसको छोड़ना नहीं है। यह प्रयोग तो ठीक मेरी देख-रेखमें किया जायेगा। जो काम चल रहा है उसे समझकर तुम शोभान्वित कर सकते हो। तभी यह कहा जा सकेगा कि तुमने एक बड़ा कदम उठाया है। लेकिन इसके लिए तुम्हें सादगीको अपनाना चाहिए।

बगलौरके [उपक्रमको] मैं बेकार समझता हूँ। पूनामें हम जो उपक्रम कर रहे हैं, उसे भग नहीं किया जा सकता। पूनाका उपक्रम भी भग न किया जाये और बगलौरमें भी चले, ऐसा नहीं हो सकता। गुलबाईको मुझे लिखना ही चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० दिनशा मेहता
टोडीवाला रोड
पूना

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२५३. पत्र : प्रफुल्लचन्द्र घोषको

सेवाग्राम
२० फरवरी, १९४५

चि० प्रफुल्ल,

तुमारा खत मिला। अच्छा तो जाओ। जबतक तुम सब बीबी अ० स० को नही छोडेंगे मैं उनको नही बुला लूंगा। तुम्हारा धर्म है कि उनको जरूरके बाहर न रखें।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२५१. पत्र : रामदास गांधीको

सेवाग्राम
२० फरवरी, १९४५

चि० रामदास,

यह पत्र मैंने तुम्हें सबको दिखाने के बाद सुमीको भेजने के लिए भेजा है। कितने सुन्दर ढंगसे लिखा गया है! सीता तरक्की कर रही है।

सुमीका पत्र मुझे मिला है। लेकिन वह तो मैं नीमुका मानता हूँ, क्योंकि उसमें प्रेरणा नीमुकी थी, हालाँकि लिखावट सुमीकी थी।[1] सुमी मुझसे वचनवद्ध थी। बच्ची है, इसीसे भूल गई है। मुझे एक मिनटकी भी फुर्सत नहीं। नहीं तो उसे अलगसे लिखता। कानमका पत्र मिला है। उसे अलगसे लिखने का समय नहीं है। डॉ० महमूद को बुखार है। कानमको उसे पत्र लिखना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२५२. पत्र : दिनशा मेहताको

सेवाग्राम
२० फरवरी, १९४५

चि० दिनशा,

तुम्हारा दुःख तो मैं देख सका था। लेकिन सुशीलाबहिनने जो बताया है उससे मैं यह समझा हूँ कि मैंने जितना सोचा था, तुम्हें उससे ज्यादा दुःख हुआ है। कारण कुछ भी नहीं है। कुछ बिगड़ा नहीं है। बात हो गई है और ठीक हुई। जमीनके लिए स्थान तो देखना ही है। इतना जो हुआ है वह यही कि थोड़ी ढील आ गई है। हम बम्बईमें मिलनेवाले हैं। वहाँ अगर बातचीत टूटनी होगी तो भले टूटे। हमें किसीको जबरदस्ती तो रखना नहीं है। जबरदस्तीसे कोई काम करवाने में शोभा भी कैसे हो सकती है? काम बहुत बड़ा है। मैं तो घबराता नहीं हूँ, हालाँकि बड़ा काम मेरा ही है। तुमने जिसकी रचना की है वह तो चलता ही रहेगा। उसमें मेरी दिलचस्पी इतनी ज्यादा नहीं है। हाँ, मेरी दिलचस्पी आन्ध्रमें जो चल रहा है उसमें

१. देखिए "पत्र : सुमित्रा गांधीको", पृ० १४८।

तुझे हाल तो वहीं रहना है। जब वहांका साफ हो जावे तब यहां आना है। भगीरथजी और प्र० बाबूसे[1] कहो वे इजाजत देंगे तब ही तू बंगाल छोड़ने का विचार कर सकती है।

कंचनको आज नही लिख सकता।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९१) से

२५६. पत्र : चण्डीप्रसाद वैद्यको

सेवाग्राम
२० फरवरी, १९४५

भाई चंडीप्रसाद,

चि० बालकृष्णने तुम्हारा खत मुझे बताया। वह दूधसे कुछ हटा है। उपवास किया। शायद वजन भी उतरेगा। अगर तुमको श्रद्धा है तो आ जाइये। बा० कृ० अबतक कायम है। सात रतल दूध लेता है। थोड़ा खजूर भी। चि० हरिइच्छाकी हालत बिगड़ी है। उपचारसे लाभ नही हुआ है। अब हवा भराने के लिये नागपूर भेज रहा हूं। जल्दी भेजता तो अच्छा रहता।

बापुके आशीर्वाद

वैदराज चंडीप्रसाद
बिरला मंदिर
नई दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२५७. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

२० फरवरी, १९४५

शांताबहनसे मै बात करुं क्या? तुमने स्पष्ट बात की सो अच्छा हुआ। आश्रम व्यवस्थामें तुमको मैं नही खींचना चाहता। जो करते हो, करो। पुस्तकों देखना नहीं। जो लेना हो उसीका विचार कर लेना।

बापु

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४७८) से

१. प्रफुल्लचन्द्र घोष

२५४. पत्र : महादेव आनन्द हिंगोरानीको

से[वाग्राम]
२० फरवरी, १९४५

चि० महादेव,

तेरा खत पढ़कर राजी हुवा। थोडी गलती है। कोई फिकर नहीं। "प्रीक्षा" नहीं। "परीक्षा" है। "सिहत" नहीं "सेहत"।

रातको जपसाहेब[1] पढना अच्छा है। तेरी छबी मैंने देखी। मेरे आशीर्वाद उसपर भी है।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

तेरा पैरोंमें गुठली नहीं हैं। व्यायाम करना। तू दुर्बल लगता है।

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

२५५. पत्र : अमतुस्सलामको

सेवाग्राम
२० फरवरी, १९४५

बेटी अ० स०,

तेरा खत मिला। तार भेजता हूं। सर ना०[2] ठीक कहते हैं ना? उपरवाले हूकम करे उसकी तालीम करेंगे।[3] जो बात छुट गई है उसकी हरज नहीं। क्योंकी उसकी जगह नहीं रहती। उनका फर्ज तो यह है कि वे कहें गांधी मेरा दोस्त है उसे मैं बुलाना चाहता हूं। क्या आपके तरफसे रुकावट हो सकती है। वह निदनापुर और चिटागांग जावे तो मैं तो जाने दूंगा। ऐसा करना चाहीये।

१. सिखोंके धर्मग्रन्थ जपजी का प्रथम अध्याय, जिसमें ग्रन्थ साहब का सार दिया हुआ है।

२. सर ख्वाजा नाजिमुद्दीन

३. देखिए पृ० ६१ भी।

बन्द है, यह तुम जानते ही हो। अब जो बहिन मेरे पास आती है वह मेरे प्रयोग के उद्देश्यसे नही, बल्कि मेरे पास जो आध्यात्मिक शक्ति है उसे प्राप्त करने के लिए आती है। मेरे पास ऐसी शक्ति है, इसका मुझे भान है। यह भान सही है अथवा गलत, यह मैं नहीं जानता। मुझे इस बातका कतई कोई भय नही है कि मैं किसीका दुरुपयोग कर सकता हूँ अथवा अपना व्रत भंग कर सकता हूँ।

तुम्हें यहाँ कुछ नही मिल रहा है, तुम्हारा ऐसा सोचना गलत है। लेकिन यदि तुम्हारी ऐसी मान्यता है अथवा भविष्यमें कभी हो तो तुम्हे आश्रमका त्याग करना ही चाहिए।

नौकरोंपर निर्भर रहकर कुछ करना, यह तुम दोनोंकी अधोगति है। लेकिन उन्हें भाई-बहिन समझकर और उन्हें तरक्कीका अवसर देने के लिए हम उन्हे भले ही रखें, और यदि वे चले जायें तो हमसे जो हो सके सो हम करें और अपना काम चलायें। मैं स्वयं ऐसे दिनका स्वागत करूँगा। तब हमारे पास न धन हो और न तथा-कथित नौकर, तो वह स्थिति हमारी सच्ची कसौटी होगी। मेरी तो कसौटी हो चुकी है। मैं कनुभाईके साथ बात कर रहा हूँ और उसे प्रलोभन दे रहा हूँ। यदि वह अपने ताजा अनुभवका लाभ हमें दे और हमारे लिए कुछ कर सके तो तुम सबको उसका स्वागत करना चाहिए।

दलियेके बारेमें मैं समझा। मुझे भेजोगे तो मैं जाँच करके देखूंगा। मेरा अभी भी यह मत है कि ज्वार मोटा-मोटा कूटकर उसका आटा नहीं निकालना चाहिए।

अब तो मुझे लगता है कि मैं बहुत-कुछ लिख गया हूँ और अब समय भी नही है। कुछ रह गया हो तो पूछना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८३३) से। सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

२६०. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२१ फरवरी, १९४५

चि० कृ०,

मैंने शां० से बात न की। तुमारे ही खातर अब करुगा। अच्छा है। आश्रममें रहते हुए मुसीबतोंमें हिस्सा न लेने में अच्छा ही है। मश्विरामें हिस्सा लेना। तुम दूसरा काम भी आश्रमके लिए करने हैं।

जबतक पुस्तकालयसे पुस्तक लेकर चला सकें खरीदना नही। जब खरीदना ही चाहीये तो अलग बात। बच्चोंका निकलेगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४७९) से

२५८. पत्र : श्रीराम पोद्दारको

सेवाग्राम
२० फरवरी, १९४५

चि० श्रीराम,[1]

तुम्हारा पत्र साफ है।

जिसे शराब पीने का शोख है उसे मैं शराब पीने का कहूं? तुम्हारे क्या करना मैं नहीं बताउंगा। तुम्हारा दिल चाहता है सो ही करो। इसमें न पिताजीका सुनो, न मेरा, न किसीका। तुम्हारा दिल कहे वही करो। इसीमें शायद तुम्हारा भला होगा।

तुम्हारे यहां आने की बिलकुल आवश्यकता नहीं है। इतना कह सकता हूं कि कृत्रिम इलाज सब सुधरेले लोग करते हैं, तो तुम्हारा दोष कौन निकालेगा?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकल (सी० डब्ल्यू० ८१२) से

२५९. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२१ फरवरी, १९४५

चि० मु०,

२२ तारीखको[2] यह करना ही है। वे मुझसे पूछ भी गये थे। सवेरे 'गीता'-पाठ और कताई तो करना ही है, 'रामायण'का पाठ भी करना चाहिए। कंचनके बारेमें तुम जो मानते हो वैसा तो मैंने कभी सोचा भी नहीं, बोल तो कैसे सकता हूं? उसके बारेमें मैंने जो सोचा है वह तो मैं बता ही चुका हूं और तुमने उसे स्वीकार भी किया है। सुशीलाबहिनको कंचनने कहा कि उसके मनमें तुम्हारे संग रहकर बच्चे पैदा करने का लोभ है। मैंने जब वह गई उसी दिन उससे पूछा था और मेरा ऐसा खयाल है कि उसने स्वीकार किया था। यदि ऐसा है तो तुमने जो लिखा है वह ठीक नहीं है। मेरा अपना दृष्टिकोण यह है कि मेरे साथ एक बार सोने के बाद अज्ञानवश बन्द कर दिया सो बुरा किया। इसमें कौन-सी बाधा पड़ी, यह मैं नहीं समझा। इस सम्बन्धमें मैंने न तुमसे कोई बात की और न उससे। यह पहली बार मैं तुमसे कह रहा हूं। अब मुझे जो कहना था वह कह चुका। मेरा प्रयोग तो

१. रामेश्वरदास पोद्दारके पुत्र
२. सौर पंचांगके अनुसार कस्तूरबा गांधीकी पुण्य तिथि

मेरे यहाँसे भागने के इरादेकी जड़में भी तुम्ही सबके सुभीतेका खयाल है। लेकिन हम इसका विचार न करें। अगर वह होना होगा तो अपने-आप हो जायेगा। और तब उसे न मैं रोक सकूँगा, न तुम, न और कोई।

अब तो सब हो गया न?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८३१) से। सौजन्य: मुन्नालाल गंगादास शाह

२६३. पुर्जा: श्रीपाद जोशीको[1]

२२ फरवरी, १९४५

१. सरकार या किसीके सामने कबूल करने की जरूरत नही। मित्रोंके सामने तो होना चाहीये। जिनका नुकसान किया है उनको बदला दे सकें तो [अच्छा] हैं। जिस संस्थामें काम करें उनको कह देना चाहीये। केस देखकर इस अभिप्रायमें फरक हो सकता है।

१. यहाँ गांधीजी ने जिन प्रश्नोंके उत्तर दिये हैं वे श्रीपाद जोशीने अपने ११ फरवरीके पत्रमें भेजे थे। प्रश्न इस प्रकार थे:

(१) . . . अगस्त आन्दोलनमें कुछ रचनात्मक कार्यकर्ताओंने विध्वंसक काम किये। उनमें से कुछ लोगोंको आपके वक्तव्योंको पढ़ने के बाद ऐसा लगा कि उन्होंने जो-कुछ किया गलतीसे किया। इसलिए उन्होंने . . . पश्चात्ताप जाहिर करके पहलेकी तरह जोर-शोरसे रचनात्मक कार्य शुरू किया। क्या ऐसे लोगोंके लिए यह कर्तव्य हो जाता है कि वे अपने किये हुए सब कामोंकी जानकारी पुलिसको दे दें और उसके लिए जो भी सजा मिले, भुगतने के लिए तैयार हो जायें? या वे इस मामलेमें चुप्पी साध लें? या सरकारके . . . बजाय सिर्फ जनता या अपने परिचितोंके सामने उसे प्रकट करें?

(२) कुछ लोगोंको ऐसा लगता है कि उन्होंने जो-कुछ किया वह . . . आवेशमें . . . किया . . .। वे समझते हैं कि उसके लिए मन-ही-मन पश्चात्ताप करके अपना काम पूर्ववत् शुरू करने में कुछ हर्ज नहीं। क्या यह ठीक होगा? इससे यह तो नहीं कहा जायेगा . . . कि वे लोग आपको धोखा दे रहे हैं? . . .

(३) कुछ लोग कहते हैं कि उस वक्त हमने जो-कुछ किया . . . ठीक ही किया, क्योंकि उस मार्गकी व्यर्थता हमें मालूम नहीं हुई थी। . . . मगर उस वक्त जो-कुछ किया उसके लिए हमें पश्चात्ताप भी नहीं होता। क्या ऐसे लोग रचनात्मक कार्यक्रम कर सकते हैं?

(४) कुछ लोगोंको इस विध्वंसक कार्यसे कुछ मोह-सा हो गया है . . .। वे कहते हैं, "जब सारी जनता आन्दोलन करने पर तुली हो और विध्वंसक मार्ग न अख्तियार करने से जीवको नुकसान पहुँचता हो, ऐसी हालतमें विध्वंसक मार्गका अवलम्बन करना ही पड़ेगा। आज उसका मौका नहीं है। इसलिए . . . जनता तक पहुँचने के लिए हम रचनात्मक कार्यक्रमको अपनाते हैं। . . ." क्या ऐसे लोग रचनात्मक कार्यक्रमकी आपकी संस्थाओंमें रह सकते हैं?

२६१. पत्र : चिमनलाल नटवरलाल शाहको

२२ फरवरी, १९४५

चि० चिमनलाल,

कल सवेरेसे पाँच दिनके लिए मैं मदालसाके यहाँ रहने जाना चाहता हूँ। क्या मैं जाऊँ? मुन्नालाल, ब० वगैरहसे पूछ लेना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६१७) से

२६२. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२२ फरवरी, १९४५

चि० मुन्नालाल,

मैं कंचनके बारेमें समझ गया। मेरा मन कंचनके विरोधका समर्थन करता है; क्योंकि तुमने उसे तंग करनेमें कोई कसर नही रखी, और अब तुम कहते हो कि समाजकी दृष्टिसे तुम्हारी बुद्धि उस बातको स्वीकार नही करती। तो यह ठीक ही है कि कंचन उसे तुम्हारा विरोध माने। तुम्हें भी सन्तानकी इच्छा तो है ही, इसीलिए तुम अपनेको या कंचनको ब्रह्मचर्यका पालन करनेके योग्य नही मान पाते। तुमने अपने-आपको बहुत परख लिया। मेरी सलाह है कि अब तुम अलग गृहस्थी बसाओ और दोनों सुखी होओ। ब्रह्मचर्यके आदर्शसे हटकर अगर तुम गृहस्थाश्रममें प्रवेश करो तो उससे कोई नुकसान नही होगा। बादमें भी अगर संयमका पालन करना हो तो ऐसा नही है कि उसका पालन नही किया जा सकता। वैसे ब्रह्मचर्य और तुम दोनोंकी अलग गृहस्थी, ये दोनों बातें मुझे परस्पर विरोधी मालूम होती हैं। फिर भी करना वही जो तुम्हारा मन कहे। चि० कनैयोका कहना है कि उसका सुझाव तुम्हें पसन्द आया है। मैंने कुछ सुझाव दिये हैं। दो दिनके लिए वह वर्धा जा रहा है। सुशीलाके नागपुरसे आनेके बाद वह यहाँ वापस आ जायेगा। इस बीच तुम सब लोग विचार कर लेना। मेरी गैरहाजिरीमें तुमपर दबाव भी कम रहेगा।

नौकरोंके बारेमें मैं समझ गया। इस मामलेमें भी मेरी रायको तो सुझाव ही समझना। करना वही जो तुम सबको सर्वसम्मतिसे रुचे और सूझे। अखबारोंके बारेमें रामप्रसाद कहता है कि आजकल अखबार उसे ही डेढ़ बजे मिलते हैं। मैं समझता हूँ, आगे तुम्हीं उससे बात कर लो तो अच्छा हो। अखबारोंकी जिम्मेदारी अगर तुम अपने ऊपर ले सकते हो, तो ले लो। वैसे मेरी बिलकुल सलाह नही है कि तुम यह जिम्मेदारी लो। फिर भी, प्यारेलालसे बात करके देखना।

२६४. पुर्जा : आनन्द तोताराम हिंगोरानीको

सेवाग्राम
२२ फरवरी, १९४५

१. यह पेन बा की है।[1]

२. अच्छी लगती है लेकिन मैं कैसे करूंगा सो सवाल है।[2]

३. तुमको और सरोजिनीको।[3] वह भी दुःखी है।

पुर्जेकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

२६५. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सेवाग्राम
२२ फरवरी, १९४५

सूर्यकी गतिके हिसाबसे आज बा को गये एक वर्ष पूरा होता है। चन्द्रकी गतिसे महाशिवरात्रिके दिन अवसान हुआ था।[4] यह खेदका प्रकरण नहीं है, बल्कि जन्मके दिनकी तरह बड़ा आनन्द होना चाहिए। मैं जन्म और मृत्युमें बड़ा फर्क नहीं मानता। आत्माका न जन्म है, न मृत्यु। हम बा की आत्माको चाहते थे। उसका तो कभी हनन नहीं होता है।

ऐसे दिन बाह्य रूपसे तो हम धार्मिक क्रियामें ही विताते हैं। आज २४ घन्टे चरखा चला। वह मेरे लिए धार्मिक विधि है। बलवन्तसिंहकी प्रेरणासे दिन-भर 'रामायण' भी चली। सुबह 'गीता'-पारायण हुआ। मगर इससे हमारा पेट नहीं भरता। हम लोग सोच-समझकर धार्मिक क्रिया करें, ईश्वरको स्वीकार करें। ईश्वर ऊपर नहीं, नीचे नहीं, हृदयस्थ है। सचमुच तो वह हर जगह है। शास्त्रमें जो लिखा है कि चन्द चीजें खाली हो सकती हैं, वह हवासे खाली होने की बात हो

१. इसपर प्रकाश डालते हुए आनन्द हिंगोरानी कहते हैं कि गांधीजी ने बा के और अपने संयुक्त फोटोग्राफपर हस्ताक्षर करने के लिए इस पेनको जान-बूझकर चुना था।

२. यह उल्लेख आनन्द हिंगोरानीके उस निवेदनका है जिसमें उन्होंने गांधीजी से प्रार्थना की थी कि वे अपने "दैनिक विचारों" का रूपान्तर अंग्रेजीमें करें, जिन्हें गांधीजी उनके लिए २० नवम्बर, १९४४ से लिख रहे थे।

३. यह बातचीतके लिए गांधीजी से मुलाकातके लिए लिखा था।

४. देखिए "भाषण: सेवाग्राममें", पृ० १२७-२८।

२. इसमें मुझे शक है, मुझे तो कहना ही चाहीये। उपरका इसमें भी समजा जाय।

३. ऊपरकी शर्तपर विधायक कार्य कर सकते हैं। लेकिन मेरी दृष्टी समजे तो कहना ही है कि जो कीया वह ठीक तो नहीं था। यह केवल नैतिक प्रश्न है।

४. मुझे डर है कि ऐसे लोगको रोक नहीं सकते हैं। वे न आवें तो अच्छा तो है।

५. उपर मुजब उत्तर।

६. छुड़ाने का कर्त्तव्य एक तरहसे होगा।

७. मेरा वक्तव्य उन टीकाकारोंने गोरसे पढ़ा नहीं है। मैंने निंदा कार्यकी की है करनेवालोंकी नहीं। कार्यकी माने हिंसाकी निंदा तो करना ही है। कुटुंबीजनोंको मदद देने में तो बाधा नहीं हो सकती।

८. मजाकको मैं कैसे रोक सकता हूं। मजाकको रोकने का सही रास्ता यह है कि उसपर ध्यान ही नहीं देना।

अधुरा लगे तो फिर पूछो। लेकिन बार-बार पढ़ने से भी अधुरा लगना चाहीये।

मो० क० गांधी

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ५२३२) से

---

(५) कुछ लोग रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा जनतामें जागृति पैदा करके क्रान्ति (. . . जीव-हत्या विरहित आंशिक अहिंसामय क्रान्ति) करना चाहते हैं। क्या उन्हें आपकी रचनात्मक संस्थाओंमें स्थान दिया जायेगा?

(६) जिन लोगोंने विध्वंसक काम किया और उसके लिए बड़ी-बड़ी सजाएँ पाईं उन्हें छुड़ाने की कोशिश करना कांग्रेसका कर्तव्य है या नहीं? अगर उनके विचारोंमें परिवर्तन न हुआ हो तो भी?

(७) कुछ लोगोंका कहना है कि आपने . . . विध्वंसक कामोंकी निन्दा . . . करने में बहुत जल्दबाजीसे काम लिया। . . . आपके उस वक्तव्यके प्रकाशित होनेके बाद लोगोंने विध्वंसक कार्य करनेवाले बन्दियोंके कुटुम्बियोंको मदद देना बन्द कर दिया है।

(८) महाराष्ट्रके कुछ तथाकथित गांधीवादी . . . विध्वंसक कामोंकी निन्दाके साथ-साथ उसका मजाक भी उड़ा रहे हैं। उससे युवकोंके हृदयोंको चोट पहुँचती है। क्या इस मजाकको आप रोकना न चाहेंगे?

२६६. तार: वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको

[२३][1] फरवरी, १९४५

परम माननीय शास्त्रियर
स्वागतम्
मैलापुर, मद्रास

आपका और जगदीशनका[2] पोस्टकार्ड मिला। आपके पुनः स्वस्थ हो जाने के लिए ईश्वरका धन्यवाद। अपना संकल्प कायम रखें। स्नेह।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

२६७. पत्र: वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको

सेवाग्राम
२३ फरवरी, १९४५

प्रिय भाई,

मैं कभी अखबार नहीं पढ़ता। प्यारेलाल उनके कुछ अंश पढता है। कल किसी ने कहा तो था कि एक दुर्घटना हो गई है। अभी मुझे यह देखने का भी समय नहीं मिल पाया था कि क्या हुआ; तभी आपका अत्यन्त कृपापूर्ण पोस्टकार्ड मिला और सुशीलाके नाम जगदीशनका पोस्टकार्ड भी। मैंने तार दिया है। यह पत्र मैं उसीकी पुष्टिके लिए और आपसे यह अनुरोध करने के लिए लिख रहा हूँ कि आपको अपने वादेपर कायम रहना चाहिए। आप जनताके समक्ष भाषण नहीं दे सकते। लोगोंको आपके लिखित वक्तव्यसे ही सन्तोष करना चाहिए।

स्नेह।

छोटा भाई

परम माननीय वी० एस० एस० शास्त्रियर
स्वागतम्
मैलापुर, मद्रास

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें "२४" तारीख है, जो स्पष्टतः भूल है; देखिए अगला शीर्षक।
२. टी० एन० जगदीशन

सकती है। हवासे खाली करो तो भी कुछ तो रह ही जाती है। भौतिक शास्त्रवालोंने तो यह देख लिया है कि हवासे भी सूक्ष्म कोई चीज है। आध्यात्मिक शास्त्रवालोंने देख लिया है कि ईश्वर सब जगह है। हमारी सब धार्मिक क्रियाओंका वह ईश्वर साक्षी है।

कल मैंने कहा कि पहले हमें अपना पाप धोना है। कल विवाह था।[1] पहले पाँच मिनट मैं पाखाना देखने गया। वहाँ बदबू थी, आँखोंने मैला देखा। मैला क्या भौतिक पाप नहीं है? मैला रखने में हमने बड़ी गलती की है। ऐसे ही पाप हमने यहाँ भी किये होंगे। तो हमें देखना है कि हमारे पाखाने और रसोईघर बिलकुल साफ हैं या नहीं? रसोईका काम बराबर चलता है या नहीं? क्यों हम एक-दूसरेको दुःख देते हैं? क्यों मच्छर-मक्खी बढ़ते हैं? यह हमारे पापकी निशानी है। इनके बढ़ने का कारण अभीतक मेरे हाथमें नहीं आया। लेकिन इससे हमारा पाप मिट नहीं जाता।

इस शुभ दिन हमने चरखा चलाया, दूसरा धर्म-कार्य किया। उसके हम लायक थे या नहीं, उसका चिह्न यह है कि हम सफाई रखते हैं या नहीं। इसे पाप न कहो, दोष कहो। मगर मेरे सामने वह एक ही चीज है। इस पापका बदला आगामी जन्ममें नहीं, इसी जन्ममें मिल जाता है। इस तरह देखें तो हमारा जीवन सरल और आनन्दमय बन जाता है।

कान्तिका पत्र था। उसमें दो विद्वानोंका उल्लेख किया है। एकने कहा, "चरखा चलाना मैं धर्म नहीं मानता। यह तो रूढ़ि हो गई है, इसलिए चलाता हूँ।" किसीको देखकर चरखा चलाने से वह धर्म-कार्य नहीं होगा, उससे स्वराज्य नहीं आयेगा। वह तब होगा जब हम उसके शास्त्रको, उसकी शक्तिको समझ लें। इस तरह बिना विश्वास चरखा चलानेवाले आश्रममें तो नहीं होने चाहिए। यहाँ सब चरखा नहीं चलाते हैं। वह मैं सहन करता हूँ। देखकर करनेवालोंको मैं मना नहीं कर सकता। मगर इतना बता देता हूँ कि उससे कार्य-सिद्धि नहीं होगी।

दूसरे विद्वानने कहा, "प्रार्थनामें मैं मानता नहीं।" वह उनका दोष नहीं। उसका कारण यह है कि हम प्रार्थना करनेवाले प्रार्थनाको जीवनमें ओतप्रोत नहीं करते। उन्होंने मुझे चेतावनी दी कि तुम्हारे आसपास क्या सच्चे आदमी हैं या धोखा देनेवाले; तुम्हारे नसीबमें निराशा ही निराशा है। मुझे निराशा नहीं। मैं तो अपना धर्म-पालन करता हूँ, बता देता हूँ। पीछे मुझे क्या? वह विद्वान 'गीता' पर प्रवचन देते हैं, प्रार्थनामें बैठते हैं, मगर रिवाजके कारण करते हैं।

अगर प्रार्थनामें मन घूमता रहे, ईश्वरमें न रहे, तो प्रार्थनामें हाजिरीमात्र भले ही हो, हम वहाँ नहीं हैं। हमारे शरीर और मनमें द्वन्द्व चलता है। आखिर मन जीत जाता है। यह सब कहने का हेतु इतना ही है कि आज इसे हम धर्म-दिन मानते हैं। एक स्वच्छ अनपढ़ बूढ़ी औरतके नामसे, उसके स्मरणसे जो करते हैं, उसे पूरे मनसे करें, वह सच्ची चीज हो।

बापूकी छायामें, पृ० ३६०-६२

१. कनु गांधी और आभा गांधीका

२७०. पत्र : किशोरलाल घनश्याम मशरूवालाको

वर्धा
२३ फरवरी, १९४५

चि० किशोरलाल,

जबसे तुम बीमार पड़े हो, तबसे मैं चिन्तित हूँ। तुम दोनोंको मामलेपर विचार करना चाहिए। मुझे लगता है कि तुम दोनोंका इलाज हो सकता है। पहली बात तो पर्याप्त विश्रामकी, नैसर्गिक उपचारकी और उपयुक्त आसन करने की है। उपचारमें कटि-स्नान बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। करके देखना।

बापूके आशीर्वाद

किशोरलाल मशरूवाला
आश्रम
सेवाग्राम

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७१. पत्र : जगन्नाथको

वर्धा
२३ फरवरी, १९४५

भाई जगन्नाथ,

तुम्हारा खत मिला है। तुम्हारा तो भला ही होगा। अब तुम्हें क्या मिलता है?

लड़कीओंको देखूं तो शायद कुछ संभव है। बहिन सुशीलासे पूछुंगा। लड़कीआं मुझे लिखे। बड़ा लडका क्या करता है? वह लिखे। देवनागरी या फारसी हरफों में लिखो।

बापुके आशीर्वाद

जगन्नाथ
क्लाथ मिल
दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६८. पत्र : रथीन्द्रनाथ ठाकुरको

२३ फरवरी, १९४५

प्रिय रथी,

मैं आशा करता हूँ कि पैसेका मामला बिलकुल ठीक-ठाक हो गया होगा। स्नेह।

बापू

श्री रथीन्द्रनाथ ठाकुर
शान्तिनिकेतन डाकघर
बंगाल

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० १०५१९) से। सौजन्य : विश्वभारती

२६९. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

वर्धा
२३ फरवरी, १९४५

चि० मुन्नालाल,

पांच दिन भी आश्रमसे बाहर रहना मुझे भारी मालूम होता है।

मुझे लगता है गुरवल्लानी और विमलाबहिन रत्न हैं। विमलाबहिन शालामें पढ़ाती थी; आज उसने वहाँ अपना त्यागपत्र भेज दिया। वह सब करने को तैयार है। लेकिन हमें नरमीसे अर्थात् अहिंसापूर्वक काम लेना आना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४६०) से। सी० डब्ल्यू० ५५७० से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

२७४. पत्र : मेघादेवीको

सेवाग्राम
२३ फरवरी, १९४५

चि० मेघादेवी,

तेरी बीमारीका सुना। श्री ईश्वरदाने यह लिखते हैं। तुझे दुःखी होना नही। अशाध्य रोग भी मिटते हैं। तेरी आयुष्य होगी तो रोग मीटेगा। न मीटा तो भी क्या? मरना-जीना कहां हमारे हाथोमें है। हुशियार रहेना। वडीलोको भी आश्वासन देना।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

कुमारी मेघादेवी
मारफत–सेठ रामकिशोर
देहरादून, सयुक्त प्रान्त

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७५. एक टिप्पणी

२४ फरवरी, १९४५

पुरुपका स्त्रीयोके साथ ऐसा व्यवहार हो जैसा पुरुपके साथ। दो पुरुप जान-बूझकर एक-दूसरेको नही भेंटेंगे, नही एक-दुसरोसे चुंबन करेंगे, नही एक-दूसरेके साथ सोवेंगे। लेकिन कारणवशात् पुरुप पुरुपका स्पर्श करेगा, साथ वैठेगा, एक पाटपर वैठेगा, ऐसे ही हम स्त्रीके साथ वर्तन करे। हम हो सके वहां दो लिंगको भूलें। स्त्री-पुरुपमें भेद है वह सामान्य व्यवहारमें नहीं है। वह भेदका ज्ञान व्यभिचारके लिए होता है, या व्यभिचारके वाहर प्रजोत्पत्तिके लिए होता है। दूसरोंको हम भूल जांय। क्योंकि प्रजोत्पत्तिके लिए ही शायद करोड़ोंमें एक करता हो। ऐसे अवतक मुझे नही मिले है। व्रह्मचर्यकी जो सामान्य वाड मानी जाती है उसके पालनसे जो संवंघ या असंवंघ होता है उसे मैं व्रह्मचर्य नही मानता हूं।

मेरे संवंघोंका समावेश इसीमें आ जाता है। उसके वहार जो-कुछ सुना है तो उसे फेंक दें। मेरे संवंघमें जानने की जिज्ञासा न रखकर इसको सोचें।

बापु[1]

टिप्पणीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५८५०) से

१. इस टिप्पणीपर यह हिदायत अंकित है: "इसकी नकल बनाकर वावा मोघेको भेज दो।"

२७२. पत्र : बलवन्तसिंहको

२३ फरवरी, १९४५

चि० ब[लवंत],

चि० कि० का कल से ही मैंने शुरू तो किया। दखे क्या होता है।

तुम्हारे नवधा भक्तिका मनन करके अपना कर्त्तव्य पालन करना है। पैखाना और रसोडा हमारे जीवनकी चावी है। वाकी सव यह दो करें तो आता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९५३) से

२७३. पत्र : शिव शर्माको

सेवाग्राम
२३ फरवरी, १९४५

भाई शिव शर्मा,

चि० हरिइच्छा मर रही है ऐसा लगता है। आज उसे दा० डेवीडके पास भेजी थी। वे कहते हैं फेफडा हवा भरने लायक नहीं रहा। जव तुम्हारा उपचार शुरू किया तव हालत इतनी खराव नही थी। तुम्हारी दवाके उपर चंडीप्रसादने खूव दूव पीलाया। तवीअत और वीगडी। अव तो पसली नीकालने की नोबत आ गई। शायद हरिइच्छामें इस उपचारके लिये धीरज चाहिये सो नहीं है। यह हालत है। तुम्हारे पास कुछ इलाज है क्या? तुम्हारी तवीयत अच्छी हो गई होगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७८. पत्र : कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शीको

वर्धा
२४ फरवरी, १९४५

भाई मुन्शी,

तुम्हारी भेजी पुस्तक 'जोनल डिविजन्स' मैंने अभी पूरी की। मालिश कराते समय मैं उसे थोड़ी-थोड़ी करके पढ़ गया। तुम्हारे तर्कका आधार ही पाशविक शक्ति है, ऐसी स्थितिमें तुमसे क्या बहस की जा सकती है? मेरी समझमें तो तुम्हारे दृष्टान्त तुम्हारे ही विरुद्ध पड़ जाते हैं। लेकिन मैं इस बहसमें नहीं पड़ूंगा। तुम्हारा हृदय जो कहता है, वही तुम्हारे लिए धर्म है। फिर सही या गलतके पचड़ेमें तुम्हें या मुझे पड़ना ही नहीं चाहिए। जिसे जो सूझे वही उसके लिए सत्य है। मूल सत्य तो सत्यनारायण ही जानते हैं।

तुम्हारे पत्रका उत्तर तो मैं दे चुका हूँ न? भाई मावलंकरके बनाये नियम मैंने अभी देखे नहीं हैं। तुमने जो लिखा है वह लिखने का तुम्हें अधिकार है और वह लिखना तुम्हारा धर्म भी है। इसलिए मैंने उसका सार सबको बता दिया। जो तुम्हें ठीक लगे सो निर्भयतापूर्वक बताते रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६८५) से। सौजन्य : क० मा० मुन्शी

२७९. पत्र : यशवन्त महादेव पारनेरकरको

सेवाग्राम
२४ फरवरी, १९४५

चि० पारनेरकर,

मैं शोक-प्रदर्शित नहीं करूं। माता जाने लायक थी चली गई। अपना काम पूरा किया, तुम पहुंच सको तब पहोंच जाओ। हुशियार रहो। अपना कर्त्तव्य-पालन अच्छी तरह करो।

बापूके आशीर्वाद

वाई० एम० पारनेरकर
मार्फत बी० जी० करपे
१२ कृष्णपुरा
इन्दौर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७६. पत्र : सीता गांधीको

सेवाग्राम
२४ फरवरी, १९४५

चि० सीता,

तेरा पत्र मिला। तू मात्रा बहुत बड़ी लिखती है। जैसी मैंने "रे" पर की है वैसी। या तो जैसा मैं लिखता हूँ वैसी मात्रा लिख, अथवा [मात्राके सिरेपर] गोल ही करना चाहती है तो छोटा ही गोल कर। अपने शिक्षकसे पूछ देखना। २० अप्रैलको बहुत गर्मी होगी और मईमें तो उससे भी ज्यादा होगी। उस समय मैं कहाँ होऊँगा, सो मालूम नहीं। गर्मीका मौसम तू ठंडकमें बिता सके, ऐसा मैं अवश्य चाहूँगा। तेरा ठीक-ठाक चल रहा है, यह जानकर मुझे बहुत अच्छा लगता है।

मैं पाँच दिनोंके लिए मदालसाबहिनके यहाँ आया हूँ। सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

सीता गांधी
अकोला

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७७. पत्र : हर्षदा दीवानजीको

२४ फरवरी, १९४५

प्रिय बहिन,

सूतकी लच्छियोंका पैकेट और एक पत्र कल मिले थे। आज दूसरा पत्र मिला और ५४ रुपयेका चेक। मुझे तो जन्म-दिन याद ही नहीं रहते। दीवानजीकी इतनी उम्र हो गई, इसका भी मुझे अनुमान नहीं था। अब उन्हें मेरे आशीर्वाद भेजना। अभी तो उन्हें अनेक वर्ष जीना है न? और इसी शरीरसे सेवा करनी है।

बापूके आशीर्वाद

श्री हर्षदाबहिन दीवानजी
१५ स्ट्रीट, खार
बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०२२३) से

२८२. पत्र : जी० रामचन्द्र रावको

सेवाग्राम
२५ फरवरी, १९४५

भाई रामचंद्र राओ,

साथका खत है वह बाकायदा योजना और उसकी हिसाबवार तफ्सील नही है। बनाकर मुझे दे दो। उसे कमीटीके नजदीक रखी जायगी।

बापुके आशीर्वाद

सेवाग्राम आश्रम

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२८३. तार : विजयलक्ष्मी पण्डितको[1]

२६ फरवरी, १९४५

विजयलक्ष्मी पण्डित
मार्फत जॉन डे कम्पनी
४० ईस्ट ४९ स्ट्रीट
न्यूयॉर्क

मैं इसमें कोई दखल नही दे रहा हूँ। तुम्हें परेशान होने की कोई बात नही है। स्नेह।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह विजयलक्ष्मी पण्डितके २२ फरवरीके उस तारके उत्तरमें भेजा गया था जिसमें लिखा था: "अप्रैलमें होनेवाले सम्मेलनके दौरान मित्र लोग सान फ्रान्सिस्कोमें मेरी उपस्थिति आवश्यक समझते हैं।... मित्रोंने घनश्यामदास बिड़लाको तार भेजा है, जिसमें उन्होंने उनसे मेरी देख-रेखमें चलनेवाले कार्यके लिए आर्थिक सहायता प्रदान करने का अनुरोध किया है।... कृपया आप इसका अनुमोदन करें।... हालका वक्तव्य परेशान करनेवाला...।"

२८०. पत्र : चण्डीप्रसाद वैद्यको

वर्धा
२४ फरवरी, १९४५

भाई चण्डीप्रसाद,

चि० वा० कृ० के बारेमें तो मैंने लिखा है। चि० हरिइच्छा कल नागपुरसे वापस आई। उसके फेफड़ा[1] बहुत दुर्बल हो गये हैं। अब नौबत पसलियां निकालने पर आई है। आयुर्वेदमें तीन मास गमाये। मेरा दुःख यह है कि जिस केसकी पूरी खबर नहीं है उसमें हाथ क्यों डाला जाय? मेरे नजदीक गरीबको हम छोड़ नहीं सकते है। मेरे दो प्रश्न हैं। (१) हरिईच्छाके लिये तुम अर्थात् आयुर्वेद कुछ कर सकता है? (२) वैद्य लोग क्यों अपनी मर्यादा न समझे?

जो जचे वह निर्भयतासे लिखो। वा० कृ० या ह० ई० के बारेमें आना है तो आओ। ह० ई० के बारेमें कुछ ऐसा ही वै० शिवशर्माको लिखा है।[2]

बापुके आशीर्वाद

बिड़ला मन्दिर
नई दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२८१. पुर्जा : ऋषभदास राँकाको

सेवाग्राम
२५ फरवरी, १९४५

विषय सूचि मुझे भेज दो।[3] मैं मरेठी पढ़ सकता हूं। बच्चाको लाना। नाम ढूंढ लूंगा।

बापुके आशीर्वाद

पुर्जेकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०३९०) से

१. यहाँतक का अंश गुजरातीमें है।

२. देखिए "पत्र : शिव शर्माको", पृ० १७२।

३. ऋषभदास राँकाने लिखा था कि उन्हें गणेश शास्त्रीकी मराठी पुस्तक ग्रामवैद्यक की विषय-सूची स्वयं लेखकसे ही मिल गई थी।

इजाजत हो तो स्वस्थ रहूँ अथवा अस्वस्थ, मैं खुशी-खुशी बंगाल आऊँ। हो सकता है, मैं कुछ न कर पाऊँ। लेकिन उससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

डॉ० नीरद मुखर्जी
१/५ फर्न रोड
बालीगंज
कलकत्ता

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९२९८) से

२८६. पत्र : सत्यनारायण सिंहको

वर्धा
२६ फरवरी, १९४५

भाई सत्यनारायण सिंह,

तुम्हारे सब खत मिले हैं। मैंने प्रजापति मिश्रका खत पढ लिया है। भाषणमें[1] सरकारको डरने जैसा कुछ नही था। रचनात्मक कार्यकी बहस करने के समय ऐसा व्याख्यान अनावश्यक या बेमौका माना जाय। लेकिन उसमें करना क्या था? लेकिन सलतनत रचनात्मक कामको ही रोकना चाहे तो दूसरी बात।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२८७. उत्तर : तेजबहादुर सप्रूके प्रश्नोंके

सेवाग्रामके पतेपर
२६ फरवरी, १९४५[2]

प्र० : श्री जिन्नाको लिखे अपने १४ सितम्बर, १९४४ के पत्रमें[3] आपने निम्न प्रकार कहा था : "आपने पूछा है कि अस्थायी अन्तरिम सरकारके आधारकी मेरी कल्पना क्या है। यदि मेरे मनमें कोई योजना होती तो मैं अवश्य आपको बता देता।" क्या आपने अपनी बातचीतके दौरान किसी योजनाकी रूपरेखापर भी कभी चर्चा नहीं की?

१. देखिए पृ० १४३-४६।
२. गांधी-सप्रू पेपर्ससे
३. देखिए खण्ड ७८, पृ० १०७-८।

२८४. पत्र : मीराबहिनको

२६ फरवरी, १९४५[1]

चि० मीरा,

तुम किसान आश्रम नाम रख सकती हो।[2] यदि ऐसा ही कुछ नाम चाहती हो तो मजदूर आश्रम या उससे मिलता-जुलता कुछ क्यों नही? किसान तो लखपति भी हो सकता है, लेकिन एक मजदूर या शारीरिक श्रम करनेवाला नहीं। वैसे अगर तुम्हें किसान ज्यादा पसन्द हो तो मुझे कोई आपत्ति नहीं।

स्नेह।

बापू

श्री मीराबहिन
आश्रम, मूलदासपुर
डाकघर — बहादराबाद
बरास्ता ज्वालापुर
हरद्वारके पास

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०५१८) से। सौजन्य : मीराबहिन

२८५. पत्र : डॉ० नीरद मुखर्जीको

सेवाग्रामके पतेपर
२६ फरवरी, १९४५

प्रिय मुखर्जी,

आपकी दु:खोंकी गाथा मैं आज ही पढ़ पाया। मैंने इलाज बताया है।[3] वह सिर्फ डॉक्टरी इलाज ही नहीं है। दूध सहित ठीक आहार, घर और रोजगारकी व्यवस्था होनी चाहिए। बाकी सब अपने-आप हो जायेगा। वेश्यावृत्तिकी समाप्तिके लिए समाजकी नैतिक भावना जगाई जानी चाहिए। अगर मुझे बंगालमें निर्बाध प्रवेशकी

१. तारीख हिन्दी अंकोमें है।
२. मीराबहिनने अपने आश्रमके लिए यह नाम सुझाया था।
३. देखिए पृ० ३३।

होती है) का प्रबन्ध किसी केन्द्रीय सत्ता द्वारा किया जाना है, तो आपने यह नहीं बताया है कि इनका प्रबन्ध करने के लिए किस प्रकारकी सत्ता या तन्त्रकी स्थापना की जायेगी और यह सत्ता किस प्रकारसे और किसके प्रति उत्तरदायी होगी।" क्या आपने बातचीतके किसी चरणमें उन्हें ऐसा संकेत दिया था कि आप कुछ-एक विषयों — जैसे विदेशी मामले, प्रतिरक्षा, आन्तरिक संचार-व्यवस्था, सीमा-शुल्क, वाणिज्य आदि — का प्रबन्ध एक केन्द्रीय सरकार या एक केन्द्रीय विधानमण्डलके हाथोंमें रखना चाहते थे?

उ० : कहा जा सकता है कि वार्ता इसलिए भंग हुई क्योंकि हम कायदे-आजम के दो राष्ट्रोंवाले सिद्धान्तपर सहमत नही हो सके। जैसा कि पत्र-व्यवहारसे देखा जा सकता है, मैं केन्द्रीय सरकारका मामला टालना चाहता था। मैंने एक ऐसे अधिकरणका सुझाव दिया जो दोनो पक्षोको स्वीकार्य हो, लेकिन उनका आग्रह था कि पहले देशको दो राष्ट्रोके आधारपर विभाजित कर दिया जाये और उसके बाद उन दोनों राष्ट्रोंके बीच विदेशी मामले आदि विषयोंपर कोई इकरार हो जाये। वे एक साथ कोई चीज करने के लिए सहमत नही थे।

प्र० : उसी धारा (धारा 'घ') में श्री जिन्ना कहते हैं, "जैसा कि मैं आपको पहले ही बता चुका हूँ, लाहौर प्रस्तावके अनुसार ये सब मामले, जो किसी भी राज्यके लिए प्राणवायु-जैसा महत्त्व रखते हैं, किसी एक केन्द्रीय अधिकरण या सरकारको नहीं सौंपे जा सकते।" फिर वे कहते हैं कि "दोनों राज्योंकी सुरक्षा और दोनोंकी भौगोलिक सीमाएँ सटी हुई होने के कारण प्रतिफलित होनेवाले स्वाभाविक और पारस्परिक दायित्वोंका मामला पाकिस्तान तथा हिन्दुस्तान या किसी सम्बन्धित पक्षकी संविधान निर्मात्री संस्था द्वारा इस आधारपर तय किया जायेगा कि दोनों स्वतन्त्र राज्य हैं।" क्या आपको श्री जिन्नाकी स्थिति यह लगी कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दो सर्वथा स्वतन्त्र और प्रभुसत्ता-सम्पन्न राज्य होंगे और उनके बीच जो भी सम्बन्ध होंगे वे केवल सन्धिपर आधारित होंगे? यदि उनकी स्थिति ऐसी लगी तो क्या उन्होंने आपको बताया कि किसी भी पक्ष द्वारा सन्धिका उल्लंघन करने पर क्या होगा, और ऐसी किसी सन्धिकी शर्तोंको लागू कर सके, ऐसा अधिकरण कौन-सा होगा?

उ० : बेशक वे चाहते थे कि दो स्वतन्त्र और प्रभुसत्ता-सम्पन्न राज्य हों और उनके बीचके सम्बन्ध केवल सन्धिपर निर्धारित हों। यदि कोई भी पक्ष सन्धि तोड़ेगा तो परिणाम वही होगा जो आजतक ऐसे प्रसंगपर सारे ससारमें होता आया है, अर्थात् युद्ध। इसलिए न मैंने पूछा और न उन्होंने बताया कि किसी भी पक्ष द्वारा सन्धि तोड़े जाने पर क्या होगा।

प्र० : जहाँतक राजाजी फार्मूलेकी[1] बात है, क्या आप बता सकते हैं कि श्री जिन्ना फार्मूलेकी उस धारा (२) के विरुद्ध क्यों थे जिसमें वयस्क मताधिकार या

१. देखिए खण्ड ७८, परिशिष्ट ८।

उ० : मैंने कायदे-आजमसे जो बात कही वह बिलकुल सच थी। उनका क्या अभिप्राय था, यह मुझे बिलकुल पता नहीं था, क्योंकि उन्होंने मुझे कभी नहीं बताया कि उनके मनमें क्या था। इसलिए मैं आपके प्रश्नका उत्तर यही कहकर दे सकता हूँ कि मैंने यहाँ जो-कुछ बताया है उसके सिवा हमने अन्तरिम सरकारकी किसी योजनाकी रूपरेखापर कभी चर्चा नहीं की।

प्र० : पहले प्रश्नका उत्तर देते हुए कृपया श्री जिन्नाके १४ सितम्बरवाले पत्र को देखें, जिसमें उन्होंने कहा है कि "आप चूँकि इस गांधी-राजाजी फार्मूलेके प्रणेता हैं, अतः आपको उसका एक मोटा अन्दाजा और उसकी कोई तसवीर मुझे देनी चाहिए, ताकि मैं समझ सकूँ कि फार्मूलेके इस अंशका अर्थ क्या है।" क्या आपने इसका कोई उत्तर दिया? यदि दिया, तो क्या दिया? यदि नहीं दिया, तो क्यों नहीं दिया?

उ० : ऊपरके उत्तरके जवाबमें आपके दूसरे सवालका जवाब भी आ जाता है।

प्र० : अपने १७ सितम्बरके पत्रमें श्री जिन्ना कहते हैं कि "अब यह शब्द (पाकिस्तान) लाहौर प्रस्तावका पर्याय बन गया है।"[1] क्या आपने उनसे यह पूछा कि अखिल भारतीय मुस्लिम लीगके लाहौर प्रस्तावके अनुसार संविधानकी कोई ऐसी योजना तैयार की गई है या नहीं जिसमें इन बुनियादी सिद्धान्तोंका खयाल रखा गया हो कि सम्बन्धित क्षेत्रोंको अन्तमें सारी सत्ता — जैसे प्रतिरक्षा, विदेशी मामले, संचार, सीमा-शुल्क और अन्य जो मामले जरूरी हों वे सब — अपने हाथोंमें ले लेनी हैं? क्या श्री जिन्नाने आपका ध्यान ऐसी किसी योजनाकी ओर खींचा था?

उ० : नहीं। दुर्भाग्यवश कायदे-आजमकी स्थिति यह थी कि वे इस हदतक तो जा सकते हैं कि मुझसे मुलाकात करें और मुझे अपनी बातका कायल करने की कोशिश करें, लेकिन वे लीगके अध्यक्षकी हैसियतसे मुझसे — एक व्यक्ति-मात्रसे — तफसीलकी चर्चा नहीं कर सकते। लेकिन हमारी बातचीतसे मैं जो समझ सका वह यह था कि उनके पास कोई तैयार योजना नही थी। जैसा कि पत्र-व्यवहारसे ज्ञात होता है, उन्होंने मुझसे दो पुस्तकें पढ़ने को कहा और मैंने उन दोनोंको पढ़ा। लेकिन उनमें से किसीको भी पढ़ने से मुझे कायदे-आजमकी सही स्थिति समझने में मदद नहीं मिली। जिस एक चीजपर उनका आग्रह था वह यह कि यदि मैं पहले उनकी कल्पनाके पाकिस्तानको स्वीकार कर लूँ, तो हालाँकि मैं व्यक्ति मात्र था, फिर भी वे मुझसे अन्य विषयोंपर बात करेंगे।

प्र० : क्या यह सच है कि आपकी और श्री जिन्नाकी बातचीत असल में केन्द्रीय सत्ता या सरकारके सवालपर टूटी? इस सिलसिलेमें आप कृपया श्री जिन्नाके २५ सितम्बरके पत्रकी[2] धारा (घ) देखें, जिसमें वे कहते हैं, "यदि उन महत्त्वपूर्ण मामलों (जिनका उल्लेख आपके पत्रके उस उद्धरणमें है जिसके साथ धारा (घ) आरम्भ

१. देखिए खण्ड ७१, परिशिष्ट ८।
२. देखिए खण्ड ७८, परिशिष्ट ९।

जाये। कारण, ये अन्य प्रस्ताव जगतनारायण लालवाले प्रस्तावसे रद्द नहीं हो गये।

प्र० : कृपया 'गांधी-जिन्ना टॉक्स' के नामसे प्रसिद्ध पुस्तिकाका परिशिष्ट 'ग' देखें, और समितिको एक संक्षिप्त ज्ञापन भेजें। यदि आपको किसी मुद्देका स्पष्टीकरण देना जरूरी लगे तो, उस सार-संक्षेपमें वह दे दें। इस सिलसिलेमें आप कृपया अखबारोंको दिये गये अपने २८ सितम्बर, १९४४ के वक्तव्यको[1] भी देखें, जिसमें आपने कहा था : "इस दृष्टिसे लाहौर प्रस्ताव काफी अच्छा है। जहाँ मुसलमानोंका स्पष्ट बहुमत हो वहाँ उन्हें अपने अलग राज्यका गठन करने देना चाहिए, और इस बातको राजाजी के अथवा मेरे फार्मूलेमें पूर्णतया स्वीकार किया गया है। . . .लेकिन यदि उसका अर्थ सर्वथा स्वतन्त्र प्रभुसत्ता है, जिससे उन दोनोंके बीच कोई भी समान चीज न रहे, तो मैं इसे एक असम्भव प्रस्ताव मानता हूँ। इसका अर्थ तो यह है कि आखिरी दमतक संघर्ष चलेगा ('वार टु द नाइफ')।" आपका "आखिरी दमतक संघर्ष चलेगा" से क्या तात्पर्य था, और आपने उस प्रस्तावको असम्भव प्रस्ताव क्यों माना?

उ० : 'वार टु द नाइफ' अंग्रेजीका एक सामान्य मुहावरा है। इसे मैंने कभी भी अभिधार्थमें प्रयुक्त होते नहीं देखा है। इसका मतलब सिर्फ इतना ही है — उभय पक्षोंके बीच संकल्पपूर्ण संघर्ष। मैं मानता हूँ कि यदि दोनों राज्योंके बीच कोई समान चीज नहीं है या ऐसी कोई चीज नहीं है जिसका एक-दूसरेकी संस्कृतिसे कोई विरोध नहीं हो तो दोनोंके बीच कोई मैत्रीपूर्ण पारस्परिक समझौता नहीं हो सकता।

प्र० : अपने २८ सितम्बर, १९४४ के वक्तव्यमें आपने कहा था : "मेरा अनुरोध है कि दो राष्ट्रोंके सिद्धान्तके सिवा, यदि मैं लीगकी माँगके अनुरूप भारतके विभाजनके सिद्धान्तको स्वीकार कर सकूँ, तो उन्हें [जिन्नाको] इसे स्वीकार कर लेना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्यसे ठीक इसी मुद्देपर हममें मतभेद हो गया।" कृपया इसे और स्पष्ट करके समझायें।

उ० : मैं समझता हूँ कि मेरी बात काफी स्पष्ट है। मेरा मतलब यह था कि यदि दो राष्ट्रोंके सिद्धान्तको छोड़ दें तो भारतके बँटवारेका ठोस सुझाव मुझे स्वीकार है, क्योंकि तब वह एक ही कुटुम्बके सदस्योंके बीचका बँटवारा होगा, और इसलिए उसमें समान हितके विषयोंमें साझेदारीकी व्यवस्था होगी। लेकिन कायदे-आजमको दो राष्ट्रोंवाले सिद्धान्त, और इसलिए देशके पूर्ण विखण्डन, अर्थात् सबसे पहले कदमके रूपमें पूर्ण प्रभुसत्ता-सम्पन्न अलग-अलग राज्योंकी स्थापनासे कम कोई चीज स्वीकार नहीं थी। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, इसी मुद्देपर हममें मतभेद हो गया।

प्र० : क्या आप यह स्वीकार करनेको तैयार हैं कि भारतके मुसलमान एक पृथक राष्ट्र हैं? यदि करते हैं, तो फिर आप मुसलमानोंके एक पृथक स्वतन्त्र राज्य पानेके अधिकारको अस्वीकार क्यों करते हैं? यदि आप यह स्वीकार करनेको तैयार

१. देखिए खण्ड ७८, पृ० १५०-५५।

अन्य किसी व्यावहारिक मताधिकारके आधारपर सभी निवासियोंके मत-संग्रहकी माँग की गई है? क्या आपको ऐसा लगा कि उनका यह कहना है कि पाकिस्तानके लिए सीमांकित क्षेत्रोंमें अल्पसंख्यकोंको इस बातका कोई अवसर नहीं दिया जायेगा कि वे पाकिस्तानमें रहने के पक्षमें, या देशके शेष भागसे पृथक न किये जाने के पक्षमें अपनी राय व्यक्त कर सकें?

उ० : कायदे-आजम मुसलमानोंके मत-संग्रहके लिए तैयार नही थे, क्योकि उनकी राय थी कि लीग भारतके मुसलमानोंका प्रतिनिधित्व करती है, और पाकिस्तानके बारेमें अन्य कौमोंके लोगोंकी कोई आवाज नही होनी चाहिए, क्योंकि जहाँ कही मुसलमानोंका बहुमत है वहाँ पाकिस्तानपर केवल उन्हीका अधिकार है।

प्र० : आप अपने २४ सितम्बरके पत्रमें दिये गये सुझाव देखने की कृपा करें। उसमें आपने कहा है कि "पृथकताके बारेमें एक सन्धि की जायेगी, जिसमें वैदेशिक मामलों, प्रतिरक्षा, आन्तरिक संचार, सीमा-शुल्क, वाणिज्य आदि विषयोंके कारगर और सन्तोषजनक संचालनकी व्यवस्था होगी। ये विषय सन्धि करनेवाले दोनों पक्षोंके बीच अनिवार्य रूपसे समान हितके विषय रहेंगे।" कृपया स्पष्ट कीजिए कि वह सन्धि इन विषयोंके कुशल और सन्तोषजनक संचालनकी व्यवस्था किस प्रकार करेगी, और क्या आपके मनमें किसी ऐसे तन्त्रकी बात थी जो सन्धिमें निहित निर्णयोंको कार्यान्वित कर सके। यदि बात ऐसी हो, तो आपके मनमें जिस तन्त्रकी कल्पना थी उसका स्वरूप क्या है?

उ० : मैंने एक बोर्डका सुझाव दिया था, जिसमें दोनों राज्योंके प्रतिनिधि हों। यह एक पंचायत बोर्ड होता, जिसे प्रशासनिक सत्ता भी प्राप्त होती। बोर्ड अपने निर्णयके यथोचित पालनके लिए मुख्यतः या पूरी तरह दोनों पक्षों या राज्योंकी सद्भावनापर निर्भर करता। लेकिन दोनों राज्यों द्वारा संयुक्त रूपसे किसी और तन्त्र की रचना की जाये तो उसपर मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।

प्र० : क्या आपको इस बातपर कोई आपत्ति है कि अवशिष्ट अधिकार प्रान्तों या राज्योंको प्राप्त हों और इस प्रकार वे अधिकसे-अधिक स्वायत्तताका उपभोग करें?

उ० : बिलकुल नहीं।

प्र० : आपने श्री जिन्नाके साथ अपनी बातचीत और पत्र-व्यवहारमें भारतके विभाजनके बारेमें जो रुख अपनाया, उसके साथ अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीमें पास किये गये श्री जगतनारायण लालके प्रस्तावकी[1] संगति आप किस प्रकार बैठाते हैं?

उ० : अव्वल तो मैंने अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आजादकी निर्णायक व्याख्यापर भरोसा किया, और दूसरे, खुद अपनी, अर्थात् इस व्याख्यापर कि जगतनारायण लालवाले प्रस्तावको इस विषयसे सम्बन्धित अन्य प्रस्तावोंके साथ मिला कर पढ़ा

१. देखिए खण्ड ७८, पृ० २७, पा० टि० ३।

हिन्दी और उर्दू! टण्डनजीकी मेहनतसे कांग्रेसने कानपुरमें[1] दोनों बोल सकें ऐसी भाषाको हिन्दुस्तानी नाम दिया, और लिपियाँ दो रखी — नागरी और उर्दू। लेकिन कांग्रेस अपने ठहरावके मुताबिक काम न कर सकी। उस कामको स्वर्गीय जमनालालजी के प्रयाससे सन् १९४२ ईस्वीमें उठा तो लिया, पर जमनालालजी चल दिये। १९४२ में कांग्रेसके नेता लोग और दूसरे गिरफ्तार हो गये। उनमें मैं भी था। बीमारीके कारण मैं छूटा। बीमारीमें भी मैंने भाई नानावटीजी का हिन्दुस्तानीके बारेमें काम देखा। मुझे खुशी हुई और मैंने पाया कि उस काममें कामयाबी हासिल हो सकती है। जो एक भाषा पहले दोनों बोलते थे, वह आज क्यों एक नही बन सकती, मैं नही जानता हूँ। उत्तरमें उन्ही हिन्दू-मुसलमानोंकी हम औलाद है, जो एक बोली बोलते थे और लिखते थे। हिन्दी-उर्दू अलग बनाने में जो मेहनत पड़ती है, उससे आधी भी पुरानी बोलीको जिन्दा करने में नही पड़नी चाहिए। उत्तरके देहातोंमें रहनेवाले हिन्दू-मुसलमान एक ही बोली बोलते है, कोई लिखते भी है। अपनी यह मेहनत हम कैसे सफल कर सकते है, इसका विचार करना आपका काम है। और उस विचारके मुताबिक काम करना हिन्दुस्तानी प्रचार सभाका काम है।

मुझे खेद है कि मै कमजोरीके कारण दिनभर बन पड़े, वहाँतक खामोश रहता हूँ। इन तीन मासमें शायद तीन बार दिनमें बोलना पड़ा था। आज तो सोमवारका ही मौन है। लेकिन मुझे उम्मीद है कि मेरी खामोशीसे हमारे काममें कुछ असुविधा न होगी।

अब यह सम्मेलन मै आपके ही हाथोंमें छोड़ता हूँ। भाई श्रीमन्नारायण बाकीकी कार्रवाई करेंगे और करवायेंगे।

आजका सम्मेलन मेरी हाजिरीमें तो ठीक साढ़े पाँच बजे तक बैठेगा। कल हमारा काम तीन बजेसे शुरू होगा, उस वक्त मैं अपने और विचार आपके सामने रखूँगा।

आप लोगोको रहने में और खाने-पीनेमें कुछ असुविधा हो तो आप माफ करेंगे। श्रीमती जानकीदेवीने जितना हो सका, उतना बन्दोबस्त बजाजवाड़ीमें किया।

राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी, पृ० १६०-६२

१. दिसम्बर १९२५ मे

नहीं हैं कि मुसलमान एक पृथक राष्ट्र हैं तब आप किस सिद्धान्तके आधारपर भारत का उस सीमित हदतक विभाजन करने पर सहमत हैं जिस हदतक कि आप श्री जिन्नाके साथ अपनी बातचीत और पत्र-व्यवहारमें सहमत हुए दिखते हैं? इस प्रसंगमें आप कृपया २९ सितम्बर, १९४४ को 'न्यूज क्रॉनिकल' को दी गई अपनी भेंटको[1] देखें, जो 'गांधी-जिन्ना टॉक्स' नामक पुस्तिकाके पृष्ठ ६४ पर मुद्रित है।

उ० : दो राष्ट्रोंके सिद्धान्तको तो मैं स्वीकार ही नहीं कर सकता था, लेकिन विभाजनपर मैं इस मान्यताके आधारपर सहमत हो गया कि एक परिवारके सदस्य विवादास्पद मामलोंमें पारिवारिक सम्बन्ध तोड़ लेने को इच्छुक हैं, लेकिन ऐसा नहीं है कि वे सभी मामलोंमें वह सम्बन्ध तोड़कर, एक-दूसरेके शत्रु बन जाना चाहते हों, मानो दोनोंके बीच शत्रुताके अलावा और कोई समान वस्तु हो ही नहीं।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १०-४-१९४५, और गांधी-नम्र पेपर्स; जी० एन० ७५७० भी

२८८. भाषण : अखिल भारतीय हिन्दुस्तानी प्रचार सभा सम्मेलनमें-१[2]

वर्धा
२६ फरवरी, १९४५

भाइयो और बहिनो,

पूज्य अध्यापक श्री श्रीमन्नारायणके निमन्त्रणसे आप लोग यहाँ जमा हुए हैं, इससे मैं खुश होता हूँ। डॉक्टर अब्दुल हक साहब आज ही आनेवाले थे, उम्मीद है कि कल जरूर आ जायेंगे। उनकी मदद यह हिन्दुस्तानी प्रचार सभा और मैं लेना चाहता हूँ। इसी तरह श्री टण्डनजी आनेवाले थे, और मैं खुश हो रहा था कि वे आयेंगे। भाई श्रीमन्नारायणने उनको तार भी दिया था। दुःख है कि वे बीमार पड़ गये हैं और इस कारण नहीं आ सकते हैं। हम उम्मीद करें कि वे जल्दी अच्छे हो जायेंगे।

आपके सामने काम एक तरहसे छोटा है, और दूसरी तरह उतना ही बड़ा है जैसे छोटा। हमें जो करना है वह छोटा है, लेकिन नतीजेके हिसाबसे बहुत बड़ा है। डॉक्टर ताराचन्द हमें कहते हैं कि असलमें जिसे हम बहुत नामोसे आज पुकारते हैं वह एक ही भाषा थी, जो उत्तरमें हिन्दू-मुसलमान बोलते थे। दुःख है कि जो एक थे, वे दो हो गये हैं, और उनकी भाषा भी दो-जैसी हो गई है या हो रही है—

१. देखिए खण्ड ७८, पृ० १५६-५७।

२. सम्मेलनकी अध्यक्षता गांधीजी ने की थी, और चूँकि उस दिन उनका मौन था, अतः उनका भाषण श्रीमन्नारायणने पढ़कर सुनाया था।

२९१. पत्र : मॉरिस फ्रिडमैनको

सेवाग्राम
२७ फरवरी, १९४५

प्रिय भारतानन्द,[1]

जल्दबाजीमें दो पंक्तियाँ लिख रहा हूँ। अगर तुमने सुई न लेने का व्रत ही न ले रखा हो तो लिवरके इंजेक्शन लो और सेवाके लिए जीवित रहने की आशा करो। लेकिन यदि तुम उन्हें पापपूर्ण मानते हो तो मुझे कुछ नही कहना है।

स्नेह।

बापू

भारतानन्द
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९२. पत्र : मणिबहिन पटेलको

२७ फरवरी, १९४५

चि० मणि,

चि० डाह्याभाई लिखता है कि तू कल रिहा हो रही है। उसका कहना है कि तेरा स्वास्थ्य अच्छा नही है। यदि आ सके तो तू यहाँ अवश्य आना। न आ सके तो विस्तारसे पत्र लिखना। मैं तुझसे मिलने को तो उत्सुक हूँ। हमें मिले बहुत समय गुजर गया है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–४ : मणिबहेन पटेलने, पृ० १३२

१. मॉरिस फ्रिडमैन; ये एक पोलिश इंजीनियर थे और ग्रामोत्थान आन्दोलनमें इनकी बड़ी दिलचस्पी थी। यह नाम उन्हें गांधीजी ने दिया था।

२८९. तार : डॉ० खान साहबको

[२७ फरवरी, १९४५][1]

डॉ० खान साहब,

भूख-हड़ताली अमीरखांके[2] बारेमें क्या किया जा रहा है?

गांधी

मूल अंग्रेजीसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९०. पत्र : सीताराम शास्त्रीको

सेवाग्राम
२७ फरवरी, १९४५

प्रिय सीताराम शास्त्री,

क्या अब मैं आपको हिन्दीमें लिखना शुरू न कर दूं?[3] यदि आप मेरे पत्र स्वयं नहीं पढ सकें तो किसीसे पढ़वा सकते हैं। आपके पुत्र और उसकी पत्नीको मेरे आशीर्वाद। मैं आशा करता हूँ कि अब आपको एक और देशसेवक मिलेगा और विवाह हो जानेके कारण आपका पुत्र आपसे छिन नहीं जायेगा। भणसालीभाईने अपने अनुभव मुझे बताये।

हृदयसे आपका,
बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. डाककी मुहरसे

२. जिनके पुत्र मुहम्मद असलमने २६ फरवरीको गांधीजी को तार दिया था कि उनकी हालत चिन्ताजनक है।

३. हिन्दी पत्र उपलब्ध नहीं है।

२९५. पत्र : रामेश्वरदास बिड़लाको

सेवाग्राम
२७ फरवरी, १९४५

चि० रामेश्वरदास,

'इंडियन सफरर्स' के बारेमें मैंने तुमसे बात नही की है, घनश्यामदाससे की है। आज सुनता हूं कि तुम्हारे पास वे लोग आये हैं। गोसीबहिन मेरे पास आई है।

मेरी सलाह यह है।

(१) कमिटीको ठीक-ठीक रकम देनी चाहिये। प्रतिवर्ष दें, जिससे हर तरह सुभिता होगी।

(२) मेरी सलाह है कि कमसे कम सलतनत समजें, इस तरह पैसे दें। अखबारोंमें रकम आने की जरूरत मैं नही पाता। सलतनतको जानना चाहिये कि ऐसी मदद देना सब लोगोंका धर्म है। उसकी . . .[1] तो मैंने रख दी है।

इस खतका मतलब घनश्यामदासको सुना दें और वह कहें ऐसा करे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९६. पत्र : देशपाण्डेको

सेवाग्राम
२७ फरवरी, १९४५

भाई देशपांडे,

सब शुभ कार्यमें मेरे आशीर्वाद तो है ही। अगर श्री जाजूजी राजी होवे, उस तरह तुम करोगे तो मेरी दृष्टिमें वह तुम्हारा प्रथम कर्तव्य है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रके अनुसार

२९३. पत्र : एस० डी० सातवलेकरको

सेवाग्राम
२७ फरवरी, १९४५

भाई सातवलेकर,

आपका खत मिला। भारतानंदको लिखा है अगर व्रत नहीं है तो लिवरकी पीचकारी लें।[1]

तेलका दीया मेरे पास तो है। मगनवाड़ीमें बनते है। जो भाई वहां बनाते हैं भेज दें। देखकर मैं अभिप्राय भेजूंगा।

बापुके आशीर्वाद

पण्डित सातवलेकर
स्वाध्याय मण्डल
औंध, जिला सतारा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९४. पत्र : केशवदेव मालवीयको

सेवाग्राम
२७ फरवरी, १९४५

भाई केशवदेव,

अगर पूर्वमें ए० आई० सी० सी० के तरफसे आप लोग स्वराज भवनको दुरस्त करवाते थे तो अब भी करवाना चाहिये। शायद इस चीजको चि० कमलनयन ज्यादा समजता है। तो उनसे पूछे। मेरा ख्याल है कि आपके पास ए० आई० सी० सी० के कुछ पैसे तो पड़े हैं। मकान बहुत बिगड गया है और बिगड रहा है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० १८७।

वह हिन्दुस्तानीमें अपने खयाल जाहिर नही कर सकता। फिर वह लड़कोंको हिन्दुस्तानी कैसे सिखायेगा? यह है हमारी दुर्दशा! इससे आलस भी पैदा होता है।

दो लिपियाँ सीखने से डरना न चाहिए। कोई कहे कि आठ-दस दूसरी अच्छी लिपियाँ है, तो क्यों न सीखें? मैं तो कहता हूँ कि दक्षिणकी भी एक लिपि तो सीख ही लो। जवानें भी वहाँ चार हैं। इससे आप भड़कें नही।

आप हिन्दुस्तानमें रहते हैं। हिन्दुस्तानियोकी सेवा-खिदमत करना चाहते है, तो उसके लिए दो लिपियाँ सीखने की मेहनतसे डरना क्या? जवान तो एक ही सीखनी है। हमारी बदनसीवी है कि हमें दो लिपियाँ लेनी पड़ती हैं। मगर मैं तो हिन्दीकी सव जवानें खुशीसे सीख लूं। दिलमें शौक हो तो मेहनत कम पड़ती है। आपकी तादाद आज वहुत ही कम है, भले ही हो। लेकिन आप सव तो दो लिपियाँ सीख ही लें। उसका नतीजा कितना वड़ा होगा, इसमे मैं नही जाना चाहता।

किसीके दूसरी भाषाएँ सीखने के रास्तेमें आलस्य ही एकमात्र रुकावट है।[1] यदि कोई मेरे पास आये तो मैं उसके लिए न केवल हिन्दुस्तानी वल्कि दस वारह और भी महत्त्वपूर्ण भाषाएँ सीखने की व्यवस्था कर सकता हूँ। यदि कोई कहता है, "मै उर्दू (हिन्दुस्तानी) नही पढ़ सकता" तो मैं कहूँगा कि "तुम हिन्दुस्तानमें रहने लायक नही हो, क्योकि यह असंख्य लोगोकी भाषा है।" मैं इस भाषा (राष्ट्रीय) कार्यमें आपको सहयोग देने के लिए आमन्त्रित करता हूँ। यदि हम ठीक ढंगसे और लगनके साथ कार्य करे तो इसे सिद्ध किया जा सकता है।

कुछ उर्दू बोलनेवाले वड़ी-वड़ी वातें करते वक्त जिन लफ्जोका इस्तेमाल करते है, उन्हे सुनकर मै घवरा उठता हूँ, हालांकि उनके साथ मैं काफी बैठता हूँ। ऐसा क्यों? मैंने इसका इलाज पाया है, और उसको आपके सामने रखा है।

राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी, पृ० १६२-६४, और हितवाद, १-३-१९४५

२९८. भाषण: अखिल भारतीय हिन्दुस्तानी प्रचार सभा सम्मेलनमें—३

वर्धा
२७ फरवरी, १९४५

डॉ० ताराचन्दने गाँवमें साधारण तौरपर प्रयुक्त किये जानेवाले हिन्दुस्तानी शब्दोंके इतिहासके मर्मको स्पष्ट करते हुए अपना हृदय उँड़ेल दिया है।[2]

ताराचन्दजी से मैं जल्दी खत्म करने को नही कह सकता था, क्योकि मै खुद उनकी वातोमें गिरफ्तार हो गया था। उन्होने ऐसी वातें कही, जो वे पण्डितोके मजमेमें भी कह सकते हैं। हम तो पण्डित नही हैं, फिर भी सव लोगोंके साथ मैं भी रससे सुन रहा था। उन्होंने कोई वात दुहराई भी नही, इसलिए मैंने उन्हें नही

१. यह और इसके वादका अनुच्छेद *हितवाद* से अनूदित है।
२. यह वाक्य *हितवाद* से अनूदित किया गया है।

२९७. भाषण: अखिल भारतीय हिन्दुस्तानी प्रचार सभा सम्मेलनमें—२

वर्धा
२७ फरवरी, १९४५

मुझे इसका दुःख है कि आप लोगोंको मैं जितना वक्त देना चाहता हूँ, नही दे सकता। इसके लिए मुझे माफ करें। मेरी खामोशी सारे दिन चलती है। वह ऐसी नही है कि टूट ही न सके, लेकिन मैं चाहता हूँ कि जितने दिन रह सकूँ रहूँ और मेरा काम ठीकसे चले, इसलिए खामोशी रखता हूँ। अगर मैं अपनी ताकत एकदम खर्च कर डालूँ, तो एक महीनेमें टूट जाऊँ। पर मेरा सत्याग्रह और मेरी अहिंसा यह नही सिखाती। अगर जरूरत हो तो इस ताकतको दोनों हाथोंसे लुटा दूँ, नहीं तो कंजूस भी हो सकता हूँ। आजकल तो कंजूसी ही से काम लेता हूँ।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा क्या है, यह मैं आपको बता देना चाहता हूँ। हिन्दुस्तानी प्रचार सभाका मकसद यह है कि ज्यादासे-ज्यादा लोग हिन्दी और उर्दू शैलियाँ और नागरी व उर्दू लिपियाँ सीखें। एक दिन था, जब उत्तरमें रहनेवाले एक ही जबान बोलते थे। उनकी औलाद हम हैं। आज हम यह महसूस कर रहे हैं कि हिन्दी और उर्दू एक दूसरेसे दूर-दूर होती जा रही हैं। हिन्दीवाले कठिन संस्कृतके और उर्दूवाले कठिन अरबी-फारसीके लफ्ज चुन-चुनकर इस्तेमाल कर रहे हैं। मैं मानता हूँ कि यह चीज चलनेवाली नही है। देहातके लोगोंको तो रोटीकी पड़ी है। वे जो जबान आजतक बोलते आये हैं, वही आगे भी बोलते रहेंगे।

हिन्दी और उर्दूके जो अलग-अलग फिरके पैदा हो गये हैं, उन्हें रोकने का काम मेरे जैसे लोगोंका है। मैं दोनोंसे कहूँगा कि आपका यह तरीका ठीक नहीं है। आपके इन बड़े-बड़े लफ्जोंको देहाती लोग समझेंगे भी नही। अगर हम दोनों लिखावटोंको सीख जायें, तो आखिरमें दोनों भाषाएँ एक हो जायेंगी। लिखावटोंका सवाल इतना टेढ़ा नहीं है। भले ही हमेशाके लिए दो लिपियाँ रहें, या दोनोंको छोड़कर हरएक प्रान्त अपनी-अपनी लिपिमें राष्ट्रभाषा लिखने लगे तो भी कोई हर्ज नही। मगर जबान तो एक ही हो जानी चाहिए। आज हम आलसी बन गये हैं। अंग्रेजीका बोझ आज हमारे सिरपर है, लेकिन अंग्रेजी भी इतनी मुश्किल नही है। हम छः महीनोंमें अंग्रेजी सीख सकते हैं, मगर हम तो अंग्रेजीमें सोचना और शास्त्र (इल्म) सीखना चाहते हैं, इसलिए वक्त लगता है। अंग्रेजीके पीछे जिन्दगीके चौदह उम्दा साल बरबाद करते हैं, और इतना करने पर भी हम उसे पूरी तरह सीख नही पाते। अगर आज किसी अंग्रेजीदाँसे यह कहो कि वह हिन्दुस्तानीमें अपनी बातें समझाये, तो वह कहता है कि कैसे समझाऊँ? क्योंकि अंग्रेजीमें पढ़ाई होने के कारण

आनन्दजी कहते हैं कि सबको दो लिपियाँ सीखनेमे बड़ी मुसीबत उठानी पड़ेगी। मै कहता हूँ कि उसमें कुछ भी मुसीबत नही है। और अगर हो भी तो उसे पार करना ही होगा। क्योकि अगर उसे पार न किया, तो उससे भी बड़ी मुसीबतोंका मुकाबला हम कैसे कर सकेंगे?

मैं हिन्दू-मुस्लिम एकताके लिए जीता हूँ। मैं जानता हूँ कि हिन्दुस्तानीके प्रचार से हिन्दू-मुस्लिम एकता होगी, मगर इस वक्त मैं आपको यह लालच नही दे रहा हूँ।

मैं कहता हूँ कि हिन्दी और उर्दू दोनोका भला हो। इन दोनोसे मुझे काम लेना है। हिन्दुस्तानी आज भी मौजूद है। मगर हम उसे काममें नही लाते। यह ज़माना हिन्दीका और उर्दूका है। वे दो नदियाँ हैं। उनमें से हिन्दुस्तानीकी तीसरी नदी प्रकट होनेवाली है। इसलिए वे दोनों सूख जायेंगी, तो हमारा काम नही चल सकता।

देहाती लोग मेरी जबान समझ लेंगे। ठूंस-ठूंसकर संस्कृत या अरबी-फारसीके शब्द जिसमें भरे हुए है, ऐसी भाषा वे नही समझ सकेंगे। अगर हिन्दी साहित्य सम्मेलनवाले कहे कि हम तो सस्कृत-भरी हिन्दी ही चलायेंगे, तो मेरे लिए सम्मेलन मर जाता है। देहाती जबान तो एक ही है, वह दो नही हो सकती। हिन्दीवाले चाहते है कि मै हिन्दीकी ही नौबत बजाता रहूँ, उर्दूका नाम न लूं। मगर मै तो अहिंसाको माननेवाला सत्याग्रही हूं। मै यह कैसे कर सकता हूँ? मै अकेला यह काम नही कर सकता। इसमें सबकी मदद चाहिए। मै महात्मा हूँ तो उसका सबब यही है कि मै अपनी मर्यादाओं (हदों)को समझकर उनसे बाहर नहीं जाता। इसीलिए मौलवी अब्दुल हक साहब आये हैं। मेरे पास पंख नही है। बड़े-बड़े बुजुर्गोको इसलिए बुलाया है कि वे मुझे पंख दें। देंगे तो मै उड़ूंगा और कहूँगा—"देखो, काम तो अच्छा हो गया न?" नही तो मै खाकमें पड़ा हूँ, खाकसार ही रह जाऊँगा।

हिन्दी साहित्य सम्मेलनमें भी मै एक बड़ा आदमी समझा जाता हूँ। उस हैसियतसे नही, बल्कि आम तौरपर मै यह कहना चाहता हूँ कि हिन्दी साहित्य सम्मेलनके खिलाफ कोई काम न होगा। पर दोनों लिपियाँ सीखनेकी तकलीफ तो गवारा करनी ही होगी। मै तो आनन्दजीसे भी काम लेना चाहता हूँ।

मुझसे कहा गया है कि "मुस्लिम लड़के तो नागरी लिपि नही सीखते"। मै कहता हूँ—"अगर ऐसा है तो तुमने कुछ नही खोया, उन्होने खोया। एक और लिपि सीख ली, तो उससे नुकसान क्या हुआ? इतनी-सी बातसे इतना बड़ा हित जो होता है।" यही बात मैंने हसरत मोहानी साहबसे भी कही थी। लेकिन उस वक्त वह काम न चला, क्योंकि सत्याग्रह शुरू हो गया। मै यह नही कहता कि आप सब लोग जेल जायें, मगर मै जेल गया। दूसरे जो जेलोंमें पड़े हैं, सो भी कोई मूर्खताकी बात नही है। जवाहर, वल्लभभाई, मौलाना साहब जेलमें बैठे है। वे कोई पागल नही है। अगर वे खुशामद करके बाहर आ जायें, तो मेरी नजरमें वे मर जायें। मगर वे अन्दर-ही-अन्दर मर जायेंगे, तो मै एक भी आँसू नही बहाऊँगा। कहूँगा—"अच्छे मरे!" क्योकि वहाँ बैठे-बैठे भी वे हिन्दीकी खिदमत कर रहे है।

रोका।[1] बादमें उन्होंने बताया कि नागपुर सभाके पश्चात् किस प्रकार वे भारतीय साहित्य सम्मेलनको छोड़कर हिन्दी साहित्य सम्मेलनमें आये और उसके पश्चात् किस प्रकार उन्होंने हिन्दुस्तानीको राष्ट्रभाषा बनाने के लिए काम शुरू किया। मै इस क्षेत्र में भी वास्तविक लोकतन्त्र चाहता हूँ और यही मेरी इच्छा है।

श्री आनन्द कौसल्यायनने जो कहा वह मै समझा। वे दब-दबकर बोले हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी तरफसे उन्होंने यह कहा कि दो लिपियोंका बोझ हो सके तो निकाल दिया जाये। मैं आज भी हिन्दी साहित्य सम्मेलनमें हूँ। उसमें मैं अपने-आप नही गया था। जमनालालजी जिस काममें जाते उसमें अपने साथ मुझे भी घसीट ले जाते थे। वे मुझे इन्दौर ले गये।[2] वहाँ मैंने सम्मेलनको एक नई चीज दी। उसे सब हजम कर गये। मैंने कहा था — "हिन्दी वह जबान है, जिसे हिन्दू-मुसलमान दोनों बोलते है, और जिसे लोग दोनों लिपियोमें लिखते हैं।" मेरा यह ठहराव मंजूर हो गया। मैंने उसे सम्मेलनके नियमों (कायदों)में शामिल करा दिया। बादमें फिर वह नियम बदल दिया गया, सो दूसरी बात है, इसलिए अब अगर मै सम्मेलनमें से निकल जाऊँ, तो मुझे दुःख न होगा।

हममें कई ऐसे है, जो हिन्दी और उर्दूको मिलाने की कोशिश करते हैं। कोई कहते है — "इसकी क्या आवश्यकता है।" मै तो सच्ची डेमोक्रैसी (जनतन्त्र या जमहूरियत) चाहता हूँ। सिर्फ हाँ-में-हाँ मिलाने से "डेमोक्रैसी" "हिपोक्रैसी" (कपट) बन जाती है। इसलिए मैंने कहा कि सिर्फ हाँ-में-हाँ न मिलाइए, अपनी सच्ची राय बताइए।

मैं नही चाहता कि हिन्दी मिट जाये या उर्दू नष्ट हो जाये। मैं सिर्फ यह चाहता हूँ कि दोनों हमारे कामकी हो जायें। सत्याग्रहका कानून है कि एक हाथकी ताली भी हो सकती है। वह बजती नहीं, पर उससे क्या? आप एक हाथ बढ़ायेंगे, तो दूसरा अपने-आप बढ़ जायेगा। हक साहबने नागपुरमें जो बात कही थी उसे उस वक्त मैं न समझ सका। "हिन्दी यानी उर्दू," इसे मैंने माना नहीं था। उस वक्त उनकी बात मान लेता तो अच्छा होता। दोस्त बनने आये थे, मगर विरोध हुआ और दुश्मन-से बन गये। पर मेरा दुश्मन तो कोई है ही नहीं। फिर हक साहब ही मेरे दुश्मन कैसे बन सकते हैं? इसलिए आज फिर हम एक मंचपर खड़े हो गये हैं। नागपुरमें भारतीय साहित्य सम्मेलन किया था,[3] लेकिन वह वहीं आरम्भ और वहीं खत्म हुआ। हम लोग मिलने आये थे और हो गये अलग-अलग। ऐसे सम्मेलनसे क्या फायदा हो सकता था? वह हिन्दुस्तानी नहीं, बल्कि भारतीय साहित्य सम्मेलन था, इसलिए उस वक्तके भाषणमें मैंने संस्कृतके शब्द भर दिये थे। अगर उनके सामने बोलना पड़े, तो आज भी वही कहूँगा।

१. अनुच्छेदका शेष भाग **हितवाद** से अनूदित किया गया है।
२. अप्रैल १९३५ में
३. अप्रैल १९३६ में, देखिए खण्ड ६२।

३००. पत्र : मगनभाई पारेखको

२८ फरवरी, १९४५

चि० मगनभाई,

तुम देखोगे कि १३वें पृष्ठतक तो मैं सुधार कर सका। सुधार समझमें आने-जैसे हैं।

आठवीं धारासे गड़बड़ शुरू हुई है। जाने तुम लिखते-लिखते थक गये थे अथवा थोड़ा-थोड़ा करके लिखने से विचारोंका सिलसिला टूट गया। किये जानेवाले कामके सम्बन्धमें ८ से लेकर १२ तककी जो धाराएँ हैं उनमें कोई संगति बैठती दिखाई नहीं देती। प्रार्थनाके बाद उतावलीमें मैं इसको लेकर बैठ गया हूँ। इसलिए हो सकता है कि मैं ही गड़बड़ा गया होऊँ। लेकिन मुझे लगता है कि आत्मशुद्धिको तुम्हें एक अलग अनुच्छेद और शीर्षक देना चाहिए। ऊपर ही कहीं ऐसा किया जा सकता है। इसके बादकी चीज कामकी है, लेकिन उसे दूसरे ढंगसे कहना चाहिए और वह अन्यत्र दी जानी चाहिए। यह सब मैं तुम्हें करके दे सकता हूँ, लेकिन इसके लिए मुझे ज्यादा समय देना होगा, जो मेरे पास नहीं है। और फिर तुम्हें सब-कुछ पका-पकाया दूं, यह भी उचित नहीं है। कच्चा है या ठीक नहीं है, मेरे लिए इतना कह देना ही पर्याप्त होना चाहिए। इसलिए तुम यह सारा अंश फिरसे लिखकर मुझे दिखाना चाहो तो दिखाओ। न दिखाना चाहो तो भी ठीक है। मेरे सुझावोंमें जो सुझाव तुम्हारे मनको न जँचे उसे निकाल फेंकना। किशोरलाल बीमार हैं। मैं तो उन्हें कोई कष्ट नहीं दूंगा। और मेरी सलाह है कि तुम भी न दो। तुमसे अपने-आप जो बन सके सो करो। मैं इस समय किशोरलालकी अपेक्षा स्वस्थ हूँ, इसलिए किये देता हूँ। अन्यथा मैं भी इनकार कर देता और किशोरलालके पास जाने से भी रोकता। मैंने यह सब दुबारा नहीं पढ़ा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०६७) से

अगर हिन्दी और उर्दू मिल जायें, तो गंगा-यमुनासे बड़ी सरस्वती हुगलीकी तरह बन जायेगी। हुगली तो गन्दी है। मैं उसका पानी नही पीता। पर अगर यह हुगली बन गई, तो यह बड़ी खूबसूरत होगी।

अब रही पैसेकी बात। आपमें से जो लोग पैसा देना चाहेंगे, वे मेरे पास या श्रीमन्नारायणके पास दे दें। हरएकको अपनी हैसियतके मुताबिक पैसा देना चाहिए। जो लोग पैसा दें, कामके लिए दें। नामके लिए कोई पैसा न दें।

राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी, पृ० १६४-६७, और हितवाद, १-३-१९४५

२९९. पत्र : सीता गांधीको

सेवाग्राम
२७ फरवरी, १९४५

चि० सीता,

हम गरीब हैं। हमें गरीबोंके साथ रहना है, इसलिए हमें सर्दी-गर्मी बर्दाश्त करनी चाहिए। लेकिन तुझसे जितना सहन हो उतना ही करना। सेहत खराब नहीं करना। मैं अभी-अभी हिन्दुस्तानी [प्रचार] सभासे आया हूँ। इसलिए पत्र नागरी लिपिमें शुरू कर दिया। सबको आशीर्वाद।

बापू

सीता गांधी
मार्फत नानाभाई मशरूवाला
अकोला

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

उससे क्या फर्क पड़ता है? सबसे सलाह करके जो बन्दोबस्त करना चाहो, कर लेना। कुमारप्पाको सूचित तो किया ही जाना चाहिए, और उनकी राय भी लेनी चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गजानन नायक
सेवाग्राम आश्रम

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०३. पत्र : डॉ० जीवराज मेहताको

सेवाग्राम
२८ फरवरी, १९४५

भाई जीवराज मेहता,

चि० इन्दुने लिखा है कि कमला [नेहरू स्मारक] अस्पताल कमेटीकी बैठक होती ही नहीं है। स्थानीय कमेटी भी लापरवाह है। पैसा कम पड़ गया है। इन सबपर कुछ प्रकाश डाल सको तो डालना।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० जीवराज मेहता
अल्टमन रोड
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०४. पत्र : रमाबहिन जोशीको

२८ फरवरी, १९४५

चि० रमा,[1]

बहुत दिनों बाद तेरा पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। बच्चे अच्छी तरह जम गये हैं। जब हो सके तब एक चक्कर लगा जाना। आजकल तो यहाँ लू चलनी शुरू हो गई है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५३६७) से

१. छगनलाल जोशीकी पत्नी

३०१. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

सेवाग्राम
२८ फरवरी, १९४५

प्रिय सी० आर०,

रामचन्द्रनने अपने नाम तुम्हारा पोस्टकार्ड पढ़कर सुनाया। अच्छा नहीं लगा। रोज रातको आनेवाला यह बुखार, चाहे उसका कारण कुछ भी हो, खत्म होना ही चाहिए। मेरी सलाह है कि तुम जितनी जल्दी हो सके यहाँ आ जाओ। अगर किसीको तुम्हें लेने जाने की जरूरत हो तो उसकी व्यवस्था की जा सकती है। यहाँका मौसम गर्म और सूखा है और मईके मध्यतक ऐसा ही रहने की सम्भावना है। गर्मी रोज-रोज बढ़ती जायेगी। आशा है तुम गर्मीसे परेशान नहीं होते।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१०२) से

३०२. पत्र : गजानन नायकको

सेवाग्राम
२८ फरवरी, १९४५

चि० गजानन,

तुम्हारा पत्र आज मिला। तुम्हें कुमारप्पा पैसा भले न दें, लेकिन तुम जो करो उसमें उनकी सम्मति तो होनी चाहिए न? तुम जिस संस्थामें हो यदि उसकी सम्मतिके बिना तुम पैसेके बलपर होनेवाला काम करो, तो उस संस्थाको परेशानी तो होगी। यदि कुमारप्पाकी सम्मति नहीं मिले तो तुम्हें धीरजके साथ उन्हें समझाना होगा। मेरा उत्तर दुबारा पढ़ना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

तुम्हारे १५ फरवरी, १९४५ के पत्रके उत्तरमें मेरा कहना यह है कि जबतक गुड़ बनाने का काम तुम्हारे नियन्त्रणमें होता है तबतक वह किसके नामसे होता है,

३०७. पत्र : सीतारामको

सेवाग्राम
२८ फरवरी, १९४५

भाई सीताराम,

तुमारे पैसे मिले। वही अपने साथ आशीर्वाद रखते है ना? फिर भी चाहिये तो ले लो। उमीद तो थी कि आओगे और मिलोगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०८. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

२८ फरवरी, १९४५

बुनने का पूरा सीख लेना तब ही सच्चे शिक्षक बन सकेंगे। लेकिन एक बुनकर जैसे वही चीजमें लगे रहने की कोई आवश्यकता नही है। जो बुनकर अभ्याससे पाता है वह तुमारे बुद्धि प्रयोगसे पाना है।

मेरे प्रयोगके बारेमें सुना है तो क्या सोचा? प्रार्थनाके लिए बराबर उठने का फिर क्यों छुटा?

बापु

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४९१) से

३०५. पत्र : शान्तिलाल बालाशंकर पण्ड्याको

सेवाग्राम
२८ फरवरी, १९४५

चि० शान्तिलाल,

तुम्हारा पत्र मैंने अथसे इतितक सुना। प्रसन्न हुआ। मैं इसे जाजूजी को पढ़ने को दे रहा हूँ। तुम सफल होओ। सब-कुछ आजमाना। किसीको पैसा उधार नहीं देना। ज्ञान तो उधार दिया ही नहीं जा सकता। यह तो दे ही देने की चीज है। तुम्हारी पूंजी तो ज्ञान है। इसे बढ़ाओ और इसका उपयोग करो।

यन्त्रका उपयोग खूब सोच-विचारकर करना। जिसका उपयोग करोड़ों लोग नहीं कर सकते उसका त्याग करोगे तो सुखी रहोगे और दूसरोंको भी सुखी करोगे।

चि० कान्ताको इस समय नहीं लिख रहा हूँ। उसे मेरे आशीर्वाद देना। उसका प्रसव सहज सम्पन्न हो।

बापूके आशीर्वाद

शान्तिलाल बालाशंकर पण्ड्या
रेलवे फार्म
दोहद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०६. पत्र : इन्दिरा गांधीको

२८ फरवरी, १९४५

चि० इंदु,

मैं डा० काटजुको[1] लिखूं ना? कमिटिके बारेमें भी लिखता हूं। तेरे लिये और राजीवके[2] लिये अच्छा होगा अगर तू काश्मीर जा सकती है। मैं अच्छा हूं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९८०४) से। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. कैलाशनाथ काटजू
२. इन्दिरा गांधीके बड़े पुत्र

लुई फिशरको दिया गया मेरा उत्तर सम्पूर्ण है।[1] समय बीतने के साथ-साथ लोगोंने देखा कि मेरे शब्दोंका अर्थ वही था जो उनसे प्रकट होता था। इसीलिए मैंने कहा था कि भविष्यमें हिंसा होने के बावजूद शायद मैं अपना आन्दोलन स्थगित न करूँ। मेरी परीक्षा हुई ही नहीं। क्योंकि जबतक मैं आन्दोलन शुरू करूँ तबतक तो मुझे गिरफ्तार कर लिया गया।

३. निश्चय ही नहीं।

४. आपकी बात बिलकुल गलत है। मैं स्वतन्त्रता या अन्य किसी चीजको अहिंसा और सत्यसे ऊपर नहीं रखूँगा।

५. स्पष्ट है कि आपने आन्दोलनका और अहिंसाका भी, केवल सतही अध्ययन ही किया है।

गांधीजी मौन रखते हैं, और उन्होंने जो-कुछ लिख दिया है, यह उसीकी नकल है।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २७-२-१९४५

३१०. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

सेवाग्राम
१ मार्च, १९४५

प्यारी बेटी,

तेरा विदाई-पत्र मिला। बेशक, तू बहादुर है, तू सरल है। तू जहाँ भी रहे, अपना रास्ता स्वयं बना लेगी। स्वास्थ्य ठीक रखना और नई जगहसे पत्र लिखना। गु[र्नेदबहिन] यहीं है।

सबकी ओरसे प्यार।

बापू
(मो० क० गांधी)

डॉ० एम० स्पीगल

[अंग्रेजीसे]
स्पीगल पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. देखिए खण्ड ७६, परिशिष्ट ५।

३०९. पत्र : एम० सी० दावरको[1]

सेवाग्राम
२८ फरवरी, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका इसी १५ तारीखका पत्र मिला। गांधीजी आपके प्रश्नोंके[2] उत्तरमें लिखते हैं :

१. तथाकथित "भारत छोड़ो" प्रस्ताव[3] अहिंसा और सत्यसे सर्वथा संगत है। आशा है, आपको इस मुहावरेसे कोई आपत्ति नहीं है।

२. मात्र इस मुहावरे या प्रस्तावसे आंशिक या पूर्ण सफलता मिलने का कोई प्रश्न ही नहीं था।

जिस पत्र-व्यवहारके परिणामस्वरूप उपवास किया गया, स्पष्ट है कि उसको आपने ध्यानसे नहीं पढ़ा है।[4] उपवास पूरी तरह सरकारके कारनामोंके खिलाफ किया गया था।

उपवासके भारी परिणाम निकले। आपको सारी घटनाका अध्ययन करना चाहिए। आपको यह भी जानना चाहिए कि सत्याग्रहीको कभी फलकी चिन्ता नहीं होती। उसके कार्योंका स्वयं अपना ही मूल्य होता है, चाहे वे कार्य बड़े हों या छोटे।

१. यह पत्र नरहरि परीख द्वारा लिखा गया था। एम० सी० दावर यूनाइटेड पार्टी ऑफ इंडियाके महामन्त्री थे।

२. प्रश्न संक्षेपमें इस प्रकार थे : (१) क्या "भारत छोड़ो" प्रस्ताव अहिंसा और सत्यसे संगत है? (२) यदि संगत है तो क्या गांधीजी को इससे अथवा अपने ऐतिहासिक लिनलिथगो उपवास से कोई सफलता प्राप्त हुई? उन्होंने लुई फिशरसे कहा कि हिंसा होने पर भी कदाचित् वे सविनय अवज्ञा आन्दोलन वापस नहीं लेंगे। इससे उनका क्या तात्पर्य था? (३) क्या इससे यह पता नहीं चलता कि अगस्त १९४२ के आन्दोलनमें वे अहिंसाके बारेमें इतने दृढ़ नहीं थे जितने उससे पहले थे? (४) क्या इससे यह विदित नहीं होता कि गांधीजी को अहिंसासे ज्यादा देशकी स्वाधीनता प्यारी है? (५) गांधीजी के कतिपय सहयोगियोंकी प्रतिहिंसाकी कार्रवाइयोंको क्या अहिंसाके प्रति स्वयं गांधीजी की श्रद्धामें कमी होने का परिणाम नहीं माना जा सकता?

३. देखिए [illegible] ७६, परिशिष्ट १०।

४. देखिए खण्ड ७७, पृ० ५१-५३ और पत्र-तत्र।

३१२. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१ मार्च, १९४५

चि० मुन्नालाल,

सब पढ़ गया। मुझे लगता है कि मुझे कहीं-कहीं ध्यान रखना पड़ेगा। मैं गहरे में तो नहीं उतरूँगा। मेरी मददकी आशा नहीं रखना, लेकिन जो मिलती रहे उसे स्वीकार करना। मैं अपने दोष निकालता हूँ, यह तो ठीक ही है। इससे मैं सचेत रहता हूँ। तुम्हारी दृष्टिमें यह निरर्थक है। यदि हम रसोई अलग कर सकें तो अच्छा हो। लेकिन यह सम्भव होगा नहीं। हम जो खाना अपने लिए बनाते हैं, अधिकांशतः वही मेहमानोको दें। कचनके बारेमें समझा। उसका प्रमाणपत्र यदि तुम्हें मिल जाये तो समझ लो कि तुम जीत गये। अभी तो तुम्हें नहीं मिला है। उसे अबोध न समझना। वह जिस हदतक अबोध है, उस हदतक उसमें तुम्हारा और मेरा दोष है। तुमपर मुझे अविश्वास नहीं है। होता तो तुम चले गये होते। किसे क्या काम सौंपना चाहिए, यह मेरे हाथमें होना चाहिए न? "सेवाग्राम भूलो" का अर्थ है गाँवको भूलो, आश्रमको नहीं। तुम अलग घर बसाओ, ऐसा कहकर मैंने यह बताया है कि इसमें मेरी सम्मति है, प्रेरणा है। इसके बावजूद यदि तुम अलग घर नहीं बसाते तो इसे मैं तुम दोनोंकी विशेषता समझूंगा। मेरे लिए यह विचार असह्य है कि तुम मेरे रंचमात्र भी दबाव डालने से अलग घर बसाने से बाज आओ। जान पड़ता है कि कंचन अलग घर चाहती है। मैं चाहता हूँ कि रसोईको सुस्थिर करने में तुम महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाओ, लेकिन मेरे ढगसे। मेरा खयाल है कि अब मैंने तुम्हारे सारे प्रश्नोके उत्तर दे दिये।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८२८) से। सौजन्य: मुन्नालाल गंगादास शाह

३११. पत्र : प्रेमा कंटकको

सेवाग्राम
१ मार्च, १९४५

चि० प्रेमा,

तेरे पत्रका उत्तर आज ही दे सका हूँ। लाचार हूँ।

समाचारपत्रोंपर भरोसा न करना। मैंने निर्णय नही दिया। मैंने परस्पर एक-दूसरेके विरुद्ध दिखनेवाली दो रायें पेश की है। सदस्य न बनाने का मत बादका और अधिक परिपक्व है। लेकिन जो सदस्य बनाये उसे मनाही नही है।

भाई पाटिलके साथ मैंने बात नही की। सम्भव है कि प्रस्ताव मुझे खुर्शेदबहिनने अथवा किसी और ने बताया हो। लेकिन मेरी सहमतिका तात्पर्य क्या? सबको अपनी जिम्मेदारीपर काम करना है — चाहे वे गांधीवादी हो अथवा उसका विरोधी। गांधीवाद जैसी कोई चीज नही है, ऐसा कहा जा सकता है। मैं सोशलिस्टोसे और ज्यादा मिला हूँ। उनकी बहुत-सी बातें मेरे गले उतरी है, अथवा यह कहें कि वे मेरे अधिक निकट आ गये है।

लेकिन मेरा नाम कोई न ले। भूमिगत होना मुझे पसन्द नही है, लेकिन जो लोग भूमिगत है उनकी मैं भर्त्सना नही करता। भूमिगत होने की कार्रवाईकी निन्दा अवश्य करता हूँ। दोनोंका भेद समझना।

जिन्ना साहबके साथ बातचीतमें[1] मेरे साथ कोई नही था। हम तो थे ही बहुत थोड़े। एक राजाजी भी थे। दूसरोंको तो इसके बारेमें कुछ मालूम भी न था।

बाकी सब समझ गया हूँ। लेकिन विस्तारमें जाने का समय नही है। तू अपनी राह चलती जा। जितनी खरी स्त्रियाँ मिलें उन्हें साथ लेकर काम कर। सारे देश की जिम्मेदारी अपने सिर न ले। जो तुझसे हो सके उसीकी जिम्मेदारी ले। और कुछ पूछना हो तो पूछना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

निराशा जैसी कोई चीज मेरे जीवनमें न कभी थी और न आगे रहेगी। सब लोग मर जायें तो भी मुझे निराशा नहीं होगी। मैं जो कहता हूँ वह सच है और भूलाभाई जो प्रयत्न कर रहे हैं[2] वह सच है। तू अपना काम करती जा।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४३३) से। सी० डब्ल्यू० ६८७२ से भी; सौजन्य : प्रेमा कंटक

१. तात्पर्य शायद ९ से २७ सितम्बरतक जिन्नाके साथ गांधीजी की उस वार्त्तासे है जिसमें कोई समझौता नहीं हो पाया था।

२. देखिए पृ० ११, पा० टि० १, और पृ० १५५, पा० टि० २।

होगी। क्योंकी हमें निश्चित रूपसे ज्ञान हुआ है। अगर नयी दृष्टिसे हमारा पुराना काय मिट जाय तो हम नयी दृष्टि पहचानते ही नही। वह तो हाथीका पैर है, उसमें सब दूसरे आ जाते है। हां, इतना होगा सही कि हम पुराना ही करते रहे, उससे संतोष नहीं होगा और पुराना वडाने के लिये जो धांदल मजाते[1] थे वह छूट जायगी। ताजे उदाहरण हमारे पास मौजूद है—उसे मैं नही दोहराता।

पुरानेके विस्ता[र]की ख्वाहीशमें नया जो अमूल है उसे भूले तो वह मोह होगा। पुरानेकी धुनमें नयेको त्याग दे तो अयोग्य होगा। पुराना दूसरोके द्वारा प्रमाणिकतासे वन सकें तो अवश्य करे।

सस्थाकी दृष्टिसे जो प्रश्न किया है वह अनुमानिक नही लेकिन वनता हुआ वतावें तो उत्तर दूंगा।

पंजाव अगर कर सके और हमें कोई संपत्ति न रोकना पडे तो हम करने दे। खादी न पहनने का तो सवाल ही खड़ा नही हो सकता।

कत्तीनें कांते। उसमें हम कहातक पैसे रोकें, व्यवहारिक प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न गुणदोष पर हल हो सकता है। रेशम और उनके काममें हम मूडी[2] न रोके लेकिन अलग मुडीसे होवे और उसके खादी भण्डारमें रखने से लाभ होता महसुस करे तो उनी और रेशमी माल रखे। इन चीजोमे खादी भावना रखकर प्रामाणिकता रखनी है।

काश्मीरमे स्टेट हमपर वधन हम कवूल न करें ऐसा न डाले तो उनके पैसे मैं दो शर्योसे[3] लूं। सव संस्था अपने पैसे खोने को तैयार रहे। चर्खा संघ सारा धन खोने को तैयार रहे तो शायद कुछ नही खोयेगा। लेकिन अपने ही हाथोसे खोवे। आशीर्वादका प्रश्न अलग रखना चाहिये और वनी हकीकतपर निर्भर रहता है।

जनता और कार्यकर्ताको सतोष देना संघका धर्म है ही लेकिन परमधर्ममें इसे भी करना पडे तो करे। अंतमें हमने खादीके और अन्य सव काम इसी दृष्टिसे करने की कोशीश की है।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. मचाते
२. पूंजी
३. शर्तोंसे

३१३. पत्र : नारणदास गांधीको

सेवाग्राम, वर्धा
१ मार्च, १९४५

चि० नारणदास,

यदि तुम चि० पुरुषोत्तमका[1] मासिक खर्च वहांसे सम्मानपूर्वक न निकाल सको तो मुझसे ले लेना। मुझे यह बताना कि हर महीने कितना खर्च आता है। अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखना। सम्भवतः चि० कनैयो और आभा[2] कुछ दिनोंमें तुम्हारी तरफ आयेंगे। यदि वे आये तो मेरा दूसरा पत्र कनैयो लायेगा। उसकी तरफसे पत्रोंका मामला ऐसे ही चलेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०–२/५०८) से। सी० डब्ल्यू० ८६२० से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

३१४. पत्र : विचित्र नारायण शर्माको

१ मार्च, १९४५

चि० विचित्र,

मैंने उत्तर सीसापेनसे लिखा है। उत्तर शाहीके अक्षरोंसे किसीसे लिखवा लूंगा।

सच बात है कि जैसे तुमने लिखा है ऐसे व्यक्तिसे ही आरंभ चाहता हूं। उसीके साथ विस्तार मिले तो ठीक न भी मिले तो दरकार नहीं। क्योंकि अंतमें विस्तार नयी दृष्टिसे ही मिल सकता है। पुरानी दृष्टिसे काम अंतमें शकित हो जायेगा। निर्वनके लिये खादी एक धंदा रह जायगी। इतनी किसीको संतोष नहीं दे सकता। अगर कार्यकर्ताके दिल भी सशंक है तो धीरजसे हमारे शंकाका निवारण करना है।

चर्खा संघ अहिंसा और सत्यका प्रतीक है ऐसे हृदयसे मानना और इस प्रचार में मिट जाना। इसका अर्थ यह हरगीज नहीं कि आज तक जो हमने किया वह भूल थी। हमने तो उससे भी लाभ उठाया है लेकिन अब हम उठाते रहे तो मूर्खता

१. नारणदास गांधीका पुत्र
२. कनु गांधीकी पत्नी

पतन इस पतनसे बेहतर माना जाय। इस पतनकी संभावना उस वक्त थी। इस वक्त नही ऐसा मेरा मानना है। जीवनमें एक किस्सा ऐसा बना है जिसमें पतन होनेवाला था लेकिन मैं बच गया। इसका उल्लेख मेरे कोई लेखमें मैंने किया है।

इस प्रश्नसे मैं समजा हूं कि तुम इस प्रश्नको पूरा जानते नही हो। आश्चर्य है कि तुमने प्रथम मुझसे सही हकीकत जानने की कोशिश न की और प्रश्न पूछे। यह कैसी बात? कैसी श्रद्धा? मुझे वहूत समय नही है। इसे जानने की इच्छा है तो ज्ञान दूंगा और पीछे प्रश्न उठे तो ठीक कहा जाय।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४९२) से

३१७. पत्र : कृष्णचन्द्रको

१ मार्च, १९४५

चि० कृ०,

तुम्हारा पत्र। मेरे उत्तरमें तुमको जवाव मिलना चाहीयें। प्रयोजन यह: मैं जान वुझकर मनसे नपुसक वनना चाहता हूं। ऐसे वना तो शरीरसे वन जाता ही हूं। यही सही ब्रह्मचर्य है। मौका मिला मैंने लिया।

सत्याग्रह है तो शरीरको तो हानि हो ही नही सकती लेकिन नैतिक भी नहीं हो सकती अर्थात जो होता है वह लाभ ही, अनुभव यह सिद्ध करता है। बुराका परिचय भलेसे होता है तो क्या हो सकता है? मेरे वर्तनमें श्रद्धा रहे तो भोजन कोई भी हो बूरा हो ही नही सकता किसी प्रकारसे। इतना स्पष्ट होना ही चाहीयें। मेरे उल्लेख ३५ सालसे नही लेकिन २१ से हैं। शायद तुमने नही देखा है या भूले हैं।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४९३) से। सी० डब्ल्यू० ५८९२ से भी

३१५. पत्र : श्रीपाद जोशीको

सेवाग्राम
१ मार्च, १९४५

चि० श्रीपाद,

दूसरे शिथिल हो जायं उसका तो क्या होगा। मै देखता हूं कि जीनके पीछे कोई है उनका तो चलता ही है। 'एक तरहसे' का अर्थ इतना ही कि कांग्रेसी भीख नहीं मांगेगा।[1]

आन्दोलन भले कांग्रेसवालोंने भी किया हो लेकिन कांग्रेसका नही था। उसका सबूत ७, ८ के[2] व्याख्यान और ठेराव। आंदोलन शुरू मैं ही कर सकता था और मैंने किसी प्रकारसे नही किया। भ्रम पैदा हुआ सही। इससे क्या? देखो मौलान[ा] अबुल कलाम क्या कहते हैं? जल मरने की मनाइ नही थी लेकिन हिंसा करने की मनाइ थी।

विधायक कार्यके बारेमें मैंने बहूत लिखा है। बारी यहां है। सब अपने सरदार बने लेकिन अपने लिये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५२३४) से

३१६. पत्र : कृष्णचन्द्रको

सेवाग्राम
१ मार्च, १९४५

चि० कृ०,

तुमारा खत मिला। मेरे प्रयोगमें सफलता असफलता बनने[3] हो सकते हैं। असफलता इतनी ही कि मैं सर्वथा निर्विकार न बन सकुं। सत्याग्रहमें इस प्रकारकी अर्थात हानिकर असफलताको अवकाश नहीं रहता है।

मेरा प्रयोग अगर सत्याग्रही है तो सभीको हानि हो ही नही सकती है। मैं उत्तर सूत्र रूपसे ही देता हूं। न समज सको तो दुबारा लिख सकते हैं। बा के साथ तो मेरे प्रयोग हुए ही। इतना काफी नहीं था। पतन होवे तो नैतिक दृष्टीसे वह

१. देखिए "पुर्जा: श्रीपाद जोशीको", पृ० १९५-९६।

२. अगस्त १९४२ के; देखिए खण्ड ७६।

३. दोनों

३१९. पत्र : कैलाशनाथ काटजूको

सेवाग्राम
१ मार्च, १९४५

भाई काटजू,

पिताश्रीकी बीमारीका खत देखा। पत्नी गई, पिताजी आज नही तो कोई दिन तो जायेंगे ही। हम अपना कर्तव्य करें। उसीमें सर्वस्व आ जाता है।

बापुके आशीर्वाद

डॉ० काटजू

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३२०. पत्र : तेजवन्तीको

सेवाग्राम
१ मार्च, १९४५

चि० तेजवंती,

तेरा खत मिला। वहासे प्रमाणपत्र तो मिलना चाहिये। वह मिले तो यहां आ सकेगी। आश्रमका सब काम करना होगा। बादमें जो समय रहेगा उसमें सीखेगी। यहां गरमी शुरू हो गई है। वह जूनमें छूटने का संभव है। शरीर बिगाडने का संभव रहे तो आना फिजुल समजो। देख विचार कर ही आना अच्छा है। आने का निश्चय किया जाय तो लिखो और उत्तर आने पर आओ। मैंने किसीको पूछा नही है। तू ईच्छा करेगी तो मैं पूछ लुंगा।

बापुके आशीर्वाद

तेजवंती
चरखा संघ
आदमपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३१८. पत्र : देवी प्रसादको

सेवाग्राम
१ मार्च, १९४५

चि० देवीप्रसाद,[१]

तुमारा खतको आज छुता हूं।

पूर्णिमाके रोज मैं नहीं आता या आता ही ऐसे न कहा जाय। इतना स्पष्ट है कि मैं कर्तव्य समझकर ही जाता था न जाता।

रोटी पहली और बादमें शृंगार। यह मेरा पुराना ख्याल है लेकिन तुम यहां हो इसलिये जो सहज कर सकें करो। सच्ची कला कैसे होती है यहां सीखो।

चित्र शिक्षक है वे पहले ऐसा काम करेंगे जिससे अपना खर्च निकाले। बादमें चित्र बनाये और सीखावे। ऐसा कलाकार सच्ची कला सीखावेगा।

मैंने झाडुके बारेमें कहा था, याद होगा। झाडु लगाने में बहुत कला है कहां रखें, कैसे लगावे, क्या जुदी वस्तुके लिये एक ही होगा कि अलग, आदमी झुकेगा कि सीधा रहेगा, धूल उड़ावेगा कि पानी छटकावेगा, कोनेमें जाता है, दीवार देखता है, छतका क्या? यह सब प्रश्न कलाकारके दिलमें आना ही चाहीये तब वह उसमें खूबी देखेगा।

इसलिये नयी तालिममें सच्चा कलाकारको स्थान है ही। सच्चा कौन मैंने बताया। नंदबाबू मेरे आदर्शके बहूत नजदीक आते हैं। शायद संपूर्णतया नहीं। लेकिन वे इतने बड़े है कि कुछ भी टीका रूपमें कहना मेरे लिये बहूत अनुचित होगा। गुरुदेवके साथका संवाद हुआ था उसपर मैंने लेख[२] लिखा था सो पढ़ो। और भी पूछना है तो लिखो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. शान्तिनिकेतनके एक कला स्नातक, जो बादमें मार्जेरी साइक्सके साथ नई तालीम पत्रिकाके सह-सम्पादक बने।

२. गांधीजी किस लेख-विशेषकी चर्चा कर रहे हैं, यह स्पष्ट नहीं है।

३२३. पत्र : अल्लादि के० कृष्णस्वामी अय्यरको

२ मार्च, १९४५

प्रिय मित्र,

साथमे बम्बई सरकारके विभागीय अधिकारियोंसे प्राप्त पत्रोंकी नकले भेज रहा हूँ। उनमें इस बातपर आपत्ति की गई है कि ऑल इंडिया स्पिनर्स एसोसिएशन "अखिल भारत चरखा सघ" के नामसे काम कर रहा है। आपत्तिका आधार यह है कि संघके उस अंग्रेजी नामका ही इस्तेमाल किया जाना चाहिए जो लोकोपकारी संस्था अधिनियमके अधीन पंजीकृत कराया गया है, और अपने अनूदित नामके कारण संघ एक अनधिकृत संस्था बन जाता है, और कम्पनी अधिनियमके अनुसार, उस अधिनियमके अन्तर्गत एक कम्पनीके रूपमें अपना पंजीयन कराये बिना, उसका कारोबार चलाना निषिद्ध हो जाता है। मुझे लगता है कि यह आपत्ति मूर्खतापूर्ण है। कृपया इन कागज-पत्रोंको पढ़कर एक उत्तर लिखवा दें, जो चरखा संघकी ओरसे बम्बई सरकारको भेजा जायेगा।

राजगोपालाचारीसे यह जानकर बहुत दुःख हुआ कि आप दुर्घटनाग्रस्त हो गये, जिससे आप पिछले कई हफ्तोंसे बिस्तरमें पड़े कष्ट उठा रहे हैं। आशा है आप शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थ हो जायेंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

सर अल्लादि के० कृष्णस्वामी अय्यर
मार्फत श्री ए० वैद्यनाथ अय्यर
सान्दई पट्टई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३२४. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

२ मार्च, १९४५

मेरी तकलीफका ख्याल किया जाय। बुननेका बच्चोंके साथ साथ हो सके तो करना। बातोंमें कम समय देना।

बापूके आशीर्वाद

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४९५) से

३२१. तार: उर्मिलादेवीको[1]

२ मार्च, १९४५

उर्मिलादेवी
२/१, बी हिन्दुस्तान पार्क
रासबिहारी एवेन्यू पोस्ट
कलकत्ता

पहले मुझे मित्राकी योजना देखने दीजिए। इसके बाद जब मैं लिखूं तब वे आ सकते हैं।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

३२२. तार: वच्छराजभाई दोषीको

२ मार्च, १९४५

वच्छराजभाई दोषी
पंचगनी

लिख रहा हूँ। आने की जरूरत नहीं।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. चित्तरंजनदासकी बहिन

३२७. पत्र : एल० कामेश्वरराव शर्माको

सेवाग्राम
३ मार्च, १९४५

प्रिय एल० कामेश्वरराव,

आपका भला-सा पत्र मिला। आपने मुझे अपना जो संकल्प बताया है, उसपर डटे रहें। पूरे भारतकी बात तो दूर रही, सारे दक्षिण भारतीय प्राकृतिक चिकित्सक भी आपके साथ नहीं हैं।

आपको जिस साधनकी जरूरत है वह डॉ० सप्रूकी कमेटी नहीं है। जल्दबाजी से काम न लें। थोड़ा लेकिन ठोस कार्य बहुत ज्यादा लेकिन निरर्थक कार्यसे बेहतर है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

एल० कामेश्वरराव शर्मा
पडुकोट्टई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३२८. पत्र : ताराचन्दको

सेवाग्राम
३ मार्च, १९४५

प्रिय डॉ० ताराचन्द,

आपकी योजनाके नम्बर ७ में निहित सिद्धान्तको मैं समझता हूँ और उसकी कद्र करता हूँ। यदि आपकी योजनाके नम्बर १ और २ में सुझाये ढगसे पश्चिमी बंगाल और पूर्वी पंजाबको पूर्ण स्वायत्तता प्रदान कर दी जाती है तो उससे मुस्लिम लीगकी आपत्तियाँ शायद दूर हो जायें और बंगाल या पंजाबको विभाजित करने की जरूरत खत्म हो जाये।

आपकी योजनाके इस भागको एक अनिवार्य शर्त माना जाना चाहिए और उसे मात्र ब्योरेकी चीज नहीं मानना चाहिए।

नम्बर ५ में जो तर्क दिया गया है, वह मेरी समझमें नहीं आया। तथापि यदि सम्बन्धित क्षेत्रोंके निवासी जनमत-संग्रह छोड़ देने के लिए राजी हों तो मैं उसपर आग्रह

३२५. पत्र : बलवन्तसिंहको

२ मार्च, १९४५

चि० ब०,

घरकी बात ठीक की। मेरा कथन मुझे याद था। फिर भी मुझको पूछा जाय तो मै वही उत्तर दऊ जो मैंने दिया। तुमारे खत तो सब वापिस करने की कोशीश करता हूं।

मैंने तो तुमको जिम्मेवारीका काम सिपुर्द किया ही है। तुम्हारी किम्मत तो मेरे पास है ही। तुम चाहते है ऐसी नही सही उसकी क्या चिंता?

मेरे बारेमें तुमने सबने समय मांगा है। मैं निकाल दूंगा ८ रातको अच्छा कि प्रात:काल ७–८ का? कहो, पीछे समय मुकरर करूंगा। कौन कौन आवेंगे। मुझे हरज नहीं कौन आते है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९५४) से

३२६. पत्र : गुलाम हुसैन हिदायतुल्लाको

सेवाग्राम
३ मार्च, १९४५

प्रिय मुख्यमन्त्री,

लाला ब्रजलालके नाम आपके पत्रकी नकल मुझे मिली। आपने या तो मेरे कथनको गलत रूपमें उद्धृत किया है, अथवा तोड़-मरोड़कर पेश की गई रिपोर्टोंसे आप स्वयं गुमराह हो गये हैं। अहमदाबादके एक गुजराती समाचारपत्रको लिखा मेरा पूरा पत्र[1] (अनूदित) इसके साथ है। आप देखेंगे कि मेरी रायमें सबसे पहले प्रतिबन्ध हटाया जाना चाहिए। संशोधनका प्रश्न तो केवल तभी उठ सकता है। कृपया सुधार आप स्वयं कर लें।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

संलग्न : १

सर गुलाम हुसैन हिदायतुल्ला
मुख्यमन्त्री
सिन्ध सरकार
कराची

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह उपलब्ध नहीं है।

महात्माजी इस सिद्धान्तसे सहमत नहीं हैं कि सम्पूर्ण भारतके हिन्दू या सम्पूर्ण भारतके मुसलमान दो पृथक राष्ट्र हैं। मेरी (ताराचन्दकी) रायमें महात्माजीने साररूपमें मुसलमानोंकी माँगको स्वीकार कर लिया है और इस बातपर सहमत हो गये हैं कि भारतमें दो प्रभुसत्ता-सम्पन्न और स्वतन्त्र राज्योंकी स्थापना की जाये। महात्माजी और श्री जिन्नाके बीच जो मतभेद हैं वे ये हैं :

(१) महात्माजी पृथक्करणसे पहले जनमत-संग्रह चाहते हैं।

(२) वे धार्मिक या साम्प्रदायिक राष्ट्रीयतामें विश्वास नहीं करते।

(३) वे चाहते हैं कि समान हितके विषयोंका संचालन करनेवाले तन्त्रकी व्यवस्था पृथक्करणकी सन्धिमें ही की जाये।

मेरा कहना है कि महात्माजी और श्री जिन्नाके बीचके मतभेदोंको दूर किया जा सकता है, बशर्ते कि निम्नलिखित ढंगका समझौता हो जाये :

(१) उत्तर-पश्चिम और पूर्वमें तथा शेष भारतमें जो प्रभुसत्ता सम्पन्न राज्य हों वे संघ-राज्य हों। इन संघोंके घटक उत्तर-पश्चिममें ये होंगे :

(१) बलूचिस्तान,

(२) पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त,

(३) पश्चिमी और केन्द्रीय पंजाब,

(४) दक्षिण-पूर्वी पंजाब (एक या दो घटक)

(५) सिन्ध।

(२) संस्कृति, शिक्षा, धर्म आदि कुछ विषय इन घटकोंके अधीन रहेंगे, जिनका नियन्त्रण घटकोंकी सरकारोंके हाथों में रहेगा। संघ सरकारको सामान्य संघीय और समान विषयोंपर नियन्त्रण प्राप्त होगा।

(३) इसी प्रकार यदि बंगालके निवासियोंकी इच्छा हो तो बंगालमें भी घटक हो सकते हैं, और शेष भारतका एक संघ होगा।

(४) ये दो संघ प्रतिरक्षा, तट-कर, विदेशी मामले, संचार आदि समान हितवाले विषयोंके संचालनके लिए एक सन्धिके द्वारा स्वतन्त्र और प्रभुसत्ता-सम्पन्न संघोंका एक महासंघ बनायेंगे।

नही करूँगा। यह विचारणीय बात है कि जनमत-संग्रहको छोड़ दें तो इसका और क्या सन्तोषजनक प्रमाण हो सकता है कि लोग प्रस्तावसे सहमत हैं।

मैं ऐसा मान रहा हूँ कि नम्बर ४ में जिस कदमका उल्लेख है वह सारी योजना के साथ लागू होगा और उसका एक अभिन्न अंग होगा।

इन प्रस्तावोंके सिवा, और इनसे हटकर मैं यह और कहना चाहूँगा कि यदि आप लीगको किसी बोर्डका — जिसके सदस्य, फर्ज कीजिए, आप और सर तेजबहादुर सप्रू हों — पंच-निर्णय स्वीकार करने के लिए राजी कर सकें, तो मैं उसे स्वीकार कर लूँगा।

आपके मसौदेमें, जिसे मैं इस पत्रके साथ भेज रहा हूँ, मैंने जो परिवर्तन किये हैं उन्हें आप देख लेंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[संलग्नक]

सुझाये गये परिवर्तन हाशियेमें दिये गये हैं।

महात्माजी द्वारा श्री जिन्नाको लिखे गये २४ सितम्बर, १९४४ के पत्रकी मेरी व्याख्या निम्न प्रकार है:

(क) महात्माजी के प्रस्तावमें मुस्लिम लीग के १९४०के प्रस्तावकी एक विवेकयुक्त व्याख्याके अनुसार पृथक्करणकी माँगकी स्वीकृति निहित है।

(क) महात्माजी मुस्लिम लीगके पृथक्करणकी उस माँगको स्वीकार करते हैं जो मुस्लिम लीगके १९४० के प्रस्ताव[१] में की गई है।

(ख) महात्माजी पृथक प्रभुसत्ता-सम्पन्न राज्योंकी सीमाओंका निर्धारण करने के लिए एक ऐसे आयोगकी अविलम्ब नियुक्तिपर सहमत हैं जिसमें कांग्रेस और लीगके प्रतिनिधि हों।

(ग) महात्माजी चाहते हैं कि प्रभुसत्ता-सम्पन्न राज्य निम्नलिखित उद्देश्योंके लिए तुरन्त एक सन्धि करेंगे:

(१) अल्पसंख्यकोंके हितोंकी रक्षा,

(२) समान हितवाले विषयोंके संचालनके लिए तन्त्रकी स्थापना।

किन्तु महात्माजी चाहते हैं कि पृथक प्रभुसत्ता सम्पन्न राज्योंके रूपमें विभाजित होनेवाले क्षेत्रोंके निवासियोंकी इच्छाकी जानकारी जनमत-संग्रह द्वारा हासिल कर लेनी चाहिए।

१. देखिए खण्ड ७१, परिशिष्ट ८।

३३०. पत्र : रणधीर नायडूको

सेवाग्राम
३ मार्च, १९४५

प्रिय रणधीर,

देखता हूँ कि तुम ७ तारीखको नये सालमें प्रवेश करने जा रहे हो। इसका अर्थ हुआ जीने का और सेवा करने का एक साल कम हो गया। लेकिन तुम्हें अपनेमें सेवाके लिए पूरा समय जीने की इच्छा पैदा करनी है। अवश्य करो।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३१. पत्र : बाल गंगाधर खेरको

सेवाग्राम
३ मार्च, १९४५

भाई बालासाहब,

आशा है, साथका पत्र पढ़ने के लिए समय निकाल सकोगे। अगर जा सको, तो काठियावाड़को इतना समय देना। वह सफल होगा। लेकिन अगर जा ही न सको तो क्या किसीका नाम सुझा सकते हो?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७७४) से

	(५) इस महासंघकी स्थापना जनमत-संग्रहकी आवश्यकता समाप्त कर देती है, अतः जनमत-संग्रह करने की जरूरत नहीं है।
(६) प्रत्येक संघके प्रजाजन वहाँके पूर्ण नागरिक होंगे और मतदान या अन्य किसी मामलेमें उनके बीच जाति या धर्मके आधारपर कोई भेदभाव नही किया जायेगा।	(६) प्रत्येक संघके प्रजाजन उस संघके पूर्ण नागरिक होंगे और उनके बीच जाति या धर्मके आधारपर कोई भेदभाव नहीं किया जायेगा।
	(७) विभिन्न क्षेत्रोंमें संघोंकी स्थापनासे प्रान्तोंकी वर्तमान सीमाओंमें कोई बहुत बड़ा हेरफेर करने की जरूरत नहीं रह जाती।
	(८) संघ और महासंघकी स्थापना-सम्बन्धी व्यवस्था पृथक्करण की सन्धिमें शामिल होगी।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५१२०) से

३२९. पत्र : सरोजिनी नायडूको

सेवाग्राम
३ मार्च, १९४५

प्रिय कोकिला,

साथमें रणधीरके[1] लिए इस आशासे दो पंक्तियाँ[2] — अब चाहे ये जादू-भरी हों या न हों — भेज रहा हूँ कि वह ठीक हो जायेगा।

लेकिन क्या तुम ठीक हो?

स्नेह।

बापू

श्रीमती सरोजिनी देवी
हैदरावाद (द०)

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. सरोजिनी नायडूका पुत्र, जिसका ३० अप्रैल, १९४५ को देहावसान हो गया।
२. देखिए अगला शीर्षक।

नृसिंह भी अवतार थे। मत्स्य भी थे और कच्छप भी थे। वन्दर भी तो अंशावतार थे न? तुमने यह जो प्रश्न उठाया है, यह उठाने-जैसा था ही नही। आश्रम मुझे अस्पताल-जैसा नहीं लगता। चाहे जो हो, यह एक काम ऐसा है जो एक आवश्यकताकी पूर्ति करता है। इसे एक स्वतन्त्र विभागके रूपमें गठित किया जा सकता है, जिसके आवास, रसोईघर आदि अलग हों। अन्य लोगोंका इससे सम्वन्ध केवल दवा लेने-भरका होगा। इसमें मुझे कटुताके लिए कही कोई गुंजाइश नजर नही आती।

इस सम्वन्धमें आज मुझे किशोरलालभाई आदिके पत्र मिले हैं। मेरी इच्छा तो है कि तुम कुछ लोग इन्हें पढ़ जाओ। अगर तुम भी उन्हीकी तरह सोचते हो, तो तुम मुझे छोड़ दो, या फिर मुझे जाने दो। मै दोनो विकल्पोके लिए विलकुल तैयार हूँ। मुझपर जो दोषारोपण किया जा रहा है उसका मुझे विलकुल डर नही है, लेकिन तुम सवका जरूर है; क्योंकि जो भी कदम तुम उठाओगे वह तुमपर या मुझपर या हम सवपर निर्भर करेगा। इन पत्रोंके मिलने से पहले ही मैंने अपने सार्वजनिक वक्तव्यका मसौदा तैयार कर लिया था। वह दो दिनसे मेरे मनमें था, लेकिन समय आज ही मिला।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८३६) से। सौजन्य: मुन्नालाल गंगादास शाह

३३४. पुर्जा: मुन्नालाल गंगादास शाहको

३ मार्च, १९४५

ऐसा तुम्हें या सु[शीला] को — मन-ही-मन या जोरसे — कहकर शान्त हो जाना चाहिए था; क्योंकि तुम दोनों और तुम्हारे जैसे अन्य लोग परस्पर भाई-वहिनसे ज्यादा है और होने चाहिए। अवतरण-चिह्न[1] मुझे लगाने चाहिए थे; लेकिन मै यह सव कहाँ सँभालता वैठूं? अच्छा यह है कि या तो ५-३० या ३-३० के वाद आओ, और उन्हें निकाल दो।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६४०) से

१. देखिए पृ० २१८। अवतरण-चिह्न साधन-सूत्रके अनुसार हैं।

३३२. पत्र : नारणदास गांधीको

सेवाग्राम, वर्धा
३ मार्च, १९४५

चि० नारणदास,

तुमने मुझे जो पत्र लिखा है वह भी मैंने अपनी सलाहके साथ वालासाहबको भेज दिया है।[1] वे कदाचित् एक महीनेके लिए नही आ पायें तो मैंने उनसे कोई और नाम सुझाने के लिए कहा है। शायद कनैयो वहाँ मदद कर सकेगा। उन्हें लिख तो रहा हूँ। देखें, क्या होता है?

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८६२१ से भी; सौजन्य: नारणदास गांधी

३३३. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

३ मार्च, १९४५

चि० मु[न्नालाल],

मैं तुम्हारे सव पत्र पढ़ गया। इनमें मुझे ऐसा कुछ भी नहीं मिला जो सु० को पढवाया जाये। यदि मैंने कोई अन्याय किया हो, तो तुम्हें मनचाहा लिखने की आजादी देकर क्या मैंने अपना वह अन्याय धो नही डाला? लेकिन वात यह है कि मैंने कोई अन्याय नहीं किया। तुम्हारा कर्त्तव्य स्पष्ट था। तुम्हें कुछ भी कहना नहीं चाहिए था। तुम्हारा रुख यह होना चाहिए था: "हम दोनों परस्पर भाई-वहिनसे भी अधिक हैं। फिर हम आपको भी वीचमें क्यों डालें?"

भोजनालय मुझे पसन्द होगा। तव आश्रमके लिए अलग प्रवन्ध करने की भी क्या जरूरत रहेगी? हम सव भोजनालयमें भोजन करेंगे। भोजनालयका मतलब यह होगा कि वहाँ जिसे जो चाहिए वह उसे मिलेगा। हाँ, इसमें भी भोजनालयकी अपनी सीमाएँ होंगी ही। अभी जो रसोईघर है, वही भोजनालय वन जाये, तो किस्सा पाक हो जाये और हम सवका झंझटसे उद्धार हो जाये।

अवतार-जैसी कोई चीज नही है, अथवा यदि है तो हम सव ईश्वरके अवतार हैं। जाने-अनजाने हम भी तो उसके अंश हैं न? अकेले राम ही अवतार नही थे।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

३३८. पत्र: वेंकटेश्वर रावको

सेवाग्राम
३ मार्च, १९४५

प्रिय मित्र,[1]

तुमारा खत ठीक तो है। मेरी आशा है तुमको मिल जायगा। तुम वहुत लिखते तो है। तुम्हारी माग विस्तारके साथ भेजो। उसे दाक्तर लोग देखेंगे। और वादमें समितिके पास रखी जायगी। उसी शर्तसे तुमको सहाय मिलेगी जिस तरह दूसरोको।

बापुके आशीर्वाद

वेंकटेश्वर राव
प्राकृतिक चिकित्सक
गांधी आश्रम
कोमारोवोलू — आंध्र[2]

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

३३९. प्रस्तावना: 'आहार अने पोषण' की[3]

जव डा० कुमारप्पाने अच्छी प्रस्तावना दी है तो मुझे क्या कहना था? लेकिन श्री झवेरभाईका[4] मोह कहो या प्रेम मुझे थोडे छोडने वाला था? उनके खातिर यह पुस्तिका मैं अथसे इति तक पढ गया। मैं मेरे ही ज्ञानपर झूझना नही चाहता था। डा० सुशीला तो मेरे सामने ही थी। मैंने उनसे सव पढवाया और थोडी चीज उनको जची वे वताई। झवेरभाईने वह सुधारणा कर लीं। उसका मतलव यह हूआ कि यह पुस्तिका पर डा० सुशीला और डा० मनु त्रिवेदीको[5] म्होर पडीं है। मुझे

१ और २. ये अंग्रेजीमें हैं।

३. तथापि पुस्तकमें इस प्रस्तावनाका उपयोग नहीं किया गया। इसके स्थानपर एक अन्य प्रस्तावनाका, जो गांधीजी ने गुजरातीमें लिखी थी, उपयोग किया गया। देखिए "प्रस्तावना: आहार अने पोषण की", ७-३-१९४५ ।

४. झवेरभाई पटेल; मगनवाडीमें घानीके कार्यभारी

५. मानशंकर

३३५. पत्र : कृष्णचन्द्रको

३ मार्च, १९४५

चि० कृ०,

मैं तुम्हारा नाम देकर पुस्तकालयका आर्यनायर्कमको कहूं? या लिखु?

दृढ़तासे निरर्थक बातें न करो।

प्रमाणके बारेमें तुमने ठीक अर्थ किया है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४९४) से

३३६. पत्र : घनश्यामसिंहको

सेवाग्राम
३ मार्च, १९४५

भाई घनश्यामसिंह,

आपका खत मिला। मैंने मुख्य प्रधानको खत भेजा है। उसकी नकल इसके साथ है। उससे अधिक कुछ करना नही रहता है ना?[१]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३७. पत्र : शान्ताबहिनको

सेवाग्राम
३ मार्च, १९४५

चि० शांताबहन,

यश तो मुझे भेजा है [वह शायद] नकल होगी। ठीक ही है लेकिन मैंने क्या करा है? सरकारसे तबीअतके बारेमें लिखो। यह खत मुझे बताओ। बादमें भेजो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पत्रपर गांधीजी के हस्ताक्षर नहीं हैं।

३४२. पुर्जा : गोप गुरबख्शानीको[1]

५ मार्च, १९४५

गिरना या फिसलना कदम-ब-कदम ऊपर उठने से ज्यादा आसान क्यो है? इन्द्रियो का निग्रह करके, अर्थात् अपने अन्दरके पशुका दमन करके।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३२१) से

३४३. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

सेवाग्राम
५ मार्च, १९४५

बापा,

इसके साथ उड़ीसाके बारेमें लिखा वक्तव्य है और जो परिवर्तन सम्भव थे वे कर दिये गये हैं। जिम्मेदारी लेने का इरादा रमाबहिनका है। इसलिए हमें इसे समितिके सम्मुख रखना चाहिए। चि० मृदुलाको कदाचित् इसके बारेमें मालूम है। इसमें चिकित्सा-सम्बन्धी जो अंश है वह डाक्टरोको बताना होगा।

बापू

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३४४. पत्र : दिनशा मेहताको

सेवाग्राम
५ मार्च, १९४५

चि० दिनशा,

तुम्हारा पत्र मिला। कालेश्वरको पत्र लिखा सो ठीक किया। मेरा बंगलौर जाना तो हो नही सकेगा। यदि हुआ तो मैं कहाँ रहूँगा, यह लोगोंके हाथमें होगा। तुम तो यही जवाब देना, "उनके वहाँ जाने की सम्भावना नही है।"[2]

गुरु-शिष्यके बारेमें तो [लिखना] रह ही गया जान पड़ता है। मुझमें तो किसीका गुरु होने की योग्यता नहीं है। लेकिन यदि तुम अपनेको मेरा शिष्य मानकर व्यवहार करो तो मैं कोई रोक थोड़े ही सकता हूँ?

१. गोप गुरबख्शानीने पूछा था : "हम सद्गुणोंकी अपेक्षा दुर्गुणोंको जल्दी क्यों ग्रहण करते हैं? जिन बुराइयोंकी ओर इन्द्रियोंकी सहज प्रवृत्ति है उनसे ऊपर कैसे उठा जा सकता है?"

२. यह वाक्य अंग्रेजीमें है।

पुस्तिका अच्छी लगी है। भाषा सरल और सादी है। मेरी आशा है कि पुस्तिका हजारोंकी तादादमें पढी जायगी।

मो० क० गांधी

सेवाग्राम
४ मार्च, १९४५

प्रस्तावनाकी फोटो-नकल (जी० एन० १३५८) से। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य : प्यारेलाल

३४०. पुर्जा : गोप गुरबख्शानीको[1]

४ मार्च, १९४५

अन्त:करणको सचेत करना पड़ता है। इस कामके लिए नियम और व्रत हैं। हरएकके बारेमें ऐसा नहीं कहा जा सकता कि उसका अन्त:करण जाग्रत है।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३२०) से

३४१. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

४ मार्च, १९४५

चि० मु[न्नालाल],

मेरा संशोधित [वक्तव्य] पढ़ो और तब मुझसे बात करो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८३८) से। सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

१. गोप गुरबख्शानी उन दिनों सेवाग्राममें थे। उन्होंने गांधीजी से पूछा था : "सत्य ही ईश्वर है, लेकिन सत्य क्या है? क्या यह वह चीज है जो हमारे अन्त:करणको ठीक लगती है।"

३४७. पत्र : मंजरअली सोख्ताको

सेवाग्राम
५ मार्च, १९४५

भाई मंझरअली,[1]

मैं सब पढ गया। यहा मतलब वसुलसे है। मेरा ईतबार है कि बुध्धिशाळी मनुष्य कारीगरसे आगे जायगा। न जावे तो वह कभी तंत्री नही बनेगा। इंग्लांडका सारा इतिहास इसी चीजका सबूत है। लेकिन मैं दखल नही दूगा। तुमारा तजरबा अलग-अलग है तो वही करो। ट्रस्ट तो ठीक ही है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३४८. पुर्जा : गोप गुरबख्शानीको

५ मार्च, १९४५

हमारे भीतर पड़ा हूआ पशुको दबाने में ब्रह्मचर्यका बड़ा हिस्सा है। मेरी व्याख्या यह है : जिस मार्गसे हम ब्रह्मको पहचाने वह ब्रह्मचर्य। यह मार्ग है पांच ज्ञानेंद्रिय, पांच कर्मेंद्रिय और ग्यारहवा मनपर संपूर्ण काबू पाना। मैंने जानबुजकर हिंदुस्तानी [में लिखा है]।[2]

मूल पुर्जा (जी० एन० १३२२) से

१. संयुक्त प्रान्तके एक कांग्रेसी कार्यकर्ता

२. गोप गुरबख्शानीने पूछा था : "विषयासक्तिके शमनके लिए ब्रह्मचर्य कहाँतक सहायक होता है और विवाहित पुरुषोंके लिए 'ब्रह्मचर्य' शब्दकी आपकी क्या परिभाषा है?"

यदि तुम्हारी मनोकामना पूरी नहीं होती तो इसमें तुम्हें निराश नहीं होना चाहिए। तुम्हें तो बहुत सफलता मिली है, और जहाँ मैं होऊँ वहाँ तो निराशा नामकी चीज रह ही नहीं सकती। अब देखें, अप्रैलमें क्या होता है?

बापूकी दुआ

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

३४५. पत्र: गुलबहिन दिनशा मेहताको

सेवाग्राम
५ मार्च, १९४५

चि० गुलबहिन,

तुम्हारा पत्र देखकर मन प्रसन्न हुआ। बहिन सुशीला यदि दिनशासे मिली न होती तो उसके दुःखी होने की बात मुझे मालूम ही न होती। वैसे उसके दुःखी होने जैसी कोई बात थी नहीं। कुछ भी बिगड़ा नहीं है। अब तुम्हें उसे धीरज बँधाना है। यदि तुम ही हार जाओगी तो काम कैसे चलेगा?

अप्रैलमें अरदेशिरको लाओगी ही न? अब तो वह खूब बड़ा हो गया है। यहाँ दिनको अच्छी-खासी गर्मी पड़ने लगी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

३४६. पत्र: झवेरभाई पटेलको

सेवाग्राम
५ मार्च, १९४५

चि० झवेरभाई,

इसके पीछे दो शब्द[1] लिखे हुए हैं। कल ही लिख डाले थे। मुझे तो याद है, मैंने पहले ऐसा कुछ लिखा था। क्या यह तुम्हारी पुस्तकमें नहीं है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३६८) से। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य: प्यारेलाल

१. देखिए "प्रस्तावना: आहार अने पोषण की", पृ० २२१-२२।

यह पूछे जाने पर कि अमेरिकामें अंग्रेजों द्वारा किये जानेवाले भारत-विरोधी प्रचारके बारेमें उनका क्या विचार है, गांधीजी ने कहा :

अगर हम सच्चे हैं तो अंग्रेजोंके भारत-विरोधी प्रचारसे कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
हितवाद, ६-३-१९४५

३५०. एक पत्र

६ मार्च, १९४५

आपके लिए मेरे मार्ग-दर्शनका कोई उपयोग नहीं है। मुझे आपकी या आपके पिताकी सहनशक्तिकी कोई जानकारी नहीं है। इसलिए आपको जैसा ठीक लगे, कीजिए। आपके पत्रसे मुझे लगता है कि आम तौरपर मेरी क्या सलाह है, यह आप जानते हैं।

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०५२०) से। सौजन्य : असम सरकार

३५१. पत्र : एड्रिएनको

सेवाग्राम
६ मार्च, १९४५

प्रिय एड्रिएन,

तुम्हारा प्यारा-सा पत्र मिला। जिस सत्यको तुमने पर्याप्त परिश्रमसे प्राप्त किया है उससे यदि तुम विचलित नहीं होओगी तो तुम्हारा सब-कुछ ठीक ही चलेगा।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३४९. भेंट : ओरिएंट प्रेसको

५ मार्च, १९४५[1]

जब ओरिएंट प्रेसके प्रतिनिधिने गांधीजी से पूछा कि नागपुरके जिला मजिस्ट्रेटने स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंको हालमें जो चेतावनी दी है,[2] उसके बारेमें आपका क्या कहना है, तो उन्होंने उत्तर दिया :

जो कांग्रेसजन हमारे रचनात्मक कार्यक्रमको पूरा करने के लिए संगठित हुए है उन्हे स्थानीय सरकार क्या करती या कहती है, उससे उद्विग्न होने की जरूरत नही है। उसकी नीति चाहे स्थानीय हो अथवा केन्द्रकी नीतिका प्रतिनिधित्व करती हो, उन्हे भयका त्याग करना सीखना चाहिए।

जिला मजिस्ट्रेट द्वारा की गई आलोचना निःसन्देह आँख खोलनेवाली है, यदि उसकी जो रिपोर्ट मिली है वह सही है। उससे हमे चिन्तित होने का कोई कारण नही है।

एक अन्य प्रश्न यह था कि, जैसा कि गांधीजी ने २० फरवरीको प्रकाशित अपने वक्तव्यमें[3] बताया था, बिना किसी राजनीतिक कार्यके, केवल सामाजिक और आर्थिक सुधार द्वारा देश अपने निश्चित लक्ष्यको कैसे प्राप्त कर सकता है। उत्तरमें गांधीजी ने कहा :

आप मेरे वक्तव्यको पढ़कर अपने-आपसे यह प्रश्न पूछिए कि यदि उस कार्यक्रमपर सर्वत्र अमल किया जाता है तो क्या वह हमें स्वराज्यकी मंजिलपर नही पहुँचा देगा। सच तो यह है कि यदि स्वतन्त्रताके बारेमें मुस्लिम लीग और सरकार के इरादे सच्चे हो, तो उन्हें भी इस कार्यक्रमको अंजाम देने मे शामिल हो जाना चाहिए।

१. ६-३-१९४५ के हिन्दू में इसे ४ मार्च, १९४५ के समाचारके रूपमें प्रकाशित किया गया है।

२. नागपुरके अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट के० एम० दस्तूरने कांग्रेसजनोंको सूचित किया था कि कांग्रेस संगठनके लिए जिन कार्रवाइयोंमें पड़ना निषिद्ध है, उन कार्रवाइयोंको किसी छद्म कांग्रेस संगठनकी आड़में जारी नहीं रखा जा सकता। उदाहरणके तौरपर, उन्होंने नागपुर प्रान्तीय कांग्रेस प्रतिनिधि समिति, राजनीतिक कैदी सहायता समिति और कांग्रेस मण्डल समितियोंका नाम लिया। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि कोई व्यक्ति इस प्रकारकी कार्रवाइयोंमें भाग लेता रहा तो सरकार प्रतिबन्ध और नजरबन्दी अध्यादेशके अन्तर्गत कार्रवाई करेगी।

३. देखिए पृ० १४३-४६।

चाहती थी तो संकोचके कारण ही। वह जो नग्न हुई तो केवल इस डरसे कि कहीं मुझे बुरा न लग जाये। जहाँतक मुझे याद है, वह मेरे साथ एक घन्टा भी नही रही होगी। बादमें तो मैंने ही दोनोंको साथ सुलाना बन्द कर दिया, क्योंकि मेरी समझमें आ गया था कि तुम और कनु दोनों परेशान हो। मैंने ही उन्हें सलाह दी कि वे तुम दोनोंसे और भणसालीसे सब कह दें। अब शायद तुम समझ गये होगे कि क्यों ये तीन नाम मेरे प्रयोगके अन्तर्गत नहीं आ सकते। लीलावती, अमतुस्सलाम, राजकुमारी और प्रभावती यहाँ नहीं हैं। मैंने प्रभाको जान-बूझकर प्रयोगकी परिधिमें गिना है। शायद नही गिनना चाहिए। जब मेरे मनमें प्रयोगका विचार भी नहीं उठा था, उसके पहले भी अनेक बार मुझे गर्मी पहुँचाने के लिए वह मेरे साथ सोई है। जब वह थर-थर कांपती मेरे लिए धरतीपर पड़ी होती थी, तब मैं उसे पास समेट लेता था। यह तो बहुत पुरानी बात है। अब मुझे लगता है, मैंने तुमसे सब कह दिया। विशेष कुछ पूछना हो तो पूछ लेना। कंचनका गलतफहमीका शिकार होना मुझे खटका, लेकिन मैं लाचार था।

तुम्हारे और सुशीलाके बारेमें मैंने कोई धारणा नही बनाई। धारणा बनाने के लायक सामग्री ही इकट्ठी नही हुई। यदि उसकी खुदकी इच्छा हो और तुम्हारी भी इच्छा हो तो मैं समय निकालकर तुम दोनोंकी बात सुनूंगा, गवाहोंकी जाँच करूँगा और न्याय करने का प्रयत्न करूँगा। लेकिन मैं फिर कहता हूँ कि अगर तुम दोनों भाई-बहिन हो, तो अपने पितासे भी न्यायकी याचना मत करो। आगे तुम्हारी इच्छाकी बात है।

जुदा रसोईघरकी बात मैं समझ गया। प्रयत्न करूँगा। अस्पताल और आश्रम का खरीद-खाता एक रहे या दो? भोजनालय तो कोई तीसरा चलाये तभी चल सकता है। अब आज इतना काफी है। उस तीसरे पक्ष और गाँव जाने वगैरहके बारेमें बादमें लिखूंगा। मैंने इसे दोहराया नही है। कुछ सुधारने-जैसा हो तो मुझसे पूछना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८४१) से। सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

३५२. पत्र : चिमनलाल नटवरलाल शाहको

सेवाग्राम
६ मार्च, १९४५

चि० चिमनलाल,

"साथ सोने के प्रश्न को छोड़ दे" यह कहने से तुम्हारा क्या मतलब है? तुम्हारी कठिनाई मैं कैसे दूर कर सकूँगा, मेरी समझमें नही आता। तुम मुझे साफ-साफ क्यो नहीं समझाते? वलवन्तसिंहजीको अब नाथजीके[1] पास जाने की कोई जरूरत नही रही। लेकिन अगर हो, तो और जिसे तुम भेजना चाहो वह उसके साथ जाये। साढ़े-तीन वजे आना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६१८) से

३५३. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

६ मार्च, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम संकोच क्यों करते हो? संकोच करने से यह प्रश्न हल नही होगा। निर्भय होकर जो पूछना चाहो सो पूछो। मेरे वक्तव्यमें सुधार किया गया है तथा और किया जायेगा। मै किसीको अलग रखना नही चाहता। मैंने चारका उल्लेख किया है। शायद वे कहें, "हम तुम्हारे प्रयोगकी विषय नही वनी, हम तो तुम्हारे पास ऐसे सोती थी जैसे माँके पास वेटी सोती है", तो मै प्रतिवाद नही करूँगा। यहाँ इतना कहना काफी है कि ऐसी घटना घटी है। आभा, कंचन और वीणाको मै अपने प्रयोगमें सम्मिलित नहीं मानता। सहशयनमें और प्रयोगमें भेद करें, तो मेरी दृष्टिमें दोनोंमें वहुत वड़ा अन्तर है। आभा मेरे साथ तीन रात भी नही सोई होगी। कंचन एक ही रात। और वीणाका सोना तो आकस्मिक समझो। उसके वारेमें तो इतना ही कहा जा सकता है कि उसने मुझे छुआ-भर। आभा टिकी रहती तो उसका किस्सा ही अलग होता। कंचनका किस्सा तो करुणाजनक रहा। मेरी समझमें ही नही आया। जो वात मुझसे आभा या कंचनने कही, वह यह थी कि उसकी इच्छा ब्रह्मचर्यका पालन करने की विलकुल नहीं थी, वह तो संभोगका सुख भोगना चाहती थी। इसलिए वह रहना

१. केदारनाथ कुलकर्णी

३५६. पुर्जा: मुन्नालाल गंगादास शाहको[1]

६ मार्च, १९४५

यह चर्चा थोडी अस्थानपर है, क्योंकि इस समय कुछ हो नही रहा है। उसका कारण भी मित्र वर्ग है। उनको सतुष्ट रखने के कारण मै जहांतक जा सकता था गया हूं। यह वात ठीक नही है कि साथीओको सतुष्ट न कर सकुं तवतक कुछ करु ही नही। मै जीतना समाधानका हामी हुं इतना ही उसका विरोधी। उसी कारण वडील[2] भाई १३ वर्ष तक दुश्मन रहा। मृत्युके ५-६ मास पहले उन्होने माफी मागी। मेरी न्याते[3] ऐसे ही दुश्मन वनी। आज दुश्मनी नही करती है। लेकिन काफी सनातनी वैर रखते है। मैने लाखो रूपिये ऐसे ही कारण जाणे दीये। सल्तनतका मै दोस्त रहा। आज दुश्मन वना और क्या वताऊं? वा के जैसी पत्नीको मैने दरवाजा वताया। तव तो मै जो हुं सो हुं, इसलिए समाज-संग्रहकी वात वगैर विचार की है। और मैं क्या छोडुं। विचार तो छुट नही सकता। आचार तो मौकुफ किया है यथासभव। लेकिन सहशयनकी वात सर्वथा छुट नही सकती है। इस चीजको में ऐसा ही करो [कहो?], जब विलायत गया तबसे आचारमें करता आया हु। किसीको हानी नही पहोंची है। सब कर सके वह मैं भी करुं ऐसा तो है। मै अगर किसी स्त्रीके साथ संयम करके सो सकुं तो उसी शर्तसे सब करे। चाहे तो शर्तका पालन करे।

अहिंसाका वही है। अगर मै सहशयनको भी रोक लुं सर्वथा तो मेरा ब्रह्मचर्य लज्जित होगा। वात ऐसी नही है कि कोई चिज मै शोखसे करूंगा। ऐसा मेरेसे वरसों से हुआ ही नही है, न होगा। इतना ठीक कि लोग इसका अनुकरण करके अनाचार करेंगे। इसको कौन रोकेगा। सत्याग्रहके नामसे कहां असत्याग्रह नही हुआ है। फिर भी यह वात विचारणीय है इसलिये तो स्थगित है। इसमें विराम-चिह्नकी दरकार है, सो पूरी करें। पुछना हो तो पुछो। मेरी सलाह है एक एक न पुछे। सब मिलकर समजे और फिर पुछे। इतना समज कर ले कि आज सब चिज स्थगित है। मनुको सबने अलग रखी है। इसलिये पुरवी[4] विचारको अवकाश है। मेरा दावा है कि जो-कुछ मैने किया है ईश्वरके नामसे और वही नाम लेते लेते सोता हु। उसी नाम लेते हुए जागा हु। ख्वावमें अकेला रहा या किसी वहनके साथ। भविष्यमे क्या करायेगा वह वही जाने।

१. गांधीजी ने यह पुर्जा मुन्नालाल शाहके लिए उस समय लिखा था जब वे दिनके साढ़े तीन बजे उनसे मिले थे।

२. ज्येष्ठ

३. जात

४. पर्याप्त

३५४. पत्र : श्रीमन्नारायणको

सेवाग्राम
६ मार्च, १९४५

चि० श्रीमन्नारायण,

मैंने कुछ सुधारणा[1] की है। उसे समजाने की जरूरत नही है। ११ वी कलम निकाल दी है। उसे देना पड़ेगा तो अलग देंगे। इतना याद रक्खो कि हमने तय कर लिया है हम एक कौम बनने की कोशीश करेंगे। लेकिन न बन सके वहां तक स्वराज आंदोलन रुका नहीं रहेगा। भाषाके प्रश्नको उस क्षेत्रसे हटाना है। दोनों रूप मिल जाने से ऐक्य बड़ेगा वह ठीक है।

बापुके आशीर्वाद

श्रीमन्नारायण
महिला आश्रम
वर्धा

पांचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३०४

३५५. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

६ मार्च, १९४५

तुमारा प्रश्न ठीक है। मैं धैर्यसे काम ले रहा हूं। इस प्रश्नको आशादेवी, आर्यनायकम इ० देख रहे हैं। सब कागद उनके पास हैं।

बापुके आ[शीर्वाद]

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४९६) से

१. श्रीमन्नारायण द्वारा हिन्दुस्तानीके प्रचारके लिए गांधीजी के सम्मुख प्रस्तुत की गई योजनामें

बहुत सारे जेलर और वार्डर हैं। केवल भारतके चालीस करोड़ लोग ही कैदी नहीं हैं। दुनियाके और हिस्सोंमें भी अन्य लोग हैं, जो दूसरे अधीक्षकोंके मातहत कैदीका जीवन भोग रहे हैं।

जेलर भी अपने कैदियोंके समान ही एक कैदी है। बेशक इसमें एक फर्क है। मेरी रायमें उसकी स्थिति बदतर है। अगर कोई कयामतका दिन है, अर्थात् यदि कोई ऐसा मुंसिफ है जिसे हम देख नहीं सकते लेकिन जिसका अस्तित्व हमारे क्षण-भंगुर अस्तित्वकी अपेक्षा ज्यादा सच है, तो उस मुंसिफका फैसला जेलरके बिलकुल खिलाफ होगा और कैदियोंके पक्षमें।

धरतीपर भारत ही एक ऐसा देश है जिसने सोच-समझकर सत्य और अहिंसा को अपनी मुक्तिके एकमात्र साधनके रूपमें चुना है। लेकिन इन साधनोंसे मिलनेवाली मुक्ति सारी दुनियाके लिए मुक्ति होनी चाहिए, जिसमें वे जेलर भी शामिल हैं जिन्हें मैंने अन्यथा निरंकुश शासक और साम्राज्यवादी कहा है। मुझे फासिस्टों, नाजियों या जापानियोंका उल्लेख करने की जरूरत नहीं है, वे तो लगभग समाप्त हुए दिखते हैं।

युद्ध इस वर्ष या अगले वर्ष समाप्त हो जायेगा। उसमें मित्र-राष्ट्रोंको विजय प्राप्त होगी। दुःखकी बात केवल यही है कि यदि भारत और उस-जैसे अन्य देशोंके मित्र-राष्ट्रोंके पैरोंपर लुण्ठित पड़े रहते वह विजय हासिल की गई तो वह नामकी ही विजय होगी। यदि इस युद्धसे भी ज्यादा विनाशकारी कोई दूसरा युद्ध सम्भव है तो यह विजय उस युद्धकी भूमिका-मात्र होगी।

मैं जानता हूँ कि मुझे अहिंसक भारतकी ओरसे पैरवी करने की जरूरत नहीं है। यदि भारतके सिक्केपर एक ओर सत्य और दूसरी ओर अहिंसाकी मूर्ति अंकित है, तो इस सिक्केका अपना ऐसा अपरिमित मूल्य है जो स्वयं बोलेगा। सत्य और अहिंसाको कदम-कदमपर विनम्रता प्रदर्शित करनी चाहिए। वे किसी भी क्षेत्रसे मिलनेवाली वास्तविक सहायताकी अवमानना नहीं करते, खास तौरसे उनकी सहायता की जिनके नामपर और जिनकी खातिर शोषणका व्यापार चलता है। यदि ब्रिटेन वाले और मित्र-राष्ट्र मदद करते हैं तो बहुत अच्छा। तब मुक्ति ज्यादा जल्दी आयेगी। वे मदद नहीं करते, तो भी मुक्ति मिलना तो निश्चित ही है। इतना ही है कि पीड़ितोंको व्यथा जरा ज्यादा होगी, समय जरा ज्यादा लगेगा। लेकिन स्वतन्त्रताके लिए जो भी यन्त्रणा भोगनी हो, जितना भी समय लगे, वह नगण्य है — विशेष रूपसे जब वह स्वतन्त्रता सत्य और अहिंसाके जरिये मिलनेवाली हो।

मो० क० गांधी

सेवाग्राम, ७ मार्च, १९४५

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४२-४४, पृ० तेरह-चौदह

ऐसा बंधन मेरेपर डालना ही नही चाहिये। किशोरलालभाईकी वात उनपर छोडो। उनको इस चीजमें मत लाओ। मेरी सलाह यह रहेगी कि सब साथ मिलकर उनको साथ दें। उनकी वकालत मेरे पास न करें। खुशी ही है कि तुम्हारे प्रश्नका उत्तर मैं दे चुका लेकिन सुनने की स्थिति नही रही है।

मैंने कहा है कि आज सबकुछ स्थगित है। मनुको छोड़ो तो। लेकिन कि[शोर-लाल]को इससे संतोष नहीं है। उनको समझना तुम्हारा धर्म है। वे ठीक कहते है। पहले मुझको नहीं पूछा अब मैं बुध्धिभ्रंश पैदा नही करुँगा। इस हालतमें जिसको शंका है वे सब उनके पीछे जाय। मै तो ऐसे ही करुंगा। उनको दिक नही करुंगा। उनका शरीर क्षिण है। उसे देखकर उनको तकलीफ दें। और ऐसा करने से मेरी भी सेवा होगी। उनकी तो होगी ही। मेरा प्यार उनके प्रति इतना तो है हि जीतना मेरे भाई प्रति था। इससे अधिक मै क्या करुं?

पुर्जेकी नकल (सी० डब्ल्यू० ५८९१) से। सौजन्य: मुन्नालाल गंगादास शाह

३५७. प्रस्तावना: 'गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट' की

मैंने भूमिका पढ़ी और मूल पत्र भी पढ़े। जल्दबाज पाठकोके लिए भूमिका पर्याप्त हो सकती है, लेकिन यह पुस्तक जल्दबाज पाठकोंके लिए नही प्रकाशित की गई है। यह ऐसे गम्भीर कार्यकर्त्ताके लिए है, जो अपने देशकी राजनीतिको, बल्कि विश्वकी राजनीतिको भी, प्रभावित कर सकता है। ऐसे लोगोंको मेरी सलाह है कि उन्हें मूल पत्र अवश्य पढ़ने चाहिए। भूमिकाका उपयोग भूमिकाके ही रूपमें और याददाश्तकी मददके तौरपर किया जा सकता है। मेरे मनमें जिन पाठकोंकी वात है, मैं चाहता हूँ कि वे मेरी वातपर विश्वास करें। सत्य और अहिंसाके एक पुराने अन्वेषकके नाते मुझे जब जैसा लगा उस समय मैंने वैसा ही लिखा है। मैंने दिलकी वात खुलासा कही है और विना कोई रंग-मुलम्मा चढ़ाये।

नजरबन्दीसे आकस्मिक रूपसे और समयसे पहले रिहा होने[1] और स्वास्थ्य लाभ कर चुकने के वाद मैंने विश्वसनीय गवाहों द्वारा दिये गये साक्ष्योंके आधारपर दो वर्षोंकी उन घटनाओंका अध्ययन किया जो प्रमुख कांग्रेसियोंकी और मेरी कैदके पश्चात् घटी थीं। मैंन ऐसी कोई वात नही सुनी है जिसके कारण मुझे अपने समीक्ष्य पत्रोंमें व्यक्त किये गये विचार बदलने की जरूरत हो।

मेरी रिहाईके वाद जीवनके विभिन्न क्षेत्रोंमें क्या-कुछ हुआ है, उसकी मुझे प्रत्यक्ष जानकारी है और मैंने पाया है कि इस जानकारीसे उन वातोंकी कटु पुष्टि ही होती है जो मैंने आगे पृष्ठोंमें कही हैं। वस्तुतः समस्त भारत ही एक विशाल जेलखाना है। वाइसराय इस जेलके एक गैर-जिम्मेदार अधीक्षक है, जिनके अधीन

१. ६ मई, १९४४ को

३६०. पत्र : मगनलाल प्राणजीवनदास मेहताको

७ मार्च, १९४५

चि० मगन,[1]

जेकीबहिनका[2] कहना है कि माँके गहनोंमें[3] से बहिनोंको अपना-अपना भाग मिलना चाहिए। यह बात मुझे तो पसन्द है। मायाशंकरका पत्र आया था। उससे मिलकर तू उसे सन्तुष्ट कर सके तो अच्छा हो। उसने तेरे पिताजीकी बड़ी वफादारीके साथ सेवा की है। रतिलालका[4] कोई पता नहीं है। इनामकी घोषणा करने से शायद कोई खबर मिले। शायद अप्रैलके आरम्भमें मैं बम्बई जाऊँगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

अभी सुनने में आया कि रतिलाल अहमदाबादमें सही-सलामत है।

श्री मगनलाल प्राणजीवनदास
बैरिस्टर
अंधेरी, बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३२) से। सौजन्य : मंजुला म० मेहता

३६१. पत्र : जयकुँवर डाक्टरको

सेवाग्राम
७ मार्च, १९४५

चि० जेकी,

तेरा पत्र मिला। रतुभाईका पता कहाँ लगाऊँ? कभी-कभी तो वह छः महीनेके बाद भी मिला है। फोटो छपवायें और पुरस्कारकी घोषणा करें तो कुछ बने। लेकिन ऐसा करने की मेरी इच्छा नहीं होती। यदि वह चला गया होगा तो हम क्या करेंगे? मिल जाये तो ठीक ही है।

१. डॉ० प्राणजीवन मेहताके पुत्र
२. जयकुँवर डाक्टर, मगनलाल मेहताकी बहिन
३. देखिए अगला शीर्षक।
४. मगनलाल मेहताके भाई; देखिए अगला शीर्षक भी।

३५८. प्रस्तावना : 'आहार अने पोषण' की

भाई झवेरभाई अध्ययन करके अपने आवश्यक ज्ञानमें वृद्धि कर रहे हैं। उस ज्ञानका प्रचार करके वे उसके विस्तृत प्रयोग सरल बना देते हैं। वे अपनी स्वयंकी या फिर राष्ट्रकी भाषामें विचार करते है, इसलिए हजारों लोग बड़ी सरलतासे उनके विचारोंको ग्रहण कर सकते हैं। अगर वे ऐसा ही करते रहे, तो झवेरभाई द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान कुछ समयमें सर्वसाधारणकी विरासत बन जायेगा।

भाई झवेरभाईने यह बड़ा रोचक निबन्ध लिखा है, और इसके द्वारा आहार आदिका ज्ञान सरल भाषामें प्रस्तुत किया है। मैं आशा करता हूँ कि इस ज्ञानका उपयोग बहुतायतसे किया जायेगा और उसमें दिये गये सुझावोंपर अमल किया जायेगा। लेखकका उद्देश्य उपयोगके लिए ज्ञान देना है, पाण्डित्यकी वृद्धिके लिए नहीं।

मो० क० गांधी

७ मार्च, १९४५

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३५९) से

३५९. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

७ मार्च, १९४५

चि० मु[न्नालाल],

अगर तुम मेरे पिछले पत्र फिरसे पढ़ जाओ तो तुम्हें मालूम होगा कि उनमें तुम्हारे सब प्रश्नोंका उत्तर आ जाता है। बाकी कुछ रह गया हो तो ठहरो और देखो कि क्या होता है। मेरे कहनेका मतलब यह है कि जिसे जाना हो उसे जानेकी छूट है। कोई यह न समझे कि रहना उसका कर्त्तव्य है। अपना मन मारकर या मेरा लिहाज करके कोई न रहे। म सुशीलाबहिनके साथ बात करके पता लगाऊँगा। मेरी इच्छा है कि तुम अपना केस पेश करो और मैं सुशीलासे उसका जवाब लूँ [तलब करूँ]। अगर तुम इससे उलटा चाहो तो वैसा करूँ। फिर अगर किसीको गवाहीके लिए बुलाना पड़ा, तो बुलाऊँगा। जुदा रसोईघरके बारेमें विचार कर रहा हूँ। यदि हो सका तो इन्तजाम करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८४३) से। सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

३६४. पत्र : शिव शर्माको

सेवाग्राम
७ मार्च, १९४५

चि० शिव शर्मा,

तुम्हारी हालतकी खबर पाकर मुझे दुःख होता है। ऐसी हालतमें यहा आने की तकलिफ नही दूंगा। रामसरणदासजी अच्छे होंगे। तुम्हारे तो निरोगी बन ही जाना है। हरिईच्छा भर दरियेमें पड़ी है। दयापात्र लड़की है। पसली कढवाने के लिये कही जाना नही चाहती है।

बापुके आशीर्वाद

पण्डित शिव शर्मा
कर्जन रोड
नई दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३६५. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

७ मार्च, १९४५

मेरी दृष्टिसे वदवू होते हुए लसुंन जारी रखो। उसका लाभ संसार भरमें पाया गया है। चर्चासे बचने की कोशीश करो।

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४९७) से

गहनोंके बारेमें पूछताछ कर रहा हूँ। मैं तो इनके बारेमें भूल ही गया था। मैं ठीक हूँ। अभी-अभी मैंने सुना है कि रतिलाल अहमदाबादमें जम गया है।

बापूके आशीर्वाद

जेकीबहिन
३५, जुहू लेन
अंधेरी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३६२. पत्र : पुरुषोत्तमदास ठाकुरदासको

सेवाग्राम
७ मार्च, १९४५

भाई पुरुषोत्तमदास,

अभी-अभी मैंने सुना है कि आप फिरसे बीमार पड़ गये हैं। ऐसा क्यों?

आपका,
मो० क० गांधी

सर पुरुषोत्तमदास
नवसारी चैम्बर्स
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३६३. पत्र : अमृतकौरको[1]

७ मार्च, १९४५

बापुके आशीर्वाद। अब तो प्या[रेलाल] मिलेगा। आशा है और बरफ नहीं पड़ी होगी।

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ४२०५) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७८४१ से भी

१. यह सुशीला गांधी द्वारा अमृतकौरको लिखे पत्रपर पश्चात्-लेखके रूपमें लिखा गया है।

३६८. पत्र : जयकुँवर डाक्टरको

सेवाग्राम
८ मार्च, १९४५

चि० जेकी,

गहनोंके बारेमें तो उसे लिखा है।[1] मालूम तो करो कि उसने नौकरी क्यों छोड़ी? उसे नई [नौकरी] मिलने में देर नहीं लगेगी। वह होशियार है।

बापूके आशीर्वाद

जेकीबहिन
३५, जुहू लेन
अंधेरी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३६९. पत्र : चक्रैयाको

सेवाग्राम
८ मार्च, १९४५

चि० चक्रैया,

तुम्हारा खत ठीक आया। तुमारी परवानगी आने पर मैं भाई शर्माको लिखना चाहता हूं। लेकिन तुमारा धर्म है कि प्रथम तुम ही सब बात उनसे करो। आवे नहीं तो लिखो और फिर मुझे लिखो। दरम्यान तुमारे घरपर खर्च नहीं करना। मरंजाममें भी कमसे-कम। हरिजनोंसे भी मिलो।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए "पत्र : मगनलाल प्राणजीवनदास मेहताको", पृ० २३५।

३६६. पत्र : कृष्णचन्द्रको

७ मार्च, १९४५

चि० कृ०,

तुमारे प्रश्नमे अविनय नही है। प्रश्न बताते हैं भाषा कैसा अपूर्ण वाहन है।

सहशयनको हमेशाके लिये रोकने का अर्थ यह होगा कि मैंने भूल की है अन्यथा रोकुं कैसे? मित्रोके लिए रोकने की हद होती है। सहशयन करीब करीब ब्रह्मचर्य पालनके साथ पैदा हुआ या उससे भी पहले। अबी समज आती है?

तुमने जो खतरे बताये हैं सो तो है ही इसलिये अच्छा काम रोके नही; सावधान रहें।

प्रयोग अनुकरणके लिए नही है लेकिन उस मार्फत मैं पूर्ण ब्रह्मचारी बन सकु तो जगत कल्याणमें ज्यादा हिस्सा नही ले सकुं? एक भी मनुष्य ऐसे तैयार हो सके तो उसे होना चाहीये। प्रयोगके लिये ढूंढ़में नही था लेकिन जब मेरे सामने वस्तु पैदा हो गई तो मैंने जो आवश्यक समजा किया।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४९८) से

३६७. पुर्जा : गोप गुरबख्शानीको

७ मार्च, १९४५

आम तौरसे तो भला बुराका भेद हम जानते ही है लेकिन बाज दफा नही जान सकते हैं। अगर हम ईश्वरका ही सहारा हंमेशा लेते है तो पहेचाननेकी आदत बन जाती है। समझो कि ईश्वर हमारे भीतर पड़ा है, हम उनको जागृत रखे। दोनोंके दस्तखत अंग्रेजी क्यों? और हिंदी जाननेवाली उर्दूमें लिखे, उर्दु वाला हिंदीमें। मैंने कोई प्रश्न छोडा तो नहीं है ना?[1]

बापु

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० १३२३) से

१. गोप गुरबख्शानीने पूछा था कि "भलाई-बुराई पहचानने के लिए मनुष्यको ईश्वरीय मार्ग-दर्शन किस प्रकार मिल सकता है?"

३७२. पुर्जा : गोप गुरबख्शानीको

८ मार्च, १९४५

पश्चिम-पूर्वको भूलकर और वस्तुको गुणदोष पर देखकर।[1]

पुर्जेकी नकल (जी० एन० १३२४) से

३७३. एक पुर्जा

[८ मार्च, १९४५ के पश्चात्][2]

तुम्हें जो ठीक लगे वह बापाको लिखो और उसकी नकल पुरुषोत्तमको भेजो। छगनलालको भी समिति नियुक्त तो करेगी ही। जो लोग काम करे उन्हीकी नियुक्ति की जानी चाहिए, शोभाके लिए किसीकी भी नही। यदि सब लोग इनकार कर दें तो छगनलाल अकेले ही उसे चलायें। लेकिन ऐसे सब लोग इनकार करेंगे नही। सब इनकार न करे तो इतना ही काफी है। कुछ लोगोंको तो इनकार करना ही होगा ना? उदाहरणके तौरपर, परीक्षितलालको।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३७४. पत्र : तेजबहादुर सप्रूको

सेवाग्राम
९ मार्च, १९४५

प्रिय डॉ० सप्रू,

पी०[3] आज शिमलामें है— शायद राजकुमारीके पास। मेरा यह शुभकामना-पत्र श्री नरहरि परीख, जो कि सबसे पुराने आश्रमवासियोंमें से हैं, आपको देंगे।[4] आप पूरे विश्वासके साथ कोई भी सन्देश उनके द्वारा भेज सकते हैं। आशा है, आप स्वस्थ होंगे।

१. गोप गुरबख्शानीने पूछा था कि "हमें पश्चिमी सभ्यताके बारेमें कौन-सा रुख अपनाना चाहिए।"

२. जान पड़ता है यह पुरुषोत्तमदास गांधीके उस पत्रके उत्तरका मसौदा है जो उन्होंने ८ मार्च, १९४५ को काठियावाड़ हरिजन सेवक संघकी समितिके बारेमें लिखा था।

३. प्यारेलाल

४. तेजबहादुर सप्रू दिल्लीसे मद्रास जाते हुए ९ मार्च, १९४५ को वर्धासे गुजरनेवाले थे।

३७०. पत्र : कृष्णचन्द्रको

८ मार्च, १९४५

चि० कृ[ष्णचन्द्र],

चक्की मत छोडो। बातें छुट सकती है। आश्रम ब्रह्मचर्यके पालनके लिए शरीर और मनको सत्कर्ममें रोके रखना। स्त्री या पुरुष किसीके साथ निकम्मी बात नहीं करना निकम्मा स्पर्श नहीं करना। स्त्रीको माता या वहनका स्थान देना।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४९९) से

३७१. पत्र : रामदास गुलाटीको[1]

सेवाग्राम
८ मार्च, १९४५

चि० रामदास,

वहांका छोडकर यहां आना निकम्मा समजता हूं। और वहांका जलवायु भी अनुकुल है तो यहां आने का मोह छोडो।

हाथसे चला सकते हैं और यहां बना सकते है ऐसी यंत्र वन सके तो मैं उसे अवश्य अपनाऊंगा। जैसे सिंगरको विदेशी होते हुए अपनाता हूं। इतना कहूं कि सब किशान चर्खा बना है उसमें वहुत कम लोखंड है। कमानके वदले रस्सीसे काम लेते हैं और नंदलालजीने डबलिन करने की युक्ति ढुंढ ली है। दोनों तुमारे देखने लायक है। वहां दाखल करो। कृ[ष्ण] चं[द्र] उसका बयान और चित्र भेजे।

अच्छा है वियोगीजी व्याख्यान दे रहे हैं।

बापुके आशीर्वाद

रामदास गुलांटी
हरिजन आश्रम
दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. रामदास गुलाटी, जो एक इंजीनियर थे, १९३४ में सरकारी नौकरी छोड़कर गांधीजी के आश्रममें आ गये थे और उन्होंने अपने-आपको बुनाई-कार्यके अध्ययनमें लगा दिया था।

३७६. पत्र : सुमित्रा गांधीको

९ मार्च, १९४५

चि० सुमी,

तेरी लगनके लिये ये दो पंक्तियां। तू पास हो गई, यह अच्छा हुआ। चूड़ियाँ यदि [तेरे हाथोंमें ठीक] आती हैं और तू पहनना चाहे तो पहन लेना। मेरे डरसे कुछ भी न छोड़ना। वैराग्यके विना त्याग नही टिकता। जिन वस्तुओके प्रति राग खत्म हो जाये उन्हीको छोड़ना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

चि० सुमित्रा गाधी
मार्फत मुख्याध्यापिका
बिड़ला हाई स्कूल
पिलानी, राजपूताना

मूल गुजरातीसे: सुमित्रा गाधी पेपर्स। सौजन्य: नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

३७७. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

९ मार्च, १९४५

चि० मुन्नालाल,

ऊपरका सब जल्दबाजीमें लिखा गया लगता है। यदि मनको स्थिर किया जा सके तो ठीक हो। 'हाउण्ड ऑफ हैवन'[1] पढो, उसका मनन करो और उसके विचारो को समझो। "हाउण्ड"[2] से विमुख होकर तुम कही सुखी नही होगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८४५) से। सौजन्य: मुन्नालाल गंगादास शाह

१. अंग्रेज कवि और आलोचक फ्रांसिस टॉमसन (१८५९-१९०७) द्वारा रचित

२. यहाँ गांधीजी ने कवितामें प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दका इस्तेमाल ईश्वरके अर्थमें किया है, जो "हाउण्ड", अर्थात् शिकारी कुत्तेकी तरह सर्वत्र हमारा पीछा करता है।

आपने हिन्दुस्तानीके बारेमें जो वादा किया था वह भूल न जाइएगा, हालांकि आपने कहा था कि आप सदस्य नहीं बन सकेंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

गांधी-सप्रू पेपर्स; सौजन्य: नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता। जी० एन० ७५६९.से भी

३७५. पत्र: वी० वेंकटसुब्बैयाको

सेवाग्राम
९ मार्च, १९४५

प्रिय मित्र,

मुझे आपका तखमीना मिला। अब आप मुझे विस्तारसे अपनी योग्यता और अनुमोदकों के नाम भेजिए। ६० रुपये प्रतिमास क्या आपके लिए है? क्या इसका उपयोग केवल स्त्रियों और बच्चोंपर किया जायेगा?

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

वेंकटसुब्बैया, एम० एल० ए०
आश्रम
नेल्लूर

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

३८०. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

९ मार्च, १९४५

थोडी सी भी शंका आने पर आप्तजनको पूछ लेना चाहीये और शंका आने पर रोक लेना।

बापुके आ[शीर्वाद]

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५००) से

३८१. पुर्जा : गोप गुरबक्शानीको

९ मार्च, १९४५

ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं है। ईश्वर कायदा है और कायदा बनानेवाला भी है। इसलिये मनुष्य जैसा वह नहीं है। इनका अर्थ यह हुआ कि मनुष्य जैसा करेगा ऐसा भरेगा। ईश्वर न करता है न कराता है।[1]

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० १३२५) से

३८२. भेंट : आन्ध्रके शिष्टमण्डलको[2]

सेवाग्राम
९ मार्च, १९४५[3]

(१) प्र० : इस समय केवल प्रान्तीय कांग्रेस संगठन ही कार्य कर रहे हैं। क्या यह जरूरी नहीं है कि एक अखिल भारतीय कांग्रेस संगठन हो, जो एक सर्वसामान्य नीति और सर्वसामान्य कार्यक्रम सामने रखे?

उ० : अध्यक्ष और कार्य-समितिके अन्य सदस्योंके नजरबन्दीमें रहते सर्वसामान्य अखिल भारतीय कांग्रेस संगठन असम्भव है।

१. गोप गुरबक्शानीने पूछा था: "ईश्वरके होते हुए भी संसारमें पाप और दुःख क्यों होते हैं?"

२. शिष्टमण्डलमें आन्ध्रके कांग्रेसी कार्यकर्त्ता चन्द्रमौलि, कालेश्वर राव, प्रो० रंगा आदि शामिल थे।

३. बॉम्बे क्रॉनिकल, १०-३-१९४५ के अनुसार

३७८. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

९ मार्च, १९४५

इस सम्बन्धमें मैं इतना ही सुझाव दे रहा हूँ।[1] कामके हकमें किसीको भी छुट्टी दी जा सकती है, और अगर एवजमें कोई मिले तो उसे रखा जा सकता है। दूधकी व्यवस्थामें[2] रद्दोबदल करा रहा हूँ। लेकिन मैं जरा धीरे चलता हूँ। इससे घबरा मत जाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४६२) से। सी० डब्ल्यू० ५५७२ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

३७९. पत्र : जनकधारी प्रसादको

९ मार्च, १९४५

भाई जनकधारी बाबू,

प्या[रेलाल] पर तुम्हारा खत पढ़ा। प्या० सीमला गया है। मेरा शरीर ठीक कहा जाय। दिल चाहे मुझे पूछो। यथाशक्ति उत्तर दूंगा। तुमारी प्रकृति अच्छी होगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७) से

१. रामचन्द्र रावने साग-भाजी काटना बन्द कर दिया था तथा प्रभाकर पारेख और सुशीला नैयरने उनकी जगह वह काम करने का प्रस्ताव रखा था।

२. इसमें इतने बर्तन फँस जाते थे कि मुन्नालाल शाहको रसोई बनाने के लिए मुश्किलसे कोई बर्तन मिल पाता था।

बातचीतका समापन करते हुए महात्माजी ने कहा कि सलाह-मशविरेके लिए आम तौरपर सभी मित्र मुझसे मिल सकते हैं; लेकिन उन्हें चाहिए कि वे अपनी बुद्धिके अनुसार कार्य करें, भले ही इसमें वे गलतियाँ ही क्यों न करें।

[अंग्रेजीसे]
हितवाद, १३/१४-३-१९४५

३८३. पत्र : वी० ए० सुन्दरम्‌को

१० मार्च, १९४५

चि० सुन्दरम्,[१]

ट्रेनसे लिखा तुम्हारा पत्र मिला। पुष्पा[२] और उसके बच्चोको मेरा आशीर्वाद। तुम्हारे सपनोंको वे पूरा करे।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३१८४) से

३८४. पत्र : रथीन्द्रनाथ ठाकुरको

१० मार्च, १९४५

प्रिय रथी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम निराश्रित महिलाओके लिए सदन तैयार कर रहे हो, यह जानकर प्रसन्नता हुई।

स्नेह।

तुम्हारा,
मो० क० गांधी

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० १०५२१) से। सौजन्य : विश्वभारती, शान्तिनिकेतन

१. सम्बोधन तमिल लिपिमें है।
२. वी० ए० सुन्दरम्‌की पुत्री

(२) प्र० : किसानकी परिभाषा क्या है? हमें आशा है, आप इस बातसे सहमत होंगे कि हम एक स्वतन्त्र आन्ध्र प्रान्तीय किसान कांग्रेस बना सकते हैं, जो आन्ध्र प्रान्तकी कांग्रेस असेम्बली [?] का एक अंग होगी और उसके अनुशासनके अधीन होगी?

उ० : मेरी दृष्टिमें, किसान वह है जो अपने या किसी दूसरेके खेतमें वास्तवमें काम करता है। प्रत्येक मामलेमें मैंने राहतका रास्ता बताया है। मैंने जो लिखा है,[1] आपको उसे पढ़ना चाहिए। स्थानीय समस्याओंको स्थानीय स्तरपर हल किया जाना चाहिए। सही उत्तरके लिए स्थानीय परिस्थितिकी बिलकुल सही जानकारी होना जरूरी है। मेरे पास वह जानकारी नहीं है। इसलिए मेरा उत्तर गुमराह भी कर सकता है। सभी संगठन स्वतन्त्र हो सकते हैं, और साथ ही कांग्रेसका अंग और उसके अनुशासनके अधीन हो सकते हैं।

(३) प्र० : हमारा खयाल है कि किसान कांग्रेसके लिए भी एक तिरंगा राष्ट्रीय ध्वज होना बेहतर है, जिसमें कोई अतिरिक्त वर्ग-सूचक चिह्न न हो।

उ० : मैंने प्रो० रंगाके साथ विस्तारसे बातचीत की थी।[2] आपने जो मुद्दे उठाये हैं, उनमें मैं सामान्यतः सहमत हूँ।

(४) प्र० : गाँवोंमें बहुत-से किसान हैं, जिन्होंने सरकारी प्रभावमें आकर युद्ध-प्रयत्नोंमें मदद की है। वे इस समय कांग्रेस संगठनोंके सदस्य होनेके अधिकारी नहीं हैं। लेकिन इसके बावजूद वे राष्ट्रीय कांग्रेसके साथ हमदर्दी रखते हैं। क्या हम उन्हें किसान कांग्रेसमें ले लें? जमींदारों और सरकारसे राहत पाने के मामलेमें दोनों वर्गोंके सदस्योंको बराबरीका दर्जा मिल सकता है। लेकिन राजनीतिक किस्मके सभी सवालोंका निर्णय केवल पहले वर्गके सदस्योंको ही करना चाहिए।

उ० : जो सच्चे हमदर्द हैं वे हमदर्द बने रहेंगे भले ही किन्हीं कारणोंसे वे आपके साथ शामिल न हो सकें। आप चाहें तो बेशक उन्हें अपने साथ ले लें।

शिष्टमण्डलने गांधीजी से पूछा कि लोगोंकी खाद्य-सम्बन्धी और अन्य कठिनाइयों के गम्भीर और आपातिक मामलोंमें तत्काल राहत दिलाने के निमित्त क्या कांग्रेसजन स्थानीय अधिकारियोंसे मिल सकते हैं। गांधीजी ने उत्तर दिया कि अधिकारियोंसे मिलना हर हालतमें बुरी बात ही नहीं है, लेकिन उनकी खुशामद करने और उन्हें खुश करने के लिए नहीं मिलना चाहिए।

यह पूछने पर कि यदि किसी जिलेमें जिलाधीश द्वारा जारी की गई निषेधाज्ञा लागू है तो क्या कांग्रेसी संस्थाएँ वहाँ सार्वजनिक सभाएँ करने, जुलूस निकालने या प्रशिक्षण-शिविर चलाने की अनुमतिके लिए अधिकारियोंके पास अर्जी दे सकती हैं, गांधीजी ने जवाब दिया कि ऐसी अनुमतिके लिए अर्जी नहीं दी जानी चाहिए।

१. देखिए खण्ड ७८, पृ० २३४-३७।
२. देखिए खण्ड ७८, पृ० २६३-६९ और ३८०-८२।

३८७. पत्र : अन्नपूर्णा मेहताको

सेवाग्राम
१० मार्च, १९४५

चि० अन्नपूर्णा,

तेरा वक्तव्य मैं आदिसे अन्ततक पढ़ गया। यह मुझे पसन्द आया। उद्योगके माध्यमसे शिक्षा कैसे दी जाती है, यह किसीसे सीख लेना। तेरा मार्ग-दर्शन करनेवाले बहुत है, इसलिए तू अवश्य उन्नति करेगी। वैसे सच्चा मार्ग-दर्शन तो तुझे भीतरसे ही मिलना है। तुमने स्थानीय लड़कियोंको और उनमें से भी कमको ही भरती किया है, यह बात मुझे तो पसन्द आई है। तुम दो शिक्षिकाएँ काफी हो। सफलताकी कुंजी इस बातमें है कि तुम भी सीखनेवाली लड़कियों-जैसी बन जाना। इससे लड़कियोंकी रुचि कम नहीं होगी और तुम्हारा काम बराबर आगे बढ़ता जायेगा। इस तरह तुम अपने खुद के काममें भी प्रगति करोगी। भोजनमें कुछ सुधार करा सको तो अच्छा हो। दाल और रोटीके सिवा और कुछ मुश्किलसे देखने को मिलता है। यह कठिन काम है। वहाँ कोई साग-भाजी बोई जाती है क्या? धुनना तो तू सीख गई है न?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४२१) से

३८८. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

सेवाग्राम
१० मार्च, १९४५

बापा,

तुम्हारा पुर्जा मिला। तुम्हें आँखका ऑपरेशन करवा लेना चाहिए। गुरुपादम् सावधानीके साथ [ऑपरेशन] करेंगे। चंगा होकर आना। जो सलाह देनी हो दे जाना। मुझे लिखना हो तो लिखना। मुझसे जो बनेगा वह तुम्हारी गैरहाजिरीमें करूँगा।

बापू

ठक्कर बापा
सिन्धिया हाउस
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३८५. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

१० मार्च, १९४५

प्रिय सी० आर०,

तुम्हारा प्यारा-सा पोस्टकार्ड मिला। बिखरावको रोकने के लिए स्वयंको नकारने के अलावा मुझसे जो-कुछ हो सकता है, मैं कर रहा हूँ। और यदि बिखराव आ भी गया तो भी मुझे लगता है कि अन्त भला ही होगा।

स्नेह।

बापू

श्री सी० आर०
मार्फत 'हिन्दुस्तान टाइम्स' बिल्डिंग
नई दिल्ली

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१०३) से

३८६. पत्र : आपाजी अमीनको

१० मार्च, १९४५

भाई आपाजी अमीन,

तुम्हारे हस्ताक्षरवाला कार्ड मिला। मैं तुम्हारी सफलताकी कामना करता हूँ। भाई करुणाशंकरको मैं अच्छी तरह जानता था। वे गुजरातके रत्न थे। उनकी सेवाएँ बेजोड़ थीं।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
विप्रवर करुणाशंकरने श्रद्धांजलि

३९१. पत्र : बाबा मोघेको

१० मार्च, १९४५

मेरा ख्याल है कि प्रश्न आश्रम मंडलीके बारेमें था इसलिये वहां तक ही मर्यादित रखना अच्छा हो। बाकी अगर सब उसके मुताबिक वर्तन करे तो मैं कोई [बुराई] नहीं पाता।[1]

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५८४९) से

३९२. पत्र : चिमनदास ईसरदासको

सेवाग्राम
१० मार्च, १९४५

भाई चिमनदास,

उमीद है यह पढ सकेंगे। अंग्रेजीमें क्या लिखु? जेरामदासके बारेमें सुना था। ईश्वर उनकी रक्षा करेगा। तुम्हारी माता ठीक होगी।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० चिमनदास ईसरदास
१०, आमिल्स कॉलोनी
हैदराबाद – सिन्ध[2]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए "एक टिप्पणी", पृ० १७३।
२. पता अंग्रेजीमें है।

३८९. पत्र : रूपवन्तीको

सेवाग्राम
१० मार्च, १९४५

चि० रूपवन्ती,

पतिके मरने का दुःख किसलिए? रोना क्यों? स्वर्गस्थको इससे दुःख होगा। तुम्हारा धर्म पतिके गुणोंको अपनेमें उतारना और यथासम्भव उनके समान अच्छे काम करना है, जिससे वह तुम्हारे माध्यमसे अमर हो जाये।

बापूके आशीर्वाद

मार्फत जयन्त मूलजी चावड़ा
मुट्ठीगंज
इलाहाबाद, संयुक्त प्रान्त

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९०. पत्र : बाल गंगाधर खेरको

१० मार्च, १९४५

भाई बालासाहेब,

तुमारी आपत्ति में समजता हूं।[1] नारणदासको ठीक लिखा। अब देखता हूं क्या पसंद करते है।

बापुके आशीर्वाद

बालासाहेब
जहांगीर वाडीया मकान
५१, महात्मा गांधी रोड
बम्बई, फोर्ट

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २७७५) से

१. देखिए "पत्र : बाल गंगाधर खेरको", पृ० २१७।

३९५. पत्र : शान्ताबाई कालेको

सेवाग्राम
१० मार्च, १९४५

चि० शान्ताबहन,

खत ठीक है। उसे भेजो और नकल मुझे भेजो जि[स]से मैं काम कर सकुं।

बापुके आशीर्वाद

शान्ताबाई काले
वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९६. पत्र : सुब्रमण्यम्‌को

सेवाग्राम
१० मार्च, १९४५

चि० सुब्रमण्यम्,

तुम्हारा खत मिला। सब शुभ काममें मेरे आशीर्वाद है ही। तुम्हारा शीवीर सफल हो।

बापुके आशीर्वाद

सुब्रमण्यम्
गांधी आश्रम
अंजियूर, आन्ध्र

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९३. पत्र : प्रफुल्लचन्द्र घोषको

सेवाग्राम
१० मार्च, १९४५

चि० प्रफुल्ल,

तुम्हारा सुंदर खत मिला। अगर आराम हो मुंबई २ एप्रीलको आ सकते हैं तो आना। अमतुलसलामने जो आरंभ किया है उसे अच्छी तरह छोडना उनका कर्त्तव्य है। उन्हें रोको। जब छोड सके तब छोडो।

बापुके आशीर्वाद

डॉ० पी० सी० घोष
१४/८, गरियाघाट रोड
कलकत्ता[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९४. पत्र : बालकृष्ण शर्माको

सेवाग्राम
१० मार्च, १९४५

भाई बालकृष्ण,[2]

तुम्हारा तार मिला। आज खत मिला। अच्छा हुआ तुम रिहा हो गये। कुमारी सरलाके स्वास्थ्यके लिये मेरे आशीर्वाद तो हैं ही। कोई कारण नहीं है कि आरामसे और औषधरूपसे आहार लेकर कुमारी अच्छी न हो जाय।

बापुके आशीर्वाद

पंडित बालकृष्ण
'प्रताप'
कानपुर, संयुक्त प्रान्त

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पता अंग्रेजीमें है।
२. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', हिन्दीके प्रसिद्ध कवि, स्वतन्त्रता-सेनानी और बादमें संसद सदस्य

कार्यक्रम किसी भी प्रकारसे युद्ध-संचालनमें बाधा नहीं डाल सकता और न उसका उद्देश्य ही कोई बाधा डालने का है। यह कार्यक्रम तो गाँवके अशिक्षित लोगोको शिक्षित और सुखी बनाने के अलावा उनके अपने घरमें उन्हें रोजी-रोटी प्रदान करने का ही काम कर सकता है। या यदि इस निषेधाज्ञाको सरकारके इशारेपर जारी किया गया है, तो क्या सरकार प्रभावशाली कांग्रेसजनोको जनताकी किसी भी रूपमे सेवा करने से रोकना चाहती है? अगर ऐसा है तो उसने कांग्रेसजनोको रिहा ही क्यों किया है? कुछ भी हो, कांग्रेसजन, जिनका काम ही जनताकी सेवा करना है, चुपचाप सेवा करते जायेंगे और इस बातकी तनिक भी परवाह नहीं करेंगे कि सेवा करने के कारण उन्हें क्या नतीजे भोगने पड़ सकते हैं। करो या मरो का सच्चा अर्थ यही है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १३-३-१९४५

३९९. पत्र : कानम गांधीको

११ मार्च, १९४५

चि० कानम,

तू बीमार क्यों पड़ा? स्वास्थ्यके नियमोंका पालन करता है न? तुझे तो बहुत-कुछ सीखना है, बहुत ऊँचे जाना है। अभीसे यदि बीमार होने लगेगा तो कुछ नहीं कर पायेगा। "पहला सुख अपनी निरोगता।" यहाँ "अपनी" का अर्थ अगर शरीर, मन और बुद्धि करें तो पूरा आशय आ जाता है। अब सुमीके पत्र नियम-पूर्वक आते हैं। सीता तो उड़ रही है।

बापूके आशीर्वाद

चि० कानम गांधी
मार्फत श्री रामदास गांधी
खलासी लाइन
नागपुर, म० प्रा०

मूल गुजरातीसे : कानम गांधी पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

३९७. तार: रामेश्वरी नेहरूको

[१० मार्च, १९४५ या उसके पश्चात्][1]

रामेश्वरी नेहरू
फेयरफील्ड्स
क्वीन्स रोड
लाहौर

पिताके रूपमें तुमने एक महापुरुष खो दिया है। शोकका कोई कारण नहीं। अपनी मृत्युसे तीन दिन पहले उन्होंने डॉ० महमूदको एक लम्बा पत्र लिखा था।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

३९८. वक्तव्य: समाचारपत्रोंको

सेवाग्राम
११ मार्च, १९४५

अकोलामें सीमित संख्यामें और विशेष निमन्त्रणसे बुलाये कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओंके एक सम्मेलनपर हालमें ही जिलाधीशने निषेध लगा दिया। निषेधाज्ञामें कहा बताते हैं कि "अन्य विषयोंके अलावा कांग्रेसके कार्य और कार्यक्रमपर, विशेष रूपसे गाँवोंमें होनेवाले कार्य और कार्यक्रमपर विचार किया जायेगा।" आमन्त्रित लोगोंके प्रभावको ध्यानमें रखते हुए उनकी [जिलाधीशकी] राय थी कि यह सम्मेलन "युद्धके सफल संचालनमें बाधक होगा।" यह बात समझमें नहीं आती कि कोई सम्मेलन, जहाँ केवल चर्चा ही हो सकती थी, युद्धके संचालनमें बाधक कैसे हो सकता है, अथवा रचनात्मक कार्यक्रम, भले ही उसपर कितने ही प्रभावशाली ढंगसे क्यों न अमल किया जाये, युद्धके संचालनमें बाधा कैसे उपस्थित कर सकता है। जिलाधीश जब यह कहते हैं कि रचनात्मक कार्यक्रमका सफल कार्यान्वयन जापानियोंके विरुद्ध वर्तमान युद्धका संचालन असम्भव बना सकता है और बना देगा, तो वास्तवमें उनका अभिप्राय क्या कुछ दूसरा है? इसके लिए प्रमाणकी आवश्यकता हो सकती है, लेकिन यह दिखाने के लिए तो किसी प्रमाण की आवश्यकता ही नहीं है कि रचनात्मक

१. रामेश्वरी नेहरूके पिता राजा नरेन्द्रनाथकी १० मार्चको मृत्यु हुई थी।

४०२. पुर्जा : गोप गुरबख्शानीको

११ मार्च, १९४५

जिससे समाजके सब लोग चढें वह समाज सेवा है। देश, काल स्थितिसे रूप बदलता है। हिंदु समाजके लिये मैंने बताया है।[1]

बापु

मूल पुर्जा (जी० एन० १३२६) से

४०३. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

[११ मार्च, १९४५ या उसके पश्चात्][2]

चि० मु[न्नालाल],

अब मैं अपनी बात करते-करते थोड़ा थक गया हूँ। मैंने बहुत कह दिया, और शायद और भी कहूँगा। लेकिन इस तरह नहीं। मैं कचनका नाम प्रगट करना नहीं चाहता। तुम्हें भी उसका अधिकार नहीं है। तुम कंचनके मालिक नहीं हो, जैसे वह तुम्हारी मालकिन नहीं है। लेकिन इतने वर्ष हो जाने पर भी मैं यह बात तुम्हें समझा नहीं सका। सुशीलाबहिन-सम्बन्धी तुम्हारा पत्र मैंने पढ़ा। अगर तुम कहो कि तुम दोनोंने धीरज खो दिया था और सन्मार्गसे डिग गये थे, तो यही निर्णय काफी होना चाहिए। तुम्हें किसी दूसरेके मतकी जरूरत ही नहीं रहती। इसलिए मेरा कहना है कि अब तुम इस किस्सेको भूल जाओ। अगर सुशीला कहे कि वह नहीं डिगी थी तो मुझे उसे सुनना पड़ेगा और वह व्यर्थ होगा। फिर भी अगर तुम निष्पक्ष निर्णय ही चाहो तो मैं सब कागजात भाई नरहरिको सौंपने को तैयार हूँ। वह भले जाँच-पड़ताल करे और निर्णय दे।

तुमने मुझे जो सलाह दी है क्या वह निरर्थक नहीं है? आचारमें तो कुछ है ही नहीं। मेरे अपने विचार जहाँतक मुझे पवित्र लगते हैं उन्हें मैं कैसे बदल सकता हूँ?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८४७) से। सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

१. गोप गुरबख्शानीने पूछा था : "समाजकी सेवा क्या है और किस प्रकार करनी चाहिए?"

२. यह मुन्नालाल गं० शाहके ११ मार्च, १९४५ के पत्रके पीछे लिखा हुआ है।

४००. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

११ मार्च, १९४०

१. प्रार्थना अकेले तो करना ही है। उसमें ज्यादा रस है, यह अनुभव करने वाली बात है।

२. स्वाभाविकतया मैंने किया है। यही मतलब है। करीब-करीब सब बहनें संकोचवश होगी। मैंने लिखा भी है ना कि मेरी प्रेरणासे नंगी हुई। अगर मैं इस हालतमें ब्रह्मचारी रहना चाहता हूं और बहनोंको करना चाहता हूं तो यह तरीका है। अब इस विषयको छोड़ो। क्या होता है, देखो।

बापू

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५०१) से

४०१. पत्र : डॉ० रामभाऊ भोगेको

सेवाग्राम

११ मार्च, १९४०

चि० रामभाऊ,

तुमारी अरजी ठीक है। अरजी करो। बेल मे छुटो। तुमारी पत्नीका पत्र नहीं मिला। फिर भी आवेगी तो हो सके सो करुंगा। वह बीमार रहती है।

बापुके आशीर्वाद

डॉ० रामभाऊ भोगे
मार्फत जेलर
जलगांव, जी० आई० पी०[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पता अंग्रेजीमें है।

हूँ। दूसरे बहुत-से लोग ऐसा नही कर सकते। मै अप्रैलमें बम्बईमें होऊँगा। रमा[1] तब मिले तो ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

छगनलाल जोशी
हरिजन सेवा संघ
राजकोट

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१२ मार्च, १९४५

चि० मुन्नालाल,

मै समय निकाल सकता हूँ, लेकिन लगता है, यह व्यर्थ होगा। तुम्हारी इच्छा ही है तो निर्णय देता हूँ। तुम दोनों उतावले हो। तुम दोनों बोलने के समय बोल जाते हो, और बादमें उसपर सोच-विचार करते रहते हो। उस रात यदि सुशीला बीचमें न पड़ी होती तो नतीजा कुछ और ही होता। लेकिन सुशीला अपने-आपको रोक नही सकती। फिर उसकी यह मान्यता है कि वह तुम्हें तो दुःख पहुँचा ही नही सकती, क्योंकि वह तुम्हे सगे भाईसे ज्यादा मानती है। इससे अधिक निर्णय देने की मुझे आवश्यकता नही है, क्योंकि जो होना था वह तो हो ही चुका। सुशीला स्वयं दूसरोके लिए सुरक्षित आवासमें चाँदको ले नही जा सकती थी और उसने यह मान लिया कि चूंकि वह एक बीमारके लिए प्रस्ताव लेकर आई थी, तुम उसे अपना कमरा जरूर दे दोगे। बात यह है कि हमारे पास बीमारोके लिए और अधिक इन्तजाम होना जरूरी है, और वैसा किया नही गया। इस किस्सेसे अगर हम भविष्यके लिए चेत जायें तो काफी होगा। "पहले खूब सोच लेना चाहिए, तब बोलना चाहिए", इस वचनको रटते रहना चाहिए। जहाँतक बने मौन रहना चाहिए। कितना भी प्रयत्न करना पड़े, हमे एक कमरा तो बीमारोंके लिए अलग कर ही देना चाहिए। आग बुझाने की बाल्टीकी तरह फिर उसे दूसरे काममें लाया ही न जाये। सुशीलाका वक्तव्य इसके साथ है, तुम्हारा भी। यह पत्र उसे नही दिखाया और तुम्हारा वक्तव्य भी नही दिखाया था।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८४९) से। सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

१. छगनलाल जोशीकी पत्नी

४०४. पत्र : दुर्गाबाईको

सेवाग्राम
१२ मार्च, १९४५

प्रिय बहिन,[1]

प्रोफेसर आर० रावका कहना है कि उन्हे कोई तफसीलवार योजना तैयार नहीं करनी है। वह तो समिति द्वारा तैयार की जायेगी। जबतक योजना मिल नही जाती तबतक बोर्डके सम्मुख कुछ भी नही रखा जा सकता। इसलिए कृपया जल्दी करें।

आपका,
मो० क० गांधी

जी० दुर्गाबाई
आन्ध्र पी० कमेटी
८९, वीरभवन
मैलापुर

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०५. पत्र : छगनलाल जोशीको

सेवाग्राम
१२ मार्च, १९४५

चि० छगनलाल,

पुरुषोत्तमको रख सको तो अवश्य रखो। उसने बापाको पत्र लिखा है। उसे पढ़ जाना। तुम्हारे विरुद्ध उसकी जो शिकायत है वह मैं समझ गया हूँ। इसका क्या किया जाये? तुम्हीको अपने कामसे लोगोंपर असर डालना है। सभी काम करने से लोगोंपर असर तो पड़ेगा, लेकिन क्या इससे उन कामोंका नुकसान नही होगा? क्या मेरी हालत ऐसी नहीं हो गई? मेरी गाड़ी कैसे चली? मैं कार्य करता हूँ और विचारक भी हूँ और मूल विचार पेश करके एक प्रकारका सन्तोष प्राप्त कर सकता

1. दुर्गाबाई देशमुख

४०९. पत्र : मॉरिस फ्रिडमैनको

सेवाग्राम
१३ मार्च, १९४५

प्रिय भारतानन्द,

जबतक तुम खतरेसे बाहर नहीं हो जाते तबतक मुझे सन्तोष नहीं होगा।

स्नेह।

बापू

७८, नेपियन सी रोड
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४१०. पत्र : अमतुस्सलाम और कंचन मु० शाहको

१३ मार्च, १९४५

चि० अमतुल सलाम और चि० कंचन,

तेरा खत में ठीक समजा था। प्र० बाबू फिर भी लिखते हैं अ० स० को छ महीने रहने दो बादमें भेज दूंगा। अस्पहानी[1] कुछ लिखते ही नहीं ऐसा कहो। तूने जो हो सकता था कर लिया। कंचन तो तू कहती है ऐसी ही है। अपनेसे हो सके सब करना है। उनकी तबीयत अच्छी हो सके तो बड़ा काम होगा। दोनों लिखा करो। कंचन यहां आनेकी जल्दी न करे।

बापुके आशीर्वाद

श्री अमतुल सलाम बीबी
कस्तूरबा सेवा मन्दिर
बरकामता
बंगाल

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९२) से

१. असफहानी, कलकत्ता मुस्लिम लीगके पदाधिकारी

४०७. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१२ मार्च, १९४५

चि० मुन्नालाल,

अब यह सब बहुत हो गया। सुशीलाके लिए कुछ न करो, लेकिन अस्पतालके लिए तुम्हें सब-कुछ करना चाहिए। यदि हम अस्पताल चलायें तो हमें बहुत-कुछ सहन करना पड़ेगा। सुशीला अपना दृष्टिकोण नही वदल सकती, तो उस बातको जाने दो। जो आसानीसे सहा जा सके, वही सहन करना चाहिए। जो न किया जा सके, उसे छोड़ देना चाहिए। यह है शान्त जीवन बिताने का मार्ग। जो 'गीता' एक जगह "निग्रहः किं करिष्यति"[1] कहती है, वही 'गीता' दूसरी जगह[2] निग्रह सिखाती है। यह समझ लेने से रास्ता आसान हो जायेगा।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८५१) से। सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

४०८. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

१२ मार्च, १९४५

प्रयोगके बारेमे सात्विकतासे सोचे तो शांत होते है और मन चंचल नही हो पाता। परिणाम अच्छा आता है स्वप्नदोष नही होगा। अगर कुतुहल बनता रहेगा मन विकारी बनेगा और स्वप्नदोष आयेगा। इसलिये मैंने कहा है अब कुतुहल बंद होना ही चाहीये।

बापु

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५०२) से

१. तीसरे अध्यायका तैंतीसवाँ श्लोक

२. दूसरे अध्यायका इकसठवाँ और अड़सठवाँ श्लोक

४१३. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

१३ मार्च, १९४५

बच्चोकी निद ज्यादा होनी चाहीये।

अगर तुम मैंने लिखा वह शुरू नही करते है तो उसे भूल जाना।

बापुके आ[शीर्वाद]

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४८०) से

४१४. पत्र : उत्तमचन्द गंगारामको

सेवाग्राम
१४ मार्च, १९४५

प्रिय उत्तमचन्द,

पत्रका उत्तर भेजने में कुछ देर हुई। इसके लिए कृपया क्षमा करें। मुझे उम्मीद है कि आप संलग्न[1] [पत्र]को समझ सकते हैं। जैसा कि आप कहते हैं, इसमें मूलधनकी कोई हानि नही हैं; व्याजकी भी नही है। हमें मूलधनसे ज्यादा मिल रहा है। फिर भी मुझसे अथवा आपसे न पूछकर लेखकने जो भूल की है, उसे वह स्वीकार करता है। आपके स्वभावको अच्छी तरह जानते हुए, मैं तो इसमें आपकी अनुमति अवश्य लेता। लेकिन प्रबन्धकने, जो एक पुराने अनुभवी आदमी हैं, जब यह देखा कि इसमें कोई हानि नही है तो उन्होंने अपने विवेकका प्रयोग किया, जिससे काफी झमेला बचा। पैसेका सदुपयोग हो रहा है। लेकिन यदि आप अभी भी चाहते हैं तो मैं आपकी इच्छा पूरी करूँगा। मगर जरा सोचिए कि रुक्को (प्रॉमिसरी नोट्स) के सम्बन्धमें कार्रवाई करना कितना कठिन है।

आशा है, आप स्वस्थ होंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

उत्तमचन्द गंगाराम
बम्बई बेकरी
हैदराबाद — कराची

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह उपलब्ध नहीं है।

४११. पत्र : केदारनाथ चटर्जीको

सेवाग्राम
१३ मार्च, १९४५

भाई केदारबाबू,

५ एप्रिलको[1] दीनबन्धुकी कबर पर मेरे नामसे पुष्प रखेंगे? भाई बनारसीदासने स्मरण दिलाया है। उन्हें कह दें मैंने उनकी सूचनाका अमल किया है।

आपका,
मो० क० गांधी

केदारनाथ चटर्जी
'विशाल भारत'
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४१२. पत्र : सरस्वती गांधीको

वर्धा, सेवाग्राम
१३ मार्च, १९४५

चि० सुरू,[2]

मेरे आशीर्वाद तेरे पास है ही। तू पास होगी। बच्चे तुफानी रहते हैं। शांति[3] कुछ अपवाद नहीं है। तू कितनी बी मोटी हो जाय पगली रहेगी तबतक क्रोध नहीं रोकेगी।

दोनोको, अरे तीनोंको

बापुके आशीर्वाद

श्रीमती सरस्वती गांधी
मार्फत कान्तिलाल गांधी
गांधी सेवा संघ
मैसूर

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१८३) से

१. सी० एफ० एन्ड्र्यूजका निधन १९४० में इसी तिथिको हुआ था।
२. गांधीजी के पौत्र कान्तिलाल गांधीकी पत्नी
३. सरस्वती गांधीका पुत्र

४१६. पत्र : अल्लादि के० कृष्णस्वामी अय्यरको

सेवाग्राम
१४ मार्च, १९४५

प्रिय सर अल्लादि,

आपने जो कष्ट किया है उसके लिए आपको धन्यवाद।[1] ईश्वर करे, आप शीघ्र स्वस्थ हो जायें और अनेक वर्षोंतक जीवित रहें। हाँ, वैद्यनाथ अय्यरका दिल सोनेका है। वे एक विरल लोकसेवक हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

सर अल्लादि कृष्णस्वामी अय्यर
एडवोकेट
मद्रास

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४१७. पत्र : गुलजारीलाल नन्दाको

सेवाग्राम
१४ मार्च, १९४५

चि० गुलजारीलाल,

तुम्हारा भी होमलैण्ड है, यह मुझे आज ही मालूम हुआ। मैं तो तुम्हें अनिकेत समझता था। खैर।

तुमने जो उत्तर दिया है उसे मैं ठीक मानता हूँ। नई संस्थाके बारेमें सब-कुछ पढ़ गया हूँ। आपत्तिका सटीक उत्तर तो यह है कि यह नई संस्था नहीं है। अब संस्था पूरी हो गई है इसलिए जहाँतक बन सके इसे जीवित रखने का प्रयास हो रहा है। संस्थाकी स्थापना सलाह देने तथा सब कामोंमें एकरूपता बनाये रखने के लिए हुई है। इसलिए उसे सैंक्शन अर्थात् अनुमति प्रदान करने की कोई जरूरत नहीं है। जो इसकी सलाह मानेंगे वे लाभ उठायेंगे, जो नहीं मानेंगे वे खोयेंगे। यह संस्था किसीकी

१. देखिए "पत्र: अल्लादि के० कृष्णस्वामी अय्यरको", पृ० २११।

४१५. पत्र : अतुलचन्द्र एम० घोषको

सेवाग्राम
१४ मार्च, १९४५

प्रिय अतुल बाबू,

आपके पूछे प्रश्नोंके उत्तर तो अपने कष्ट-सहनके संकल्प और क्षमताको ध्यानमें रखकर मौकेपर मौजूद लोगोंको देने चाहिए।[1] इतनी दूर बैठा मैं यही कह सकता हूँ कि लाठियाँ बरसाई जायें या न बरसाई जायें, मैं ऐसे निषेधोंको स्वीकार नहीं कर सकता। इन निषेधोंका कोई अर्थ है तो बस शक्ति-परीक्षणोंके रूपमें ही, अन्यथा ये निरर्थक हैं। हमारे लिए न झण्डा फहराना छोड़ना मुनासिब होगा और न विशुद्ध रचनात्मक कार्यक्रमको छोड़ना। लेकिन आप मेरी सलाह या कहे मुताबिक नहीं, बल्कि अपनी और लोगोंकी भावनाके अनुसार काम करें।

स्नेह।

बापू

अतुलचन्द्र एम० घोष
दुलमी
पुरुलिया

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. बिहारमें सार्वजनिक स्थानोंमें राष्ट्रीय ध्वज फहराने पर निषेध लगे होनेके बावजूद अतुलचन्द्र घोषने ६ अप्रैलको रचनात्मक कार्यक्रम केन्द्र, कनपासमें झण्डा फहराने का निश्चय किया था और इस सम्बन्धमें गांधीजी की सलाह माँगी थी।

४१९. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

१४ मार्च, १९४५

पूरे दिनमें तीन पौंड पच जाता है।[1]

हो सके वहाँतक घरका काम नहीं देना चाहीयें। दिल चाहे सो पढ़े न भी पढ़े। कैसे समयका उपयोग किया सो पूछा जाय। उनको बताया जाय।

आशा देवी कहती थी कि लड़कोंमें दिलचस्पी लेते हो तो उनके साथ रहना, खाना पीना या उनको तुमारे साथ रखना विचार करने लायक है।

बापुके आ[शीर्वाद]

[पुनश्च :]

१४ ता० का नहीं लिखा है क्या?

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४८१) से

४२०. पत्र : जयनारायण व्यासको

सेवाग्राम
१४ मार्च, १९४५

भाई जयनारायण व्यास,

मुझे मिलना ही चाहिये तो तारीख बताकर आओ। २२ तारीखके पहले आना। परिषद् मत बुलाओ।

बापुके आशीर्वाद

जयनारायण व्यास
अ० भा० देशी राज्य परिषद्
जोधपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह वाक्य गुजरातीमें है।

प्रवृत्तिको रोकनेवाली नहीं हैं। इसके अतिरिक्त इसमें मुख्य रूपसे कांग्रेसी लोग हैं। संस्था कांग्रेसकी सेवाके लिए चलती है और चलती रहेगी।

उम्मीद है, तुम्हारी तबीयत ठीक होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुलजारीलाल नन्दा
लेबर ऑफिस
लाल दरवाजा
अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४१८. पत्र : डॉ० बी० बी० योधको

सेवाग्राम
१४ मार्च, १९४५

भाई योध,

सर पुरुषोत्तमके बारेमें तुमने जो लिखा उससे मुझे खुशी हुई। मुझे विश्वास है कि तुम्हारी सावधानी-भरी देखरेखमें वे अच्छे हो जायेंगे।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० योध
रावल बिल्डिंग
वेलिंग्टन रोड
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४२३. पत्र : एम० एस० केलकरको

सेवाग्राम
१५ मार्च, १९४५

प्रिय डॉ० आइस,[1]

हमेशाकी तरह फिर तुम्हारी शिकायतोंका जखीरा मिला।

जबसे मैंने तुम्हें जाना है, तुम बेपेंदीके लोटे रहे हो। इसके बावजूद तुम मुझे अच्छे लगते हो, यह एक बिलकुल अलग बात है। तुम्हारा दूध और आसुत जल (डिस्टिल्ड वाटर)का उपचार मैंने कितने दिनों तक किया? लेकिन मैं ठीक नहीं हुआ। तुम औंध गये और तुम्हें वहाँ सब प्रकारकी सुविधाएँ प्राप्त थीं। लेकिन तुम वहाँ भी टिक नहीं सके। अब तुम यहाँ आकर क्या करोगे? तुम कहते हो कि तुम्हारा इलाज महँगा है। तब तुम गाँवोंमें सेवा कैसे कर सकते हो? मेरे पास दमेके और अन्य रोगी हैं, और एक यक्ष्माका रोगी भी है। अगर तुम अब भी आजमाकर देखना चाहते हो तो आकर देखो। आजकल यहाँ बहुत गर्मी है। अप्रैलमें मेरे बाहर रहनेकी सम्भावना है। यदि तुम गर्मीमें यहाँ रहकर अपना इलाज आजमाना चाहो तो जितनी जल्दी आना चाहो, आकर रहो। दूध यहाँ पर्याप्त मात्रामें सुलभ है। तुम्हारे यहाँ आने पर मैं तुम्हें तीसरे दर्जेका किराया दूँगा। और यदि तुम्हें निराशा होती है तो तुम्हें वापसीका किराया नहीं मिलेगा। लेकिन यदि तुम अपनी योग्यता सिद्ध कर देते हो तो तुम्हें अपने अस्पतालके कामके लिए यहाँ एक-दो झोंपड़े मिल सकते हैं। लेकिन इस सबके लिए तुम्हें मेहनत करके अपना रास्ता आप बनाना होगा, अर्थात् तुम्हें अपने आसपासके लोगोंके सामने अपनी योग्यता सिद्ध करनी होगी।

मैं तुम्हारी पाण्डुलिपिके बारेमें पूछताछ करूँगा।

स्नेह।

बापू

डॉ० एम० एस० केलकर
मार्फत आर० जे० पाटकर
१५, मनोरमागज
इन्दौर, म० प्रा०

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

[1] गांधीजीने डॉ० केलकरको यह नाम बर्फ उपचारके प्रति उनके उत्साहको देखते हुए दिया था।

४२१. पत्र : ऋषभदास राँकाको

सेवाग्राम
१४ मार्च, १९४५

चि० रिखभदास,

मैंने माना है मैंने मदालसाको नाम दे दिया। मेरी गलती ही होनी चाहिये। 'रोहीताश्व' नाम रखो। ऐसे गुण होंगे तो बड़ी बात होगी। ३ का खत आज मिला।

बापूके आशीर्वाद

रिखभदास
बजाजवाडी
वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४२२. पत्र : जे० आर० डी० टाटाको

सेवाग्राम
१५ मार्च, १९४५

प्रिय जहाँगीरजी,

मुझे अभी-अभी बापासे मालूम हुआ है कि आप ऊटीमें स्वास्थ्य-लाभ कर रहे हैं। आप कैसे हैं, इसके बारेमे दो पंक्तियाँ लिख भेजें तो अच्छा हो। यदि आप तनिक भी अस्वस्थ हों तो बेशक मैं यह आशा नहीं करूँगा कि आप बम्बईमें होनेवाली न्यासियोंकी बैठकमें शामिल हों। मैं यह पत्र जान-बूझकर अंग्रेजीमें लिख रहा हूँ, क्योंकि कदाचित् आपके सारे कर्मचारी वहाँ आपके साथ न हों।

स्नेह।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री जे० आर० डी० टाटा
ऊटी, दक्षिण भारत

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४२६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१५ मार्च, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हें कंचनसे अलग रहने की कोई जरूरत नहीं है। तुम दोनोंको अलग रहना पड़े तो जरूर रहो। जिसमें तुम दोनों सुखी हो, वही करना चाहिए।

शान्ताबहिनको आश्रमकी सदस्या मानकर उसकी देखभाल कर सको तो अच्छा हो। वैसे तुम्हारी इच्छाके विरुद्ध मैं उसे तुमपर लादना नहीं चाहता।

कामके बारेमें जैसा तुम सोचते हो, यदि वैसा करना सम्भव हो तो करो।[1] मुझे विश्वास नहीं होता, लेकिन तुम्हें हो तो करो। अस्पतालके लिए तुम अलग रसोईघर नहीं चाहते क्या?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८५४) से। सौजन्य: मुन्नालाल गंगादास शाह

४२७. पत्र : चक्रैयाको

सेवाग्राम
१५ मार्च, १९४५

चि० चक्रैया,

तुमारा खत समजा। गलतफहमी तुमारी ही थी। अब साफ हो गई तो ठीक है। दूसरा कोई प्रायश्चित नहीं चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

चक्रैया

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. मुन्नालालका सुझाव था कि रसोईघरका सारा काम वेतनभोगी कर्मचारियोंको सौंप दिया जाये।

४२४. पत्र : जयाको

सेवाग्राम
१५ मार्च, १९४५

चि० जया,

तेरा पत्र मिला। हम यदि ईश्वरको याद करते हैं तो हमें अच्छा-बुरा, सुख-दु:ख सब-कुछ भूलना ही है। और इस राजमार्गपर देर-सबेर हम सबको जाना है। अंग्रेजी कहावतके अनुसार अधिकांश लोग तो उसी रास्तेपर गये हैं। यहाँ तो चार दिनकी चांदनी है; बादमें धूल-ही-धूल है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२३) से

४२५. पत्र : लीलावती आसरको

सेवाग्राम
१५ मार्च, १९४५

चि० लीली,

तुझे एक पत्र तो लिखा है। धीरजका फल मीठा होता है। मैंने तो तेरा सोचा हुआ कदम उठाया ही है। "धीरजका फल मीठा"। अभी तो जो लोग यहाँ हैं उन्हें यहीं रहना है। मेरी चिन्ता तू क्यों करती है? सबकी चिन्ता करनेवाला सर्वशक्तिमान ईश्वर जो है।

मैं २१को बम्बई पहुँचूंगा। तो फिर जल्दी क्या?

बापूके आशीर्वाद

चि० लीलावती उदेशी
जी० एस० मेडिकल कॉलेज
वीमन स्टुडेन्ट्स हॉस्टल
[बम्बई]

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०२०५) से। सौजन्य : लीलावती आसर

बादका कुछ निश्चय नहीं है। अशक्तिके कारण नहीं आ सके तो ऐसे ही चला लूंगा।

बापूके आशीर्वाद

सेठ घनश्यामदास बिड़ला
बिड़ला हाउस
आलबुकर्क रोड
नई दिल्ली

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०६६) से। सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

४३०. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

१५ मार्च, १९४५

प्रिय सी० आर०,

अभी-अभी पता चला है कि घ०[1] अस्वस्थ हैं। मैंने उन्हें लिखा है। यहां सब कुशल है, यही बताने के लिए यह पत्र लिख रहा हूं। मृदुला और बापा यहां आये थे। ज्यादा शायद उन्हींसे मालूम होगा या बादमें लिखूंगा। तुम सबको प्यार। आशा है लक्ष्मी[2] अच्छी होगी।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१०४) से

४३१. पत्र : आलूबहिन मिस्त्रीको

सेवाग्राम
१६ मार्च, १९४५

प्रिय बहिन,

भाई दिनशाकी अच्छी देखभाल कर रही हो। ईश्वर उसकी अपेक्षित मदद कर ही रहा है। कस्तूरबा कोषमें भी यदि ऐसी कोई व्यवस्था होगी तो उसे मदद मिलेगी ही।

बापूके आशीर्वाद

आलूबहिन मिस्त्री
जाल चैम्बर्स
रेलवे अस्पतालके सामने
चर्नी रोड जंक्शन
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. घनश्यामदास बिड़ला; देखिए पिछला शीर्षक।
२. लक्ष्मी गांधी

४२८. पत्र : ताराचन्दको

सेवाग्राम
१५ मार्च, १९४५

भाई ताराचंदजी,

मैं हिंदुस्तानीमें लिखु ना? मेरा कहना स्पष्ट है। अगर सब नेता राजी रहे तो मैं आम मतका आग्रह नहीं करूंगा। इनमें आझाद मुस्लीम, सिख व[गैरह] आते हैं। सबको राजी करके सब कुछ हो सकता है।

अगर शककी बू आवे तो भी रिजनेबल इन्टरप्रिटेशन'[1] (युक्तिसंगत व्याख्या) रखना ठीक ही लगता है।

आपका,
मो० क० गांधी

डॉ० ताराचन्द
मार्फत श्री राजेन्द्रनारायण
चाँदनी चौक
दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४२९. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

१५ मार्च, १९४५

चि० घनश्यामदास,

आज बापासे सुना कि तुमको बुखार आ गया है। तुम्हारे बुखारसे मैं बेचैन होता हूं। तुमको बुखार क्यों? अगर रामेश्वरदासकी वहाँ आवश्यकता है तो रोक लो। तो भी मैं बिड़ला हाउसमें ही ठहरूंगा। यहांसे ३०मी को निकलूंगा।[2] मीटींगके

१. ये दो शब्द अंग्रेजीमें हैं।
२. गांधीजी कस्तूरबा राष्ट्रीय स्मारक न्यासकी बैठकमें भाग लेने के लिए बम्बई जानेवाले थे।

४३४. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

१६ मार्च, १९४५

चि॰ ब्रजकिसन,

मेरी चिंता न करो। अखबार मत मानो। तुम्हारा खत मिला। तुम्हारी तबीयत बिलकुल अच्छी होनी चाहीये। खुरशेद बहन अपनी बहनोंके पास हैं। सब भाईओं को मेरे आशीर्वाद।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी॰ एन॰ २४९१) से

४३५. पत्र : कृष्णचन्द्रको

१६ मार्च, १९४५

चि॰ कृ॰,

बच्चोंके बारेमें या तो तुम्हारे पूरी जिम्मेदारी लेना या इस काम छोड़ना चाहीये। छोड़ना अब अच्छा नहीं होगा। आशादेवीसे बात कर जो उचित है सो करो।

स्वप्नदोषके दो कारण है अति खाना या अपथ्य खाना और कुछ भी मैले विचार। दो कारण साथ मिल सकते है। गफलत तो थी ही। प्रातः तक पता भी न चला, वह क्या बताता है? राम नाम चलता है?

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी॰ एन॰ ४४८२) से

४३२. पत्र : आनन्द तोताराम हिंगोरानीको

१६ मार्च, १९४५

चि० आनंद,

तुमारे साथ, जो लड़का है उससे चेतो। जबतक भाई जीवणजीसे कुछ नहीं मिले कुछ तरजुमान कराओ। तबियत कैसी है?

बापुके आशीर्वाद

श्री आनन्द हिंगोराणी
अपर सिंध कालोनी
कराची, सिंध

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

४३३. पत्र : माधव श्रीहरि अणेको

१६ मार्च, १९४५

बापूजी अणे,

नूतन वर्षके लिये अच्छा संस्कृत श्लोक भेजते है और अभिनंदन इंग्रेजीमें!!! अगर इंग्रेजीमें भेजना था तो साथमें हिन्दुस्तानीमें क्यों नहीं? अथवा संस्कृतमें? श्लोकका हिन्दुस्तानी तरजुमा आवश्यक था। अच्छे होंगे।

बापुके वर्षाभिनंदन

बापूजी अणे
कोलम्बो, सीलोन

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३८. पत्र : प्रफुल्लचन्द्र घोषको

सेवाग्राम
१६ मार्च, १९४५

चि० प्रफुल्लो,

दा० मित्रकी योजना देहातोंके लिये नहीं है। शायद देहातोंको जानते भी नहीं है। यह बताता है कि सिर्फ हुशियारी हमें काम नहीं देती। ३१को मुंबई पहोचुंगा। वहीं आ जाओगे तो अच्छा ही है। यहां काफी गरमी शरु हो गई है।

बापुके आशीर्वाद

पी० सी० घोष
१४१८, गरियाहाट रोड
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३९. पत्र : वि० गो० सहस्रबुद्धेको

सेवाग्राम
१६ मार्च, १९४५

भाई सहस्रबुध्धे,

लड़कीको २४के पहले लाओ। बालासाहब क्या कर सकेंगे? आओगे तब समजाओगे। याद रखो ३ बजे मेरा समय रहता है।

बापुके आशीर्वाद

वि० गो० सहस्रबुध्धे
महाल
नागपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३६. पत्र : चौण्डे महाराजको

सेवाग्राम
१६ मार्च, १९४५

चौंडे महाराज,

आपका खत मिला। मैं सलाह तो दे रहा हूं। फिर मुझे मंडलमें रखने से क्या? सेवा लो। नाममें से दूर रखो।

आपका,
मो० क० गांधी

चौंडे बुआ
मार्फत गोवर्धन संस्था
सदाशिव पेठ
पूना

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३७. पत्र : कृष्णा अय्यरको

सेवाग्राम
१६ मार्च, १९४५

चि० कृष्णा,

तुमारा अभ्यास पूरा करो। और बादमें भी आने की इच्छा रहे तो लिखो। अध्ययनसे थकान क्या? मेरे रचनात्मक कार्यमें से बहुत कुछ पढ़ते-पढ़ते कर सकती है।

बापुके आशीर्वाद

कृष्णा आयर
हंसराज महिला महाविद्यालय
लाहौर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४४२. पत्र : भागलपुर जेलके अधीक्षकको

सेवाग्राम
१७ मार्च, १९४५

जेल-अधीक्षक
भागलपुर जेल
भागलपुर

प्रिय महोदय,

साथमें १४ तारीखके 'आज'की एक कतरन है। इसमें आपकी कैदी प्रभावती देवीके बारेमें चिन्ताजनक समाचार है। समाचारकी सचाईके बारेमें बतायें तो कृपा होगी।

आपका सच्चा,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४४३. पत्र : डॉ० गोपीचन्द भार्गवको

सेवाग्राम
१७ मार्च, १९४५

भाई गोपीचद,

तुमारे सब लेख पढ गया। अच्छे है। उसमें मै कुछ परिवर्तन नही करूंगा। उनें छपाने का इरादा है क्या? छपाना है तो ठीक देखभाल करो। क्या पंजाबकी तीन लिपिमें और हिन्दुस्तानीमें नही?

तुमारी तबियत अच्छी होगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४४०. पत्र : वियोगी हरिको

सेवाग्राम
१६ मार्च, १९४५

भाई वियोगी हरि,

मेरे साथ एक विवाहित पंजाबी बहन है। जबतक दिल्लीमे ठंडक है वहां रहेगी। शिक्षिका तो है। दिल्लीमें भी मेरा ख्याल है उनको लड़कीयोंका छात्रालयमें रखो या तुम्हारे पास। उनको कुछ देना नही है। खाना तो देना होगा। अगर किसी जगहपर जा सकती है तो मुझे लिखो या तार दो। उसका नाम विमलाबहन गुरु-वक्सानी है।

बापुके आशीर्वाद

वियोगी हरि
हरिजन छात्रालय
दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४४१. पुर्जा : गोप गुरबख्शानीको

१६ मार्च, १९४५

भाग्य कर्मका उदय हैं। भाग्य सदभाग्य होता है या दुर्भाग्य। दुर्भाग्यको दूर करना या क्षीण करना पुरुषार्थ हैं। भाग्य और पुरुषार्थका द्वंद्व चलता ही है। कौन कह सकता है सचमुच विजय किसका होता है। इसलिये पुरुषार्थ करते रहें और परिणाम ईश्वर पर छोडे।[1]

बापु

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० १३२७) से

१. गोप गुरबख्शानी ने पूछा था : "भाग्य क्या है, और इसका तथा पुरुषार्थका क्या सम्बन्ध है?"

४४५. पत्र : कृष्णचन्द्रको

१७ मार्च, १९४५

चि० कृ[ष्णचन्द्र],

स्वप्नदोषका दुःख मानने से अच्छा होनेवाला नहीं है। कारण जानकर उसे हटाना और अपने काममें डट जाना।

आशादेवी जैसे राजी रहे वह करना। उसीमें मेरी खुशी होगी। नयी तालीम का काम लेकर छोड़ देना अच्छा नहीं होगा। फिर भी देखो। आखरमें तो "निग्रहः किं करिष्यति" लागु होगा।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४८३) से

४४६. पुर्जा : गोप गुरबख्शानीको

१७ मार्च, १९४५

अंग्रेजी अर्थके साधुकी आज तो दरकार नहीं है। त्यागकी तो पूरी है। "ईशावास्यम्"[1] पढो और गौर करो। त्यागका भीतरी अर्थ समजो। 'गीता' में[2] दिया है।[3]

बापुके आशीर्वाद

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० १३२८) से

१. यहाँ संकेत इस उपनिषद्के प्रथम श्लोककी ओर है।

२. अध्याय १८, श्लोक २ से ९

३. गोप गुरबख्शानीने पूछा था : "साधु बन जाना और त्याग करना जीवनमें कहाँतक लाभदायक है?"

४४४. पत्र : बलवन्तसिंहको

१७ मार्च, १९४५

चि० बलवंतसिंह,

तुमको जानते हुए तुम्हारी बात परसे मै कह सकता हूं कि तुम्हारे कमसे कम थोडे अरसेके लिये सेवाग्राम छोडना चाहीये। तोतारामजीको मीठा खत लिखो। वहां जाने की जरूरत नही पाता। ऐसे ही सुरेन्द्रजी। लेकिन तुम्हारे अपने गांव जाना या मीराबहनके और पास, शायद मंसूरअलीके पास, तीनों जगह कुछ तो करोगे ही। हां बंगाल तो तुमारे लिये गो-सेवाका वड़ा प्रदेश है। लेकिन अब वह तुमारे लिये नहीं है।

अब सेवाग्राम। मेरी मान्यता है कि सेवाग्राम कभी तूटेगा नही। रूपांतर भले हो, जैसे साबरमतीका हूआ। मेरे जिंदा हूए और काम करते हूए सेवाग्राममें बहूत परिवर्तन नहीं होगा। मै करना नही चाहता। मै निभा तो व्यवस्था आ ही जायगी। जिनको सेवाग्रामका मोह है वे तो सेवाग्राम न आज सर्वथा छोडेंगे न मेरे जाने के बाद। मेरे जाने के बाद कौन कह सकता कि विनोबा भी अपना स्थान यहीं नही करेंगे? अगर कि मेरे बाद रहनेवाले हैं तो उनकी वफादारी, उनके अहिंसा सेवाग्राम छोडने नहीं देगी।

मेरा विश्वास है कि अगर सब संस्था स्वतंत्र है तो भी सेवाग्राम पर अजाणपण में भी अवलंबित है। होना भी ऐसा ही चाहीये।

तुम्हारा स्वभाव जब बकरी-सा हो जायगा तब सेवाग्राम जैसे आरंभ में प्रिय था ऐसे ही रहेगा। आज गाय तुमसे छुटी है तो क्या हूआ। तुम तो गायसे नही छुटे हो? आज मुन्नालाल और तुम [पहले] जैसे एकसे नही है तो भी क्या?

यह सब तुमको पलटाने के लिये नहीं। मेरी साल-सलाह तो कायम है। मैंने बताया है वहां जाओ। बाद में जब तुमको अंतरात्मा यहां धकेले तब आ जाओ।

और क्या कहूं?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९५५) से

४४९. पत्र : कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शीको

सेवाग्राम
१८ मार्च, १९४५

भाई मुन्शी,

डेडलॉक[1] (गतिरोध) पर लिखी तुम्हारी पुस्तक[2] भी पूरी पढ गया। मुझे अच्छी लगी। वैसे मेरा मौलिक विरोध तो बना हुआ है। लेकिन तुमने पाठकको सोचने के लिए काफी मामग्री दी है।

आशा है, सरला[3] और बेबी मजेमें होंगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६८६) से। सौजन्य. क० मा० मुन्शी

४५०. पत्र : रामदास गांधीको

सेवाग्राम
१८ मार्च, १९४५

चि० रामदास,

तू अधूरी बात परसे राय बनाता है और बादमें परेशान होता है। यह तेरी पुरानी आदत है। अपनी इस आदतको तुझे छोडना ही चाहिए। सुशीलाबहिनके पत्र पर से तूने कितना गलत अनुमान लगाया है। शरीर और मनको निचोड डालने वाला व्यक्ति मैं नही हूँ। मैं तो काम करके आनन्द-निमग्न रहता हूँ। अपनी शिक्षा को मैं अपने सम्बन्धमें पूरी तरहसे अमलमें लाता हूँ। मेरा उपवास (इसे उपवास ही नही कहा जा सकता, क्योंकि मैं फलोका रस तो लेता था) पूर्णतया शारीरिक था। और वह कुछ कठिन भी नहीं जान पड़ा। मैंने इसमें ग्लूकोज लेने की बात नही रखी इसीलिए यह उपवास-जैसा लगा। लेकिन वह भी केवल थोड़े समयतक ही, क्योंकि बादमे तो ग्लूकोज लिया ही। मैं इस बारेमें तुझे ज्यादा भी समझा सकता हूँ, लेकिन इतना ही पर्याप्त होना चाहिए। तू समझ ले कि जितनी बन सके उतनी सावधानी मैं बरतता हूँ। उम्मीद है, कानम आनन्दपूर्वक होगा। उसने बम्बई आने के

१. गांधीजीने यहाँ अंग्रेजी शब्दका ही प्रयोग किया है।
२. द इंडियन डेडलॉक
३. क० मा० मुन्शीकी पुत्री

४४७. पत्र : तेजबहादुर सप्रूको

सेवाग्राम
१८ मार्च, १९४५

प्रिय डॉ० सप्रू,

आपकी प्रस्तावित सिफारिशोंके[1] बारेमें सुना है। मुझे पूरी उम्मीद है कि रिपोर्ट कहींसे कमजोर नहीं होगी। समझदारको इशारा काफी।

आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधी-सप्रू पेपर्स : नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता। जी० एन० ७५६८ से भी

४४८. पत्र : फ्रैनी तलयारखाँको

सेवाग्राम
१८ मार्च, १९४५

प्रिय बहन,

तुम्हारा भेजा वार्षिक पत्रक मिला। तुम ऐसी आशा तो नहीं करोगी कि मैं इसे पूरा पढ़ जाऊं। दो-चार मिनट पन्ने उलटकर देख गया।

बापूके आशीर्वाद

फ्रैनी तलयारखा
शाहरुख सवावाला
सर पी० एम० रोड
बम्बई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. भारतके भावी संविधानके सम्बन्धमें सप्रू कमेटीके प्रस्ताव ७ अप्रैल, १९४५ को प्रकाशित हुए। इन प्रस्तावोंमें अन्य बातोंके अलावा यह तजवीज भी थी कि संविधान-निर्मात्री संस्थामें हिन्दू और मुसलमान समान संख्यामें हों और एक केन्द्रीय विधानमण्डल तथा कार्यपालिका हो। साथ ही पाकिस्तानकी माँग और किसी भी प्रान्तके अलग होनेके अधिकारकी माँगको अस्वीकार करते हुए यह सुझाव भी दिया गया था कि अधीश्वरी सत्ता भारतीय संघको सौंप दी जाये और रियासतोंसे सम्बन्धित मामलोंको संभालनेके लिए एक मन्त्रालय गठित किया जाये।

४५३. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

१८ मार्च, १९४५

चि० घनश्यामदास,

तुम्हारा तार अभी मिला। ६ बजे। अच्छा नही लगता। अगर मसुरी जाना चाहीये तो जाओ। कम से कम वहां तो रहो। मुंबई आने का छोड दो। भले रामेश्वरदास भी वही रहे। मैं चला लुंगा।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०६८) से। सौजन्य: घनश्यामदास बिड़ला

४५४. पत्र : गणेश शास्त्री जोशीको

सेवाग्राम
१८ मार्च, १९४५

भाई गणेश शास्त्री जोशी,

तुम्हारा खत सुशीलाबह[न]ने मुजको बताया। जितना हो सके इतना वह तो कर रही है। सरल मार्ग तो है नही। आयुर्वेदके हिमायतीओको मार्ग काटना है। हिम्मत, त्याग और ज्ञानकी आवश्यकता है। कोई वैद्य ऐसा नही मिला है जो इस कामके पीछे भेख लेवे। कमिटियामें दाक्तर लोग भरे है उसकी फिकर नही। हरेकमें आवश्यकता पर वैद्योको ले सकते है। बात यह है कि कोई अच्छी सूचनाको मैं नही जाने दूगा। लेकिन कुछ मिले नहीं तो क्या किया जाय? जितना हो सके करो, दिया जाय सो दो।

चि० रामभाऊको ज्ञान दे रहे हो अच्छा लगता है।

बापुके आशीर्वाद

गणेश शास्त्री जोशी
२८, शुक्रवार [पेठ]
तुलसी बागके पीछे, पूना

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

बारेमें लिखा था, लेकिन जब उसकी परीक्षा हो जायेगी तभी आयेगा। तब मैं वहाँ होऊँगा अथवा नही, सो मालूम नही। देखेंगे। ऊषी ठीक हो गई होगी।

बापूके आशीर्वाद

रामदास गांधी
खलासी लाइन्स
नागपुर

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

४५१. पत्र: कृष्णचन्द्रको

१८ मार्च, १९४५

चि० कृ[ष्णचन्द्र],

ब्रह्मचर्य रखने के लिये मेरा सानिध्य काम नही देता है ऐसा तुमारे लिये सिद्ध हो चुका ना? अन्यथा इतने बरसोंके बाद तो ब्रह्मचर्य पूर्ण बनना चाहिए। ब्र[ह्मचर्य] के लिए महते कार्यमें डट जाना आवश्यक है। नयी तालीम ऐसा कार्य है और उसमे भी जब बालक मिल जाय तो क्या चाहीये? यहांके बदलेमें बच्चोंके साथ रहने से मेरा सानिध्य टूटता नहीं है और निकम्मी बातोसे बचोगे।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४८४) से

४५२. पत्र: कृष्णचन्द्रको

सेवाग्राम
१८ मार्च, १९४५

चि० कृ[ष्णचन्द्र],

तुम्हारा लंबा खत तुमारी मनोदशाका सूचक है। तुम मुजको सब लिखते है उसे मैं पूरा सत्य मानकर लिखता हूं तो अच्छा ही है ना? दूसरे यहां पड़े हैं उनकी तीव्र भावना ब्रह्मचर्य नहीं है। तुमारी तो है इसलिये मैंने उल्लेख किया। लेकिन आखर तो जो तुमारा मन कहे सो ही करना है। मैं कहूं वह करना और मन उसमें न रहे तो निरर्थक समजना। मेरा कहना यन्त्रवत् करने से फायदा बिलकुल नही है। तुमने मुझको लिखा था सो तो है। उससे क्या? आखरमें मैं मश्विरा करता हूं। अगर लड़का छुट जाय तो भी क्या हरज है? काम तो बहूत पड़ा है? आखरमें सूत्र तो यह है ना: जो मिले वह शिक्षणके लायक हैं और शिक्षक भी हैं। तुमारी निराशा जानी चाहीये।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४८६) से

४५७. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
१९ मार्च, १९४५

चि० अमृत,

मैं बहुत खुश हूँ कि प्यारेलाल तुम्हारे पास दो दिन रहा। तुम्हारी पाण्डुलिपि[1] मिलते ही मैं उसे देख लूँगा और सुझाव भी दे दूँगा।

यदि शम्मी और मॉडको बम्बई जाना है तो तुम्हें अपना अभिमान (जो झूठा ही होगा) छोड़कर शर्तोंके अधीन भी बम्बई जाना है। लेकिन जाने की प्रेरणा तुम्हें मुझसे नहीं अपने-आपसे मिलनी चाहिए।

तुम्हें हर स्थितिमें शान्त और प्रसन्नचित्त रहना चाहिए। यही उन श्लोकोंमें निहित है, जिनका गान हम नित्यप्रति करते हैं।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१५१) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७७८६ से भी

४५८. पत्र : मॉडको

सेवाग्राम
१९ मार्च, १९४५

प्रिय मॉड,

बेशक मुझे तुम्हारे ऑपरेशन और तुम्हारी बहादुरीके बारेमें सारी बातें मालूम हैं। मैंने तुम्हें जान-बूझकर नहीं लिखा। अब मुझे पता चला है कि मैं दो पंक्तियाँ लिख भेजूं तो तुम्हे अच्छा लगेगा। सो मैंने जो-कुछ सुना है उससे मेरा मन तुम्हारे प्रति प्रशंसासे और इस खुशीसे भर उठा है कि तुम इस कठिन परीक्षामें बिलकुल खरी उतरी हो। हम आशा करें कि तुम्हें अब ऐसी और परीक्षासे नहीं गुजरना पड़ेगा।

स्नेह।

बापू

श्रीमती मॉड
मार्फत राजकुमारी अमृतकौर

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. अमृतकौरकी लिखी पुस्तिका टु विमेन की पाण्डुलिपि

४५५. पत्र : श्रीपाद जोशीको

सेवाग्राम
१८ मार्च, १९४५

चि० श्रीपाद,

मेरा ख्याल है कि मेरे लेखोंमें उत्तर है। लेकिन उसे भूलो। 'जिनका' से मतलब खानगी गृहस्थ।[1] सरकारके नुकसानका बदला तो उन्होंने शायद सो गुना लिया है। उसका बदला हम एक ही तरहसे लें। स्वराज पाकर।

मेरे जेल जाने के बाद क्या करना उसका उल्लेख मैंने ७ तारीखके व्याख्यानमें[2] दिया था। चौदा विध कार्यक्रम तो था ही। सफलता असफलता ईश्वरके हाथमें है। मेरा विश्वास है कि अगर वह कार्यक्रम सब उठा लेते तो स्वराज लेकर हम बैठ जाते। विधायक कार्यक्रमके बारेमें मैंने काफी लिखा है।

मेरे पत्र किसी भी मित्रको पढ़ा सकते हैं। अखबारोंके लिये मैं नही लिख रहा हूं। इसमें कुछ नहीं लेकिन वाचक वर्ग ऐसे सब नहीं समजेंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६१५) से

४५६. तार : श्यामलालको

पूना
१९ मार्च, १९४५

श्री श्यामलाल
बजाजवाड़ी
वर्धा

लगता है मुझे १ अप्रैलसे पहले यहाँसे निकलने की जरूरत नहीं है। इसलिए जैसा पहले तय हुआ था उसके मुताबिक बैठक सम्भव लगती है। फिर भी मैं इसे ठीक नही समझता। लेकिन तुम चाहो तो इसपर फिरसे विचार कर सकते हो।

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० २०६।
२. ७ अगस्त, १९४२ का; देखिए खण्ड ७६, पृ० ४१९-२३।

४६१. पत्र : शारदा गो० चोखावालाको

१९ मार्च, १९४५

चि० बबुड़ी,

आनन्द अच्छा हो गया, इसके लिए बधाई। सावधानी बरतेगी तो खाँसी भी जाती रहेगी। मेरे साथ सुशीला और प्यारेलाल तो होंगे ही, लेकिन तू भी आई तो कुछ सेवा तो करेगी ही। मैं ३१को बम्बई पहुँचने की आशा करता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००५४) से। सौजन्य : शारदा गो० चोखावाला

४६२. पत्र : डॉ० जीवराज मेहताको

सेवाग्राम
१९ मार्च, १९४५

भाई जीवराज,

अपनी आदतके अनुसार तुमने तो मुझे पूरा उत्तर दिया है और फिर चि० इन्दुको भी सन्तुष्ट किया है। हंसाबहिनका[1] कहना मानना। जरूरतसे ज्यादा बोझ अपने सिर न लेना। इस तरह देशकी अधिक सेवा करोगे।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० जीवराज मेहता
२२, कर्जन रोड
नई दिल्ली

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. डॉ० जीवराज मेहताकी पत्नी

४५९. पत्र : शमशेरसिंहको

सेवाग्राम
१९ मार्च, १९४५

प्रिय शम्मी,

तो तुम तीन तरहसे अग्नि-परीक्षासे गुजरे हो। तुम निश्चय ही खुशीसे चिल्ला सकते हो, "ईश्वर महान और दयालु है"। क्या तुम्हें इन दोनों बातोंका परिचय नही मिल चुका है?

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४६०. पत्र : डॉ० सुबोध मित्राको

सेवाग्राम
१९ मार्च, १९४५

प्रिय डॉ० मित्रा,

मुझे स्वीकार करना चाहिए कि तुम्हारी योजनाने तो मुझे स्तम्भित कर दिया। यह तो चौरंगीके अनुरूप है, गाँवोंके नहीं। तुम्हें अपने गाँवोंका नये सिरेसे अध्ययन करना है।[1]

तुम्हारा,
बापू

डॉ० सुबोध मित्रा
३, चौरंगी टैरेस
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए "पत्र : प्रफुल्लचन्द्र घोषको", पृ० २७७ भी।

लक्ष्मीबाबूका विचार शायद पूरे मामलेको जो समिति नियुक्त हुई है उसके आगे रखने का हो।

बापूके आशीर्वाद

नरहरि परीख
सेवाग्राम आश्रम

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४६५. पत्र : शान्तिलालको

सेवाग्राम
१९ मार्च, १९४५

चि० शान्तिलाल,

तुम्हारा पत्र देखकर प्रसन्न हुआ। मैं बम्बई ३१ तारीखको पहुँचने की आशा करता हूँ। पहले तो बिड़ला भवनमें रहूँगा। कदाचित् चौबीसों घण्टे तुम्हें अपने साथ न रख सकूँ, फिर भी ज्यादातर तो तुम मेरे साथ रहोगे ही। कुछ नया लिखा हुआ पढ़ने का प्रयत्न करूँगा, इसलिए नया लाना। वितराग या वीतराग?

बापूके आशीर्वाद

शान्तिलाल
अनाविल आश्रम
सूरत

गुजरातीकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४६६. तार : एम० एस० केलकरको

सेवाग्राम
२० मार्च, १९४५

डॉ० केलकर
मार्फत पाटकर
१५, मनोरमागंज
इन्दौर

शीघ्र सेवाग्राम चले आओ।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४६३. पत्र : मृदुला साराभाईको

सेवाग्राम
१९ मार्च, १९४५

चि० मृदु,

तेरा पत्र मिला। मथुरादाससे मिली, यह ठीक किया। मैंने मण्डलका भाषण देख लिया है। अच्छा है। यदि तीनों लोगोंको उचित लगे तो तू भी लिखना। मुझे जो करना चाहिए था वह मैं कर चुका हूँ। शरीरको सँभालना। मम्मीका पत्र भी आया है। मैं उन्हें अलगसे पत्र नहीं लिख रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

मृदुला साराभाई
कश्मीर हाउस
९४, नेपियन सी रोड
वम्वई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४६४. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

सेवाग्राम
१९ मार्च, १९४५

चि० नरहरि,

यह तो तुम्हारे ही लिए है। तुम मुझे समझा सकोगे तो जाजूजी को कम मेहनत पड़ेगी। यदि नहीं तो यह पत्र उन्हें पढ़ाना। जहाँ मैंने काटने का चिह्न लगाया है उसकी जिम्मेदारी चरखा संघपर नहीं हो सकती। वहिनोंके लिए जो है उसमे कदाचित् चरखा संघको हिस्सा वँटाना पड़ेगा। यदि वह केवल ग्रामीण वहिनोंके लिए हो तो उसकी जिम्मेदारी कस्तूरवा कोष उठाये। लक्ष्मीवावू यह किससे पास करवाना चाहते हैं? जो जिम्मेदारी चरखा संघपर पड़े, उसे भी वह तभी उठा सकता है जव वह मेरे वताये नये मार्गको अपनाये। दूसरे प्रश्न तो हैं ही, लेकिन उन्हें अभी नहीं उठाऊँगा। काम थोड़ा अटपटा है लेकिन हमें जवरदस्तीसे कुछ नहीं करना चाहिए।

योजनामें सुधार करना होगा। उन्हें गाँवोंको . . .[1] देखना चाहिए। उसके बाद ही वे कोई उपयोगी चीज लिख सकते हैं।

जहाँतक तुम्हारा सवाल है, तुम्हें चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं। तुम्हारे लिए सबसे पहली चीज शुश्रूषा करने योग्य बनना है। क्या तुम कभी बन भी पाओगी? मात्र इच्छा करने से कोई लाभ नहीं। सेवाकी इच्छाके साथ-साथ जब तुममें उसकी योग्यता भी होगी तब सब लोग तुम्हें चाहेंगे।

आशा है वहाँ सब कुशल है।

स्नेह।

बापू

उर्मिलादेवी
७/१ बी० हिन्दुस्तान पार्क
पोस्ट ऑफिस आर० बी० एवेन्यू
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४६९. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२० मार्च, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुमने जो-कुछ लिखा है वह सब मैं पढ़ गया। मैं तुम्हारा अविश्वास करता हूँ, इस बातको भूल जाओ। तुममें व्यवस्थाकी कमी है, यह तो तुम्हारी लिखाईसे और तुम्हारे व्यवहारसे भी प्रगट हो जाता है। लेकिन तुम इसमें क्या कर सकते हो? पहले इस तथ्यकी निरन्तर प्रतीति हो, फिर आत्मसुधारके लिए पुरुषार्थ किया जाये, और फिर इसके लिए पर्याप्त समय मिले — यह स्वभाविक क्रम है।

जुदा रसोईघर हो जाये, यह तो मैं चाह ही रहा हूँ। अब मैं सोच रहा हूँ कि किया क्या जाये। सुशीलाके बारेमें अब कुछ नहीं लिखूँगा। अपने आफिसमें मुझे किसीको लेना ही नहीं था। उसमें तो मैं उन्हींको लेता हूँ जो और कहीं खपाये नहीं जा सकते। बाकी तो समझो अनायास ही आ गये। अगर मुझे नया आफिस ही शुरू करना हो, तो वह सब मुझे खूब आता है। तुम्हें पता नहीं है कि कितनी कठिन परिस्थितियोंमें मैंने कैसे-कैसे आदमियोंके साथ आफिस चलाया है। लेकिन क्या मैं आश्रम इस तरह नहीं चला सकता? मैंने विनोबाको आफिस चलाने के लिए क्यों

१. साधन-सूत्रमें मूल अंग्रेजी वाक्यमें आये एक शब्दके कारण यहाँ उसका कोई संगत अर्थ नहीं निकलता। इसलिए उस शब्दको तथा दो और सम्बन्धित शब्दोंको छोड़कर यहाँ अनुवाद किया गया है।

४६७. तार : घनश्यामदास बिड़लाको

वर्धागंज
२० मार्च, १९४५

घनश्यामदासजी
बिड़ला भवन
नई दिल्ली

विवरण अधूरा है।[1] दूध लेते हो या नहीं यह स्पष्ट नहीं है। सब्जियोंके नाम बताओ। बहरहाल मेरी सलाह है कि टोस्टके साथ आधा औंस सीधे दूधसे निकाला हुआ मक्खन लो और खूब अच्छी तरह चबाकर सलाद लो। गर्म पानी, शहद, सोडा पियो। खाली पेट गहरी साँस लेने की आदत डालो। सूचित करना। स्नेह।

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ७८७०) से। सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

४६८. पत्र : उर्मिलादेवीको

सेवाग्राम
२० मार्च, १९४५

प्रिय उर्मिला,

आशा है, तुम्हें अपने पहले पत्रके उत्तरमें मेरा तार मिल गया होगा। अब तुम्हारा दूसरा पत्र मिला है। मैंने डॉ० मित्राकी योजना देख ली है। मैंने उसके बारेमें उन्हें और प्रफुल्लको भी लिखा है।[2] डॉ० मित्राको गाँवोंको ध्यानमें रखकर अपनी

१. घनश्यामदास बिड़लाने गांधीजीको यह तार दिया था: "बुखार उतर चुका है। खाँसी बनी हुई है। मैं टोस्ट, सब्जियाँ और दूध ले रहा हूँ, मक्खन नहीं। आहारमें किसी तरहके परिवर्तनका सुझाव देंगे क्या?"

२. देखिए पृ० २७७ और २८८।

४७१. पत्र : बलवन्तसिंहको

२० मार्च, १९४५

चि० ब०,

तुमारी मनोदशाका विचार करने की आवश्यकता नही है। मुझे लगता है कि अपने गाव जाना चाहीये। मीरांबहनके पास भी और धर्मदेवशास्त्रीके पास भी। इतने दिन बहार रहने से फायदा ही होगा। मेरे लिये आश्रम भरा रहता है सही लेकिन आश्रमने मेरी गैरहाजरीमें अपना अनिवार्य स्थान सिद्ध किया है—क्या यहां क्या साबरमतीमें क्या कोचरबमें क्या फीनिक्समें। यह किस्सा आत्मकथामें साबरमती तकका है। आश्चर्यजनक है। किसीसे समज लो या मुझे पूछो। पशु चिकित्सा सीखना अच्छा है। कोई जल्दी नही है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९५६) से

४७२. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

सेवाग्राम
२० मार्च, १९४५

चि० घनश्यामदास,

तुमको तार[1] एक्सप्रेस भेजा है। नकल साथ भी है। क्या, कितना, कब खाते है? भाजीमें क्या? कच्ची कि उबली हुई, पानी फेंका तो नहीं जाता? टोस्टसे बहतर खाकरा नही होगा? आटा थुलीके साथका है? दूध लेते है तो कितना? कुछ भी हो आधा आउंस मखन टोस्ट या खाकरा पर लगाकर सेलाडके साथ लेना। बदहजमी हो तो दूसरा खाना कम करो लेकिन मखन रखो। गहरा श्वास अत्यावश्यक है। एक नाक बंध करके दूसरे नाकसे श्वास खींचो। आस्ते-आस्ते बढकर आध घंटे तक जा सकते है। प्रत्येक श्वासके साथ रामनाम लोओ। श्वास लेने के समय चोफेरसे हवा होनी चाहिये। खुल्लेमें हो तो अच्छा ही है। प्रात:कालमें लेना ही है। बाकी खाना हजम होने के बाद कमसे-कम चार बार लेना। श्वास लेना है, निकालना है। यह क्रिया

१. देखिए "तार : घनश्यामदास बिड़लाको", पृ० २९२।

नही रखा इससे तुम्हारी समझमें सब आ जाना चाहिए। फुर्सतके समय कामके बारेमें पूछोगे तो बताऊँगा। क्या सचमुच आफिसमें काम करने की तुम्हारी इच्छा होती है?

मेरी अपनी इच्छा तो बम्बईसे चार-एक दिनमें लौट आने की है। लेकिन मैं डॉक्टरोंके हाथमें रहूँगा। यदि उन्होंने आग्रह किया और मुझे पंचगनी या कहीं और जाना पड़ा, तो मैं कह नहीं सकता। देखो, क्या होता है।

तुम कंचनके पास जाओ, यह मैं नही कहता, न मैं ऐसा चाहता हूँ। लेकिन अगर तुम्हारी या उसकी इच्छा हो तो मैं तुम लोगोंको बढ़ावा दूंगा। अगर तुम न जाने के कारण मुझे लिखो या बताओ तो मैं उनपर विचार करूँगा। मुझे दो महीने तो बाहर रहना ही पड़ेगा। इस बीच, सम्भव है, रसोईघरकी व्यवस्था आसानीसे हो जाये। इस पत्रसे मुझे सन्तोष नही है। वस्तुस्थिति ही असन्तोषजनक है। इसमें किसको दोष दिया जाये?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८५७) से। सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

४७०. पत्र : अमतुस्सलामको

२० मार्च, १९४५

प्यारी बेटी,

तेरा खत मिला। कैसी घात गई।[1] बहिन लावण्यलता अच्छी होगी। आज कंचनका कार्ड मु[न्नालाल] पर है। इससे देखता हूं वह बहूत बीमार हो गई है। ऐसा क्यो? मैं तो मु[न्नालाल]को वहा जाने के लिये कह रहा हूं। देखें क्या होता है। मैं तो अच्छा हूं। बराबर काम करता हूं। इस मासकी आखरीमें मुंबई जाना होगा। कंचनको अलग नही लिखता।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९३) से

१. साइकिल रिक्शामें यात्रा करते हुए लावण्यलता और अमतुस्सलाम दुर्घटनाग्रस्त हो गई थीं।

४७४. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

२० मार्च, १९४५

भाई जाजूजी,

काते वे खद्दर पहने और पहने वे जरूर काते। कातने के मानी है कपास खेतसे चुनना, बिनौले बेलनसे निकालना, रुई तुनना, पुनी बनाना, सूत चाहिये ऐसा अंकका कातना और डबलीन उतारना।[1]

था वह अच्छा था। लेकिन जब लिखने का कहा तो मैंने विचारके लिये रख लिये। इसे देखो। बादमें कहां ऐसा लिख दूंगा।

बापु

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४७५. पत्र : वियोगी हरिको

सेवाग्राम
२० मार्च, १९४५

भाई वियोगी हरि,

फिर भी यही हुआ। मैंने तुमको तार तो दिया लेकिन विमलादेवी अब दिल्ली नहीं जा सकती।[2] अपने पतिके साथ सीमला जायगी। इसलिये उनको भूल जाओ।

बापुके आशीर्वाद

हरिजन आश्रम
दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह चरखा संघके निमित्त दिये गये सन्देशका मसौदा था; देखिए "एक सन्देश", २८-३-१९४५।

२. देखिए पृ० २७८।

आरामसे करनी चाहिये। पैखाना बराबर आता है? नींद आती है? यह सब समजपूर्वक होगा तो खांसी शीघ्र चली ही जायगी।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०६७) से। सौजन्य: घनश्यामदास बिड़ला

४७३. पत्र: सत्यवतीको

सेवाग्राम
२० मार्च, १९४५

चि० सत्यवती,[1]

तेरे बारेमें खबर तो मिलती है। प्यारेलालने भी दी। अच्छा है हरिजन निवास में हो। अच्छी होना है। चांद कुछ घभराटमें पड गई है। तुझसे बहुत पाया है तो अब तेरी सेवा न करें? विचार सुंदर है। अगर चांदकी सेवाकी दरकार है तो शीघ्र भेज दूं। यहां सुश्रूषाका अभ्यास कर रही है। लेकिन तेरी सुश्रूषा शुद्ध अभ्यास होगा। अगर चांदकी सेवाकी आवश्यकता नही हो तो खाली एक दूसरोंका मुंह देखने से कोई लाभ नहीं समजता हूं। मुझे दिलकी बात कह दे।

खुरशेदबहिन कुछ दिनोंके पहले गई। पुनामें नरगिसबहिनके साथ हैं।

यहां गरमी शुरु हो गई हैं इसलिये तुझे बुलाने की हिम्मत नही चलती।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. स्वामी श्रद्धानन्दकी पौत्री

आलोचना नही हो रही है ऐसी कोई बात नही है। जब प्रमुख कांग्रेसजन स्वतन्त्र होंगे और उन्हे अपनी बात कारगर ढंगसे कहने की छूट होगी तभी सच्चा युद्ध-प्रयत्न होगा।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २१-३-१९४५

४७८. प्रश्नोत्तर[1]

सेवाग्राम
[२१ मार्च, १९४५ या उसके पूर्व][2]

प्र० : आत्मबल क्या है ? सत्याग्रहसे उसका क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर . आत्मबल ईश्वरकी शक्ति अथवा बलकी अभिव्यक्तिके सिवा कुछ नही है। उसके [आत्मबलके] बिना सत्याग्रहका आचरण नही किया जा सकता और न वह सम्भव है। इसलिए सत्याग्रहका आत्मबलसे सीधा सम्बन्ध है।

प्र० : स्वतन्त्रताका मूल्य या महत्त्व किस चीजमें निहित है ?

उ० : स्वतन्त्रताका सीधा या सरल मार्ग अहिंसा है। हम अहिंसापर आरूढ रहते हुए मरकर (या अपने-आपको सत्कार्योंके लिए बलिदान करके) अमर हो सकते है या मरकर भी जीवित रह सकते है या रहेंगे, लेकिन दूसरोंको मारकर (या हिंसा करके) नही।

[अंग्रेजीसे]
हितवाद, २८-३-१९४५

४७९. प्रस्तावना : 'प्रैक्टिस एण्ड प्रिसेप्ट्स ऑफ जीसस' की

इन अध्यायोंको ध्यानपूर्वक पढ जाने के बाद मैं यह सिफारिश कर सकता हूँ कि ईश्वरमे आस्था रखनेवाले प्रत्येक व्यक्तिको, चाहे वह ईसाई हो या किसी अन्य धर्म का अनुयायी, इन्हे ध्यानसे[3] पढना चाहिए।

पुस्तिकामें ईसाई धर्मकी शिक्षाके बारेमें प्रोफेसर जे० सी० कुमारप्पाके विचार सार-रूपमें प्रस्तुत किये गये है। इसमे प्रभु-परायण व्यक्तिके रूपमे ईसाके सम्बन्धमे क्रान्तिकारी दृष्टिकोण पेश किया गया है। तथापि यह नये आयामोंको उद्घाटित करने-वाली और रोचक है। प्रभुकी प्रार्थनाकी व्याख्या तथा और भी बहुत-सी व्याख्याएँ नूतन और ताजगी भरी है।

१. ये प्रश्न अलग-अलग तारीखोंपर गोप गुरबख्शानीने पूछे थे। मूल हिन्दी उपलब्ध नहीं है।
२. यह समाचार दिनांक "सेवाग्राम, २१ मार्च, १९४५" के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।
३. मुद्रित स्रोतमें इस शब्दकी मूल अंग्रेजी छोड दी गई है।

४७६. पुर्जा : गोप गुरबख्शानीको[1]

२० मार्च, १९४५

इस बारेमे मेरा लेख पढ़ो।[2]

बापूके आशीर्वाद

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० १३२९) से

४७७. भेंट : 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के प्रतिनिधिको

सेवाग्राम
२० मार्च, १९४५

[प्र०] श्री एमरीने[3] एक भेंट-वार्ताके दौरान 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के युद्ध-संवाददाता कराकासे कहा कि आप [गांधीजी] नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि आप कांग्रेस पार्टीकी ओरसे पहले भी बोले हैं। प्रस्तुत सन्दर्भमें सुझाव यह जान पड़ता है कि आप विधान मण्डलोंके कांग्रेसी सदस्योंके माध्यमसे कुछ कर सकते हैं। इन सुझावों के बारेमें आपके क्या विचार हैं? श्री एमरीने कहा है कि "निस्सन्देह भारत सरकार के लिए इस सम्बन्धमें भी आश्वस्त होना जरूरी होगा कि प्रत्यक्ष विरोध अथवा आर्थिक स्थितिको अस्त-व्यस्त करने की कोशिशोंके द्वारा युद्ध-प्रयत्नमें बाधा डालने या उसे नुकसान पहुँचानेकी कोई कार्रवाई नहीं की जायेगी।" इस कथनको ध्यानमें रखते हुए क्या आप इस मुद्देपर स्थितिको बिलकुल स्पष्ट करने की कृपा करेंगे?

[उ० :][4] इच्छा बहुधा विचारकी जननी होती है। श्री कराकासे कही श्री एमरी की बातोंमें मुझे कोई नवीनता नही दिखाई देती। जबतक कार्य-समितिके सदस्य तथा अन्य कांग्रेसजन नजरबन्द है तबतक वर्तमान गतिरोधके हलकी सारी चर्चा व्यर्थ है। युद्ध-प्रयत्नमें बाधा डालने की बात तो मात्र एक हौआ है। लेकिन अगर उसका मतलब यह है कि युद्ध-प्रयत्नके नामपर जो गड़बड़ी और भ्रष्टाचार चलता रहा है उसकी तीव्र आलोचना की जायेगी तो बात बिलकुल सच है — वैसे आज उसकी

१. गोप गुरबख्शानीने पूछा था : "गाय हिन्दू धर्ममें क्यों पूजी जाती है और दूसरे धर्ममें क्यों नहीं?"

२. देखिए खण्ड, २१, पृ० २५८-५९ और खण्ड ३७, पृ० ४५५-५८।

३. भारत मन्त्री एल० एस० एमरीने १६ मार्च, १९४५ को डी० एफ० कराकाको भेंट दी थी।

४. गांधीजी ने उत्तर लिखित रूपमें दिया था।

४८०. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

सेवाग्राम
२१ मार्च, १९४५

प्रिय कु०,

पढ़कर देखो कि यह तुम्हारे मनके लायक है या नहीं।[1] अगर नहीं हो तो लिखो कि तुम्हें क्या चाहिए? आशा है, मजेमें होगे।

स्नेह।

बापू

[पुनश्च :]

या तो कल रातको ८ बजेके बाद आओ या सुबह ७ बजे।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१७२) से।

४८१. पत्र : एम० एस० केलकरको

सेवाग्राम
२१ मार्च, १९४५

प्रिय आदम,

तुम्हारा पत्र मिला। आँधकी फिक्र मत करो। मैं अप्रैलमें बम्बईमें होऊँगा, इसलिए मैंने तुम्हें तुरन्त आनेके लिए तार[2] दिया है। मैं तुम्हें कुछ रोगी देने की उम्मीद रखता हूँ। मुझे सन्तुष्ट करो बाकी सब तो ठीक उसी सहजतासे हो जायेगा जैसे रातके बाद दिन होता है।

तुम्हारा,
बापू

डॉ० एम० एस० केलकर
आर० जे० पाटकर
मनोरमागंज
इन्दौर

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. देखिए "तार : एम० एस० केलकरको", पृ० २९१।

यदि सभी लोगोंका धार्मिक विश्वास वैसा ही हो जैसा प्रोफेसर कुमारप्पाका है तो सम्प्रदाय-सम्प्रदायके बीच और धर्म-धर्मके बीच कोई झगड़ा और प्रतिद्वंद्विता नही रह जायेगी। बहरहाल, बाइबिलकी यह नई व्याख्या भारतके ईसाइयोंको सान्त्वना प्रदान करेगी। यदि वे प्रोफेसर कुमारप्पाकी बाइबिल पढ़ेंगे तो उन्हे अपने पूर्वजो या प्राचीन धर्मपर लज्जित होने की जरूरत नहीं रह जायेगी। पुरातनमें जो-कुछ बुरा और अन्ध विश्वासपूर्ण है उसे वे इन पृष्ठोंमें प्रस्तुत उदार शिक्षाके सहारे निकाल बाहर कर सकते हैं, लेकिन साथ ही इससे यह देखने मे भी सहायता मिलती है कि पुरातनमें बहुत-कुछ ऐसा है जो अनश्वर और सहेजकर रखने योग्य है।

वस्तुतः प्रोफेसर कुमारप्पाके पास देने को एक ऐसा सन्देश है जिसकी प्रासंगिकता भारतकी सीमाओंसे बाहरतक पहुँचती है। वे जो बात कहते हैं वह इस मान्यतामें एक जीवन्त आस्थासे उत्पन्न आत्मविश्वासके साथ कि पाश्चात्य संसार यद्यपि नामके लिए ईसाई है तथापि वह बाइबिलके सच्चे ईसाको नही जान पाया है।

इन पृष्ठोंको पढते हुए मुझे डर्बन निवासी एडवोकेट एफ० ए० लॉटनका स्मरण हो आया। उन दिनों मुझे रोमन या डच लॉ का ठीक ज्ञान नही था और न दक्षिण आफ्रिकाके चारों राज्योंकी प्रमाण-विधियों (केस लॉ) का ही। इसलिए कठिनाई उपस्थित होने पर मैं सहायताके लिए श्री लॉटनके पास जाया करता था। लेकिन जब मेरा काम समाप्त हो जाता था तब वे बड़े गर्वके साथ अपनी दराजसे हरी जिल्दवाली एक पुस्तक निकालते थे, जिसमें उनके पिताने यत्र-तत्र बाइबिलकी उक्तियाँ लिख रखी थीं। यह पुस्तक एडविन आर्नल्ड-कृत 'साग सिलेस्टियल', थी, और श्री लॉटनके पिताने उसमे बाइबिलसे उसके पदोंके समान्तर अंश लिख रखे थे, जिनसे पता चलता था कि 'न्यू टेस्टामेंट' और 'गीता' के बीच बहुत साम्य है। उन दिनों मैं एक नौसिखिया था और सत्यको उसके सभी पक्षों-समेत प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा था, यद्यपि तब मुझे यह बोध नही था कि मै सचमुच ऐसा कर रहा हूँ। बाइबिल के पुष्कल उद्धरणोंसे युक्त प्रोफेसर कुमारप्पाकी व्याख्याने मुझे स्मरण दिला दिया है कि बहुत पहले १८९४-९५ में ही मेरा विश्वास क्या था। इसलिए आगेके पृष्ठोमे प्रोफेसर कुमारप्पा द्वारा की गई बाइबिलकी व्याख्यामे निहित सत्यकी साक्षी मैं अनुभवसे कर सकता हूँ।

मो० क० गांधी

सेवाग्राम, २१ मार्च, १९४५

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१७३) से। **प्रैक्टिस ऐण्ड प्रिसेप्ट्स ऑफ जीसस** से भी

४८४. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२१ मार्च, १९४५

चि० मु[न्नालाल],

मेरे लिखने का यह अर्थ कभी नही लगाना चाहिए कि मैंने सब पहलुओपर विचार कर लिया है। यह तो तुम पढनेवालोका काम है। मै तो तुम्हें मुक्त कर दूंगा और उसके वाद जो मुश्किले आयेंगी उन्हे बरदाश्त कर लूँगा। लेकिन सच बात यह है कि जो काम तुमने हाथमें लिया है वह तुम्हें छोड़ना नही चाहिए। चीटा अगर गुड़का मटका छोड़ दे, तो मनुष्य भी अपना कर्त्तव्य छोड़ें। लेकिन कर्त्तव्यको गुडका मटका मानने के वजाय हम उसे बोझ मानते है। नही तो अमतुस्सलामकी क्या मजाल कि वह तुम्हे छोड़कर चले जाने का इशारा भी कर सकती। लेकिन यह हुआ। तुम जो लिख रहे हो, वह मुझे पसन्द है। तुम अवश्य रसोईघरसे चिपके रहो और उसे आदर्श बनाओ। इसमें पूरा आनन्द है और इसीमे औरोंके साथ तुम्हारा प्रशिक्षण हो जायेगा। देवता ऊपरसे फूल बरसायेंगे और मै शायद देखता रहूँगा। रसोईघरको आदर्श बनाओ। सब-कुछ तथाकथित नौकरोकी सहायतासे करो, लेकिन ऐसे कि जिसमें नौकर समझें वे नौकर नही, मालिक है अथवा कहो न्यासी [ट्रस्टी] है। और तुम्हें क्या चाहिए?

अब तो तुम मेरे विचार पूरी तरह समझ गये न? भूल सको तो कंचनको भूल जाना। उसे स्पष्ट लिख देना कि तुम्हारा यहाँ और उसका वहाँ निर्माण होना है। मनोदशा ठीक हो जाने के बाद दोनो मिलोगे। ऐसा कर सको तो एक पत्थरसे दो फल गिराओगे। कहावत तो है कि एक पत्थरसे दो पक्षी मरेंगे। लेकिन यह कहावत गलत है, हमारी कहावत सही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८५९) से। सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

४८२. पत्र : पी० डब्ल्यू० सिबैस्टियनको

सेवाग्राम
२१ मार्च, १९४५

प्रिय सिबैस्टियन,

आपकी पत्नीकी मृत्युके बारेमें जानकर अफसोस हुआ। लेकिन कोई शोक नहीं होना चाहिए। आपको, मुझे और हम सबको एक दिन वहाँ जाना ही है जहाँ वे गई हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

पी० डब्ल्यू० सिबैस्टियन
पेरिस हॉल
त्रिचूर

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४८३. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
२१ मार्च, १९४५

चि० अमृत,

तुम्हारी पुस्तिका[1] पढ़ ली है। जितना-कुछ उसमें है, अच्छा है। यह बात तो तुम्हारे ध्यानमें आई होगी कि तुमने अपने ही अनुभवोंसे शुरू किया है? तुम अन्यथा कुछ कर भी नहीं सकती थी। भारतका मुख्य रोग उसकी घोर गरीबी और उससे भी अधिक घोर अज्ञान है। तुमने इन दोनोंपर विचार तो किया है, लेकिन सिर्फ अनेक मुद्दोंमें से दो मुद्दोंकी तरह। लेकिन तुम इसकी कोई चीज दुबारा लिखो, मैं यह नहीं कहता। अगर तुम कुछ सुधार करना चाहो तो करो। नहीं चाहो तो भी यह जैसी है वैसी भी पढ़ने में अच्छी है।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१५२) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७७८७ से भी

१. टु वीमेन; देखिए "पत्र : अमृतकौरको", पृ० २८७।

४८७. पत्र : विश्वनाथदासको

सेवाग्राम
२२ मार्च, १९४५

प्रिय विश्वनाथदास,

तुमने जिस नौजवानकी बात की है उससे गर्मीके मौसम अर्थात् जूनके बाद लिखने को कहो। १० अप्रैलके आसपास मेरे बाहर रहने की सम्भावना है। उम्मीद है तुम स्वस्थ होगे।

स्नेह।

बापू

विश्वनाथदास
वेलागाँव, डाकखाना पुलसोरा
जिला गंजम, उड़ीसा

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४८८. पत्र : जे० आर० भालाको

सेवाग्राम
२२ मार्च, १९४५

भाई भाला;

चि० प्यारेलालको लिखा तुम्हारा पत्र और लेख ध्यानपूर्वक पढ़ गया। मैं ३१को बम्बई पहुँचने की आशा करता हूँ। वहाँ भेंटका समय निश्चित करके मुझसे मिलना। मैं और भी पूछताछ करूँगा, जिससे तुम्हारे मण्डलका मार्गदर्शन कर सकूँ।

मो० क० गांधी

श्री जे० आर० भाला
ओवरसीज़ स्टुडेंट्स एसोशिएशन
९, फोर्जेट हिल
बम्बई २६

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २३३५) से

४८५. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२१ मार्च, १९४५

चि० कृ[ष्णचन्द्र],

सिरके नीचे लकड़ी भी क्यों। शवासनसे सोना जैसे मैं सोता हूं। फिर भी चाहीये तो पथ्थर रखो ईंट रखो।

तुनना, कातना न छोड़ो। वह एक चीज जीवनके साथ जुड़ गई है। एक घंटा बराबर दो। शीघ्रता आ जायगी।

नई तालीमका कुछ छुट जाय तो निराशा क्या। लेकिन कोई एक कार्यको अपनाना तो है ही।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४८७) से

४८६. पत्र : खुर्शेद नौरोजीको

सेवाग्राम
२२ मार्च, १९४५

प्रिय बहिन,

मित्रकी मार्फत मुझे तुम्हारा पत्र मिला। मैंने तुम्हारे पिछले सभी पत्रोंके उत्तर दे दिये हैं। मुझे पूरी आशा है कि तुम्हें मेरे उत्तर मिल गये होंगे। मैं तुम्हें इस बातका यकीन दिला सकता हूँ कि एक भी क्षण बरबाद नहीं किया जाता और न रचनात्मक कार्यक्रममें से ही लिया जाता है। मेरे पास जैसे ही डाक आती है मैं उसे निबटा देता हूँ और कुछ भी बाकी नहीं बच रहता।

सबको स्नेह।

बापू

श्रीमती खुर्शेदबहिन नौरोजी
डनलेविन लॉज
पूना ५

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९१. पत्र : कुलवन्तसिहको

सेवाग्राम
२२ मार्च, १९४५

सरदारजी,

आप मुझको अग्रेजीमें क्यों लिखें? आप जो गूच[1] मेरे सामने रखते हैं उसका सीधा उत्तर तो यह है कि जो काग्रेसके है वे उसके सेवक बनकर रहते है। मै तो उसका सभ्य भी नही हू। लेकिन सेवक तो हू।

आपका,
मो० क० गांधी

सरदार कुलवन्तसिह
डाकखाना, मोघापुरा
लाहौर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९२. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२२ मार्च, १९४५

चि० कृ[ष्णचन्द्र],

[प्रार्थनाके बारेमे] सस्कृत पक्ष और अनुवाद पक्ष — दो हैं। मै दोनोंका भक्त हूँ। क्योंकि हम सामुदायिक प्राणी है, सामुदायिक पठनमें हमे रस आना ही चाहिये। आखरमें एक व्यक्ति जैसे उचे चढ़े वह मार्ग ले।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४८८) से

१. समस्या

४८९. पत्र : मुहम्मद अली जिन्नाको

सेवाग्राम
२२ मार्च, १९४५

भाई जिन्ना,

आपके बीमार पड़ने की खबर सुनकर यह पत्र लिख रहा हूँ। मुझे उम्मीद है कि बीमारी साधारण होगी और अब आप ठीक हो गये होंगे।

आपका,
मो० क० गांधी

कायदे-आजम जिन्ना साहब
अध्यक्ष, मुस्लिम लीग
नई दिल्ली

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९०. पत्र : सीता गांधीको

सेवाग्राम
२२ मार्च, १९४५

चि० सीता,

तेरा पत्र देखकर मैं बहुत खुश हुआ। ईश्वर करे, तू आगे बढ़ती ही जाये। मणिलाल और सुशीला आदि जब ईश्वरकी मर्जी होगी तभी आयेंगे। तू चिन्ता न करना। अपने कर्त्तव्यमें निरत रहना और अपनी सेहतका ध्यान रखना। सुमी मुझे हर हफ्ते लिखती है। अब मैं उसका अगला पत्र तुझे — तुम सबको — भेजूंगा।

बापूके आशीर्वाद

सीता गांधी
अकोला

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९५. पत्र : हाफिज जाफर हुसैनको

सेवाग्राम
२२ मार्च, १९४५

भाई साब;

आपका खत मिला। खबर करो। खामोश रहो। देखोगे के कोंग्रेस आजाद मुसलिमोंको छोड़ेगी नही।

आपका,
मो० क० गांधी

मौलवी हाफीज जाफर हुसैन

उर्दूकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९६. एक पत्र

सेवाग्राम
२२ मार्च, १९४५

भाईयो,

आप लोगोंका अंग्रेजी खत पढकर मैं हैरान होता हूं। आप हिन्दुस्तानीमें क्यो न लिखें? मैंने मेरी राय साफ़ कर दी है। उसके मुताबिक चलना न चलना हर एकके मनकी बात है। मेरी सलाह है कि आप लोग अपनी राय कायम करें।

उर्दूकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९३. पत्र : विनायक दा० सावरकरको

सेवाग्राम
२२ मार्च, १९४५

भाई सावरकर,

आपके भाईके कैलासवासके समाचार देखकर यह लिख रहा हूं। उनकी रिहाईके बारेमें मैंने कुछ किया था तबसे उनके बारेमें मैं रस लेता ही गया। मृत्युका शोक तुमारे सामने क्या करना था? हम तो मृत्युके मुखमें पडे हैं ना। उनका परिवार ठीक होगा।

आपका,
मो० क० गांधी

वीर सावरकर
रत्नागीरी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९४. पुर्जा : बलवन्तसिंहको

२२ मार्च, १९४५

अहल्या आख्यानका जो अर्थ बा ने दिया वह ठीक है। वह एक है। दूसरे भी अर्थ हो सकते हैं। जितने भक्त और उनके भाव उतने और ऐसे अर्थ होते हैं।

बापु

बापूकी छायामें, पृ० ३६६

४९९. पत्र : पी० बी० चाँदवानीको

सेवाग्राम
२३ मार्च, १९४५

प्रिय चाँदवानी,

तुम जब चाहो तब आ सकते हो। लेकिन ये महीने बहुत गर्मीके हैं, और मैं कदाचित् [सेवाग्रामसे] बाहर रहूँ। बरसातके मौसममें आओ अथवा चाहो तो नवम्बर में भी आ सकते हो। बेशक, शहरोंमें काम किया जा सकता है, लेकिन कस्तूरबा कोष से नही। तुम्हे सही ढंगके शिक्षकोंकी तलाश है, लेकिन इसके बारेमें जब हम मिलेंगे तभी चर्चा करेंगे।

स्नेह।

बापू

पी० वी० चाँदवानी
पुराना सक्खर
सिन्ध

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५००. पुर्जा : कृष्णचन्द्रको

२३ मार्च, १९४५

बिनौले ठीक नही निकलते। निकालने का ढंग गलत और धीमा है। हाथ तो लगना ही नही चाहिए। एक झटकेमें बिनौला अलग हो जाना चाहिए और हाथ तेजीसे चलना चाहिए।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४८९) से

४९७. पत्र : के० एस० गोपालस्वामीको[1]

[२३ मार्च, १९४५ के पूर्व][2]

अपने उत्तरमें गांधीजी ने तमिलनाडुके करघा बुनकरोंसे कहा है कि वे उनके [गांधीजी के] द्वारा बुनकरोंको दी गई हिदायतोंपर अमल करें। उन्होंने सुझाव दिया कि बुनकरोंके परिवार कताई भी शुरू कर दें और दुबटेका कोई तरीका भी अपना लें, जिससे बुनकरोंको बेकार नहीं बैठना पड़े।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २५-३-१९४५

४९८. पत्र : गोपीनाथ बारडोलोईको[3]

[२३ मार्च, १९४५ के पूर्व][4]

जो उत्तम हो वही कीजिए, चाहे उसके लिए कोई भी कीमत चुकानी पड़े। भ्रष्टाचारको मिटाइए। जो विकल्प वर्तमान परिस्थितियोंमें सबसे अच्छा हो उसे अपनाइए। मै जानता हूँ कि कठिनाइयाँ तो बहुत-सी होंगी, लेकिन हमें उनके बीचसे अपना रास्ता निकालना है।

[अंग्रेजीसे]
हितवाद, २४-३-१९४५

१. तमिलनाडु हथकरघा बुनकर संघ, करूर, के महामन्त्री के० एस० गोपालस्वामीने सूतकी कमीकी समस्याके कारण कठिनाईमें पड़े बुनकरोंकी अवस्थामें सुधार करने के लिए गांधीजी की सहायता माँगी थी।

२. जिस रिपोर्टसे यह पत्र लिया गया है उसपर २३ मार्च, १९४५ तारीख पड़ी हुई है।

३. गोपीनाथ बारडोलोईने संवैधानिक स्थितिपर गांधीजी की सलाह माँगी थी।

४. यह समाचार दिनांक "शिलांग, २३ मार्च, १९४५" के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

५०३. पत्र : मनहरको

सेवाग्राम
२३ मार्च, १९४५

भाई मनहर,[1]

मुझे तो आज ही पता चला कि शास्त्रीजीका[2] खर्च यहांसे भेजा जाता है। मेरी दृष्टिसे खर्च बहुत है। सब खर्च तुम्हारे मार्फत होना चाहिये। खर्चमें मैं तो भाड़ा भी देखता हूं। चार मासके १०० रु० भेजे थे लेकिन तीन मासमें करीब सब खर्च हो गया। साथमें शास्त्रीजीका खत भी भेजता हूं। सब देखकर मुझे कहो। क्या देना चाहीये? मेरे पास कुछ खानगी पैसे तो हैं नही। मेरे पास जो है वह दान है। दानमें से मैं दान तो नही कर सकता? जिस कामके लिये दान है वही खर्च कर सकता हूं। तुम्हारा खाता दानपर निर्भर है। उसमें शास्त्रीजीके निमित्त क्या दू, कहो। जो हो सो तुमारे मार्फत होना चाहीये। शास्त्रीजी तुमारे दरदी समजो। वे इस खत को देख सकते हैं।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

मैं भूतकालकी तो बात ही [नही] करता। मै तो कहता हूं अब नियंत्रण होना चाहीये। शास्त्रीजी बीमार है। पूरा विचार भी नहीं कर सकते। या मैं करूं या तुम – मैं यहासे नही कर सकता इसलिये तुमारा धर्म होता है। तुमारा बताना है कितना तुमको भेजना चाहीये और शास्त्रीजीको तुमारे नियंत्रणमें रहना है।

पत्रकी नकल (सी० डब्ल्यू० ५८९४) से। सौजन्य : मुन्नालाल गंगादाश शाह

१. दत्तपुर कुष्ठ आश्रमके
२. परचूरे शास्त्री

५०१. पत्र : आनन्द तोताराम हिंगोरानीको

२३ मार्च, १९४५

चि० आनंद,

तुमारी चिट्ठी मिली। यहांसे लड़का मिला कैसा है? काम करता है? तुमारा खाने का कैसे चलता है? मन कैसे? पिताजी कैसे? माताजी? मै अच्छा हूं। भरत कैसे है?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

५०२. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२३ मार्च, १९४५

चि० कृ[ष्णचन्द्र],

मैंने तो जैसा स्मरण है ऐसे कहा। क्या यह ठीक नही कि पहले तुम शिक्षक बनना चाहते थे—तनख्वाह चाहते थे? वर्धाके विद्यालयमें तुमको रखने की एक वार बात भी हुई थी। अगर यह सब मेरा भ्रम है तो ऐसे दुबारा नही कहूंगा। लेकिन मेरा विश्वास है कि तुमारी उन्नति आस्ते आस्ते हुइ है। यह अलग वात है कि तुमारे अपने लिये पैसे नहीं चाहीये थे। सात साल तुमारा दूसरा सफल है ना?

नयी तालीमका ठीक है। मैं थोड़े तुमको छोडने वाला हूं?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४९०) से

५०६. पुर्जा : गोप गुरबख्शानीको

२३ मार्च, १९४५

शांतिके लिये लड़ना विरोधी वचन है। जो लड़ें उसे शांति कहां। शांति अशांतिका युद्ध है नहीं। वह तो शांतिप्रियके लिये मीठा है क्योंकि वह अशांतिमें शांति पाता है।[1]

बापुके आशीर्वाद

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० १३३०) से

५०७. पुर्जा : गोप गुरबख्शानीको

२३ मार्च, १९४५

शिक्षाका एक अर्थ है आत्मज्ञान और वह संपूर्ण है। लेकिन आज उसका अनर्थ होता है। इसलिये मैं कहूं मनुष्यका सर्व प्रकारका विकास और जो शिक्षक ऐसा ज्ञान दे सके वह सच्चा शिक्षक है।[2]

बापुके आशीर्वाद

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० १३३१) से

१. गोप गुरबख्शानीने पूछा था : "मनुष्य शान्तिके लिए क्यों लड़ रहा है और स्थायी शान्ति कैसे स्थापित की जा सकती है?"

२. गोप गुरबख्शानीने पूछा था : "शिक्षाका क्या उद्देश्य है और कौन शिक्षक कहा जा सकता है?"

५०४. पत्र : रामकृष्ण बजाजको

सेवाग्राम
२३ मार्च, १९४५

चि० रामकृष्ण,[1]

तुम्हारे माताजीपर पत्र जाते हैं। बाझ दफा पड लेता हुं। तुम्हारी प्रगतिके समाचार तो मिलते ही रहते हैं। मुझे आनंद होता है। आज समजा कि मैं भी तुमको लिख सकता हूं। इसलिये लिख रहा हूं। तुम्हारे खतसे मैंने देखा तुमने अंडरवेर मंगाया है। मेरी सलाह है उसे त्यागो। उसकी हमारी हवामें कोई जरूरत नही है। लेकिन आदत हो गई है और छूट नही सकती है तो अवश्य रखो। हमारा धर्म तो है ना कि हम इच्छापूर्वक कमसे-कम खर्च करें और जीवन उच्चतम रखें। तुम्हारा सर्व प्रकारसे विकास किया करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०६५) से

५०५. पत्र : वेंकटेश भट्टको

२३ मार्च, १९४५

भाई वेंकटेश भट,

इंग्रेजीमें क्यों खत लिखते हैं? हिंदुस्तानीमें लिखीये या मातृभाषामें। भाई दामोदर बहादुर है। उपवाससे पैसे इकट्ठे न करें। उद्यमसे, सेवासे पैसे इकट्ठे हो सकते हैं। उपवास कई दफा बलात्कारका रूप लेता है।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३६२८) से

१. जमनालाल बजाजके पुत्र

५१०. पत्र : खुर्शेद नौरोजीको

सेवाग्राम
२४ मार्च, १९४५

प्रिय वहिन,

मुझे खुशी है कि तुम वायु-परिवर्त्तनके लिए पचगनी जा रही हो। वहाँ काम करो, लेकिन जवतक सचमुच अच्छी नहीं हो जाओ तवतक नीचे नही उतरो। मैं तुम्हारी इस चेतावनीको सजोये हूँ कि मुझे रचनात्मक कार्यक्रमके अलावा और किसी वातका विचार नहीं करना चाहिए। तुमने मुझसे यह कहकर भी वहुत ठीक किया कि मुझे समन्वय-समिति[के सदस्यों] से मिलना चाहिए।

वापू

श्रीमती खुर्शेदवहिन
डनलैविन लॉज
पूना ५

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५११. पत्र : वी० वेंकटसुब्वैयाको

सेवाग्राम
२४ मार्च, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मैं उस प्राकृतिक चिकित्सकसे व्यक्तिशः मिलने के वाद ही कुछ करूँगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

वी० वेंकटसुब्वैया
कस्तूरीदेवी नगर
नेल्लूर
दक्षिण भारत

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५०८. तार : हनुमन्त रायको

सेवाग्राम
२४ मार्च, १९४५

हनुमन्त राय
१२६७, चैतपुरी
दिल्ली

किसीको बेजरूरत आने की अनुमति नहीं दी है।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५०९. पत्र : अरुणा आसफ अलीको

सेवाग्राम
२४ मार्च, १९४५

प्यारी बेटी,

अपने-आपको दुःखी किये बिना तुम मुझे दुःखी नहीं कर सकती। मैं हँसता हूँ और तुम्हें भी अपनी हँसीमें शामिल होने के लिए कहता हूँ। "अरी ओ अविश्वासिनी!" तुम जल्दी ही धीरज खो बैठती हो, क्योंकि तुम मेरी बातोंका गलत अर्थ लगाती हो। क्या मैंने यह नहीं कहा है कि १९४५ कोई १९४२ नही है। फिर भी मैं बदला नहीं हूँ। क्योंकि तुम देख रही हो कि मैंने अपनेको ऊनी शालोंसे नही ढँक रखा है, बल्कि बिलकुल ढँक ही नहीं रखा है।[१]

प्रतीक्षा करो, देखती रहो और प्रार्थना करो।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजीसे : अरुणा आसफ अली पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. अपने २३ मार्चके पत्रमें अरुणा आसफ अलीने अंग्रेजोंके प्रति गांधीजी के बदले हुए रुखपर दुःख व्यक्त किया था।

५१५. भाषण: अ० भा० चरखा संघकी बैठकमें–१[1]

सेवाग्राम
२४ मार्च, १९४५

मुझे खेद है कि सभाकी सारी कार्यवाहीमें मैं हाजिर न रह सकूँगा। इसकी वजह इतनी ही है कि मैं १२५ साल तक जिन्दा रहना चाहता हूँ, ताकि मुल्ककी अधिक समयतक खिदमत कर सकूँ। ऑल इंडिया काग्रेस कमेटीके अगस्तके जलसेमें १२५ साल जिन्दा रहने की जो बात मैंने कही थी वह मजाकके तौरपर नही थी, क्योंकि सत्याग्रही बिना समझे-बूझे कोई शब्द अपने मुँहसे नही निकालता। मैं अपनी इस इच्छापूर्तिके लिए पूरी कोशिश करता रहा हूँ और इसे सफल बनाने के लिए मैं अपनी शक्तिको ज्यादासे-ज्यादा इकट्ठा रखने की कोशिश कर रहा हूँ।

१२५ सालतक जिन्दा रहने मे कामयाबी हासिल करना डाक्टरो या उनके साइंसके भरोसे नही हो सकेगा, यद्यपि इन दोनोंकी मैंने अपने तरीकेसे काफी मदद ली है। इसकी सफलता मेरी सत्य और अहिंसाके उसूलोको पूरे तौरसे अमलमे लाने की लियाकतपर निर्भर करेगी। अहिंसाके मेरे तजुर्बेने मुझे सिखाया है कि सेवाके काममें भी तेज रफ्तारपर रोक लगानी चाहिए। मैं कबूल करता हूँ कि इसमे कुछ हदतक ही मैं कामयाब हो सका हूँ। मैं अपने कामकी रफ्तारको काफी नियन्त्रणमें नही रख सका हूँ। पुरानी जमी हुई आदते एकाएक उखाड़कर फेंकना आसान नही होती। मैं जानता हूँ कि बेजा जल्दबाजी बुरी चीज है, कामको बढ़ाने के बदले वह उसमें रुकावट डालती है।

मुझे पूछा गया है कि राजनीतिक और रचनात्मक कार्यको एक साथ मिलाने की इजाजत देना क्या ठीक है। इस वक्त कुछ लोग काग्रेसके संगठनको मजबूत बनाने के लिए रचनात्मक कार्य कर रहे हैं। दोनों कामोको एक-दूसरेमें मिलाने से एक भी काम अच्छी तरह नही हो पाता।

मैं इससे पूरी तौरपर सहमत हूँ कि रचनात्मक कार्यके साथ पूरा न्याय करने के लिए उसे अपने पाँवपर खड़ा होने देना चाहिए। सियासी कामके साथ उसे जोड़ना नही चाहिए। मुझे डर है कि मेरे इस कथनका कोई असर न होगा। लेकिन जैसे महाभारतकारने कहा है कि "सत्यकी तुम घोषणा बराबर करते रहो, कोई तुम्हारी बात सुनता है या नही, इसका खयाल न करो" इससे मुझे तसल्ली मिलती है।

१. खादी विद्यालय हॉलमें आयोजित इस सभामें अ० भा० चरखा संघके न्यासी, प्रान्तीय मन्त्री और कार्यकर्ता शामिल हुए थे।

५१२. पत्र : शारदा गो० चोखावालाको

सेवाग्राम
२४ मार्च, १९४५

चि० ववुड़ी,

वच्चोंको जव-तव वुखार आता ही रहता है। आनन्द अच्छा हो जाये तो तू यहाँ आ जाना और मेरे साथ रहना। घवराना मत।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००५५) से। सौजन्य: शारदा गो० चोखावाला

५१३. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२४ मार्च, १९४५

चि० कृ[ष्णचन्द्र],

चोंअनी इस तरह गुम नहीं होनी चाहीये थी। ता[लीमी] सं[घ]के वारेमें मेरी राय तो ठीक ही है लेकिन मैं जवरदस्ती नहीं करुंगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५०४) से

५१४. पुर्जा : गोप गुरबख्शानीको

२४ मार्च, १९४५

शकसीयत यानि आत्मीयता भली और बूरी हो सकती है। अगर आत्माके साथ जमे तो भली होती है, अगर आत्माको भूल जाय तो वूरी होती है। आत्माका घ्यान करने से उसके गुण समजने से भली वनती है और खुलती है।[1]

बापुके आशीर्वाद

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० १३३४) से

१. गोप गुरबख्शानीने पूछा था: "शख्सियत (व्यक्तित्व) क्या है और इसका निर्माण किस प्रकार किया जा सकता है?"

जानी ही चाहिए और अगर अस्पृश्यता रही तो हिन्दू धर्मका नाश अवश्यम्भावी है और उसीके वह योग्य है। दुःखकी बात तो यह है कि जिन्हें इस सुधारके लिए विशेष काम करना चाहिए था उन्होंने इसके पीछे प्राणपणसे लगने की परवाह न की, बल्कि उसके साथ वे एक तरहसे खिलवाड़ करते रहे। फिर इसमें आश्चर्य नहीं कि हरिजन भाइयोंके मनमें शक पैदा हो, उनमें विरोधकी भावना दिखाई दे और कटुतासे वे पेश आयें।

एक हिन्दूके नाते अस्पृश्यताको जड़से निर्मूल करना मेरा तथा मेरे जैसे अन्य हिन्दुओंका धार्मिक कर्तव्य हो जाता है। अहिंसाके जरिये अगर हमें स्वराज्य हासिल करना है तो अस्पृश्यताको हमें दूर करना ही होगा। उसके किये बिना हम स्वराज्य प्राप्त नहीं कर सकेंगे। सभी कांग्रेसवालोंका मेरे इस कथनमें विश्वास नहीं है। कांग्रेस एक जनतन्त्रकी संस्था है, उसमें सभी तरहके विचार रखनेवाले रह सकते हैं। इसलिए किसीको यह अधिकार नहीं है कि वह अपना विचार दूसरोंपर लादे और उसके अनुसार उनसे कामकी अपेक्षा रखे। जिन्हें अस्पृश्यता-निवारण अपना धार्मिक कर्तव्य मालूम होता है वे अन्य सब काम छोड़कर उसीमें अपना जीवन लगा दें, यह बिलकुल ठीक है; लेकिन इसके साथ यह भी ठीक है कि जो अस्पृश्यता-निवारणको कांग्रेसकी राजनीतिका एक अंग-मात्र मानते हैं, उनको भी पूरा अधिकार है कि वे कांग्रेसके एक कार्यक्रमके तौरपर उसे अमलमें लायें।

धर्म और कर्तव्य यह बहुत सूक्ष्म और सम्मिश्र चीज है। यह कोई बाजारकी वस्तु नहीं कि उसे यान्त्रिक तौरपर खरीदा और बेचा जा सके। इसे खोज निकालने के लिए लगातार आत्म-निरीक्षणकी जरूरत होती है। तत्त्वत. वह सब जगह और सब समय एक है, लेकिन उसका बाह्य रूप तथा उसका अमल व्यक्तिके अनुसार समय-समयपर बदलता रहता है। अगर हम सत्यके अनेक पहलुओंके इस रहस्यको अच्छी तरह समझ सकें तो विचार और अमलकी भिन्नताओंको हम अनुकूल दृष्टिसे देख सकेंगे। इसलिए उन दोनोंका भी मैं स्वागत करता हूँ, जो स्वतन्त्र रूपसे तथा जो कांग्रेसके एक कार्यक्रमके तौरपर अस्पृश्यता-निवारणका काम करते हैं।[1]

उन्होंने कहा, यही बात इस प्रश्नपर भी लागू होती है कि कांग्रेसजन किसानों और मजदूरोंका संगठन कर सकते हैं या नहीं। कांग्रेसजन ऐसा न करके भी कांग्रेस-जन रह सकते हैं। श्री एन० जी० रंगाको मैंने पहले ही सूचित कर दिया था कि अगर किसानों और मजदूरोंका अलग संगठन कायम किया गया तो उससे संघर्ष होगा और फलतः दोनों संस्थाएँ कमजोर होंगी।

[उन्होंने आगे कहा :] खुद मैं अब कांग्रेसका चौअन्निया सदस्य भी नहीं रह गया हूँ और फिर भी मेरा दावा है कि कांग्रेससे बाहर रहकर मैं उसकी अधिक सेवा कर रहा हूँ। ऐसा हर आदमी कर सकता है, लेकिन किसीको दूसरोंके लिए नियम तय करने या यह आशा करने का अधिकार नहीं है कि सब उसीके कदमोंपर

१. आगेका अनुच्छेद हिन्दू से लिया गया है।

१९२० में कांग्रेसके जरिये जब मैंने रचनात्मक कार्यक्रमको मुल्कके सामने पेश किया तबसे उसकी शक्तिमें मेरा विश्वास बढ़ गया है। आजतक उसमें जो तजुर्बा व जानकारी हासिल हुई उसकी बुनियादपर उसका क्षेत्र अब विस्तृत किया गया है। मेरा यह दावा है और उसे मैंने ऊँचे स्वरसे घोषित किया है कि मेरे पन्द्रहविधा कार्यक्रममें सब-कुछ आ जाता है तथा यदि इसपर सारे देशमें अमल होगा तो बगैर किसी अन्य कार्यक्रमके स्वराज्य स्वयं मिल जायेगा।

पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्तमें कांग्रेस मन्त्रिमण्डलके गठनका और राजनीतिक गतिरोध दूर करने के लिए भूलाभाई देसाई द्वारा किये जा रहे जिन प्रयत्नोंका समाचार प्रकाशित हुआ है उनका उल्लेख करते हुए महात्मा गांधीने कहा :[1]

फिलहाल मैं इन मुद्दोंके बारेमें चुप ही रहना ठीक समझता हूँ। संसदीय कार्यक्रमके फलस्वरूप, सम्भव है, राजनीतिक स्वराज्य मिल जाये, लेकिन अहिंसक स्वराज्य तो तभी सम्भव है जब रचनात्मक कार्यक्रमपर पूरा अमल हो।

यदि रचनात्मक कार्यक्रमपर सही भावनासे अमल किया जाये तो शासक जाति का कोपभाजन बनने की, बल्कि विधानमण्डलोंमें प्रवेशकी भी, जरूरत नहीं पड़े। लेकिन अगर संसदीय कार्यकी अनुमति दी जाये तो भी रचनात्मक कार्यक्रमका विशेष महत्त्व अपनी जगह हमेशा कायम रहेगा और देशकी आजादी सिर्फ इसीके जरिये हासिल हो सकती है।

यह प्रश्न किया जा सकता है कि क्या जनता रचनात्मक कार्यक्रमको अपनायेगी और उस तरीकेसे इसे चलायेगी जैसा कि मैं चाहता हूँ। मेरा जवाब यह है कि अगर लोग मेरी बात नहीं सुनेंगे तो इससे मेरे नुस्खेपर कोई असर नहीं पड़ता, जो कि बहुत ही अच्छा तथा काबिले अमल है।

इसी सिलसिलेमें मुझे पूछा गया है कि अस्पृश्यता-निवारण, किसान तथा मजदूर संगठन आदि काम कांग्रेसकी ओरसे करने के कारण डॉ० अम्बेडकर आदि दूसरे पक्ष-वालोंके लिए विरोध-प्रदर्शनका मौका मिलता है और इससे अस्पृश्यता-निवारण जैसे कामोंमें रुकावट पैदा होती है। इसलिए स्वतन्त्र रूपसे ये काम करना क्या अच्छा नहीं होगा?

इसपर मेरा कहना है कि अम्बेडकर-दलके लोग अगर इस तरह कुछ विरोध करें तो उससे हमें उत्तेजित नहीं होना चाहिए या उसकी वजहसे हमें काम बन्द भी नहीं करना चाहिए। हमें उनके दिलोंमें पहुँचकर उनकी भावनाओंको समझना चाहिए। हरिजनोंको जिन मुसीबतोंसे गुजरना पड़ा है, उनमें से अगर हमें गुजरना पड़ता तो हममें कितना कड़वापन आ जाता, और उस हालतमें हमारी अहिंसा जहाँतक टिक सकती, इसकी मैं कल्पना नहीं कर सकता। इसलिए ऐसे मौकोंपर हमें अपने अन्दर देखना चाहिए, और वहाँपर अगर अस्पृश्यताकी कुछ कसर रह गई हो तो उसे निकालना चाहिए। मेरा इसमें पूरा विश्वास है कि हिन्दू धर्मको अगर रहना है तो अस्पृश्यता

१. यह तथा आगेके दो अनुच्छेद *हिन्दू* से लिये गये हैं।

अगर चरखा संघको अपने बोझसे मुक्त होना है तो उसे ठीक प्रकारके कार्यकर्ता तैयार करने चाहिए, जिनकी कि इस वक्त बहुत कमी है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप सब लोग नई तालीमके उसूल समझे बगैर सेवाग्रामसे न जायें।

जिस तरह आपमेंसे हरेक अपने ध्येयकी पूर्तिके लिए अधीर है उसी तरह मैं भी हूँ। लेकिन मैं समझता हूँ, काम बड़ा मुश्किल है। भारतवर्ष बहुत लम्बे अरसेसे गुलाम चला आ रहा है। उसकी गुलामीकी तारीख अंग्रेजोंके राज्योंसे भी पहले की है। इसने हमारे व्यक्तित्वकी सारी मौलिकता तथा चेष्टावृत्तिको नष्ट कर दिया है और हमें निराशाकी बीमारीका मरीज बना दिया है। इन खोये हुए गुणोंके संचारके बिना रचनात्मक कार्यक्रम प्रगति नहीं कर सकता। अहिंसा तथा सत्यके द्वारा स्वराज्य-प्राप्ति तबतक केवल एक स्वप्न ही रहेगी जबतक कि हम रचनात्मक कार्यक्रमको सफल नहीं बनायेंगे। आजादी तो जरूर मिलेगी, वह आ रही है, परन्तु केवल राजनीतिक आजादीसे मुझे सन्तोष नहीं। इससे दुनिया तो बिलकुल सन्तुष्ट नहीं होगी, जो भारतवर्षसे बहुत बड़ी चीजोंकी आशा रखती है। मेरी कल्पनाकी आजादी का अर्थ है अपने भीतर परमात्माके राज्यको प्राप्त करना तथा इस संसारमें उसकी स्थापना करना।[1] मैं इस स्वप्नकी पूर्तिके लिये काम करते हुए मर जाना पसन्द करूँगा, भले वह कभी प्राप्त न हो। इसका अर्थ असीम धैर्य तथा सब्र है। यदि भारतवर्ष केवल राजनीतिक आजादी प्राप्त करने से सन्तुष्ट हो जायेगा और मेरे लिए कुछ अच्छा कार्य करने का नहीं रहेगा तो तुम देखोगे कि मैं हिमालयकी चोटी पर जा बैठूंगा और जो मेरी सलाह लेना चाहे उन्हें वहाँ मेरे पास आना पड़ेगा।[2]

इसके बाद गांधीजी ने कहा कि शेष प्रश्नोंके उत्तर अगले दिन दूंगा।[3] चर्चा समाप्त करते हुए उन्होंने कहा कि देशकी मौजूदा हालत देखकर आपको निराश नहीं होना चाहिए। मुझे इस बातकी खुशी है कि दासता और अन्य बाधाओंके बावजूद आपने कुछ हासिल करके दिखाया है और जो-कुछ आपने हासिल किया है उस पर मुझे सचमुच गर्व है।

चरखा संघका नवसंस्करण, पृ० १०४-९; बॉम्बे क्रॉनिकल, ८-९-१९४५, और हिन्दू, २७-३-१९४५

१. हिन्दू की रिपोर्टके अनुसार यहाँ गांधीजी ने इस प्रकार कहा: "मैं हर दृष्टिसे भारत के लिए सच्ची स्वतन्त्रता, रामराज्य चाहता हूँ और वह केवल रचनात्मक कार्यक्रमके जरिये ही प्राप्त किया जा सकता है।"

२. अगला अनुच्छेद हिन्दू से लिया गया है।

३. देखिए पृ० ३२६-२८।

चलेंगे। जिनका रचनात्मक कार्यक्रम-सम्बन्धी दृष्टिकोण भिन्न हो उनमें दोष निकालना तो जिस डालपर बैठे हों उसीको काटने-जैसा होगा।[1]

गांधीजी ने पहले दौरके सवालोंका उपसंहार, वे अक्सर जो बात कहा करते हैं वही कहकर किया, अर्थात् यह कि मैं तो यहाँ सिर्फ सलाह देने के लिए आया हूँ। जबतक मेरी सलाह दिल और दिमागको न जँचे तबतक किसीपर उसे मानने की मजबूरी नहीं है।

दूसरा प्रश्न यह पूछा गया कि क्या चरखा संघका पैसा खादी कार्यकर्त्ताओंको रचनात्मक कार्यक्रमकी दूसरी मदों अर्थात् खेती, ढोर-सुधार तथा नई तालीम आदिका शिक्षण देने पर खर्च किया जा सकता है, ताकि वे समग्र सेवा करने के योग्य बन सकें। मेरा उत्तर है कि "नही"। एक संस्थाके लिए इकट्ठा किया गया रुपया दूसरी संस्थापर खर्च नहीं किया जा सकता। चरखा संघके विधानके अनुसार चरखा संघ का पैसा खादी-कार्यके अतिरिक्त दूसरे कार्योंपर खर्च नही किया जा सकता। इसलिए खेती तथा गोपालनके शिक्षणका खर्च सम्बन्धित संस्थाको ही उठाना चाहिए वरना बहुत उलझन व गड़बड़ पैदा होगी। अगर एक संस्थाका रुपया दूसरी संस्थाको कर्जके रूपमें देना पड़े तो ठीक जमानतपर तथा वाजिब सूदपर देना चाहिए। ट्रस्टीका काम बड़ा कठिन तथा नाजुक होता है। मैं पचास सालसे कई संस्थाओंका ट्रस्टी रहा हूँ और मेरे संरक्षणमें हरेक संस्था फली-फूली है। मेरी सफलताका कारण मेरा महात्मापन नहीं है बल्कि मेरी व्यापारिक बुद्धि तथा हिसाब रखने में पूरी सावधानी है। सार्वजनिक संस्थाकी कामयाबी या नाकामयाबी एक या एकसे अधिक व्यक्तियोंकी तीव्र बुद्धिपर निर्भर नही करनी चाहिए वरन् वह उसके प्रबन्धकी शुद्धता तथा पक्की व्यापारिक नीतिपर निर्भर रहनी चाहिए। अगर आपने यह गुण पैदा कर लिये तो पैसा अपने-आप आपके पास आयेगा।

एक मित्रने सुझाया है कि खादी-कार्य शाखाओं द्वारा चलाये जाने के बजाय नई योजनाको समझकर समग्र ग्राम-सेवा करनेवाले कार्यकर्ताओंको एक निर्धारित समयमें सौंप दिया जाये। मैं इस सूचनासे सहमत हूँ परन्तु कोई मियाद मुकर्रर करने के हकमें नहीं हूँ, जिसमें खादी-उत्पत्तिका तमाम काम बन्द किया जाये। मैं यह अवश्य चाहता हूँ कि देहातोंमें जितनी खादीकी खपत हो वह वहीं देहाती स्वयं पैदा कर लें, जिसकी वजहसे तमाम आमद-रफ्तके खर्च निकल जायेंगे और खादी व्यापारिक प्रतिद्वन्द्वितासे ऊपर उठ जायेगी। यह काम नई तालीम द्वारा बहुत अच्छी तरह पूरा किया जा सकता है। नई तालीम तमाम क्षेत्रोंको आच्छादित करती है। इसका अर्थ यह है कि उसमें चुम्बक-जैसी शक्ति है, जिसके कारण वह हर प्रकारके बूढ़े, जवान व भिन्न प्रकृतिके लोगोंको अपनी तरफ खींचती है। जबतक कि यह शक्ति उसमें पैदा नहीं होती तबतक यह आत्मा-रहित शरीरके समान होगी।

१. यह और अगला अनुच्छेद दोनों *बॉम्बे क्रॉनिकल* से लिये गये हैं।

५१७. पत्र : मीराबहिनको

२५ मार्च, १९४५

चि० मीरा,[1]

पत्र न लिखने से तो पोस्टकार्ड लिखना बेहतर है। तुम कठिनाइयोंके बावजूद आगे बढ़ रही हो, यह जानकर खुशी हुई। यह जानकर भी खुशी हुई कि पी० ने वहाँ आकर तुममें प्रभुके मार्गपर चलने की आशा जगाई। अक्तूबरमें मेरे आने की उम्मीद रखो। बेशक, मासिक भत्ता देने का पूरा इरादा है। मेरा कार्यक्रम अनिश्चित है, सिवाय इसके कि मैं इसी महीनेकी ३१को बम्बई जा रहा हूँ। गर्मी तो खासी पड़ने लग गई है, फिर भी मैं ठीक हूँ।

स्नेह।

बापूके आशीर्वाद[2]

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६५०४) से; सौजन्य : मीराबहिन। जी० एन० ९८९९ से भी

५१८. पत्र : उत्तमचन्द गंगारामको

सेवाग्राम
२५ मार्च, १९४५

प्रिय उत्तमचन्द,

आपका पत्र मिला। रकमके पुनः रूपान्तरणपर आग्रह न करने के लिए बहुत धन्यवाद। मूलधनको हाथ नहीं लगाया जायेगा। ब्याजमें समय-समयपर कुछ और जोड़ते रहने की कृपा अवश्य कीजिएगा। ब्याजकी दरको साढे तीन प्रतिशतसे नीचे नहीं जाने दिया जायेगा। अगर वह नीचे गई तो आपसे परामर्श किया जायेगा। यदि चीजें बिलकुल अस्तव्यस्त ही नहीं हो जातीं तो ब्याजकी दर साढे तीन प्रतिशत से नीचे नहीं जायेगी।[3]

मुझे पूरी आशा है कि आप अपना स्वास्थ्य ठीक करेंगे। क्या आपने किसी प्राकृतिक चिकित्सकको दिखाया है? आज यदि महादेव जीवित होते और आपने उन्हे

१ और २. सम्बोधन और हस्ताक्षर देवनागरी लिपिमें हैं।

३. देखिए "पत्र : उत्तमचन्द गंगारामको", पृ० २९३ भी।

५१६. श्रद्धांजलि : हरमन कैलेनबैकको[1]

सेवाग्राम
२५ मार्च, १९४५

दक्षिण आफ्रिकाने एक अत्यन्त उदारमना नागरिक और उस उप-महाद्वीपके भारतीयोंने एक अत्यन्त स्नेही मित्र खो दिया है।

हरमन कैलेनबैककी मृत्युसे मैंने अपना एक घनिष्ठ और प्रिय मित्र खो दिया है। वे मुझसे अकसर कहा करते थे कि जब सारा संसार आपका साथ छोड़ देगा, उस समय भी आप मुझे अपना सच्चा मित्र पायेंगे और सत्यकी खोजमें आवश्यक हुआ तो मैं धरतीके छोरतक आपके साथ जाऊँगा। किसी समय वे सिर्फ अपने ही ऊपर ७५ पौंड प्रति-माह खर्च करते थे। लेकिन उन्होंने अपने जीवनमें इतना क्रान्तिकारी परिवर्तन कर लिया कि उनका निजी मासिक खर्च सिर्फ ८ पौंड रह गया। यह तबतक चलता रहा जबतक हम दोनों जोहानिसबर्गसे सात मील दूर एक कुटियामें रहते रहे। मेरे दक्षिण आफ्रिका छोड़ने के बाद उन्होंने बहुत हदतक जिन्दगीका अपना पहला तरीका फिर अपना लिया, हालाँकि बहुत-सी ऐसी चीजोंका त्याग उन्होंने जारी रखा जिन्हें उन्होंने सोच-समझकर छोड़ दिया था।

वे स्वर्गीय देशभक्त श्री गोपाल कृष्ण गोखलेके निकट सम्पर्कमें आये थे और श्री गोखले उनका बहुत आदर करते थे। यहाँ इस प्रसंगका उल्लेख अनुचित न होगा कि नेटालसे ट्रान्सवालकी ओर मेरे साथ कूच करते हुए हेनरी पोलकके साथ-साथ श्री हरमन कैलेनबैक भी गिरफ्तार किये गये थे।[2]

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २७-३-१९४५

१. हरमन कैलेनबैकका जोहानिसबर्गमें २५ मार्च, १९४५ को देहान्त हो गया था।

२. १० नवम्बर, १९१३ को; देखिए खण्ड १२, पृ० २६१ और ५०९ तथा खण्ड २९, पृ० ३३१।

चाहता। एक जिला इस कार्यके लिए काफी वड़ा है। उद्देश्य यह है कि एक देहात की आवश्यकताकी खादी उसी देहातमें विक जाये। सात लाख गाँवोमें से कितने ऐसे गाँव है जो इस वातका दावा कर सकते है? जिन देहातोमें खादीकी उत्पत्ति हो रही है वहाँकी कत्तिनें तथा बुनकर चरखा सघकी तमाम कोशिशोकें वावजूद उस उत्पत्तिका वहुत थोड़ा अंश स्वय इस्तेमाल करते है। यह खादीके आदर्शके विरुद्ध है। दो पैसा फी रुपया सूत लेने की शर्त ग्रामवासियोके लिए नही है। वहाँ खादी सूतके वदलेमें ही देनी चाहिए। क्या आप सूतकी शर्तको चालू करने से [इसलिए] डरते हैं कि आपकी शहरोंकी विक्री कम हो जायेगी। जवतक आप लोग इस डरको अपने दिलसे नही निकालते, आप खादीको मार डालेगे।[1]

फी रुपये खरीददारीके वदले आघ आने का सूत देने का नियम आम तौरपर वड़े शहरोंके लिए है और मै तो चाहूँगा कि अपनी जरूरतकी खादी सव लोग खुद ही कातकर तैयार करें। खादी सत्य और अहिंसाका प्रतीक है। सिर्फ सूतके ही वदले खादी खरीदने का नियम रखने से खादीधारियोकी संख्यामें कमी आ सकती है, लेकिन हमें अपना काम उसी लक्ष्यकी ओर आगे वढ़ाना चाहिए और अन्तमें हमें सफलता मिलेगी।

खादीने अपने लिए समाजमें एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर लिया है। अमीर लोग गरीवों द्वारा वनाई गई खादी खरीदने में गर्व अनुभव करते हैं। लेकिन यह काफी नही है। यदि आप खादीके क्षेत्रको यहीतक सीमित रखेंगे कि वह गरीवोको रोटी दे, तो खादी अहिंसा द्वारा स्वराज्य प्राप्त करने में सहायक नही हो सकती। मै यह नही चाहता। अगर सूत लेने की शर्तपर जोर देने के परिणामस्वरूप मै अकेला ही खादी पहननेवाला रह गया तो भी मैं इसकी चिन्ता नही करूँगा। आपने खादीको अहिंसा का प्रतीक माना है। आपने इसे स्वराज्य-प्राप्तिका साघन भी माना है। यदि परमात्मा की यही इच्छा है कि खादी मर जाये तो मैं इसे अपनी स्वाभाविक मौत मरने दूँगा, लेकिन आप इसे अपनी भीरुता तथा विश्वासकी कमीके कारण न मार डालें। जो लोग किसी कारणसे खुद नही कात सकते वे अपनी पत्नियों, माताओं, वहनों या नौकरोंसे घरमें कतवा लें। अघिक-से-अघिक वे अपने पड़ोसियोसे सूत ले लें, लेकिन कीमत देकर नही।[2]

इसके वाद उन्होंने श्री आर्यनायकम् और श्रीमती आशादेवी द्वारा सुलभ कराये गये कुछ आँकड़े[3] पेश किये। वे आँकड़े उनके लिए नये आयामोंको उद्घाटित करने वाले थे। वे इस वातके निश्चित प्रमाण थे कि नई तालीमके माध्यमसे गाँवोंमें खादीको कितनी तेजीसे दाखिल किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि अपनी

१. अगला अनुच्छेद २७-३-१९४५ के हितवाद से लिया गया है।

२. अगले दो अनुच्छेद क्रमशः बॉम्बे क्रॉनिकल और हितवाद से लिये गये हैं।

३. सेवाग्रामकी बुनियादी शालाके विद्यार्थियों द्वारा अपनी शिक्षाके प्रथम पाँच वर्षोंकी अवधिके दौरान काते गये सूतके

पैसा भेजा होता तो वे मुझे बताकर वही करते जो मैं चाहता। मै पता करूँगा कि कोई इस गुत्थीको सुलझा सकता है या नही।

आपका,
मो० क० गांधी

उत्तमचन्द गंगाराम
बम्बई बेकरी
हैदराबाद, सिन्ध

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५१९. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२५ मार्च, १९४५

चि० कृ[ष्णचन्द्र],

निराशा कैसे? यहां तो बहूत काम है तो भी [तुम्हें] नही मिलता है तो काम [अन्यत्र] कहां ढुढोगे? घासके गंजमें आदमी सुई ढुढे तो न मिले लेकिन घास ढूंढना पड़ता है क्या? काम तो तुमारी नजरके सामने पड़ा है। उसे दरगुजर करो यह जुदा बात।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५०५) से

५२०. भाषण : अ० भा० चरखा संघकी बैठकमें–२

सेवाग्राम
२५ मार्च, १९४५

श्री जाजूजी ने कहा है कि आंशिक सूत लेने की मात्रा दो पैसेसे बढ़ाकर फी रुपया एक गुण्डी अर्थात् ढाई आना कर दी जाये। यह शर्त बहुत नरम है। मैं तो इससे भी आगे जाना चाहता हूँ। पिछले दिनोंमें बम्बई खादीके लिए मैनचेस्टर था। दूर-दूर जगहोंकी बनी खादी यहाँ लाकर बेची जाती थी। श्री विट्ठलदास जेराजाणी की बिक्री-कुशलताके लिए उन्हें धन्यवाद देना चाहिए। उन्हीकी कोशिशसे बम्बईमें पहले स्वदेशी मालका संचार हुआ और उसके बाद खादी आई। लेकिन अब मैं समझा हूँ कि यह ठीक मार्ग न था। खादी जहाँ पैदा होती है वह पहले वहीं खप जानी चाहिए। अगर किसी जगह स्थानीय लोग अपनी जरूरतसे अधिक खादी तैयार करें तो वह जरूरतके निकटतम स्थानपर भेजी जा सकती है। अधिक-से-अधिक एक जिलेतक की सीमा होनी चाहिए या प्रान्ततक। मै तो प्रान्ततक नही जाना

५२१. प्रश्नोत्तर[1]

२५ मार्च, १९४५

प्र० १: चरखा संघ जैसी विधायक कार्य करने के लिए ही जो संस्था स्थापित की गई है, उसके कार्यकर्ताओंने कुछ जगह सबोटेज (तोड़-फोड़) जैसे आन्दोलनमें प्रमुखतः हिस्सा लिया है। यह निजी स्थिति है। तब सरकार ऐसी संस्थाकी ओर साशंक दृष्टिसे देखने लगी। और कुछ संस्थाएँ सरकारकी दमन-नीतिकी शिकार बन गई। ऐसी परिस्थितिमें कुछ दोष सरकारके मत्थेपर मढ़ देने में क्या भूल नहीं हो रही है?

उ०: कोई सेवक टेढ़े रास्तेपर चला गया इसलिये चरखा सघको दड देना बूरी बात थी। सरकारकी अनीतिका कुल दोप उनपर ही रखता हूं।

प्र० २: जिन कांग्रेस कार्यकर्ताओंका अहिंसा परका विश्वास पहले ही से इतना मजबूत नहीं था, उनका वह भी विश्वासगत सबोटेजके आन्दोलनमें साफ नष्ट हो गया। और आगे चलकर जब कभी मौका मिल जाये, अधिक मात्रामें अधिक बड़े पैमानेपर और पूरे संगठनके साथ सबोटेजके तरीके किस तरह कामयाब किये जायें, और उसके लिये कौन-सी तैयारियाँ करनी होंगी; इन शिखरों [विचारों?] से उनका दिल भरा हुआ है। इन लोगोंको ऐसे विचारोंसे किस तरह परावृत्त किया जाये?

उ०: जिन लोगोंने अहिंसापर विश्वास खो दीया है वे विश्वासु लोगोंके कामसे ही वापिस आवेंगे। उनको डांटने से कभी नही आवेंगे। वे जैसा समजते है ऐसा ही चलते हैं। जितने वे कच्चे इतने ही हम पक्के बनें। सुर्यके उदय होने से अधेरा जाता है।

प्र० ३: आजकल कांग्रेसकी तरफसे जो विधायक कामेटियाँ नियुक्त की जा रही हैं उनमें उक्त (नं० २ में) विचारोंके लोग भरे हैं। कुछ निष्ठावान लोग भी हैं। ऐसे मिश्र विचारों वालोंकी कमेटीके जरिये विधायक कार्य बढ़ सकेगा। ऐसे क्या आप मानते है?

उ०: विधायक कार्य बढ सकेगा, अगर जो श्रद्धालु है वे अपनी श्रद्धाको जबानसे नही लेकिन अपने कामोंसे बता सकें।

प्र० ४: ऐसी परिस्थितिमें क्या यह अधिक इष्ट नहीं होगा कि अहिंसापर निष्ठा रखनेवाले अपनी कार्य भागल [अलग?] और स्वतन्त्र होकर करें?

उ०: ऊपरसे और मेरे व्याख्यानमें भी उसका उत्तर आ गया।

१. प्रश्न पुण्डलीक कातगड़ेने पूछे थे।

प्रशिक्षण अवधिके दौरान बच्चों द्वारा तैयार की गई खादी अपने पूरे गाँवके इस्तेमालके लिए काफी होगी, और साथ ही वह कपड़ा सबसे सस्ता भी होगा।

हमें अपना खादी-प्रेम बढ़ाना चाहिए और ग्रामीण जनोंकी सेवा करनी चाहिए। आपको अपने सभी आश्रितोंको खादीधारी बना देना चाहिए।

मैंने खादीको सूर्य कहा है और अन्य ग्राम उद्योगोंको सूर्य-मण्डलके ग्रहोंकी उपमा दी है। खेती सूर्य-मण्डलमें एक ग्रह है परन्तु यह सूर्य नहीं हो सकती। क्योंकि खेती एक स्वतन्त्र धन्धा नहीं है। लोगोंका जमीनपर अधिकार नहीं है। सरकार अपने छोटे अफसरों द्वारा उसका नियन्त्रण करती है। लोगोंमें आत्मविश्वास नहीं रहा। बुरे-बुरे रिवाजोंके कारण जमीनके छोटे-छोटे टुकड़े हो गये है। अगर मैं पचास साल और जिन्दा रहा और लोगोंका जमीनपर पूरा अधिकार हो गया तो उस समय मैं सूर्य-मण्डलमें खेतीको स्थान देने पर पुनर्विचार करूँगा। मैं यह कह सकता हूँ कि अकेली खेती बुद्धिका विकास नही कर सकती, जितनी कि खादी तथा अन्य ग्राम उद्योग कर सकते हैं। जैसा कि स्वर्गीय मधुसूदनने कहा है कि बैलोंकी लगातार संगतिसे लोग बैलों-जैसे हो जाते हैं।

मैंने आपको दो दिनमें जो-कुछ कहा है उसका सार यह है कि यदि आपको अपने आदर्शमें विश्वास है तो आपको इसके लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देनी चाहिए। शास्त्रोंने पुकार-पुकारकर कहा है कि सत्य की ही विजय होती है। यह एक सार्वभौम सिद्धान्त है। यदि जीवनमें कभी यह असफल होता दिखाई दे तो इसका अर्थ यह नहीं है कि यह सिद्धान्त अपूर्ण है। यह अमल करनेवाले व्यक्तिकी अपूर्णता सिद्ध करता है। जब आप इस सिद्धान्तको समझ जायेंगे तो आपमें वह अनासक्ति आ जायेगी तथा डरसे मुक्ति मिल जायेगी, जो कि किसी आदर्शकी पूर्तिके लिए उतनी ही आवश्यक है जितना आदर्शमें विश्वास।

चरखा संघका नवसंस्करण, पृ० १०९-१२; **बॉम्बे क्रॉनिकल**, ८-९-१९४५, और **हितवाद**, २७-३-१९४५

५२२. तार : हन्ना लैजरको

२६ मार्च, १९४५

हन्ना[1]
मार्फत मणिलाल
फीनिक्स (डर्बन, दक्षिण आफ्रिका)

चाचाकी मृत्युपर शोक नही करना है। उन्होने अपना कर्तव्य किया। उनका सेवा-कार्य जारी रखो। सबके प्रति मेरी समवेदना है। स्नेह।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५२३. पत्र : गोसीबहिन कैप्टेनको

सेवाग्राम
२६ मार्च, १९४५

प्रिय बहिन,[2]

मुझे खुशी है कि तुम मानेकजीकी खातिर वही रह गई। मैं आशा करता हूँ कि वे बीमारीको झेल लेंगे और फिरसे चुस्त-दुरुस्त हो जायेंगे। यदि तुम बम्बईमें मेरे पास नही आ सकती तो चिन्ताकी कोई बात नही। लिख-भर देना और मैं शामिल हो जाऊँगा। मैं बेहोश नही हुआ था। बस, पल-भरके लिए भूखसे विकल हो गया था।

तुम दोनोंको प्यार।

बापू

गोसीबहिन कैप्टेन
१२२, मर्जबान वाड
अन्धेरी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१ हरमन कैलेनबैककी भतीजी
२. यह गुजरातीमें है।

प्र० ५: जिनका अहिंसापर विश्वास नहीं है और इसीलिए जिनसे अहिंसा पर खड़े किये हुए कार्यमें कुछ बन ही नहीं सकता, ऐसे लोगोंकी हालत विधायक कमेटीमें बहुत ही बूरी होती है; और परिणामस्वरूप उनपर बुरा असर हो जाता है। ऐसी दशामें क्या यह ठीक नहीं होगा कि उनकी कार्यवाईको पार्लियामेंटरी एक्टिविटिज [संसदीय प्रवृत्तियों] के क्षेत्रमें अवकाश दिया जाये?

उ० : हम किसीको पारला [पार्लियामेंट] में जाने से कहां रोकते है। हम नही जाते हैं इतना काफी है।

प्र० ६: कांग्रेसके अधिकार ग्रहण करने से बेसिक एजुकेशन [बुनियादी तालीम] रिश्वत या घूस खाना बन्द करना, अन्न-परिस्थितिमें सुधार और देहातियोंकी आपत्तियां दूर करना, आदि कामोंको क्या अधिक अवकाश नहीं मिल सकेगा? ये सब काम स्वावलम्बन ही से होने चाहिए थे। लेकिन आजकी कमेटियोंसे तो वे बन नहीं सकते हैं। कांग्रेसके अधिकार ग्रहण करने से क्या आजकी परिस्थिति सुधरेगी नहीं?

उ० : ऐसा हो भी सके न भी हो सके। जैसे आदमी जावे और आम अभिप्राय कैसा, उसपर निर्भर है।

प्र० ७: हुदलीके कुछ लोग एक कम्पनी बनाकर हुदलीमें एक आइल इंजिन लाकर इलेक्ट्रिसिटिकी व्यवस्था कराना चाहते हैं। इलेक्ट्रिसिटि पर कुछ धन्धे वहां शुरू करने का उनका आज तो विचार नहीं है। देहातमें और खासकर हुदलीमें इलेक्ट्रिसिटि लाने के लिए क्या मैं अनुकूल राय दे सकता हूं? और उसमें मदद दे सकता हूं?

उ० : मैं तो इसका सख्त विरोधी हूं।

मेरे उत्तर छापने के लिये नहीं हैं मित्रोंको बता सकते हैं।

बापु

[पुनश्च :]

मैंने दोबारा नहीं पढ़ा। गलती सुधारना या सुधरवा लेना।

प्रश्नोत्तरकी फोटो-नकल (जी० एन० ५२२७) से

व्यक्ति इसे स्वीकार कर लेता है तो तुम्हे उसे अपवाद समझकर जाने देना चाहिए, लेकिन यदि अपवाद नियमको निगलने-जैसा हो तो तुम्हें नियममें सुधार करना चाहिए। तुमने जो लिखा है उससे मैं समझ गया हूँ कि अपवाद नियम को खाये जा रहे हैं। यह होटल तो है ही, लेकिन उससे कुछ ज्यादा भी है। होटल वह कि जहाँ लोग पैसा देकर रहते और खाते हैं तथा जिसे जिस चीजकी जरूरत होती है वह विना संकोच मँगवाकर ले लेता है। यहाँ भी ऐसा ही होना चाहिए। जैसे प्रत्येक होटलका अपना नियम होता है, वैसे ही यहाँ भी होगा ही — जैसे हम यहाँ लोगोंको मांस नही देंगे, उनकी माँगके मुताविक मसाले नही देंगे। शकरीवहिनकी रसोई अलग होने दो। जो रसोई अलग करना चाहे उसे अलग करने दो। जो लोग वहाँ स्थायी रूपसे रहनेवाले हो उनमें से हरएकसे मिलकर उनकी इच्छा जान लो और वादमें नियम वनाओ और फिर उन नियमोंको सवके सामने पास कराओ, और जो उन्हे स्वीकार करे उनसे उनका पालन करवाओ। कामलेके वारेमे मुझे आज अनायास ही मालूम हुआ। उसे तो पेचिश है। मैंने तो उसे आज ही जाने के लिए कहा है। उसे पहले ही चले जाना चाहिए था। गुरवख्शानी और विमलावहिन अलगसे भोजन करते है, यह तो मुझे तुम्हारे पत्रसे पता चला। कौन अलग भोजन करता है और क्यो करता है, इसका हिसाव तुम्हारे पास होना चाहिए। तुम तो अन्धेरगर्दी चलने देते हो। ऐसा कैसे चल सकता है? मुझे लगता है कि अव तुम्हारे मार्गदर्शनकी सारी वातें इसमें आ गई है।

अव सुशीलावहिन जो सलाह देती है, उसपर विचार करो। एक थाली, पानीके लिए प्याला, दो कटोरी और एक चम्मच। थाली, कटोरी और प्यालेपर कलई होनी चाहिए। चम्मचकी वात मेरे गले नही उतरती। दो कटोरियोंकी वात कदाचित ठीक हो, हालांकि मुझे पूरा भरोसा नही है। सब्जीपर घी नही चलेगा। कदाचित रोटीपर भी नहीं चले। यदि शाक कटोरीमे हो तो उसमें घी डाला जा सकता है। लेकिन मैंने कई जगहोपर एक ही कटोरी देखी है।

इसमें मैं कोई निर्णय नही दे रहा हूँ। मै स्वयं तो एक ही कटोरी दूं। लेकिन कोई निर्णय नही दे रहा हूँ।

तुम्हारी पोथीमें मेरे वारेमें जो लिखा है उसे अलग करके मुझे देने की वात तुमने कही थी। मेरे जाने से पहले मुझे दे देना।

स्थायी रूपसे रहनेवाले सभी लोगोंसे एकान्तमें वात करना, नियम वनाना और सवके सामने उनपर चर्चा करना — यह निर्णय तुरन्त अमलमें लाने के लिए है। अलग रसोईकी वात मेरे आने के वाद। नियमोके वारेमें मुझे वताना। जो लोग आज से ही अलग रसोई करना चाहे उन्हें करने दो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८६१) से। सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

५२४. पत्र : भूपेन्द्र नारायण सेनगुप्तको

२६ मार्च, १९४५

प्रिय भूपेन,

मैं अब शीघ्र ही बम्बई प्रस्थान कर रहा हूँ। मेरे सेवाग्राम लौट आने पर तुम बेशक वहाँ आकर कुछ दिन मेरे साथ रहो।

तुम्हारा,
बापू

श्री भूपेन्द्र नारायण सेन [गुप्त]
९९/२, बालीगंज प्लेस
पो० आ० बालीगंज
कलकत्ता

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १००६७) से

५२५. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

[२६ मार्च, १९४५][1]

चि० मुन्नालाल,

यह तुम्हारे मार्गदर्शन के लिए है। नियम तो होना ही चाहिए और नियमका पालन भी किया जाना चाहिए। ये पाँच दिन तो किसी-न-किसी तरह निकाल लो। बाकी तो जब मैं वापस आऊँगा तब देखेंगे। मेरा विचार तो दो रसोईघरोंका है। तुम्हारी जगहपर यदि मैं होऊँ तो तुम जो लिखते हो वह सब मैं सँभाल लूँ और उसे अच्छी तरह से करूँ। ऐसा मैंने किया भी है, लेकिन इसका मतलब यह नही कि ऐसा कोई नियम है कि जैसा मैंने किया वैसा ही तुम भी करो तो वह फलेगा ही। तुम्हें जैसा अच्छा लगे वैसा ही करना चाहिए लेकिन शर्त यह है कि तुम्हें इस बातका विश्वास होना चाहिए कि तुम सत्य और अहिंसाका पालन कर रहे हो। तुमने जितने लोगोंके नाम दिये हैं वे सब नियमका पालन नहीं करते हैं। इन सबसे तुम्हें एकान्तमें बात करनी चाहिए और इसका कारण जानना चाहिए। यदि कोई

१. मुन्नालाल गं० शाहका पत्र, जिसके उत्तरमें यह पत्र लिखा गया था, गांधीजीको २५ मार्चको सवेरे ५ बजकर १५ मिनटपर दिया गया था और यह पत्र मुन्नालालको २६ मार्चको सवेरे ६ बजकर १५ मिनटपर प्राप्त हुआ था। इसीपर से तारीख तय की गई है।

शायद बताये। अभी तो खैर मैं जा रहा हूँ। इस बीच बर्तनोका ठीक ही रहेगा। लेकिन मेरे लौटने से पहले विचार कर लेना। लकड़ीके जरूर बनाये जा सकते हैं। दक्षिण आफ्रिकामें हम कैदी काठके ही बनाते थे। काठ और चाकू जेलसे मिलते थे।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८६३) से। सौजन्य: मुन्नालाल गंगादास शाह

५२७. पत्र : कंचन मुन्नालाल शाहको

सेवाग्राम
२६ मार्च, १९४५

चि० कंचन,

तू बीमार पड़ गई, यह मुझे बिलकुल अच्छा नही लगता। लेकिन तू हिम्मत से काम ले रही है, यह मुझे बहुत पसन्द आया है। मुझे लिखती रहना, खूब स्वस्थ हो जाना और खूब सेवा करना। यहाँ अच्छी गर्मी पड़ रही है। इस समय यहाँ बैठकें हो रही हैं। मेरी तबीयत ठीक है। मुझे ३० को बम्बई जाना है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२६७) से। सी० डब्ल्यू० ७१८६ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गंगादास शाह

५२८. पत्र : अमतुस्सलामको

सेवाग्राम
२६ मार्च, १९४५

चि० अ० स०,

मैंने तो तुझे बराबर खत लिखे है, कंचनको भी। तुमको न मिले तो क्या करूं? तेरी तबीयत इतनी बिगड़ी सो तो अच्छा नही कहा जाय। कैसे भी हो तुझे अच्छा होना है और जबतक छूटी न मिले दोनोंको वही रहना चाहीये। मुझे लिखा कर। लावण्य चंदा बहादुर है। मेरी उमीद है वह अच्छी हो गई होगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९४) से

१२६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२६ मार्च, १९४५

चि० [मुन्नालाल],

मेरे बम्बई जाने से पहले यह हो जाये, तो अच्छा हो।[1] लेकिन इसके लिए अपनी नींद मत हराम कर बैठना।

सुशीलाबहिन वाली समस्या सुलझ गई, यह जानकर प्रसन्न हुआ। मैं सफल हो गया, इसमें किसीके लिए कोई मार्गदर्शन नहीं है, लेकिन इससे मनुष्य प्रोत्साहन प्राप्त कर सकता हूँ। मेरी सफलताके अनेक कारण हो सकते हैं। मेरी नजरमें उसका मुख्य कारण मेरी अहिंसा है। तुम रसोईघरके लिए नहीं बनाये गये हो, यह तुम्हारे दृष्टिकोणसे सही है। जब तुम अनासक्त हो जाओगे, तब ऐसा नहीं कहोगे। सच पूछो तो जो काम हमारे ऊपर आ जाता है, उसके लिए हम बने होते ही हैं। खूबी यह है कि किसी कामके पीछे हम नहीं दौड़ते, बल्कि वह काम बिना बुलाये हमारे पास आता है। नौकरोंको अपने सगे भाई-बहिन मानोगे तो कभी असफल नहीं होगे। कलकी खिचड़ी कच्ची थी। जब मनुने नहीं खाई, तो मैंने मसलकर देखी। मुझे कच्ची लगी, इसलिए मैंने इशारेसे कहा, "छोड़ दे"। अगर मैं आग्रह करता तो वह खा जाती और बादमें उसका पेट दुखता। सबके खा लेने पर भी वह इस बातका सबूत नहीं होता कि खिचड़ी पक गई थी।

मगनदीपके बारेमें मैंने कालुखानको समझा दिया। औघवाली बात मैं समझ गया। मुझे लगता है, अब कुछ बाकी नहीं रहा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

बर्तनोंपर नाम खुदवाने से बेहतर होगा, बर्तनोंपर संख्या डलवा देना। जेलमें यही रिवाज है। संस्थाओं में भी है और बर्तन खरीदने के बजाय कोई अन्य उपाय निकालो। अन्तमें दोने तो मिल ही सकते हैं। मिट्टीके बर्तन सस्ते पड़ें तो उनका उपयोग किया जाये। काठका चमचा अपने लिए प्रत्येक व्यक्ति बना सकता है। हम सिखा भी सकते हैं। बहुत आसानीसे सीखा जा सकता है। गरीब आदमी क्या करेगा, यह सोचकर कोई युक्ति खोजना। स्थायी निवासियोंके साथ परामर्श करो। मोहनसिंह

१. देखिए पिछला शीर्षक।

५३१. पत्र : तेजवन्तीको

सेवाग्राम
२६ मार्च, १९४५

चि० तेजवंती,

साथकी दो चिट्ठी पढो। सोहनलालजी यही है। तुमको वहां छात्रवृत्ति मिलती है। इतनी बहने हैं। तो तुमारा धर्म अब वहा रहने का और उपरीओको[1] संतोष देना है। इस वक्त यहा गरमी खूब है और कमसे कम दो मास पडेगी। बादमें वहां अच्छा काम करोगी तो यहाँ बुलाउंगा। अब तो मुझे मुंबई जाना होगा। कितना ठहरना होगा उसका पता भी नही है। मेरी राय है दत्तचित्त होकर वही काम करो। अक्षरज्ञान भी अच्छी तरह लो।

बापुके आशीर्वाद

तेजवंतीबहन[2]
अ० भा० च० सं० शाखा
आदमपुर
पंजाब

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३२. पुर्जा : गोप गुरबख्शानीको

२६ मार्च, १९४५

प्रार्थना अंतरकी आह है। वह फलदायक तब ही हो सकती जब भीतरसे निकलती है। लेकिन जो फलके लिये प्रार्थना करते हैं वे प्रार्थना जानते ही नहीं।[3]

बापुके आशीर्वाद

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० १३३२) से

१. वरिष्ठोंको

२. नामके अतिरिक्त पतेका शेष हिस्सा अंग्रेजीमें है।

३. गोप गुरबख्शानीने पूछा था : "प्रार्थना क्या है और इसे कैसे फलदायक किया जा सकता है?"

५२९. पत्र : कान्तिलाल और सरस्वती गांधीको

२६ मार्च, १९४५

चि० सुरु और कांती,

दोनोंके खत मिले। हरिलाल पहोंचा अच्छा हुआ। तुमारे तो सेवा करना ही है। बाप है कैसा भी हो। अच्छा हो जाये तो ठीक होगा। [सुरु] तू परीक्षामें पास हो जायगी।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

कांती मित्रोंके साथ आश्रममें तो रह सकता है। मै अगर कहीं जाउं तो क्या होगा नही कह सकता।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१८४) से। सी० डब्ल्यू० ३४५८ से भी; सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

५३०. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२६ मार्च, १९४५

चि० कृ[ष्णचन्द्र],

अहिंसाका भक्त पास निराशा आ ही नहीं सकती। निर्णय नहीं कर पाते इसमें भूलका डर है। भूल हो तो भूल लेकिन शीघ्रतासे एक निर्णय कर डालें। भूल होगी तो सुधारेंगे।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५०६) से

सकता है। प्रार्थनामें भाग लेने के लिए तुम्हें लोगोंको एक-एक करके प्रशिक्षण देना चाहिए। अगर लोग इतना समय न दे सकें, तो जो सुरमें गा सकते हैं वे ही गायें। असल बात यह है कि इतने वर्ष हो गये, प्रार्थनाका रंग अभीतक जमा ही नहीं। सवेरेकी उपस्थिति तो नही के बराबर मानी जा सकती है। लेकिन अभी तुम इसके सम्बन्धमें प्रयत्न मत करना। अगर [गीताके] पारायणमें कोई शामिल न हो, तो पारायण बन्द कर देना। बाकी कार्यक्रम पूरा कर सको तो काफी होगा। सम्मिलित पारायणकी खूबी तुम समझी नही हो, इसलिए तुम उसका वर्णन नहीं कर सके। सम्मिलित पारायणमें प्रत्येकको साँस लेने का अवकाश मिल जाता है लेकिन तब भी लगता ऐसा है जैसे सब गा रहे हैं। लेकिन यह तो मैंने अनुभवकी बात कही। अब अन्य संस्थाओंमें पूछताछ मत करना। मेरे जाने के बाद भी आवासकी तंगी बनी रहेगी क्या? हरिइच्छाके बारेमें मैं देख लूंगा। भापसे पानी बनाना आसान होता है। यह हमें करना चाहिए। मोहनसिंहसे मदद लेना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८६६) से। सौजन्य: मुन्नालाल गंगादास शाह

५३५. पत्र: सीता गांधीको

२७ मार्च, १९४५

चि० सीता,

आज इतना ही लिखूंगा। सपनोंसे घबराती क्यों है? रोना बिलकुल नहीं चाहिए। सपने अपचकी वजहसे आते हैं। कभी-कभी अशान्तिके कारण भी आते हैं। कभी-कभी हम अनजान चिन्ता करते रहते है, उससे भी सपने आते हैं। जब ऐसा हो, तब रामनाम लेना चाहिए। इसे रामबाण दवा समझना।

तू मुझे खेना सिखाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९४७) से

५३३. पत्र : नरगिसबहिन कैप्टेनको

सेवाग्राम
२७ मार्च, १९४५

प्रिय बहिन,[1]

तुम्हारा पत्र मिला। मै पंचगनी जाऊँ या नही, इसका निर्णय वम्वईमे किया जायेगा। उम्मीद है, तुम सव मजेमे होगे।

तुम सबको प्यार।

बापू

नरगिसबहिन
डैनलैविन लॉज
पूना ६

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३४. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२७ मार्च, १९४५

चि० मुन्नालाल,

हम अपनी जिन आदतोंको खराब मानते है, उन्हे सुधारने का हमें प्रयत्न करना चाहिए। तुम्हारी कलम दौड़ती है। पहले उसे नियन्त्रित करो और तव उसे चाहे पर्वतपर चढ़ाओ।

मै तो आदर्श ही बता सकता हूँ न? उसतक पहुँचना, न पहुँचना तुम्हारा काम है। तुम्हारी सीमाएँ मै कैसे आँक सकता हूँ? जहाँतक मुझसे बनेगा, मै उनसे तालमेल बैठाऊँगा। चप्पल शायद फाजिल नहीं होगी। तुम्हे अंगोछा मिलेगा। उसे लुगी नही कह सकते। लुंगीका एक लक्षण यह होता है कि उसकी लांग नही लगाई जा सकती। भणसाली और बालकृष्ण लुगी पहनते हैं। चप्पलका लोभ छोड़ देना। मेरे पास फाजिल है ही नही।

पुस्तकोंके बारेमे जव मै लौट आऊँ तब। जो मेरे पास पड़ी है, उनका उपयोग करना। टिप्पणी लिखना और उनकी नकल मुझे देना। लकड़ीकी खड़ाऊँ सस्ती होती हैं और उन्हें बनाना आसान होता है। उनमें चमड़ा या पट्टी या कपड़ा लगाया जा

१. सम्बोधन गुजरातीमें है।

५३८. पत्र : गोप गुरबख्शानीको

२७ मार्च, १९४५

चि० गुरबकसानी,

अमृत कौरका खत साथमें। तुम्हारे प्रमाणपत्र क्यों चाहीये। सत्यार्थीको अपना सत्य ही प्रमाणपत्र है। प्रमाणपत्र लेना बहुत बूरी आदत है। मैंने थोडे असँतक मोह रखा लेकिन छोडने को ५५ वर्ष हुआ। मेरा तो न लो लेकिन किसीका मत लो। मत मा . . .[1] कि अपने सत्य और अहिंसापर झूलो। मुझे लिखा करो। हिंदुस्तानीमें लिखो। दोनों लिखें, विमला लिख सके तो।

बाकी राजकुमारीके खतसे जानोगे।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० १०५७९) से

५३९. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
२७ मार्च, १९४५

चि० अमृत,

यह खत दा० गुरबख्शानी और उनके पत्नी विमलाबहन देंगे। दोनों लिखे-पढे है। दोनों बड़े कुटुंबके है। मेरे पास आने के लिये सरकारी काम छोडा है और विलासी जीवन भी। पत्नी इस गरमीको बरदास्त नही कर सकती। शायद गर्भवती भी है। सीमलामें रहे है। सीमला आते है। कोई जाहर काममें लगा सकती है तो लगाओ। उनको कुछ दरमाया देना पडेगा। अगर उनका उपयोग नही है तो साफ-साफ कह दो। सेवामें महेरबानी जगह नही है। यहां पेखाना साफाईसे शरु किया था।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ४२७२) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७९०४ से भी

१. साधन-सूत्रमें अस्पष्ट है।

५३६. पत्र : अमृतकौरको[1]

सेवाग्राम
२७ मार्च, १९४५

बहुत लोभ पापका मूल बनता है। इतना याद रखके मेरे पास हमेशा कुछ लिखने की आशा करो। सच्ची मित्रता या सच्चा स्नेह न कुछ मांगता है न कुछ आशा करता। देखो बाइबल। उसमे भी ऐसे वचन है।[2]

स्नेह।[3]

बापू[4]

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ४२०४) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७८४० से भी

५३७. पत्र : ई० डब्ल्यू० आर्यनायकम्‌को

सेवाग्राम
२७ मार्च, १९४५

चि० आर्यनायकम्,

यह खत दोनोंके लिये है। देवकी पढाई एप्रिलमें पूरी होगी। मै गेरहाजर हूंगा तो क्या करना? ऐसा देव पूछता था। तुमारा अभिप्राय मुझे दे दो तो मैं स्थिर सलाह दे सकुं।

सब संस्थाके प्रतिनिधिकी सभा कब होगी? होनेवाली तो है ना?

आजके तारसे पाता हुं कि तुम नहीं जाओगे तो मुंबईमें कोरम नही होगा। तो भी अगर यहां काम है तो उसे छोडकर तुमारे आना ऐसा मै नही कहूंगा।

बापुके आशीर्वाद

तालीमी संघ
सेवाग्राम

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह अमृतकौरके नाम सुशीला गांधीके पत्रके नीचे लिखा हुआ है।
२. शायद तात्पर्य "१, कॉरिन्थियन्स, १३" से है।
३ और ४. ये अंग्रेजीमें हैं।

५४२. तार : जालभाई रुस्तमजीको – मसौदा

वर्धागंज

[२७ मार्च, १९४५ या उसके पश्चात्][1]

जालभाई रुस्तमजी
७४, विक्टोरिया स्ट्रीट
डर्बन

नवजोतके अवसरपर आशीर्वाद

बापू

मूल अंग्रेजीसे : प्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य : प्यारेलाल

५४३. एक सन्देश

सेवाग्राम

२८ मार्च, १९४५

(१) कातो, समजबूझकर कातो; कातें वे खद्दर पहनें, पहनें वे जरूर कातें।

(२) 'समज बूझकर' के मानी है कि चर्खा यानि कताई अहिंसाका प्रतीक है। गौर करो प्रत्यक्ष होगा।

(३) कातनेके मानी है: कपास खेतसे चुनना, बिनौले बेलनसे निकालना, रुई तुनना, पुनी बनाना, सूत मनमाना अंकका निकालना और दुबटाकर परेतना।[2]

मो० क० गांधी

चरखा संघका नवसंस्करण, पृ० ३ पर प्रकाशित प्रतिकृतिसे। सी० डब्ल्यू० ९८९७ से भी, सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

१. यह तार जालभाई रुस्तमजीके २७-३-१९४५ के तारके उत्तरमें भेजा गया था। अपने तारमें जालभाई रुस्तमजीने अपनी भतीजीके नवजोत संस्कारके अवसरपर आशीर्वाद माँगा था।

२. मसौदेके लिए देखिए "पत्र: श्रीकृष्णदास जाजूको, पृ० २९७।

५४०. पत्र : प्रभाकर पारेखको

२७ मार्च, १९४५

चि० प्रभाकर,

दो मिनिट ये और प्रार्थनाके दूसरे हिस्सेमें मन लगना ही चाहिए। इसका मतलब यह नहीं कि हम कोई पारमार्थिक बातमें मन नही लगा सकते है। सो तो होगा ही।

राम नाम या ओंमूमें मन लगाने का अर्थ क्या? हां, पारमार्थिक वस्तुके बारेमें हम मनको धोका न दें। इसलिए तो मैंने पूछा क्यों 'गीता' नही जानते। इसपिताल के बारेमें कोई दूसरे समय।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०२१) से। सी० डब्ल्यू० ९१४५ से भी; सौजन्य : प्रभाकर पारेख

५४१. पुर्जा : गोप गुरबख्शानीको

२७ मार्च, १९४५

सच्चा और मौलिक इतिहास लोगोंका लिखकर सेवा कर सकता है। उन्नति है तो उन्नति बतावेगा, अवनति देखे तो अवनति बतायेगा।[1]

बापुके आशीर्वाद

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० १३३३) से

१. गोप गुरबख्शानीने लिखा था: "इतिहासकार देशकी सेवा किस तरह कर सकता है और हिन्दुस्तानकी तरक्कीकी तारीख कैसे लिख सकता है?"

५४६. पत्र : कलकत्ताके बिशपको

सेवाग्राम
२८ मार्च, १९४५

प्रिय मित्र,

सुधीरने मुझे आपका स्नेह-भरा पत्र दिया है। आपके इस कथनसे मैं सहमत हूँ कि आग्रह अधिकारोंपर नहीं बल्कि कर्त्तव्योंपर होना चाहिए और हमें अपने पड़ोसियोंसे उतना ही प्यार करना चाहिए जितना हम खुद अपनेसे करते हैं।

सस्नेह,

आपका,
मो० क० गांधी

मेट्रोपोलिटन
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५४७. पत्र : डी० एल० बनर्जीको

सेवाग्राम
२८ मार्च, १९४५

प्रिय प्रोफेसर,

आपके दो लेखोंके लिए आपका धन्यवाद। मुझे पिछला लेख भी मिल गया था।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

प्रो० डी० एल० बनर्जी
बख्शी बाजार
ढाका

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५४४. तार : वियोगी हरिको

सेवाग्राम
२८ मार्च, १९४५

वियोगीजी
हरिजन निवास
किंग्सवे
दिल्ली

सत्यवतीके स्वास्थ्यके बारेमें तार दो। क्या उसे चाँदरानीकी[1] सेवाओंकी जरूरत है?

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५४५. पत्र : शामदास पी० गिडवानीको

सेवाग्राम
२८ मार्च, १९४५

प्रिय शामदास,

आपका तार और दो पत्र मिले। मैं हस्तक्षेप नहीं कर सकता। कांग्रेसजन स्वयं ही तय करें।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

शामदास पी० गिडवानी
न्यू टाउन, कराची

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. ब्रजकृष्ण चाँदीवालाकी पत्नी

५४४. तार : वियोगी हरिको

सेवाग्राम
२८ मार्च, १९४५

वियोगीजी
हरिजन निवास
किंग्सवे
दिल्ली

सत्यवतीके[1] स्वास्थ्यके बारेमें तार दो। क्या उसे चाँदरानीकी सेवाओं की जरूरत है?

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५४५. पत्र : शामदास पी० गिडवानीको

सेवाग्राम
२८ मार्च, १९४५

प्रिय शामदास,

आपका तार और दो पत्र मिले। मैं हस्तक्षेप नहीं कर सकता। कांग्रेसजन स्वयं ही तय करें।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

शामदास पी० गिडवानी
न्यू टाउन, कराची

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. व्रजकृष्ण चाँदीवालाकी पत्नी

५४६. पत्र : कलकत्ताके बिशपको

सेवाग्राम
२८ मार्च, १९४५

प्रिय मित्र,

सुधीरने मुझे आपका स्नेह-भरा पत्र दिया है। आपके इस कथनसे मैं सहमत हूँ कि आग्रह अधिकारोंपर नहीं बल्कि कर्त्तव्योंपर होना चाहिए और हमें अपने पड़ोसियों से उतना ही प्यार करना चाहिए जितना हम खुद अपनेसे करते हैं।

सस्नेह,

आपका,
मो० क० गांधी

मेट्रोपोलिटन
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५४७. पत्र : डी० एल० बनर्जीको

सेवाग्राम
२८ मार्च, १९४५

प्रिय प्रोफेसर,

आपके दो लेखोंके लिए आपका धन्यवाद। मुझे पिछला लेख भी मिल गया था।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

प्रो० डी० एल० बनर्जी
बख्शी बाजार
ढाका

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५५४. तार : अब्दुल गफ्फार खाँको

सेवाग्राम
२९ मार्च, १९४५

अब्दुल गफ्फार खाँ
चारसद्दा

शनिवारको बम्बईमें होऊँगा। वहाँ आ जायें।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५५५. तार : विश्वनाथ दासको[1]

२९ मार्च, १९४५

वी० दास
'समाज'
कटक

आ सकते हो। जितनी जल्दी उतना ही अच्छा।

गांधी

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०४४६) से। सौजन्य : उड़ीसा सरकार

१. उड़ीसाके कांग्रेसी नेता, जो प्रान्तकी प्रथम कांग्रेसी सरकारके मुख्यमन्त्री थे।

५५२. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२८ मार्च, १९४५

चि० कृ[ष्णचन्द्र],

आश्रममें रहो। काम जो रहे सब करो। नये आदमीके बारेमें मुझे अच्छा लगता है। मेरे आग्रहसे तुमारे व्यथित नही होना चाहीये। मेरा आग्रह आग्रह ही नहीं है क्योंकि मैंने जिम्मेवारी तुम्हारे सर रखी है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५०७) से

५५३. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको

२८ मार्च, १९४५

चि० रामेसुरी,

तुम्हारा सुंदर खत मिला। पिताजी जीत ही गये।[1] उनमें क्रोध था लेकिन हृदय सुनहरी था, उदारता भी इतनी ही थी। रु० १००० की चेक तो आ चुकी है। मैं देखुंगा क्या हो सकता है।

बापुके आशीर्वाद

रामेश्वरी नेहरू
लाहौर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए "तार : रामेश्वरी नेहरूको", पृ० २५४।

५५८. पत्र : बलवन्तसिंहको

२९ मार्च, १९४५

चि० बलवर्तसिंह,

तुमको उत्तर दीया वही ओमप्रकाशके लिये था। तो भी अब भेजा है। हुशियारी के[1] लिये मैं प्रयत्न कर रहा हूं। निडर होकर पडी रहेगी तो सब लोग गुस्सा छोड देंगे। हु० शात न होवे तवतक मत जाओ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९५७) से

५५९. पत्र : लेडी कौलको

सेवाग्राम
२९ मार्च, १९४५

प्रिय भगिनी,

आपका चेक मिला है। मैं जमा तो करता हूं। पहोंच इसके साथ है लेकिन यह निधिके बारेमें निवेदन निकालुगा या नही इसका निश्चय नही कर पाया हूं। क्या आप लोग पसंद करेंगे कि इस पैसेका उपयोग अगर मैं निवेदन न निकालुं तो भी स्वर्गस्थ राजासाहेबने सोचा था ऐसे मैं करूं?

आपका,
मो० क० गांधी

लेडी कौल
संगसर
जिंद स्टेट

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. बलवन्तसिंहकी भतीजी

५५६. पत्र: अमृतलाल चटर्जीको

२९ मार्च, १९४५

चि० अमृतलाल,

तुमारे निवेदन पढ़ गया। उनके लिये मैं प्रमाणपत्र कैसे दू। तुमने कितनी औरतों को नंगा पाई?[1] मरद कोई नंगे नही है क्या?

कितने धनिक औरतको वहकाने में मदद दे रहे है।

जो लोग गाड़ीको नुकसान पहाचाते है वे मेरी दृष्टिसे अच्छा नहीं करते है। लेकिन यह तो मेरी राय हुई। आज

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३९८) से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

५५७. पत्र: कृष्णचन्द्रको

२९ मार्च, १९४५

चि० कृ[ष्णचन्द्र],

यह नहीं चलेगा। अक्षरको ही देखोगे तो अक्षर तुमको खा जायगा। आग्रह तुमारा होना चाहीये फिर भी वह आग्रह नहीं रहेगा। अनासक्ति और आग्रहके बीचमें संधि होनी है ना?

इस तरह जिम्मेवारी . . .[2] है। लेकिन तुम्हारी भी कहीं तो रहेगी ना? सच्चा सेवक भी सेवा करने की जिम्मेवारी अपने सर पे रखेगा ना? 'कर्मण्यकर्म यः पश्येत्'[3] याद रखो। हर चीजमे गभराना[4] क्या था? चौंकना क्या था? शब्दके भीतर जा। सन्यास और त्याग एक क्यों? रात व दिन भिन्न है अभिन्न भी। ऐसे क्यों? मनुष्य देह है, आत्मा है, फिर देहातीत भी है। इन सब चीजोंको समजो।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५०८) से

१. अमृतलाल चटर्जीने भारतीय लड़कियोंके भारतके सैनिक अधिकारियोंकी वासनाकी तृप्तिके लिए मजबूर किये जाने का वृत्तान्त लिखते हुए बताया था कि किस प्रकार कुछ राजनीतिक कार्यकर्ताओंने रेलकी पटरियों और डिब्बोंको क्षति पहुँचाकर उनमें से कुछ लड़कियों की रक्षा की और किस तरह बम्बई तथा कलकत्ताके कुछ धनी लोग इन कार्यकर्ताओंकी मदद कर रहे हैं।

२. यहाँ एक-दो शब्द पढ़े नहीं जा सके।

३. भगवद्गीता, ४-१८

४. घबराना

५६२. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

२९ मार्च, १९४५

भाई सतीशबाबु,

तुमको जो मैंने कहा वह सही है और कविराजसे मैंने कहा वह भी सही है। अगर देहाती लोग अपने गावकी वनस्पतिसे काम चला सके तो उत्तम हैं। तुम्हारा कार्य तो स्थिर है ही और तुम्हारे प्रश्न अच्छा है। बाकी मिलने पर।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १६४१) से

५६३. पत्र : चिमनलाल नटवरलाल शाहको

[३० मार्च, १९४५ या उसके पूर्व][1]

चि० चिमनलाल,

क्या तुमने कृष्णचन्द्रको लिखा मेरा पत्र पढा? एक धर्मका उल्लंघन करके दूसरे का पालन किया ही नहीं जा सकता। मैंने एकतरफा निर्णय कदापि नहीं दिया। कृष्णचन्द्रको चाहिए कि भली-भांति सोच-विचारकर निर्णय करे। मैं तटस्थ हूँ। तुम सबको मिलकर निर्णय करना चाहिए। तुम्हें तुरन्त निर्णय करना चाहिए और गलत निर्णय होने का भय नहीं रखना चाहिए। गलती तो सुधारी जा सकती है।

यदि प्रभाकर उस लड़कीकी देखभाल करता है तो यह ठीक है। वैसे, यह अच्छा तो नहीं है। किसी बहिनको ही उसकी देखभाल करनी चाहिए। यह बोझकी बात नहीं, कर्तव्यकी बात है।

रामप्रसादकी व्यवस्था करना मेरे लिए असम्भव है। रामप्रसाद बहुत स्वच्छन्द प्रकृतिका व्यक्ति है। इसके अतिरिक्त, मुझे सुशीलाकी अनुमति भी लेनी चाहिए। यह उत्तरदायित्व सुशीलाका है, हमें यह मानकर चलना चाहिए।

तुम नियम नहीं बना सके, इसे मैं बहुत भारी दोष मानता हूँ।

इसमें अब सब आ गया होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६६४) से

१. यह पत्र सेवाग्राममें और गांधीजी के ३० मार्चको बम्बई रवाना होने से पहले लिखा गया जान पड़ता है।

५६०. पत्र : माधवेन्द्रप्रसाद सिंहको

सेवाग्राम
२९ मार्च, १९४५

चि० कुमार माधवेंद्र,

तुमारे पास शुभ कार्यमें मेरे आशीर्वाद है ही। मैं तो ठीक हूं ऐसे कहा जाय।

बापुके आशीर्वाद

कुंवर श्री माधवेन्द्रप्रसाद सिंह
बरांव करधना
इलाहाबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५६१. पत्र : रंगनायकीको

सेवाग्राम
२९ मार्च, १९४५

चि० रंगानायकी,

पो० का० मिला। दोनों आइये। मुंबई कबतक हूं सो तो वहां जाने से पता चलेगा। मुझे खबर देना।

दोनोंको,
बापुके आशीर्वाद

रंगानायकी
श्रीरंगम्

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५६६. पत्र : एम० एस० केलकरको

रेलगाड़ीमें
३१ मार्च, १९४५

प्रिय डॉ० आइस,

रोगियोंके उपचारमें मैं तुम्हारी सफलताकी कामना करता हूँ। अपना स्वास्थ्य ठीक रखो। मैंने तुम्हारे बुखारके बारेमें सुना। "ए वैद्य, अपना इलाज कर।"

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५६७. पत्र : श्यामलाल रैनाको

३१ मार्च, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मैंने 'न्यू कश्मीर' देखा[1] है। लेकिन मैं कोई मार्ग-दर्शन नहीं दे सकता। मैंने तो कश्मीर देखा तक नहीं है। आपको खुद ही तय करना है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री श्यामलाल रैना
डाकघर रणबीरगंज

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. अंग्रेजीमें 'सेंट' है, जो 'सीन' के लिए भूल हो सकती है।

५६४. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

३० मार्च, १९४५

भाई अमृतलाल,

कलका उत्तर मिला होगा।

वीणा[1] अब तो कहती है शादी नही चाहीये। सैलनका[2] प्रश्न आज तो नही है। तुम चाहते हैं वह सही है।

रामनको[3] तालीमी संघमें रखना था न?

माताजी अलग रहने के लिये न आवे। उनका न आना ही लाभदायक है।

सैलनके आने तक तुमारे यहीं रहना। उनके आने पर रानु वि० का निर्णय करो। चिमनलालजी से मश्विरा करो।

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३९९) से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

५६५. पत्र : यशवन्त महादेव पारनेरकरको

३० मार्च, १९४५

चि० पारनेरकर,

गुड़ [वाले] घरमें शांता बहन रहेवा मांगे छे[4]। ए विषे जैसे उचित है किया जाय।[5] गजाननसे बात करना होगा। . . .

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकल (सी० डब्ल्यू० ५८७१) से। सौजन्य: मुन्नालाल गंगादास शाह

१. अमृतलाल चटर्जीकी पुत्री

२ और ३. अमृतलाल चटर्जीके पुत्र

४. इस वाक्यके अन्तिम तीन शब्द अर्थात् "रहेवा मांगे छे" गुजरातीमें हैं, जिनका अर्थ है — "रहना चाहती है।"

५. इस वाक्यके प्रारम्भिक दो शब्द, अर्थात् "ए विषे" गुजरातीमें हैं, जिनका अर्थ है — "इस विषयमें।"

५७०. पत्र : किशोरलाल घनश्याम मशरूवालाको

रेलगाड़ीमें
३१ मार्च, १९४५

चि० किशोरलाल,

तुम्हें छोड़कर इस बार मुझे जाना अच्छा नहीं लगा। तुम्हारा शरीर देखा नहीं जाता। केलकरको लिखना। वह भला आदमी है। ठीक-ठीक जानता है। जब किसीको कुछ आता हो तो उसका उपयोग किया ही जा सकता है। वह बर्फ और भाप-पानी का ठीक उपयोग जानता है। मेरा खयाल है कि तुम्हारा स्वास्थ्य अवश्य ठीक हो जायेगा। गोमतीको भी अगर वह देखे तो अच्छा है। दुर्गाको समझाया जा सके तो उसका इलाज भी उसे करना चाहिए। तुम यदि कुछ घंटोंका मौन लो तो बहुत फायदा होगा। मैं तो उसका लाभ लेता ही हूँ।

हमें ट्रेनका डिब्बा अच्छा मिला है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल। सी० डब्ल्यू० १०७२५ से भी; सौजन्य : गोमती मशरूवाला

५७१. पत्र : नन्दलाल पटेलको

रेलगाड़ीमें
३१ मार्च, १९४५

चि० नन्दलाल,

घरकी देखभाल ऐसी करना जैसी गहनोंकी की जाती है। जो काम अपने हाथसे कर सको, उसे किसी दूसरेसे बिलकुल मत कराना। आशा है, चि० हरि-इच्छा मजेमें होगी। हिम्मत बिलकुल मत हारना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२५२) से। सी० डब्ल्यू० २७१७ से भी; सौजन्य : नन्दलाल पटेल

५६८. पत्र : चिमनलाल नटवरलाल शाहको

रास्तेमें
३१ मार्च, १९४५

चि० चिमनलाल,

आश्रम छोड़ना मुझे कभी अच्छा नहीं लगता, लेकिन इस बार तो और भी कम अच्छा लग रहा है। लेकिन आखिर किसी भी बातका आग्रह क्यों?

तुम्हारे सब कागज पढ़े। मैंने जाजूजीके साथ बात की। अब सोचता हूँ, पार पा जाऊँगा। लेकिन हो जाये तब है।

तुम सतर्क हो जाना। अपनी जिम्मेदारी समझना। शरीर जो स्वीकार न करे, उसे छोड़ देना। शकरीबहिन भी बहुत-कुछ कर सकती है, लेकिन यह तुमपर निर्भर करेगा। यदि हुशियारीबहिनका विकास हो जाये, तो वह बहुत प्रगति करेगी। अनुसूयाको प्रभाकरके साथ नहीं रखा जा सकता, लेकिन अगर कोई भी उसकी जिम्मेदारी न ले तो और कोई चारा भी नहीं है। जैसा उचित लगे, करना। मैं वहाँ नहीं हूँ, तो जगहकी कमी तो होनी नहीं चाहिए। आशादेवीके साथ स्पष्ट बात कर लेना। "सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात", इस वचनको याद रखना और समझना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६१९) से

५६९. पत्र : कानम गांधीको

३१ मार्च, १९४५

चि० कानम,

तेरा पत्र मिला। यह ट्रेनमें लिख रहा हूँ। बम्बईमें सातेक दिन तो लगेंगे ही। बादकी खबर नहीं। तय होगा तो तू समाचारपत्रोंमें देखेगा। नानावटीने बताया है कि चि० रामदास बीमार है। यदि उसने छुट्टी ली हो और वह पूना जाता है तो यह अच्छा है। मेरा ठीक है।

तुम सबको,
बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५७५. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

बम्बई
३१ मार्च, १९४५

राष्ट्रीय सप्ताह[1] अब शीघ्र ही आनेवाला है। हमने १९१९ में यह सप्ताह मनाना शुरू किया।[2] तब इस अवसरपर भारत-भरके ग्रामीण जनोंने अप्रत्याशित और सहज उत्साहका परिचय दिया था। उसके सात दिन बाद जलियाँवाला काण्ड हुआ; यह काण्ड भी अकल्पित ही था। तबसे हम उस सप्ताहको साम्प्रदायिक एकता, खादीकी पूर्ण प्रतिष्ठा तथा स्वराज्य, इन त्रिविध लक्ष्योंकी प्राप्तिकी आशासे मनाते आ रहे हैं। एक समय तो लगता था कि हम इन तीनोंको अब प्राप्त करनेवाले ही हैं। लेकिन आज हम उनसे बहुत दूर लगते हैं। मैंने "लगना" क्रियाका प्रयोग जान-बूझकर किया है। यह लक्ष्य हमसे बराबर दूर हटता जा रहा लगता है, लेकिन अगर हमने उनके लिए ईमानदारीसे काम किया है तो वह वास्तवमें निकट आया है। कमसे-कम मुझे तो यही महसूस होता है। अपनी अनेक भारी भूलोंके बावजूद आज हम इस लक्ष्यके जितने निकट हैं उससे निकट कभी नहीं रहे हैं। यह अच्छा ही है कि हम अपनी भूलोंको याद करते हैं और उनके अन्दर छिपी सफलताओंको नहीं देख पाते। हाँ, इस बातका खयाल रहे कि हमारी भूलें हमें हतोत्साह न कर पायें। हमें उनसे लाभ उठाना और उन्हें सुधारना सीखना चाहिए। फिर तो हर भूल हममें उत्साहका संचार करेगी, क्योंकि तब हम हर भूलका परिशोध करके एक पग ऊपर चढ़ेंगे। इस प्रकार वह शुद्धिकरणकी प्रक्रिया बन जाती है।

ध्यातव्य है कि खादीने आज पहलेकी अपेक्षा अधिक व्यापक अर्थ ग्रहण कर लिया है। वह केन्द्रस्थ सूर्यके समान बन गई है, जिसके चारों ओर शेष सभी ग्रामोद्योग ग्रहोंकी तरह चक्कर लगाते रहते हैं। इसके अतिरिक्त अब वह पन्द्रह-सूत्री रचनात्मक कार्यक्रमका प्रतीक हो गई है। स्वयं खादीने प्रचुर अनुभवके दौरसे गुजर कर अपना उचित महत्त्व पा लिया है और इस प्रकार उसे अभूतपूर्व गरिमा प्राप्त हुई है। विनोबाके हुनरके दाखिल किये जाने से अब हर व्यक्ति अपनी जरूरतकी पूनियाँ आप ही बनाकर आसानीसे कात सकता है। चरखेमें भी आमूल सुधार हुआ है, और सूतको दुबटा करने की नई प्रक्रियाके फलस्वरूप बुनाईके लिए जितना मजबूत सूत कोई चाह सकता है उतना मजबूत तैयार हो जाता है। कितना अच्छा हो, अगर भारतकी स्वाधीनताका हर प्रेमी इस सप्ताहके दौरान इन बातोंको याद रखे और

१. ६ अप्रैलसे १३ अप्रैलतक
२. देखिए खण्ड १५।

५७२. पत्र : रामप्रसादको

रेलगाड़ीमें[1]
३१ मार्च, १९४५

चि० रामप्रसाद,

गाड़ीमें तो आश्रम ही याद आता है। यदि तुमसे गर्मी सहज ही सहन हो सके तो रह जाना। सबके साथ घुल-मिल जाना और आश्रमका जो काम तुमसे हो सके वह करना। सब अधूरे काम पूरे करना। मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५७३. पत्र : चन्द्रप्रकाशको

रेलगाड़ीमें
३१ मार्च, १९४५

चि० चंद्रप्रकाश,

आश्रमकी सब प्रवृत्तियोंमें हिस्सा लो। यहांतक कि व्यवस्था भी कर सको। भाषा-ज्ञानमें वृद्धि करो। सेहतके लिये भीमावरम् जाना चाहिये तो जाओ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५७४. पत्र : हुशियारीको

रेलगाड़ीमें
३१ मार्च, १९४५

चि० हुशियारी,

मु० [मुंह] खोलना लेकिन आवश्यक ही बोलना। जैसे नाम है ऐसे ही हो जाना। आश्रमकी सब प्रवृत्तिमें हिस्सा लो। शरीर अच्छा रखो और बलवंतसिंहजीको थोडे दिनोंके लिये जाने दो। मुझे लिखो। लिखने का रोज अभ्यास करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५७७. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

बम्बई
३१ मार्च, १९४५

चि० मुन्नालाल,

अब तुम्हें सब-कुछ ठीक-ठाक कर लेने का मौका मिला है। इस मौकेसे फायदा उठाना। मोहनसिंह और रामप्रसादसे कुछ काम लिया जा सके तो लेना। वह टमाटरके रसमें बिस्किट और पाव रोटी कैसे बनाता है, सो देखना और सीखने का प्रयत्न करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४५८) से। सी० डब्ल्यू० ५५७३ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

५७८. पत्र : एम० आर० मसानीको

बम्बई
१ अप्रैल, १९४५

प्रिय मसानी,

आपने जो कदम उठाने का सुझाव दिया है वह ठीक है, परन्तु वह आपके सुझाये ढंगसे नहीं उठाया जा सकता। इसे भली-भाँति सोच-समझकर करना होगा। लेकिन उन लोगोंको अपील करने में शामिल होना चाहिए।

आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४१३२) से। सी० डब्ल्यू० ४८९० से भी; सौजन्य : एम० आर० मसानी

संसदीय कार्यक्रम तथा सविनय अवज्ञाके बिना स्वाधीनताको इतना निकट ले आये जितनी निकट पहले कभी नहीं आई थी। हाँ, अगर सरकार स्वतन्त्रताकी बात करती रहे और मनमें कुछ और विचार रखे, जिसके फलस्वरूप कार्यकर्ताओंको सविनय अवज्ञाका सहारा लेने को विवश होना पड़े तो बात और है।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १-४-१९४५

५७६. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

बम्बई
३१ मार्च, १९४५

यदि यह समाचार सही है कि अष्टी और चिमूर [के अभियुक्तोंकी] प्रार्थना अस्वीकार कर दी गई है तो बात बहुत चिन्ताजनक है![1] मैं तो हर हालतमें फाँसीकी सजाके खिलाफ हूँ, लेकिन इस तरहके मामलोंमें तो बिलकुल ही खिलाफ हूँ। ९ अगस्त, १९४२ को या उसके बाद लोगोंने जो-कुछ भी किया था वह उत्तेजनाके वशीभूत होकर किया। यदि अब फाँसीकी ये सजाएँ लागू की जायेंगी तो यह ठंडे दिमागसे सोच-समझकर की गई निर्मम हत्या ही नहीं, उससे भी बुरी चीज होगी, क्योंकि यह विधिपूर्वक की जायेगी और तथाकथित कानूनके नामपर की जायेगी।

उसका परिणाम सिर्फ यह होगा कि पहलेसे ही जो घोर कटुता व्याप्त है वह और भी तीव्र हो जायेगी। काश, फाँसीकी इन सजाओंपर अमल करने का विचार छोड़ दिया जाये। ऐसा हो सकता है, बशर्ते कि इन आसन्न सजाओं और इस प्रकार की और भी जो सजाएँ देने की बात सोची जा रही है उनके विरुद्ध भारत एक होकर अपनी आवाज उठाये।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १-४-१९४५

१. १५ और १६ अगस्त, १९४३ को चिमूर और अष्टीमें हुई हिंसात्मक वारदातोंके लिए जिन तीस लोगोंको पहले फाँसीकी सजा सुनाई गई थी उनमें से सातकी सजामें बादमें भी कोई कमी नहीं की गई। इन सात लोगोंने सम्राटके पास रहम की दरख्वास्त की थी, वह भी नामंजूर कर दी गई। लेकिन बादमें उनकी सजाको आजीवन कारावासमें बदल दिया गया। देखिए "एक अपील", पृ० ३६६।

५८०. पत्र : मंजरअली सोख्ताको

बम्बई
१ अप्रैल, १९४५

भाई मंजरअली,

औरतोंके बारेमें जो मुझको बताया गया ठीक लगता है। बात यह है कि वे कुछ न कुछ काम करें और मरदोंसे किसी देशके काममें पीछे न रहें।

बापुके आशीर्वाद

भाई मंजर सोख्ता
सेवाकुंज
गंगाघाट
उन्नाव (संयुक्त प्रान्त)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५८१. पत्र : गजानन कानिटकरको

बम्बई
२ अप्रैल, १९४५

भाई बाल्लू काका,[1]

मैंने तुम्हारे पत्रको आद्योपान्त पढ़ा है। तुम्हारी लिखावट बहुत साफ है।

मैं जो भी गलती करूँ, उसे स्वीकार करूँगा।

परन्तु तुम मेरी जो गलती बताते हो वह मैंने नहीं की। मैंने किसी प्रकारके गलत कामका पक्ष-पोषण नहीं किया। निजी सम्पत्तिका न्यास बनाने की मैंने हिमायत की है। मैं अब भी उसका पक्ष-समर्थन करता हूँ। स्पष्ट है कि तुमने मेरे लेख ध्यानसे नहीं पढ़े। मैंने आगाखाँ महलमें "रियासतों" के बारेमें उच्च सरकारी अफसरोंसे कब बातचीत की थी?

सत्याग्रह तर्क-वितर्क या उपवास करने से नहीं आता।

१. यह देवनागरीमें है।

५७९. पत्र : एल० एम० गोपालस्वामीको

सेवाग्रामके पतेपर
१ अप्रैल, १९४५

प्रिय गोपालस्वामी,[1]

आज कार्यकारिणीकी बैठक हुई और उसमें अन्य बातोंके अलावा आपके बजट पर भी विचार किया गया। उसमें आपके और बापाके बीच हुए पत्र-व्यवहारको पढ़ा गया। आपका पूरा पत्र पढ़ने के बाद मैंने देखा कि आप चाहते थे कि आपका पत्र गोपनीय रखा जाये। ऐसा करने का कोई कारण नहीं था। पत्रमें शर्मिन्दा होने जैसी कोई बात नहीं थी। आपने जो किया वह आपके लिए श्रेयस्कर था और इसी तरह कमलाबाई और उसके पतिने जो किया वह भी सराहनीय था। उसका वेतन उसकी जरूरतोंके अनुसार दिया जाना चाहिए। उसे अपने पतिपर बोझ नहीं बनना चाहिए।

चूंकि बापा इस बातपर सहमत हैं कि आपके पास फर्नीचर होना चाहिए, आपका अनुमान सही है। लेकिन मुझे तो सारेके-सारे फर्नीचरकी जरूरतपर ही आपत्ति है। आपको जमीनपर बैठना चाहिए। तब आपको कुर्सियों और मेजोंकी कोई जरूरत ही नहीं होगी। चटाइयाँ काफी हैं। टाइपिस्टके लिए आपको एक ऐसी छोटी मेजकी जरूरत हो सकती है जिसपर जमीनपर बैठकर काम किया जा सके। वह सस्ती पड़ेगी। आप खुले रैक रख सकते हैं। आपने आलमारीकी व्यवस्थाके लिए लिखा है।

आप १५० रुपये ले सकते हैं और प्रसंगानुसार उस राशिको दो संस्थाओंके बीच बाँट सकते हैं। मैंने जो कहा है उसको ध्यानमें रखकर कृपया आप अपना बजट फिरसे बनाकर भेजें। यदि मैं आपका बजट ठीक समझूंगा तो मुझे उसे पास करने का अधिकार होगा।

हृदयसे आपका,
बापू

[पुनश्च :]

आपको केवल तमिल टाइपराइटरकी जरूरत है। मुख्य कार्यालयके साथ आपका पत्र-व्यवहार हिन्दुस्तानीमें और हाथका लिखा होना चाहिए। हमें सस्तेमें काम चलाना सीखना चाहिए।

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. एक हरिजन सेवक

५८३. पत्र : रेहाना तैयबजीको

बम्बई
२ अप्रैल, १९४५

बेटी रेहाना,

आशा है, तू इसे पढ सकेगी। यशवन्तराय अपनी कहानी लिख डाले, और उसे शान्तिकुमारको दिखाने की अनुमति दे। तब मैं जो जरूरी होगा वह करूँगा।

डॉ० योध मेरी जाँच करना चाहे और मेरा इलाज करना चाहे तो करे या किसी और रोगीका ही इलाज करना चाहे तो वह करे। लेकिन जिसका इलाज हाथमें ले, सोच-विचारकर ले। आवेशमें कुछ न करे; क्योंकि वह असफल होकर अपयश का भागी बने, यह मैं नहीं चाहता। सफल हो जाये, तो मैं तो उसे बहुत बडी बात मानूँगा। लेकिन काम मुश्किल है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९६७९) से

५८४. पत्र : शारदा गो० चोखावालाको

२ अप्रैल, १९४५

चि० बबुडी,

मैं यहाँ ८ तक तो हूँ। तबतक तेरा आ सकना बहुत मुश्किल है। आनन्द[1] को सफरका कष्ट नहीं दिया जा सकता और उसे छोड़कर आया नहीं जा सकता। ८ के बादकी बात तो तू अखबारोंमें भी पढेगी, या फिर मैं लिखूंगा। आनन्द जल्दी अच्छा हो जाये, यही मैं चाहता हूँ। तू स्वस्थ होगी।

तुम दोनोंको,
बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००५६) से। सौजन्य: शारदा गो० चोखावाला

१. शारदा चोखावालाका पुत्र

जिन कैदियोंको[1] मौतकी सजा सुनाई गई है, उनकी जान बचाने के लिए मैं वही तरीका बरत रहा हूँ जो मुझे आता है। इस मामलेमें अनशन करने से कोई लाभ नहीं हो सकता।

तुम्हारी चिट्ठीके शेष अंशोंको मैं छोड़ रहा हूँ।

तुम मुझसे आगे पत्र-व्यवहार मत करना।

तुम्हारा,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९७३) से। सौजन्य : गजानन कानिटकर

५८२. पत्र : खुर्शेद नौरोजीको

बम्बई
२ अप्रैल, १९४५

प्रिय बहिन,[2]

तुम्हारा पत्र मिला। पूरी उम्मीद है तुम पहलेसे बेहतर होगी।

मुझे सत्यवतीके बारेमें सब-कुछ मालूम है। उसने मुझे लिखा था। वह मुझसे मिलना चाहती है। यदि अपनेको रोक सकने में वह असमर्थ नहीं हो तो मैंने उसे आने से मना किया है। चाँद मेरे साथ है। अन्य लोगोंके साथ वह बोरिवली शिविरमें शामिल होने जा रही है। प्रभुदास और उसकी पत्नी भी होंगे।

चिमूरके कैदियोंके सम्बन्धमें कमलादेवी कल मुझसे मिली।

बादशाह खाँके एक-दो दिनोंमें यहाँ आने की सम्भावना है। उन्होंने तार दिया है।

८ तारीखके बाद मेरी गतिविधि अनिश्चित है।

स्नेह।

बापू

श्री खुर्शेदबहिन
डनलैविन लॉज
पूना

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. चिमूर और अष्टीके; देखिए "एक अपील", पृ० ३६६ भी।
२. यह गुजरातीमें है।

५८७. पत्र : रामदास गांधीको

बम्बई
३ अप्रैल, १९४५

चि० रामदास,

तेरा पत्र मिला। तेरा विश्वास तुझे ठीक करेगा। नीमू तेरे साथ नहीं जान पड़ती। दिनशा तो मेरे साथ है। लेकिन तेरा काम तो वहाँ चलता होगा। मैं उसे भेजने की तजवीज करूँगा। मेरा ठीक चल रहा है। मेरा कार्यक्रम कुछ तय नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

श्री रामदास गाधी
डॉ० मेहता आरोग्य भवन
स्टेशनके सामने
पूना

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५८८. पत्र : कंचन मुन्नालाल शाहको

बम्बई
३ अप्रैल, १९४५

चि० कंचन,

कैसी है तू! मैं अमतुस्सलामको पत्र लिखूं और उसमें तेरे लिए भी कुछ लिखूं, तो क्या वह तुझे पत्र लिखने-जैसा ही नहीं हुआ? अब यह ले, और जी-भरकर लिख। तेरी तबीयत अच्छी होगी। मुझे नहीं लगता कि अमतुस्सलामके बिलका पैसा हम डॉक्टरको दे सकते हैं। क्या डॉक्टर बुलाया गया था? अमतुस्सलामकी तबीयत भी ठीक होगी। तू वहाँ शान्तिपूर्वक रह और अमतुस्सलामकी मदद कर। मैं अभी तो यहाँ हूँ।

बापूके आशीर्वाद

श्री कंचनबहिन
मार्फत अमतुस्सलामबहिन
कस्तूरबा सेवा मन्दिर
बरकामाता, जिला त्रिपुरा
बंगाल

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७१८७) से; सौजन्य : कंचन मु० शाह। जी० एन० ८२६६ से भी

५८५. एक अपील

[३ अप्रैल, १९४५ के पूर्व][1]

जिन जगहोंमें जनता एकमत हो सके और मतभेद पैदा होने का खतरा न हो, वहाँ ३ अप्रैलको अखिल भारतीय दिवस मनाया जाये और विरोध एवं प्रार्थनाके प्रतीकके तौरपर कारोबार बन्द रखा जाये।

[अंग्रेजीसे]

महात्मा गांधी—द लास्ट फेज, जिल्द १, पृ० १०९

५८६. पत्र : एन० सी० वकीलको

बम्बई
३ अप्रैल, १९४५

प्रिय मित्र,

आपके पत्रके लिए धन्यवाद। मेरे पास पल-भरकी भी फुर्सत नहीं है। इसलिए आप मुझे अपनी ठोस योजना थोड़ेमें लिख भेजें और यदि आवश्यक हुआ तो मैं अपने बम्बई-प्रवासके दौरान आपसे मिलने का समय निकालूंगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

डॉ० एन० सी० वकील
अध्यक्ष, बी० एच० ए०
३११, तारदेव रोड
बम्बई–७

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. गांधीजी ने इसे चिमूर और अष्टीके कैदियोंको सुनाई गई मौतकी सजाके विरुद्ध जनमत जाग्रत करने के लिए विभिन्न समाचारपत्रोंके सम्पादकोंके पास प्रकाशनार्थ भेजा था।

प्रार्थना करना छोड़ दूं तो मेरे लिए अगला कदम होगा स्वतन्त्रताके संघर्षका और सत्य तथा अहिंसापर चलने के प्रयत्नका त्याग करना।

उन्होंने लोगोंसे कहा कि जब मैं आऊँ या जाऊँ तो आपको मेरी तरफ तेजीसे लपकना नहीं चाहिए। प्रार्थनाके दौरान आपको मौन रहना चाहिए।

अन्तमें गांधीजी ने कहा कि अगर आप अपने-आपको काबूमें नहीं रख सकते, तो आप शासनकी बागडोर कैसे सँभालेंगे? मैं कल भी यहाँ आऊँगा और जबतक बम्बई में ठहरूँगा रोज आया करूँगा। मैं देखूंगा मेरे कहने का आप लोगोंपर कहाँतक असर होता है। मैं पता करूँगा कि आप कहाँतक स्वशासनके योग्य हैं। जिसके हृदयमें ईश्वर है वह अपने-आपको काबूमें रखना सीख लेगा।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, ४-४-१९४५

५९०. पत्र : पर्णम् जीवनम्को

बम्बई
४ अप्रैल, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला।

आपके लिए मेरी निगाहमें कोई डॉक्टर नहीं है। इसमें आपको राजाजीसे मदद लेनी चाहिए, या श्री जगदीशनसे, जो कुष्ठ-रोग समस्यामें गहरी दिलचस्पी रखते हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री पर्णम् जीवनम्
मद्रास हिन्दू सेवक संघ
मद्रास, दक्षिण भारत

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५८९. भाषण: प्रार्थना-सभामें[1]

बम्बई
३ अप्रैल, १९४५

गांधीजी ने कहा कि यह बड़े शर्मकी बात है कि आप लोग आये तो ईश्वर से प्रार्थना करने के लिए परन्तु आप प्रार्थनाको शान्तिपूर्वक नहीं चला पाये। आप शोर-गुल करते रहे और प्रार्थनाको उस तरह नहीं चलने दिया जैसे कि वह चलनी चाहिए।[2]

उन्होंने आगे कहा कि एक मित्रने मुझसे कहा था कि बम्बईके लोग मेरी प्रार्थनासे कोई लाभ नहीं उठानेवाले हैं। वे हरिजन-कोषके लिए चन्द रुपये तो दे देंगे, लेकिन अगर मेरा खयाल हो कि प्रार्थनासे उन लोगोंपर कोई असर होगा, या वे हरिजनोंको अपने भाई-बहिनोंकी तरह गलेसे लगा लेंगे, तो वह खयाल गलत होगा।

गांधीजी ने बताया कि मेरे मित्रने मुझे चेतावनी देते हुए कहा था, "अगर तुम बम्बई जाना चाहते हो, तो बेशक जाओ। तुम्हें रुपया तो मिलेगा, परन्तु जहाँतक प्रार्थनाका सवाल है, बेहतर यही होगा कि तुम घरपर ही रहकर प्रार्थना करो।"

गांधीजी ने कहा कि मैं उसकी बातसे पूरी तरह कायल नहीं हुआ। हम अपनी आँखोंसे ईश्वरके दर्शन नहीं कर सकते। हम अपने हाथोंसे उसका स्पर्श नहीं कर सकते। वह तो अस्पृश्य हो गया है। और इसमें कोई आश्चर्य नहीं है, क्योंकि दुनियामें इतना पाप और इतनी हिंसा फैली हुई है और जुए तथा शराबका इतना रिवाज हो गया है। चालीस करोड़ लोग गुलामीकी जिन्दगी बिता रहे हैं। इसका कारण यह है कि वे आजादीका नाम तो लेते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि आजादी असलमें कितनी मूल्यवान वस्तु है। लेकिन मैंने अपने मित्रसे कहा कि मैं तो बहुत दिनोंसे बराबर प्रार्थना करवाता आ रहा हूँ। प्रार्थनामें मेरा दृढ़ विश्वास है। हर धर्म यह सिखाता है कि यदि मनुष्य अपने सिरजनहारसे प्रार्थना नहीं करता तो वह मनुष्य ही नहीं है। इसलिए मैंने अपने मित्रसे कहा कि हालाँकि तुम्हारी सलाहपर मेरे अमल करने की बहुत सम्भावना नहीं है, फिर भी मैं अपने सिद्धान्तोंको नहीं छोड़ सकता। अगर मैं लोगोंपर इतना भी भरोसा न करूँ तो मैं किसी कामका न रहूँगा। अगर मैं

१. प्रार्थना-सभामें कोई ३०,००० लोग उपस्थित थे। उनमें खान अब्दुल गफ्फार खाँ भी थे।
२. प्रार्थना-सभामें उपस्थित जनसमुदाय एक बार बेकाबू हो गया था, और धक्कम-धक्केमें काफी लोग, जिनमें सुशीला नैयर और कृष्णा हठीसिंह भी थीं, घायल हो गये थे।

५९३. पत्र : चिमनलाल नटवरलाल शाहको

४ अप्रैल, १९४५

चि० चिमनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। पुष्पा[1] मिली, मैंने उसे घर भेज दिया है। सरोजिनीबहिन[2] जाना चाहें, तो जाने देना। उन्हे अलगसे रसोई बनाने देने में मुझे खतरा दिखाई देता है।

रोणु[3] [के आने की] बात अच्छी नहीं लगी। लेकिन जैसे बने भोग लेना चाहिए। दुर्गा उसकी देखभाल करती है, यह अच्छा है। आशादेवीके साथ स्पष्ट बातचीत कर लेना जरूरी है। जो न कर सको, वह बिलकुल मत करना; फिर चाहे मेरी इच्छा कुछ भी क्यों न हो।

हरिइच्छावाली बात समझा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६२०) से

५९४. पत्र : पुरुषोत्तमदास गांधीको

बिड़ला भवन
४ अप्रैल, १९४५

चि० पुरुषोत्तम,

१. तेरा पहला विचार ठीक है।

२. संगीत-प्रचारके बारेमें मेरा मत यह है कि सच्चा संगीत वही है जो आत्माको ऊँचा उठाये। मुझे इस सम्बन्धमें जो भी कहना है उसका इस कथनमें समावेश हो जाता है।

३. मैं लिख चुका हूँ कि संगीत रचनात्मक कार्य है, लेकिन कांग्रेसके कार्यक्रम के अन्तर्गत नही आता। स्वराज्य इसके बिना सम्भव है। इसलिए नारणदास जिस उद्देश्यसे धन एकत्र कर रहा है, उसमें यह नही आता। इसीलिए मैंने लिखा था कि

१. पुष्पाबहिन देसाई

२. उड़ीसाकी एक वृद्धा महिला, जो कुछ महीनोंके लिए सेवाग्राम आश्रममें रहने आई थीं।

३. दस बरसका एक बंगाली बालक। चिमनलाल शाह जानना चाहते थे कि क्या उसे आश्रममें ठहरने दिया जा सकता है।

५९१. पत्र : डॉ० सुबोध मित्राको

बम्बई
४ अप्रैल, १९४५

प्रिय डॉ० मित्रा,

आपका पत्र मिला। आपको एक ठोस प्रस्ताव तैयार करके बंगाल कमेटीकी मार्फत न्यास मण्डलके सम्मुख रखना चाहिए।[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

डॉ० सुबोध मित्रा, एम० डी० एण्ड सी०
३, चौरंगी टेरेस
११२, गोखले रोड
एल्गिन रोड डाकघर, कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५९२. पत्र : अमृतकौरको

बिड़ला भवन
४ अप्रैल, १९४५

चि० अमृत,

देख रही हो कि मैं बम्बईमें हूँ और १४ तारीखतक यहीं रहूँगा। यदि १४ तारीखतक ईश्वर मुझे छूट देता है तब आगे क्या होगा, यह भी उसीको मालूम होगा। मैं ठीक हूँ। लाहौरवाली भाभीका क्या हाल है? क्या वह ठीक हो रही है? शम्मीको जल्दी चंगा हो जाना चाहिए।

प्रार्थना-स्थलमें प्रवेश करने की कोशिशमें सुशीला जख्मी हो गई।[2] उसकी बाँह गल-पट्टीमें है। हड्डी नहीं टूटी है। कृष्णा भी अच्छी है। बादशाह खान यहीं हैं, हमेशाकी तरह शान्त। इस समय भी वे मेरे पास बैठे है।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१५३) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७७८८ से भी

१. देखिए पृ० २८८ भी।
२. ३ अप्रैलको; देखिए "भाषण : प्रार्थना-सभामें", पृ० ३६८-६९।

५९६. पत्र : लाडोरानी जुत्शीको

बम्बई
४ अप्रैल, १९४५

प्रिय भगिनी,

मैंने कहा ना कि मैंने इस काममें दखल नहि दिया है। मुझको इसमें खबर भी नहीं पडेगी।

मो० क० गांधी

लाडोरानी जुत्सी
मार्फत मनमोहिनी सान्याल
अलकाजर, तीसरी मंजिल
गामदेवीरोड, बम्बई[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५९७. पत्र : अमृतकौरको

बिड़ला भवन
५ अप्रैल, १९४५

चि० अमृत,

बेकारकी बात करती हो! क्षमा माँगने का कोई कारण नही है। मैंने इतना ही कहा होगा कि मुझसे ऐसी आशा न की जाये कि मैं हमेशा लिखूंगा ही। मैं तुम्हें कल यह बताना भूल गया कि पत्र लिखने के लिए तुम जिस बिना किनारा कटे कागजका उपयोग करती हो वह किनारा कटे कागजसे बेहतर होता है। तुम्हें अपना स्वास्थ्य ठीक रखना चाहिए। मुझे यहां कामके लिए और एहतियातके तौरपर डॉक्टरोंकी देख-रेखके लिए कुछ दिन और ठहरना होगा।

सबको स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१५४) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७७८९ से भी

१. नामके अलावा पूरा पता अंग्रेजीमें है।

अगर हम तेरे वेतनके पैसोंकी माँग न करें, तो वे पैसे मुझसे लिये जायें। नारणदासके पास सत्याग्रह आश्रमका जो पैसा है, उसमें से लिया जाये, तो वह ठीक होगा। लेकिन उसमें भी कोई अड़चन हो, तो मैं अपने पाससे किसी और मदसे दूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९१३) से। सौजन्य : नारणदास गांधी

५९५. पत्र : किशोरलाल घनश्याम मशरूवालाको

बम्बई
४ अप्रैल, १९४५

चि० किशोरलाल,

यदि केलकर थोड़े दिनोंके लिए भी तुम्हारा उपचार करते है और वह तुम्हें माफिक आता है तो तुम जहाँ जाओ वहाँ उसे जारी रखा जा सकता है न?

मौनके सम्बन्धमें तो मैंने तुम्हें अपना अनुभव बताया है। जब तुम्हारे हृदयमें उसकी प्रेरणा जगेगी तभी तुम करोगे और कर सकोगे।

दुर्गासे कहना कि दोनों लड़कियाँ और महादेवकी माँ कल आकर मिल गईं। परमानन्द[1] उनके साथ था।

तुम दोनोंको,
बापूके आशीर्वाद

[पुनश्चः]

पुष्पा मुझसे कल मिल गई। उसे मैंने घर भेजा है।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

1. महादेव देसाईके भाई

६००. पत्र : शशिभूषण सिंहको

बम्बई
६ अप्रैल, १९४५

ठाकुर साहेब,

आपके बडे भाईका स्वर्गवास होने का खत मिला है। आपका विधवा बहिनके लडकोको ईश्वर धैर्य देवे, सान्त्वना देवे। स्व० ठाकुरसाहब तो विजय पा गये।

आपका,
मो० क० गांधी

ठाकुर श्री शशिभूपर्णसिंहजी
जमीदार, मानेगाँव
डाकघर मेख
तहसील नरसिंहपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६०१. पत्र : ना० र० मलकानीको

बम्बई
६ अप्रैल, १९४५

चि० मलकानी,

तुम्हारा तार था। खत आज मिला। मैंने तार जेरामदासको भेजा है।[1] वह देखा होगा। मैं यहां २० तारीख तक हूं। आ जाओ। सब बात करेंगे। इसलिये ज्यादा नहीं लिखता हूं। तुमने जेलमें ठीक काम किया है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९४४) से

१. यह उपलब्ध नहीं है।

५९८. पत्र : कान्ताको

बम्बई
५ अप्रैल, १९४५

चि० कान्ता,

अभी-अभी खबर मिली है कि तूने एक पुत्रको जन्म दिया है और तुम दोनों भले-चंगे हो। दोनोंको स्वस्थ रहना है और बालकका लालन-पालन इस प्रकार करना कि वह सच्चा सेवक बने।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५९९. पत्र : लीलावती मुन्शीको

६ अप्रैल, १९४५

चि० लीलावती,

तुम्हारा पत्र पढ़ गया। इसमें मुझे बुरा क्यों लगेगा? लेकिन मैं चैम्बूर जाने के लिए तैयार नहीं हूँ। मुझे वहाँ ले जाने में अनर्थ ही होगा। मुझे तुम्हारी खातिर और मुन्शीकी खातिर जाना अच्छा लगेगा। लेकिन अपने द्वारा निर्धारित की गई मर्यादाको मैं जान-बूझकर भंग नहीं करना चाहूँगा। तुम मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर न करो।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती लीलावती मुन्शी
२६, रिज रोड
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

छोड़ने से इस सप्ताहकी पवित्रता कम नहीं हो गई है। पन्द्रह-सूत्री कार्यक्रम तो है ही। इसकी शुरुआत खादीसे होती है। उसीसे दूसरी बातें निकलती हैं। ऐसे पवित्र दिवसपर लोगोंको पन्द्रह-सूत्री कार्यक्रमपर अमल शुरू करना चाहिए। मैं आपसे यह नहीं कह रहा कि आप इस कार्यक्रमपर केवल सप्ताह भर ही अमल करें, बल्कि मेरा कहना है कि आप इसपर हमेशा अमल करें। आप इसपर खुद ही अमल न करें, बल्कि औरोंको भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करें। अगर आप भारतको स्वतन्त्र कराना चाहते हैं और इस बातका इन्तजार नहीं करना चाहते कि कोई आये और इसे स्वतन्त्र कराये, अगर आप सत्य और अहिंसाके द्वारा आजादी हासिल करना चाहते हैं, तो इसके सिवाय कोई और रास्ता नहीं है। लेकिन अगर आप हिंसा और क्रान्ति से आजादी हासिल करना चाहते हैं, तो बात दूसरी है। वह तरीका मुझे नहीं आता; वह मैंने सीखा ही नहीं है। आजादी आकाशसे नहीं टपकेगी, न वह समुद्रसे निकलेगी। अगर आप उसे अपने प्रयत्नोंसे पाना चाहते हैं, तो उसका एक ही उपाय है।

[उन्होंने आगे कहा कि] कई लोग पार्लियामेंटकी बात सोचते हैं। मैं उसका नाम तक जबानपर नहीं लाना चाहता। मैं पार्लियामेंटकी बात भूल जाना चाहता हूँ और केवल रचनात्मक कार्यक्रमकी बात सोचना चाहता हूँ। इस कार्यक्रमका एक महत्वपूर्ण अंग हिन्दू-मुस्लिम एकता है।

भाषण समाप्त करते हुए गांधीजी ने कहा:

आजादी हमारे हाथमें है। साँस लेने में हम दूसरोंकी मदद नहीं ले सकते। अगर हमें साँस लेने में कृत्रिम तरीके अपनाने पड़ें, तो इसका मतलब होगा कि हम मौतके निकट पहुँच गये हैं। आजादी हमारी साँसकी तरह है। चूँकि हम बहुत समयसे आजादी खो चुके हैं, इसीलिए हम इसकी कद्र करते हैं। लेकिन मैं तो जानता हूँ कि आजादी क्या चीज है। मैंने आजादीका खूब अनुभव किया है। और अगर आप उसे पवित्र और प्राप्त करने के लायक समझते हैं, तो उसका यही एकमात्र उपाय है।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, ७-४-१९४५

६०३. तार: गोविन्द वल्लभ पन्तको

बम्बई
[७ अप्रैल, १९४५][1]

गोविन्द वल्लभ पन्त
मार्फत डॉक्टर जोशी
दिल्ली

उम्मीद है तुम्हारी तबीयतमें सुधार हो रहा होगा।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. देखिए "पत्र: गोविन्द वल्लभ पन्तको", पृ० ३८४।

६०२. भाषण : प्रार्थना-सभामें

बम्बई
६ अप्रैल, १९४५

गांधीजी ने भाषणके आरम्भमें लोगोंसे अनुरोध करते हुए कहा कि आप खामोश रहें और मेरी बातको सब्रसे सुनें। कोई ताली न बजाये। मैं चाहता हूँ कि आप मेरी बातको ध्यानसे सुनें। मैं आपके दिलोंतक पहुँचना चाहता हूँ। अगर मेरी बात आपके कानोंसे आपके दिलोंतक पहुँच जाये, तो उससे मुझे पूरा सन्तोष होगा।

मंगलवारसे श्रोताओंके अनुशासित व्यवहारपर उन्हें बधाई देते हुई गांधीजी ने कहा कि उस दिन दो स्त्रियोंको चोट आ गई थी। शायद उस घटनाका आपके दिलों पर असर हुआ है, और आपने अनुशासन रखने और प्रार्थनाको हमेशाकी तरह चलने देने का निश्चय किया है। उस दिन भीड़ बहुत थी — लाखों नहीं, लेकिन कई हजार लोग तो होंगे। चाहे यह वजह हो कि अब थोड़े लोग आते हैं या कोई और वजह हो, मुझे यह देखकर खुशी होती है कि आपने अनुशासन सीख लिया है। अगर आप मिल-जुलकर रहना चाहते हैं, तो पहली बात जो आपको सीखनी होगी, वह है अनुशासन।

अपना भाषण जारी रखते हुए गांधीजी ने कहा कि मैं गुजराती हूँ और मुझे आम तौरपर गुजरातीमें बोलना चाहिए। लेकिन यह तय किया गया है कि जब कभी विभिन्न प्रान्तोंके लोग इकट्ठे हों, हमें राष्ट्रभाषामें बोलना चाहिए। इस फैसले में मेरा भी उतना ही हाथ था जितना कि औरोंका। आपको भी नागरी और उर्दू दोनों लिपियाँ सीखनी चाहिए। और आपको ऐसी सरल भाषामें बोलना सीखना चाहिए जिसे हर कोई समझ सके। मैंने अब महसूस किया है कि उर्दू, हिन्दी और हिन्दुस्तानी एक ही भाषा है। अगर आप यह भाषा सीख लें तो आप भारतके किसी भी भागके और किसी भी समुदायके लोगोंके साथ कार्य-व्यवहार कर सकेंगे। जब मैं पंजाब गया था तो यह भाषा मेरे काम आई। अगर मैं कश्मीर जाऊँ तो वहाँ भी यह भाषा मेरे काम आयेगी।' मैं वहाँ गया तो नहीं, लेकिन मेरे कई कश्मीरी मित्र हैं, जिनमें से एक जवाहरलाल हैं। गांधीजी ने कहा कि किसी भाषा या लिपिको मुस्लिम भाषा या मुस्लिम लिपि कहना गलत है। हिन्दू और मुसलमान दोनों वह भाषा लिखते हैं और अगर आप उन लोगोंके दिलोंमें घर करना चाहते हैं तो आपको उसी भाषामें बोलना चाहिए और उसी लिपिमें लिखना चाहिए।

'राष्ट्रीय सप्ताहकी चर्चा करते हुए गांधीजी ने कहा कि हम गत २६ वर्षोंसे इस सप्ताहको मनाते आ रहे हैं। इसे मनाने का उद्देश्य अपने विचारों और अपनी भाषाको शुद्ध करना है। शुरू-शुरूमें सप्ताहके पहले दिन उपवास रखा जाता था। बादमें मैंने उपवास छुड़वा दिया। मैंने हड़ताल भी छुड़वा दी। लेकिन इन बातोंको

६०५. पत्र : पोत्ती श्रीरामुलुको

बम्बई
७ अप्रैल, १९४५

प्रिय रामुलु,

तुम्हारे पत्रमें जानकारी काफी है पर लम्बा बहुत है। यह सब तुम एक पोस्ट-कार्डमें भी कह सकते थे। अस्पृश्यताका अन्त तो होना ही है। सत्यको तबतक दोहराते रहना चाहिए जबतक कि वह सार्वजनीन न हो जाये। तुम्हे अपना प्रचार-कार्य जारी रखना चाहिए, दूसरे चाहे इसे करें या न करें। उपवास न करना लेकिन दूसरोंसे बिना माँगे रोज-ब-रोज जो-कुछ मिले उसे ग्रहण करते जाना — यह सही सिद्धान्त है।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९) से

६०६. पत्र : गोपीनाथ बारडोलोईको

बम्बई
७ अप्रैल, १९४५

भाई बारडोलाई,

मैं उमीद रखता हूं कि तुम हिन्दुस्तानी पढ सकते हैं। तुमारा खत मिला। मैं राजी हूआ कि तुम सफल हुए है। स्वास्थ्य अच्छा रखो। मुझे लिखो मेरे खत पढ सकते या पढा सकते है कि नही। मुंबईमें २० तारीखतक हूं।

बापुके आशीर्वाद

श्री गोपीनाथ बारडोलोई, एम० एल० ए०
गोहाटी — असम

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६०४. पत्र : मीराबहिनको

बम्बई
७ अप्रैल, १९४५

चि० मीरा,

तुम्हारा लम्बा पत्र पाकर खुशी हुई। मैं तुम्हारे पास किसीको — रामप्रसाद या मुन्नालालको — भेजने की जी-तोड़ कोशिश कर रहा हूँ। मेरा कोई भरोसा नहीं। मैंने अपनी इच्छा व्यक्त कर दी है। लेकिन हाथके कौरके भी मुँहतक पहुँचने में बहुत बाधाएँ हैं। सिवाय ईश्वरके कौन जान सकता है? पशुओंके प्रति — विशेषत: गायके प्रति — तुम्हारा प्रेम असीम है। मैं इस बातसे बहुत हदतक सहमत हूँ कि अगर हम सच्चा असर पैदा करना चाहते हैं तो हमें व्यक्तिगत रूपसे ध्यान देना चाहिए। मैं २० तारीखतक यहाँ हूँ और उसके बाद महाबलेश्वर जाऊँगा।

स्नेह।

बापू

श्री मीराबहिन
किसान आश्रम, मूलदासपुर
डाकघर बहादराबाद, बरास्ता ज्वालापुर
हरद्वारके पास, संयुक्त प्रान्त

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६५०५) से; सौजन्य : मीराबहिन। जी० एन० ९९०० से भी

६०९. पत्र : जनकधारी प्रसादको

बिड़ला भवन, बम्बई
७ अप्रैल, १९४५

भाई जनकधारी बाबू,

मुझे ख्याल है मैंने तुमारे पत्रका उत्तर दिया। लेकिन किसीको पता नही है इसलिये यह लिख रहा हूँ। तुम्हारे दर्दका इलाज सीधा है। जो सही है वही करो। लड़के-लड़कीको नयी तालीम दो। नयी तालीम स्वाश्रयी रहती है और सब आवश्यक ज्ञान देती है। तुमारे मरने के बाद चिंता क्यों? सबका पालनहार ईश्वर है, उसपर विश्वास रखो। लड़कियोंके लग्नके लिये एक भी कोड़ी न खर्चो। वे बड़ी होगी अपने-आप पति ढुंढ लेगी। नयी तालीममें तो इसकी फिकर होती ही नही। यह बात जीवन परिवर्तनकी है लेकिन मेरे पास तो ऐसी ही बातें हूआ करती है ना?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५८) से

६१०. पत्र : गोप गुरबख्शानीको

बिड़ला भवन, बम्बई
७ अप्रैल, १९४५

चि० गुरबख्सानी,

तुम दोनोंका खत मिला। कमसे-कम कातने के समय तो दोनोंका स्मरण होता ही है। मैं १४ तक तो यहा हूं, शायद २० तक। बादमें महाबलेश्वर। देखें, प्रभु क्या करवाता है। माताजीसे मिले सो अच्छा हुआ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १३१३) से

६०७. पत्र : हरिभाऊ जोशीको

बम्बई
७ अप्रैल, १९४५

भाई जोषी,

तुमारा खत मिला। मेरे आशीर्वाद क्या कर सकते है वह भी जब मैं कुछ हदतक विरुद्ध हूं। फिर भी तुम्हारी सफलता चाहता हूं। मुझे और दूसरोंको हिन्दुस्तानीमें लिखो।

आपका,
मो० क० गांधी

हरिभाऊ जोषी
लोकशक्ति
पूना

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६०८. पत्र : अरक्षण सिन्हाको

बिड़ला भवन, बम्बई
७ अप्रैल, १९४५

भाई सिन्हा,

आपका खत पढकर दु:ख हुआ। विश्वास मेरा नही ईश्वरका करो। बड़े परिवार वाले लडकाकी मैं कैसे रक्षा कर सकता हूं? लड़का वहादुर सादा और देहाती मनका होगा तो किसीकी मदद नहीं चाहिये। तुम्हारा खत अनुग्रहबाबूको भेजता हूं। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री अरक्षण सिंहा प्लीडर
ग्राम केहीलो
डाकघर जैतपुर
जिला मुज्जफ्फरपुर
बिहार

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६१३. पत्र : सुमित्रा गांधीको

बिड़ला भवन, बम्बई
८ अप्रैल, १९४५

चि० सुमि,

तेरा सिर दुखे, तुझे पेचिश हो, यह अच्छी बात नहीं। यदि ऐसा है तो तू बहुत ज्यादा मेहनत न कर। पढ़ाई-लिखाई कम कर दे। सेहत बिगाडेगी तो सब-कुछ बिगड़ जायेगा। यहाँ मैं १४ तारीखतक तो हूँ ही।

बापूके आशीर्वाद

सुमित्रा गांधी
मार्फत लेडी सुपरिटेंडेंट
बिड़ला हाई स्कूल
पिलानी[1]

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६१४. पत्र : ओंकारनाथ ठाकुरको

बम्बई
८ अप्रैल, १९४५

भाई ओंकारनाथ,[2]

मेरा हिन्दुस्तानी पत्र[3] साथमें है। कोषके बारेमें मालवीयजी महाराजके सुझावपर ठीकसे अमल करना। भरोसेमन्द व्यक्ति नियुक्त करके चाहे जितने स्थानोंमें चन्देकी उगाही करना, लेकिन सारे पैसे विश्वविद्यालयके लिए अंकित खास खातेमें जमा होने चाहिए। यदि ये रसीद बुक छपवाकर दे तो ठीक होगा। यदि हिसाब अत्यन्त साफ होगा तभी काम आगे बढ़ सकेगा और शोभान्वित होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. नामके अलावा पूरा पता अंग्रेजीमें है।
२. हिन्दुस्तानी शैलीके विख्यात संगीतज्ञ
३. देखिए अगला शीर्षक।

६११. पत्र : खुर्शेद नौरोजीको

बम्बई
८ अप्रैल, १९४५

प्रिय बहिन,[1]

तुम्हारा पत्र मिला। यदि सत्यवती आई तो उसके आते ही तुम्हें पत्र लिखूंगा। मैं यहाँ १४ तारीखतक, कदाचित् २० तक हूँ। २० तारीखतक की बात डॉक्टरोंपर निर्भर है। नरहरि कल रात चला गया और ज्यादासे-ज्यादा अगले महीने की ५ तारीखतक लौट आयेगा। खानसाहब कुछ दिन और मेरे साथ रहेंगे।

दोनों बहनोको,
बापूके आशीर्वाद[2]

श्री खुर्शेदबहिन नौरोजी
उमरा हॉल
पंचगनी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६१२. पत्र : भूलाभाई देसाईको

बम्बई
८ अप्रैल, १९४५

भाई भूलाभाई,

इतना सब हो जाने के बाद अगर चिमूरके कैदियोंको फाँसी हो, तो फिर राष्ट्रीय सरकार कैसे बन सकती है, यह प्रश्न मेरी चिन्ताका विषय हो रहा है। फिर, ऐसी सरकारसे क्या आशा की जा सकती है? जो करोगे सब अपने ही लिए करोगे? आम जनताके लिए कुछ नहीं? यह बात तुम्हारे और मेरे लिए बहुत विचारणीय है। तो जबतक ये कैदी जिन्दा हैं, तबतक जो किया जा सकता है, उसपर विचार करना। लीगके सहयोगसे अगर कुछ हो सकता हो तो करना, या फिर जो तुम्हें ठीक लगे सो करना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
भूलाभाई देसाई पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१ और २. सम्बोधन और हस्ताक्षर गुजरातीमें हैं।

६१७. पत्र : कुसुम नायरको

बम्बई
८ अप्रैल, १९४५

प्रिय भगिनि,

मेरी उमीद है मेरे हरफ पढ सकेगी। सच्ची सफलताका रास्ता मैंने बता दिया है। काम बहूत, आडंबर नही, स्वाश्रयी बनना। इसीसे सही काम बनता है।

बापुके आशीर्वाद

श्री कुसुम नायर
एन० जी० पी० पी० ब्यूरो
७४, लक्ष्मी बिल्डिंग
सर पी० मेहता रोड
बम्बई–१[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६१८. पत्र : लीलावती रामभाऊ भोगेको

बम्बई
८ अप्रैल, १९४५

प्रिय भगिनि,

तुम्हारा खत मिला। मैं हो सकता है कर रहा हूं। हां, पूना जाओ और तैयार हो जाओ।

बापुके आशीर्वाद

सौ० लीलावती रामभाउ भोगे
पो० रावेर
ईस्ट खानदेश

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पता अंग्रेजीमें है।

६१५. पत्र : ओंकारनाथ ठाकुरको

बिड़ला भवन, बम्बई
८ अप्रैल, १९४५

भाई ओंकारनाथ,

अच्छा है भा[रत] भू[षण] मालवीयजी महाराज और सर राधाकृष्णनने निवेदनमें दस्तखत दिये हैं। मैं मानता हूं कि अगर जैसे निवेदनमें दिया है ऐसा अमल होगा तो आपसे और विद्यालयसे बिना भेदभावसे संगीतकी बडी सेवा होगी। संगीतमें होना भी ऐसा ही चाहिये। सच्चा संगीत लोगोको ऊंचे ले जाता है। और उसमें कौमी भेदको, रागद्वेषको जगह नहीं है। आपने मुझे बताया है कि आप यही विचार रखते हैं।

आपके साहसको सफलता चाहता हूं।

आपका,
मो० क० गांधी

भाई ओंकारनाथ

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६१६. पत्र : गोविन्द वल्लभ पन्तको

बिड़ला भवन, बम्बई
८ अप्रैल, १९४५

भाई गोविंद पंत,

कैसी बात मैंने कल आपको तार दिया आज आपका खत मिलता है। ओपरेशन करवा लो और डाक्तर लोग इजाजत दे तब आओ। मैं शायद २० तारीखतक यहां हूं। बादमें महाबलेश्वर। देखें ईश्वर कहां ले जाता है। अच्छे हो जाओ।

बापुके आशीर्वाद

श्री गोविंद वल्लभ पंत
डॉक्टर जोशीका अस्पताल
करौल बाग
नई दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

जिस मामलेमें मुझे पूरी जानकारी न हो उसमें दखल देना मेरी आदत नही है। मै तो यह भी नहीं जानता कि निदेशक-मण्डलमें कौन-कौन है। यदि, जैसा कि आप कहते है, मण्डलके अधिकांश सदस्य भारतीय है, तो आपका काम आसान होना चाहिए। मेरा काम तो सलाह देने के साथ ही खत्म हो जाता है। अब शायद वह वक्त नही रहा जब मै स्वयं हड़तालोका नेतृत्व कर सकता था। यदि आप मेरी इस असमर्थताको समझें, तो आप मेरा और अपना समय नष्ट नही करेंगे। आपके लिए समयका बहुत महत्त्व है। इसलिए आपको फौरन कार्रवाई करनी होगी। यदि आप मेरे कहे पर गम्भीरतापूर्वक विचार करें, तो आपको पता चलेगा कि मैंने आपको सब-कुछ बता दिया है।

अन्तमें शिष्टमण्डलने गांधीजी से पूछा कि क्या आप जनतासे हमारा समर्थन करने की अपील करेंगे। उन्होंने उत्तर दिया :

आप मेरे कहने से नही बल्कि अपने आचरणसे जनताका समर्थन प्राप्त कर सकते है।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १२-४-१९४५

६२०. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

९ अप्रैल, १९४५

चि० घनश्यामदास,

मेरे अक्षर पढ़ सकते है क्या? मुश्कील लगे तो मै लिखवाकर भविष्यमें दुं या भेजु।

दिन तो चले जाते है। समय पेट भरके बाते करने का रहता नही, इसलिये मुझे कहना है सो तो लिखुं। क्योंकि मेरी बात तो मैं लिखकर खतम कर सकुगा। उत्तर तो दो चार शब्दमें दे सकते है। इसका मतलब यह नही कि मैंने कहा है सो खीच लेता हूं। मैं तुमको वक्त न दुं तबतक यहांसे नही हटुंगा। मेरी बातके लिये ठहरना नहीं चाहता। १. प्रफुल्लबाबुने मुझे कहा, "अब कृष्णकुमार और माधव प्रसाद इतने महान हो गये हैं कि मुझ बीमारको देखने के लिये भी नही आये। पहले तो आया करते थे, कुछ प्रश्न भी पूछा करते थे।" इसमें कुछ सही है कि गफलत-चुक[1] ही है, छोटे बड़ेकी कोई बात नही। प्र[फुल्ल] से मैंने पुछ लिया था, मै यह बात कर सकता हूं या नही।

२. मेरा काम बढ़ गया है। अब तो कोशीश कर रहा हूं कि मेरे पाससे पैसे की कोई आशा न करें और मैंने बनाई है वे सब संस्था स्वाश्रयी बन जाय। ऐसा

१. गफलत

६१९. भेंट : बी० ई० एस० टी० के कर्मचारियोंके शिष्टमण्डलको[1]

बम्बई
८ अप्रैल, १९४५[2]

शिष्टमण्डलके सदस्यों द्वारा सलाह देनेका अनुरोध करने पर गांधीजी ने कहा :

हो सकता है कि इस मामलेमें मेरी सलाह आपके बहुत कामकी न हो, क्योंकि सिवाय आबिद अलीके मैं आपमें से किसीको नहीं जानता। इसके अलावा, मुझे बम्बई की स्थितिकी प्रत्यक्ष और नजदीकी जानकारी भी नहीं है। इसलिए मैं आपसे कहूँगा कि आपको उन नेताओंके साथ सलाह-मशवरा करना चाहिए जिनपर आपको विश्वास हो और जो समझदार हों, और आपको उन्हींकी रायके अनुसार काम करना चाहिए।

शिष्टमण्डलने गांधीजी से आग्रह किया कि आपने स्वयं जिन हड़तालोंका नेतृत्व किया है उनके अनुभवके आधारपर आप हमारा मार्ग-दर्शन करें। इसपर गांधीजी ने कहा :

मैंने कई हड़तालोंका संचालन किया है। इसलिए मैं आपको सफल हड़तालकी शर्तें बता सकता हूँ। पहली शर्त यह है कि आपकी माँग स्पष्ट और न्यायपूर्ण होनी चाहिए। दूसरी यह है कि हड़ताली दृढ़-निश्चयी हों और भूख, मारपीट या मौततक से भी न डरें। तीसरी, वे चाहे जो भी करें, लेकिन सत्य और अहिंसाके मार्गसे कभी विचलित न हों। चौथी, हड़तालियोंको जनताका समर्थन प्राप्त करना चाहिए। अगर आप ये चारों शर्तें पूरी करते हों तो आपको डटे रहना चाहिए, लेकिन अगर आपमें इनमें से किसी एक चीजका भी अभाव हो तो आपको साहसपूर्वक हड़ताल वापस ले लेनी चाहिए। मैं इसके अलावा कोई और सलाह नहीं दे सकता। ब्योरा तय करना आपका काम है।

शिष्टमण्डलके सदस्योंने गांधीजी से अनुरोध किया कि वे कम्पनीके निदेशकोंके नाम, जिनमें से अधिकांश भारतीय हैं, एक अपील जारी करें। इसके उत्तरमें गांधीजी ने कहा :

१. बी० ई० एस० टी० के कर्मचारी हड़तालपर थे और उन्होंने गांधीजी से सलाह माँगी थी। चूँकि उस दिन गांधीजी का मौन था, उन्होंने अपने विचार लिखकर दे दिये। भेंटका यह विवरण प्यारेलाल द्वारा जारी किये गये एक वक्तव्यमें था, जिसे उन्होंने इसलिए प्रकाशनार्थ दिया था क्योंकि इससे पहले अखबारोंने एक अनधिकृत अनुवाद छाप दिया था।

२. १०-४-१९४५ के हिन्दू से

माना है कि सब जमीन और कुआ गोशालाको दे दिया था तो तुमारे ५०,००० में से कुछ काटना होगा। तुमारे जैसा करना है ऐसा कीजिये।

बापु

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०६९) से। सौजन्य: घनश्यामदास बिड़ला

६२१. पत्र : होमी तलयारखाँको

"बिड़ला भवन"
मलाबार हिल, बम्बई
१० अप्रैल, १९४५

प्रिय होमी,

मैं बिलकुल थक गया हूँ और मेरे सामने बहुत सारा 'योजनाबद्ध' कार्य पड़ा हुआ है। इसलिए क्या यह तुम जैसे मित्रोंका फर्ज नहीं है कि मेरे हर क्षणको बरबाद होने से बचायें? सच पूछो तो मुझे यह पत्र भी नहीं लिखना चाहिए था। करंजिया ने भी मुझे लिखा है। तुम दोनों सब्रसे काम लो और हो सकता है कि तुम्हें उसका फल भी मिले।

तुम्हारा,
बापू

श्री होमी तलयारखाँ
अहमद मंजिल
वार्डन रोड
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

होने में कुछ समय तो जायगा और दरम्यान मुझे पैसा निकालना होगा। संस्थाएं तो चर्खा संघ, ग्राम उद्योग संघ, नई तालीम, हिन्दुस्तानी प्रचार और आश्रम हैं। २, ३, ४, ५ की हाजत आज है। पांचवीं संस्था आश्रम तो कभी स्वाश्रयी नहीं बनेगा। कोशीश तो करता हूं। आश्रममें अस्पताल आती है। अस्पतालका खर्च अलग रहता है। उसके पैसे इधर-उधरसे आया करें, ऐसी चेष्टा चल रही है तो भी आश्रम खर्च प्रतिवर्ष एक लाखके नजदीक जाता है। मैं स्मरणसे लिख रहा हूं। आश्रमको आज हाजत नहीं। रामेश्वरदास[1] पैसे भेजते जाते हैं। रहे २, ३, ४, उनके लिये पैसे चाहीये। रामेश्वरदासने कुछ भेज दिये हैं, ऐसा ख्याल है। हि[दु]स्तानी प्रचार और नयी तालीमके लिये चाहीये। शायद मुजको दो लाखकी आवश्यकता रहे। यह खर्च उठाओगे क्या? सफरर्स फंडका[2] तो रामेश्वरदासके खतमें है ही। मेरा खयाल भी मैंने बताया है।

३. अब रही बात स्त्रियोंके साथके संबंधकी और मेरे प्रयोगकी। प्रयोग तो अब साथीओंके खातिर बंध है। मुझको उसमें कुछ भी अनुचित नहीं लगा है। मैं वही ब्रह्मचारी हूं जो १९०६ की सालमें प्रतिज्ञासे रहा और जो १९०१ से ब्रह्मचारीकी स्थिति में रहा। आज मैं १९०१ से बेहतर ब्रह्मचारी हूं। मेरे प्रयोगने अगर कुछ किया है तो यह कि मैं [जो] था इससे ज्यादा पक्का हुआ। प्रयोग संपूर्ण ब्रह्मचारी बनने के लिये था और यदि ईश्वरेच्छा होगी तो संपूर्ण बनने के कारण होगा। अब इस बारेमें तुम बातें करना और प्रश्न पूछना चाहते थे। दोनों चीज कर सकते हैं। संकोचकी कोई बात है नहीं। जिसके साथ इतना घनिष्ट संबंध है और जिसके धनका मैं इतना उपयोग करता हूं उसके मनमें कुछ संकोच रहे सो मेरे लिये असह्य होगा।

अच्छा है कि दोनों भाई मौजूद हैं। यह पत्र दोनोंके लिये तो है ही, लेकिन सब भाईयोंके लिये और परिवारके लिये है ऐसा समजो।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

पत्र छोटा लिखना था लेकिन कुछ लम्बा तो हुआ ही। बात तो तीन हैं। आगे है:

एक बात रह गई, आश्रमकी जमीन वि० गोशालाको दी गई उसके तुमने ५०,००० दिये है। अब बात ऐसी है कि जब चिमनलालने फेरिस्त भेजी तो उसमें आश्रमका खेत और जिसमें कुआ है उसका कुछ जिकर है। अगर है तो सब मकान भी गये। ऐसे तो हो नहीं सकता। वह तो शरतचूक ही थी। लेकिन खत तो जानकी-देवी इत्यादिको लिखे, निकाल[3] नहीं आया। अब प्रश्न यह है कि अगर तुमने ऐसा

१. घनश्यामदास बिड़लाके भाई
२. यह अंग्रेजीमें है।
३. परिणाम

६२४. पत्र : प्रभाकर साखलकरको

बम्बई
१० अप्रैल, १९४५

भाई प्रभाकर,

हर किस्सेमें सत्याग्रह नहीं होता है। जो सच्ची चीज है वह अपने आप सफलता रखती है। इसलिये हर हालतमें आशीर्वाद अनावश्यक है। हरिजनोंको इजाजत होनी चाहिये।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री प्रभाकर साखलकर
साखलकरवाड़ी
राजपुर
जिला रत्नागिरि[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६२५. भेंट : के० आर० नारायणनको[2]

१० अप्रैल, १९४५

प्र० : क्या अब भी आपका यह विचार है कि हरिजन-समस्या केवल धार्मिक और सामाजिक समस्या है और इसका कोई बड़ा राजनीतिक महत्त्व नहीं है?

उ० : इसका राजनीतिक महत्त्व तो है, पर वह परोक्ष रूपसे है।

प्र० : कांग्रेसने एक संस्थाके रूपमें हरिजन-कार्यको अपने हाथमें नहीं लिया है। क्या यह अच्छा नहीं रहेगा कि इस कार्यको हरिजन सेवक संघके बजाय कांग्रेस ही अपने हाथमें ले ले?

उ० : यह कहना गलत है कि कांग्रेसने इस कार्यको अपने हाथमें नही लिया है।

१. पता अंग्रेजीमें है।

२. के० आर० नारायणन टाइम्स ऑफ इंडिया में काम करते थे। गांधीजी ने अपने उत्तर लिखकर दिये थे।

६२२. पत्र : रुस्तमजी करंजियाको

बम्बई
१० अप्रैल, १९४५

भाई करंजिया,

मैं अब लोगोंसे मिलकर थक गया हूँ। कार्यवश तो अभी भी मिलता हूँ। लेकिन जितना बचा जा सके उतना बचने का प्रयत्न करता हूँ। बहिनें मुझसे प्रार्थना के समय मिलती हैं। मैं श्रीमती करंजियासे भी ऐसी ही विनती करूँगा। कमला नेहरू अस्पतालमें तो तुम्हारा हाथ है ही। मेरे आशीर्वादकी क्या जरूरत है? मुझे तो तुम मुझसे जो बने वह करने दो।

बापूके आशीर्वाद

भाई रुस्तमजी करंजिया
अपोलो स्ट्रीट
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६२३. पत्र : अनुपमाको

बम्बई
१० अप्रैल, १९४५

चि० अनुपमा,

तू खरी है। अपने कहे मुताबिक तूने पैसे भेज दिये। मुझे ५०१ रुपयेकी हुंडी मिल गई है।

मैं देखता हूँ कि बहुत सारी लड़कियोंको पेंसिलसे लिखने की बुरी आदत होती है। ऐसा क्यों? अपने वचनका पालन करना।

बापूके आशीर्वाद

अनुपमाबहिन
कराची

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६२६. पत्र: मुहम्मद यासीनको

[१० अप्रैल, १९४५ के पश्चात्][1]

भाई मुहम्मद यासीन,

मैं कहाँ कभी एलक्शनमें पड़ता हूँ? मुझे मुआफ करें।

आपका,
मो० क० गांधी

मुहम्मद यासीन
लुधियाना

उर्दूकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

६२७. भाषण: बोरिवली शिविरमें[2]

११ अप्रैल, १९४५

गांधीजी ने भाषण आरम्भ करते हुए कहा कि आप[3] मुझे जरा चैन लेने दें। उन्होंने उनसे कहा कि जीवनमें हर कामके लिए उचित समय और उचित स्थान होता है। मैंने इस बातका अभ्यास किया है कि आसपासका वातावरण कैसा भी हो, मैं अपने भीतरकी आवाजको सुन सकूँ। लेकिन इस प्रयत्नमें मुझे किसी हदतक ही सफलता मिली है। मेरे आसपास जो-कुछ हो रहा हो उससे मैं बिलकुल प्रभावित न होऊँ — ऐसा मेरे लिए सम्भव नहीं है। इसलिए मैं फोटोग्राफरोंसे प्रार्थना करूँगा कि जब मैं अपने हृदयकी अन्तर्तम भावनाएँ व्यक्त करने की कोशिश कर रहा होऊँ उस समय वे मुझे परेशान न करें। बेमौकेकी फोटोग्राफी कला नहीं बल्कि कुरूपता है।

प्रार्थनाके सवालकी चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मुझे पता चला कि सामूहिक प्रार्थना आपके नित्यप्रतिके कार्यक्रमसे निकाल दी गई है, ताकि किसीको यह महसूस न हो कि उसपर धर्म थोपा जा रहा है। जहाँतक मेरा सवाल है, मैं कह सकता हूँ कि मैं लगातार कई दिनोंतक भोजन किये बिना रह सकता हूँ, और प्रायः रहा भी हूँ,

१. यह पत्र मुहम्मद यासीनके १० अप्रैल, १९४५ को लिखे पत्रके उत्तरमें भेजा गया था।

२. बोरिवली शिविरका आयोजन मृदुला साराभाईने कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक निधिके तत्त्वावधानमें किया था।

३. अर्थात् वे फोटोग्राफर जो अपने कैमरोंसे लगातार फोटो लिये जा रहे थे।

प्र० : लेकिन ऐसा लगता है कि जवाहरलाल और राष्ट्रपति जैसे नेता हरिजन प्रश्नके प्रति उतने जागरूक नहीं हैं।

उ० : वे दोनों तो इस काममें पूरी तरह जुटे हुए हैं।

प्र० : हरिजन सेवक संघ बरसों काम करने के बाद भी अबतक स्वयं हरिजनों में से एक दर्जन नेता भी नहीं पैदा कर पाया है।

उ० : यह आरोप अंशतः ही सत्य है।

प्र० : सब महापुरुषोंमें हर बातको सरल रूप देने का शौक होता है। आपने मानव-संघर्षको सरल रूप देते हुए कहा है कि यह संघर्ष हिंसा और अहिंसाका, सत्य और असत्यका तथा सही चीज और गलत चीजका संघर्ष है। परन्तु जीवनमें क्या एक सही चीज और दूसरी सही चीज या एक सत्य और दूसरे सत्यके बीच संघर्ष नहीं होता है? अहिंसा ऐसी स्थितिको कैसे सुलझा सकती है?

उ० : यह तो उसके प्रयोगकी बात हुई।

प्र० : हिन्दू-मुस्लिम समस्यामें जहाँ संघर्ष हिन्दुओंके अधिकारों और मुसलमानों के *अधिकारोंके* बीच है वहाँ इस समस्याको सुलझाने के लिए अहिंसाकी किस कार्य-विधिका प्रयोग किया जा सकता है, खासकर जबकि ये अधिकार ऐसे प्रतीत हों जिनमें मेल बैठाया ही न जा सकता हो?

उ० : इस विकट स्थितिसे सत्याग्रहके द्वारा ही ठीक ढंगसे निबटा जा सकता है।

आपके प्रश्नोंसे पता चलता है कि आपने सत्याग्रहका अध्ययन नहीं किया। अगर ऐसी बात है, तो प्यारेलाल आपको पुस्तकोंकी एक सूची देंगे। मेरी आपको यही सलाह है कि आप इस विषयके साहित्यको अच्छी तरह पढ़ें।

प्र० : जो हरिजन विदेश जाता है[1] वह वहाँसे अपने देश और समाजकी कैसे सेवा कर सकता है?

उ० : वह किसी भी एककी सेवा दूसरेकी सेवा किये बिना नहीं कर सकता। विदेशमें जाकर आप यह कहेंगे कि यह एक घरेलू मामला है जिसे हम स्वयं हल करने के लिए कृतसंकल्प हैं।

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०५४७) से। सौजन्य : के० आर० नारायणन

१. भेंटकर्ता बादमें भारतीय विदेश सेवामें भरती हो गये थे।

अपनी माताकी गोदमें प्राण त्यागना चाहता हूँ। मेरी अपनी माँ बहुत क्षीणकाय स्त्री थी, और उसका स्वर्गवास कई साल पहले हो चुका था। लेकिन ८० करोड़ हाथ और ८० करोड़ पाँव और ४० करोड़ मुँहवाली भारतमाताने इशारा करके मुझे समुद्र पारसे बुलाया और मैं उसे इनकार नहीं कर सका।

अगर आज यह पूज्या माता रुग्ण और निश्चेष्ट दिखाई देती है तो क्या हुआ? भारतके गुणोंका बखान करना मेरा काम नहीं है। जहाँतक उसके अवगुणोंका सवाल है तो मैं तबसे उनका ढिंढोरा पीट रहा हूँ जबसे मैं भारत लौटा हूँ। लेकिन अगर कोई मुझसे भारतीयोंकी केवल एक बुराई बताने का आग्रह करे, तो मैं कहूँगा कि उनकी सबसे बड़ी बुराई कायरता है।

एक और मित्रने पूछा कि जब स्त्रियाँ इतनी सारी पाबन्दियोंकी कैदमें जकड़ी हुई हैं तो वे कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक निधिकी योजनाके अधीन गाँवोंमें जाकर कैसे काम कर सकती हैं। गांधीजी ने उत्तर दिया कि मैं तो यह समझ रहा था कि शिविरमें रहकर सबसे पहले आप उन सभी सामाजिक बन्धनोंको तोड़ना सीखेंगी जो आपके लिए रोधक या पतनकारी हैं। लेकिन याद रहे कि इसका मतलब यह नहीं है कि आप नैतिक मर्यादाओंका उल्लंघन करें। आजके समाजमें पुरुषोंके नैतिक स्तरमें भारी गिरावट आ गई है। वे पुरुष भी जो कानूनके द्वारा एक विवाहके नियमको लागू करने की बातकी जोर-शोरसे चर्चा करते हैं, स्वयं उसपर आचरण नहीं करते। स्त्रियोंमें भी ऐसी ही प्रवृत्ति दिखाई देने लगी है। मैं ऐसी पढ़ी-लिखी लड़कियोंको जानता हूँ जो ऐसे पुरुषोंसे विवाह करना अनुचित नहीं समझतीं जिनकी पहली पत्नी जीवित हो। मैं इसे स्त्री जातिका पतन कहूँगा। सामाजिक अन्धविश्वासों या कुरीतियों को दूर करने के बहाने ऐसे विचारोंको प्रश्रय नहीं दिया जा सकता। स्त्रियोंकी स्वतन्त्रताका मतलब क्या यह है कि वे इस मामलेमें पुरुषोंकी नकल करें? क़दापि नहीं। ऐसे रास्तेपर चलकर भारत स्वराज्य — विशेषतः मेरी कल्पनाका स्वराज्य — कभी प्राप्त नहीं कर सकता।

सामाजिक स्वतन्त्रताकी स्थापनाके लिए पहली आवश्यकता आचारकी आत्यन्तिक शुद्धिकी है। ऐसा कोई भी व्यक्ति जिसका आचार शुद्ध न हो, सामाजिक कुरीतियोंके विरुद्ध आन्दोलन करने की योग्यता नहीं रखता।

अगला प्रश्न यह था कि गाँवोंमें अस्पृश्यताके सवालसे कैसे निबटा जा सकता है। गांधीजी ने कहा कि मैं यह मानता हूँ कि गाँवोंमें अस्पृश्यताकी समस्या बहुत विकट है। लेकिन जो लोग वहाँ जायें उन्हें यह दृढ़ संकल्प लेकर जाना चाहिए कि वे इस प्रथाको जड़मूलसे उखाड़कर रहेंगे या अपने इस प्रयत्नमें अपनी जान तक दे देंगे। उन्हें यह काम भंगियोंसे शुरू करना चाहिए। दुर्भाग्यसे जिन्हें अछूत कहा जाता है उनमें भी छुआछूत है। आप लोगोंको उनके साथ मेल-जोल पैदा करना चाहिए और अगर वे सफाई और स्वास्थ्य-रक्षाके नियमोंका पालन करें तो आपको उनके साथ बैठकर खाना-पीना भी चाहिए। उनके लिए खाना पकाकर और उनके घरोंकी सफाई करके आप उनमें ये आदतें डाल सकते हैं।

लेकिन मैं प्रार्थनाके बिना एक दिन भी नहीं रह सकता। व्यक्तिगत प्रार्थना तो ठीक है लेकिन किसीको सामूहिक प्रार्थनामें शामिल होने में संकोचका अनुभव नहीं करना चाहिए। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। यदि पुरुष और स्त्रियाँ मिलकर भोजन कर सकते हैं, मिलकर खेल सकते हैं और मिलकर काम कर सकते हैं तो वे मिलकर प्रार्थना क्यों नहीं कर सकते? किसीको दूसरोंकी नजरसे बचकर प्रार्थना करने की जरूरत क्यों महसूस होनी चाहिए? प्रार्थनामें क्या कोई ऐसी पाप या लज्जाकी बात है कि वह सार्वजनिक रूपसे नहीं की जानी चाहिए? मैं लगभग पचास वर्षोंसे सार्वजनिक प्रार्थनामें विश्वास करता आया हूँ। आरम्भसे ही, जब मैं दक्षिण आफ्रिकामें था, मेरे साथियों और सहयोगियोंमें हर धर्मके स्त्री-पुरुष थे। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी — सब मेरे साथ मिलकर प्रार्थना करते थे। भारतमें मैं जहाँ कहीं गया हूँ, स्त्री-पुरुषोंकी भीड़ मेरी प्रार्थनामें शामिल होती रही है। मुझे बताया गया है कि वे लोग प्रार्थनामें शामिल होने के लिए नहीं वरन मेरे दर्शनके लिए आते हैं। यह सही हो तो भी वे इसीलिए तो आते हैं कि वे मेरा, प्रार्थनामें विश्वास रखनेवाले एक व्यक्तिका, साथ देना चाहते हैं। मैं जानता हूँ कि मैं अभी ईश्वरके उतना निकट नहीं पहुँचा हूँ जितना कि मैं पहुँचना चाहता हूँ। मैं सत्य और अहिंसाकी पूर्ण सिद्धिसे अभी बहुत दूर हूँ। अगर वैसी सिद्धि प्राप्त कर लेता तो मुझे वाणीका प्रयोग करने की आवश्यकता न रहती। मेरे व्यक्तित्वसे ही सत्य और अहिंसा प्रस्फुटित होते और आप उन्हें मेरे चेहरेपर देख पाते और उनकी उपस्थितिका अनुभव कर पाते। मैंने अक्सर कहा है कि एक व्यक्तिकी पूर्ण अहिंसा सारी दुनियाके लिए पर्याप्त है। सत्य और अहिंसाकी सिद्धिमें मुझे जो भी सफलता मिली है वह प्रार्थनाका ही फल है।

प्रार्थना हृदयकी स्वाभाविक तरंग होनी चाहिए। यदि प्रार्थना भार मालूम हो, तो प्रार्थना नहीं करनी चाहिए। ईश्वर मनुष्यकी प्रार्थना या प्रशंसाका भूखा नहीं है। वह सब सहन करता है, क्योंकि वह प्रेमसे परिपूर्ण है। अगर आप महसूस करें कि आप सकल पदार्थोंके देनेवाले परमात्माके ऋणी हैं, तो आपको केवल कृतज्ञताके कारण ही उसकी प्रार्थना करनी चाहिए। किसीके उपहास या नाराजगीके भयसे किसीको अपने स्रष्टाके प्रति अपने मूलभूत कर्त्तव्यसे विमुख नहीं होना चाहिए। अपनी बातको स्पष्ट करने के लिए गांधीजी ने पैगम्बर डैनियलकी कथा सुनाई।

इसके बाद गांधीजी ने श्रीमती मृदुलाबहिनके प्रश्नका उत्तर दिया। प्रश्न यह था कि भारतवासियोंमें क्या-क्या अच्छाइयाँ हैं और क्या-क्या बुराइयाँ हैं। गांधीजी ने कहा कि मुझे यकीन है कि कुल मिलाकर अच्छाइयाँ बुराइयोंसे अधिक हैं। भारतवासियों में अनेक दोष हैं। भारत एक गुलाम देश है और उसकी गुलामी अंग्रेजोंकी भारत पर विजयसे बहुत पहलेकी है। मैं जानता हूँ कि कुप्रथाओं और अन्धविश्वासोंकी गुलामी सबसे बुरी गुलामी है। फिर भी भारतमें मैंने जिस सान्त्वनाका अनुभव किया है वह मुझे अन्यत्र नहीं मिली। मैं इंग्लैंडमें रहा हूँ और मैंने जिन्दगीका एक बड़ा हिस्सा दक्षिण आफ्रिकामें बिताया है। फिर भी मैं इन देशोंको अपने घरके रूपमें नहीं अपना सका। कई साल पहले मैंने एक मित्रके प्रश्नके उत्तरमें कहा था कि मैं

६२८. भाषण: प्रार्थना-सभामें

बोरिवली
११ अप्रैल, १९४५

गांधीजी ने कहा कि बालासाहब खेरने मुझे स्मरण कराया है कि मैं बीस वर्ष बाद बोरिवली आया हूँ। मुझे नहीं लगता कि इतना समय हो गया है। इतने समय बाद आपसे फिर मिलकर मुझे खुशी हो रही है। चूंकि श्रीमती मृदुलाबहिनका शिविर आपके बीच खोला गया है, इसलिए आपके ऊपर एक भारी जिम्मेदारी आ गई है। आपको इस शिविरमें रुचि लेनी चाहिए। फिर खान साहबकी ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा कि अगर मुझे खान साहबसे दोस्ती करनी हो, तो क्या मैं यह आशा करूँगा कि खान साहब संस्कृतनिष्ठ हिन्दी सीखें, या मैं उनके साथ उर्दूमें बात-चीत और पत्र-व्यवहार करना अपना कर्तव्य समझूंगा? लेकिन खान साहब तो हर किसीके दोस्त हैं। इसलिए आप लोगोंका कर्तव्य है कि आप राष्ट्रभाषाके दोनों रूप और दोनों लिपियाँ सीखें। इसी तरह और केवल इसी तरह अखिल भारतीय भाषा सारे भारतमें फैल सकती है। कमसे-कम इस मामलेमें पाकिस्तानका सवाल नहीं उठना चाहिए और जो कोई भी हिन्दुओं और मुसलमानोंके साथ मिलकर काम करना चाहता है, उसे दोनों लिपियाँ और दोनों रूप सीखने होंगे। तब एक समय आयेगा जब भाषाके दोनों रूप मिलकर एक हो जायेंगे। अगर आप दोनों लिपियों को सीखना बोझ समझें, तो मैं यही कह सकता हूँ कि स्वराज्य आसानीसे और बिना मेहनतके नहीं मिल सकता। जहाँ प्रेम हो वहाँ मेहनतसे कष्ट नहीं बल्कि खुशी होती है।

इसके बाद गांधीजी ने प्रार्थनामें गाये गये सायंकालीन भजनकी चर्चा की। उन्होंने बताया कि भजनका मुख्य भाव यह है कि ईश्वर शूरोंको मिलता है, न कि कायरोंको। ईश्वर गुलामोंको भी नहीं मिलता। इसलिए यह भजन उन लोगोंके लिए भी है जो गुलामीका जुआ उतार फेंकना चाहते हैं।

अपने भाषणके अन्तमें गांधीजी ने कहा कि जो लोग छुआछूतसे, और खासकर धर्मके नामपर उससे चिपके हुए हैं, उनके भाग्यमें गुलामी ही लिखी है। इसलिए एक बात जो मैंने अक्सर कही है, अब फिर दुहराना चाहता हूँ, और वह यह है कि अगर छुआछूत कायम रही तो हिन्दू धर्मका नाश अवश्यम्भावी है।[1]

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १३-४-१९४५

१. प्रार्थना-सभाकी समाप्तिपर हरिजन-कार्यके लिए चन्दा इकट्ठा किया गया।

एक और प्रश्नमें यह आशंका व्यक्त की गई थी कि चूंकि कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक निधिमें अधिकांश पैसा पूंजीपतियोंने दिया है और चूंकि उन्हें सम्बन्धित कमेटियोंका सदस्य बनाया गया है, इसलिए संस्थापर उनका बहुत अधिक प्रभाव रहेगा, जिससे उसमें खराबियाँ पैदा होंगी।

गांधीजी ने कहा कि यह आशंका निराधार है। अमीर लोगोंसे दान लेने की बात मानने में मैंने किसी भी रूपमें यह स्वीकार नहीं किया कि संस्थामें उनका हुक्म चलेगा और न वे स्वयं ऐसी बात चाहते हैं और न मुझसे ही ऐसी किसी बातकी आशा करते हैं। केवल न्यास बोर्डमें ही अमीर लोग बहुसंख्यामें हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि वे संस्थापर छाये हुए हैं या छा जाना चाहते हैं। वास्तवमें उन्होंने स्वयं ही पैसा इकट्ठा हो जाने पर बोर्डसे अलग हो जाने का प्रस्ताव रखा था और यदि मैं ऐसी इच्छा व्यक्त करता तो वे खुशीसे अलग हो भी जाते। लेकिन मुझे इस कामके लिए केवल उनके दानकी ही जरूरत नहीं थी, बल्कि उनकी योग्यता, उनकी सद्-भावना और उनकी सेवाओंकी भी जरूरत थी। इसीलिए वे बोर्डके सदस्य बने रहे।

उन्होंने कहा कि मैं यह नहीं मानता कि पूंजीपति अनिवार्यतः बुरे लोग ही होते हैं या यह कि वे किसी अन्य वर्गके लोगोंसे अवश्य ही खराब होते हैं। इस दुनियामें हर किसीमें त्रुटियाँ होती हैं। मैं स्वयं अपनी त्रुटियोंसे भली-भाँति परिचित हूँ इसलिए मैं दूसरोंके बारेमें कोई फतवा देने की हिमाकत नहीं कर सकता। मेरी अहिंसाका तकाजा है कि मैं अपने दोषोंको बड़ाईसे देखूं और दूसरोंके दोषोंके विषयमें उदारतासे काम लूं। इतना ही बहुत होगा कि मैं अपनी ही त्रुटियोंको दूर कर लूँ। इसलिए दूसरोंके दोषोंपर मीन-मेख करने के बजाय मैं अपने भीतर झाँककर देखूं और आत्म-शुद्धिपर ध्यान दूं, तो यह दुनिया स्वतः ही सुधर जायेगी और तब जो सामान्य सामाजिक शुद्धि घटित हो चुकी होगी वह पूंजीपति वर्गमें भी प्रतिबिम्बित होगी। इसलिए मैं पूंजीपति वर्गसे यह नहीं कह सकता कि जबतक आप अपनी सारी धन-सम्पत्तिका परित्याग नहीं कर देंगे, मैं आपसे कोई वास्ता न रखूँगा। अपनी सम्पत्तिका पूर्ण परित्याग ऐसी बात है जिसे साधारण लोगोंमें से भी बहुत थोड़े लोग ही कर सकते हैं। अमीर वर्गसे हमारा यही आशा करना उचित है कि वे अपनी धन-दौलतको एक अमानत समझें और उसका उपयोग समाज-सेवाके लिए करें। इससे ज्यादा किसी बातके लिए आग्रह करने का मतलब सोने का अण्डा देनेवाली मुर्गीकी हत्या करना होगा।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १३-४-१९४५

६३१. पत्र : रणधीर नायडूको

बम्बई
१२ अप्रैल, १९४५

प्रिय मैना,

देखता हूँ कि माँ तुम्हें मेरा सन्देश[1] दे सकी। मेरी हार्दिक इच्छा है कि तुम बीमारीसे अच्छे हो जाओ, लेकिन यदि तुम्हें हम सबसे पहले जाना ही पड़ा तो मैं जानता हूँ कि तुम बहादुरीसे काम लोगे और ईश्वरके प्रति आस्थासे ओतप्रोत रहोगे।

स्नेह।

बापू

मार्फत सरोजिनी नायडू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६३२. पत्र : चिमनलाल नटवरलाल शाहको

बम्बई
१२ अप्रैल, १९४५

चि० चिमनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। आज मुझे कुछ फुर्सत है। तुम्हारी जगह मैं होऊँ तो सरोजिनी को अपने साथ रखने की कोमलता दिखाऊँ और उससे एक-एक पैसा वसूल करने तथा उसे रसोईमें नियमित रूपसे खाने के लिए विवश करने में कठोरता बरतूँ।[2] वैसा करने पर यदि वह जाती है तो जाने दूँ। लेकिन तुम्हें जैसा ठीक लगे वैसा करना। दूर बैठा हुआ मैं तो केवल सुझाव ही दे सकता हूँ।

रामप्रसादका धर्म है कि वह मीराबहिनके पास जाये। वहाँ काम हलका है। आबोहवा उत्तम है और वहाँ केवल दो महीनेका काम है। यदि वह नहीं जाता तो उसे जैसा ठीक लगे वैसा करे।

आश्रमकी जमीनका मामला निबट गया है। घनश्यामदासको पैसे वापस नहीं चाहिए। जाजूजीका निर्णय है कि जो जमीन तुमने न देने का निश्चय किया था वह

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२. देखिए "पत्र : चिमनलाल नटवरलाल शाहको", पृ० ३७१।

६२९. पत्र : एम० एस० केलकरको

बम्बई
१२ अप्रैल, १९४५

प्रिय आइन,

तुम्हारा कहना ठीक है। ठंडी आबोहवामें रहने के लिए मैं तीन महीनेका वनवास ले लूं, यह मेरे लिए शायद लज्जास्पद बात है। दिलासेवाली बात यही है कि मुझे लोगोंने वहांसे भगाया है। लेकिन मामूली-सा प्रलोभन भी मुझे फिर सेवाग्राम पहुँचा देगा। तुम्हें अपनी राय वहांके लोगोंके गले उतारनी चाहिए। मैंने उसे आजमाया अवश्य ...[1] अपने लिए नहीं, बल्कि बा और दूसरोंके लिए। तुम उसका इलाज आजमाओ और उसका तथा दूसरोंका उपचार करो। मैं तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूंगा।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६३०. पत्र : सरोजिनी नायडूको

बम्बई
१२ अप्रैल, १९४५

प्रिय बुलबुल,

तुम्हारा पत्र मिला। साथमें मैनाके[2] लिए एक पत्र है। अपने व्यक्तिगत दुःख के बीच भी तुम्हें गाना है। केवल खुशी-ही-खुशी क्यों हो? तुम्हें और सारे परिवार को मेरा प्यार।

इस समय जबकि तुम शुद्धिकरणकी प्रक्रियासे गुजर रही हो, कमसे-कम मैं तुम्हें तकलीफ नहीं दूंगा। तुम्हें सीमा प्रान्त, सिन्ध, देशी राज्यों आदिमें भेजने के लिए मेरे पास बहुत प्रलोभन थे। लेकिन इन सबका उत्तर मैंने स्पष्ट "ना" में दिया।

स्नेह।

कतैया

सरोजिनी नायडू
हैदराबाद द०

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रके अनुसार
२. रणधीर; देखिए अगला शीर्षक।

तो गर्भसे ही शिक्षा आरम्भ हो जाती है और इस तरह दी गई शिक्षा कहाँ जाकर रुकेगी, यह कहा नही जा सकता। आजकी स्थितिमें शहरोकी रचना विदेशियोने अपने उद्देश्यकी पूर्तिके लिए की है। इसलिए वे गाँवोके प्रतिनिधि नही है, उनके हितोंका पोषण करनेवाले नही है, बल्कि उनके शोषक बनकर रह गये हैं।

सरलादेवी साराभाई
रिट्रीट
शाहीबाग
अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६३५. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१२ अप्रैल, १९४५

चि० मुन्नालाल,

वाष्पन-विधिसे तैयार किये गये पानी (डिस्टिल्ड वाटर) के पच्चीस रुपये और वह भी अस्पताल दे? हरिइच्छासे तो नही ही लिये जा सकते। इसमें मुझे तो कुछ भूल जान पड़ती है। मुझे समझाना। तुम अच्छे होगे। सुशीलाबहिनको चोट[1] तो लगी थी लेकिन कुछ टूटा नहीं था। बाकी लिखने का समय ही नही है।

बापूके आशीर्वाद

मुन्नालाल
सेवाग्राम आश्रम

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ३६८, पा० टि० २।

जमीन तो नहीं ही दी जा सकती, इसलिए घनश्यामदासको कुछ काटना हो तो काट लें। वे कुछ काटना नहीं चाहते। इसलिए यह काम निवट गया।

डॉ० आइसका पत्र इसके साथ है। जैसा वह कहते हैं वैसा मकान उनके लिए तो वनाया जाना चाहिए। वह हमारे लिए जो परिवर्तन करना चाहें उन सव पर विचार करना। अनुकूल मकान वनाने से अगर ठंडक मिल सकती हो तो वैसा करके हमें वह प्राप्त करनी चाहिए, ऐसा मैं मानता हूँ।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६३३. पत्र : किशोरलाल घनश्याम मशरूवालाको

वम्वई
१२ अप्रैल, १९४५

चि० किशोरलाल,

तुम सवका खयाल मुझे आता ही रहता है। आज डॉ० आइसका पत्र आया है। उन्हें तो तुम्हें अच्छा करने की तमन्ना है। यदि वहाँकी गर्मी तुमसे सहन हो तो तुम वहाँसे न भागना और डॉ० आइससे इलाज कराना। उम्मीद है, गोमती ठीक होगी। अव वह भी आइससे पूछ देखे तो ठीक होगा। आइस अच्छा आदमी है।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स : सौजन्य : प्यारेलाल

६३४. पुर्जा : सरलादेवी साराभाईको

१२ अप्रैल, १९४५

मैडम मॉन्टेसरीके शास्त्रीय विचारोंसे सहमत होने में मुझे कोई कठिनाई नहीं है। लेकिन यदि वही विचार हिन्दुस्तानके गाँवोंमें पाश्चात्य आवरणमें पेश किये जायें तो उनके अनुपयोगी सिद्ध होने की वहुत सम्भावना है और वे हानिकर भी सिद्ध हो सकते हैं। क्योंकि वह आवरण हिन्दुस्तानके गाँवोंके लिए अत्यन्त खर्चीला सिद्ध होगा और उस वातावरणसे मेल भी नहीं खायेगा। हिन्दुस्तानके शहरोंमें उसका खर्च कदाचित महसूस न हो, और पश्चिमी वातावरण और विचारोंमें रंगी हुई वहिनें विदेशी आवरणमें पेश किये गये विचारोंको कदाचित अपना सकती हैं। तव भी ये निरर्थक सिद्ध होंगे, क्योंकि हिन्दुस्तान अपने शहरोंमें नहीं वल्कि सात लाख गाँवोंमें वसता है। इसके अतिरिक्त, शहरोंमें विदेशी आवरणमें प्रस्तुत किये गये शास्त्रीय विचार भी शहरके लोगोंके लिए विष रूप सिद्ध हो सकते हैं। कारण, यहाँ

६३८. पत्र : देवप्रकाश नैयरको

बम्बई
१२ अप्रैल, १९४५

चि० देव,

तुमारा एक खत मैंने देखा था। नयी तालीमका रहस्य यह कि हम सबके शिक्षक बनते हैं और जो शिष्य न बने वह शिक्षक नहीं [हो] सकता। इसलिये यह नित्य सीखता भी है। तो तुम्हारे किसीसे भी डरना नहीं है। सबको अहिंसासे वश करोगे। वहाँकी गरमी दुःखद है उसको भी जीतना है। सब तो ठंडी हवामें नहिं जा सकते हैं। वहीं हो सके इतनी ठंडी पैदा करो। दा० केलकरकी मदद लो। यों भी वह सज्जन है। उसने मुझको इसी बारेमें लिखा है। उनसे जानकर किसी घरको ठंडा करो।

शरीरके लिये घी इ० चाहिये सो लेकर अच्छे रहो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६३९. तार : देवदास गांधीको

अविलम्बनीय

बम्बई
१३ अप्रैल, १९४५

देवदास गांधी
मार्फत – टाइम्स
नई दिल्ली

खानसाहबको डॉक्टरी सलाहपर रोक लिया गया है। सोमवारकी शामको पहुँच रहे हैं। पुरीको सूचित कर दो। आशा है लक्ष्मी अच्छी होगी।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६३६. पत्र : रामप्रसादको

बम्बई
१२ अप्रैल, १९४५

चि० रामप्रसाद,

मामा साहबको[1] लिखा तुम्हारा पत्र पढ़कर मै आश्चर्यचकित रह गया, दुःख भी हुआ। अब प्यारेलालजीको लिखा तुम्हारा पत्र पढ़कर उससे भी अधिक आश्चर्य हुआ। उसमें मेरे सुझावका कोई उल्लेख नहीं है। मेरा सुझाव तुम्हें न मिला हो, यह नहीं हो सकता, क्योंकि चि० चिमनलालने लिखा है कि मीराबहिनके पास जाना तुम्हें अच्छा नही लगता। ऐसा क्यों? वह तो तुम्हारा मनपसन्द काम है। और फिर वहाँ ठंडक भी है। तुम जाने को तैयार नही हो तो बादमें तुम जो चाहोगे क्या वही तुम्हें मिलेगा? यह सब विचारणीय है। यदि मुझसे भूल हो रही हो तो सुधारना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६३७. पत्र : कुसुम नायरको

बम्बई
१२ अप्रैल, १९४५

प्रिय भगिनि,

तुम्हारी हिंदी मुझे बहुत मीठी लगती है। अक्षर भी सुंदर है। मैंने उत्तर दिया है उसे पढो। मैंने तुरत लेख देने का नही लिखा है। तो भी अगर मुझे जागृत रखा करेगी तो मेरा लेख मिल जायगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. वि० ल० फड़के

दुर्गा तुम्हारे साथ ही रवाना होगी, यह अच्छी बात है।
मैं ठीक हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६४२. पत्र : चिमनलाल नटवरलाल शाहको

बम्बई
१३ अप्रैल, १९४५

चि० चिमनलाल,

यह पत्र[1] मैं पढ़ गया हूँ। उसकी आदतों और अनियमितताओंके बारेमें उसे बताना और उसे चेतावनी देना। यदि वह न माने तो वापस जाये, यही ठीक होगा। फिर भी यदि तुम सबको लगे कि वह सुधर नहीं सकता तो उसे साफ-साफ कह देना और छुट्टी दे देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६४३. पत्र : जानकीबहिन सोमणको

बम्बई
१३ अप्रैल, १९४५

प्रिय जानकीबहन,

तुमारा खत देखकर मुझे आनंद हुआ। व्रजकिशोरलाल भाईको भेजा है। देखकर मुझे तुमारा खत पुराना समयका स्मरण कराता है। तुम सब अच्छे रहो। तोतारामजीसे कहो मुझे कोई समय दो शब्द लिखे।

बापुके आशीर्वाद

श्री जानकीबहन सोमण
गुजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. मजीदभाईके बारेमें चिमनलालको लिखा सुशीला नैयरका पत्र

६४०. पत्र : कमुबहिनको

बम्बई
१३ अप्रैल, १९४५

चि० कमु,

तेरा पत्र मिला। आँखें चार होने से अधिक तू और क्या चाहती है? मन मिलें, इतना ही पर्याप्त है। तेरी देवरानीके स्वर्गवासको लेकर [परिवारमें] रोना-धोना नहीं होता, यह अच्छी बात है। मरणका शोक मनाना ही गलत बात है। जिस राहपर सबको जाना है उसपर कोई जल्दी चला जाता है तो कोई देरसे, इतना ही फर्क है। इसमें शोक करना व्यर्थ है।

उम्मीद है, सब अच्छे होंगे।

बापूके आशीर्वाद

कमुबहिन
बोरा हरिदासका बंगला
हाई स्कूलके पीछे
राजकोट

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६४१. पत्र : किशोरलाल घनश्याम मशरूवालाको

बम्बई
१३ अप्रैल, १९४५

चि० किशोरलाल,

१:१२ की बात समझ गया हूँ। लेकिन मैंने जान-बूझकर परिवर्तन किया है। क्यों किया, यह लिखने के लिए समय नहीं है। स्वामी तुम्हें लिखेंगे। ब्याजके सम्बन्धमें तुम्हारा जो कहना है उसे आदर्शरूप तो मैं वर्षोंसे मानता आया हूँ। लेकिन यह व्यवहारमें नहीं चलेगा, ऐसा लगता है।

तुमने थोड़े दिन और रहने का निश्चय किया है, यह ठीक किया है।

मेरा कलका पत्र तुम्हें मिला होगा।

गोमतीकी दाढ़ डॉ० आइसको दिखानी चाहिए। वह कुछ बता सकेंगे, ऐसा मेरा खयाल है। डॉ० मनुभाई तो हैं ही।

६४६. पत्र : सत्यवतीको

बम्बई
१४ अप्रैल, १९४५

चि० सत्यवती,

तेरा खत मिला। तेरी सेवा वह भी जनसेवा है। क्योंकि तू अपने लिये नही जिन्दा है न जिन्दा रहना चाहती। तेरा प्रत्येक श्वास प्रजाके लिये है। चांदको मैं शिविरसे नही निकालुंगा। ११ तारीखको मैं मिला था। लेकिन शिविर खतम होने के वाद मैं चांदसे वात करूंगा। और तेरे पास भेजने की कोशिश करूंगा। दरम्यान ईश्वर तुझे अच्छी रखे। खुरशेद वहिन कुछ बीमार हो गई है। तुझसे मिलना तो चाहती है। तुझे मेरे पास आने का साहस नही करना है।

बापुका आशीर्वाद

श्री सत्यवती देवी
जे० बी० अस्पताल
किंग्सवे,
दिल्ली[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६४७. एक पुर्जा

१५ अप्रैल, १९४५

मुझे खेदके साथ कहना पडता है कि जिस चीजको, लगता है, रचनात्मक कार्यक्रमका अनुपूरक बनाने का इरादा था, वह उसकी बिलकुल उलटी बन गई है। और यह ऐसी भी नहीं है जिसपर अमल हो सके। यदि इसपर अमल किया जायेगा तो यह खुद तो विफल होगी ही, रचनात्मक कार्यक्रममें भी भारी बाधा पहुँचायगी। लेकिन यह तो चेतावनी मात्र है। जिन लोगोंको इस कार्यक्रममें विश्वास है उन्हें तबतक इसपर अमल करना चाहिए जबतक कि उन्हें यह विश्वास न हो जाये कि यह गलत है। यही सबसे अच्छा तर्क है।

१. पता अंग्रेजीमें है।

६४४. पत्र : विमला सी० मेहताको

बम्बई
१४ अप्रैल, १९४५

चि० विमला,

तेरी दिलचस्प कहानी पढ़ी। तुम दोनोंको आशीर्वाद। तुम दोनों बहुत उन्नति कर रही हो। आशा है कि यह जो उन्नति कर रही हो सो गिरने के लिए नहीं। गिरने का मतलब नौकरीसे हाथ धोना नहीं है, बल्कि आमोद-प्रमोदमें व्यस्त होकर स्वच्छन्द हो जाना है। स्वर्गीय कीकाभाईसे मेरा परिचय था। मेरे पिताजीके साथ उनका सम्बन्ध था। लेकिन तब मैं उन्हें उस शब्दकोशके रचयिताके रूपमें अधिक जानता था जो उन दिनों बहुत अच्छा माना जाता था। २० तारीखके बाद मैं सम्भवतः महाबलेश्वरमें होऊँगा। मैं जब वहाँ जाऊँ तब किसी समय मिलने आना।

बापूके आशीर्वाद

बहिन विमला सी० मेहता
हरिपुरा
भवानी वाड, सूरत

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६४५. पत्र : गोविन्द वल्लभ पन्तको

बम्बई
१४ अप्रैल, १९४५

भाई गोविंद वल्लभ पंत,

तुमारा खत आज मिला। डा० जीवराजने आज ही बात सुनाई। डाक्तरोंने सही कहा है। शस्त्रक्रियाके लिये शरीरकी योग्यता होनी ही चाहिये। मैं २० तारीख को मुंबई छोडना चाहता हूं। मुझे महाबलेश्वर लिखिये।

बापूके आशीर्वाद

श्री गोविन्द वल्लभ पन्त
भूतपूर्व प्रधानमन्त्री
नैनीताल[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पता अंग्रेजीमें है।

६५०. पत्र : प्रभाकर पारेखको

बिड़ला भवन, बम्बई
१५ अप्रैल, १९४५

चि० प्रभाकर,

तुमारा खत पढ़ा। अच्छा है। श्रीपत बाबाको भीमावरम जाना चाहिये। नारियल शायद यहांसे मिल सकें। लेकिन दूसरी वस्तु भी चाहिये।

शास्त्रीजीको[1] आश्रममें मरने का लोभ नहीं करना चाहिये। मनहरकी संस्था ही योग्य है और शास्त्रीजीको इतना ज्ञान होना चाहिये।[2]

नम्योंके पहले ही दो मिनिट रखो। मेरा ख्याल तो था कि नम्योंके बाद शान्ति होती है। उसे दो मिनिट स्थिर करें। लेकिन तुम कहते हो वही करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०२३) से। सी० डब्ल्यू० ९१४७ से भी; सौजन्य : प्रभाकर पारेख

६५१. पत्र : परचुरे शास्त्रीको

बिड़ला भवन, बम्बई
१५ अप्रैल[3], १९४५

शास्त्रीजी,

आप बीमार हो गये हैं। अगर मानसिक चिंताके कारण है तो अच्छा नहीं है। अगर मृत्युका ही निमंत्रण है तो क्या हरज है। हंसते-हंसते जाना है। और महारोगी [सं]स्थामें[4] हि उचित है। कुछ भी हो शांति रखो और तुकारामके अभंग गाओ या वेद मंत्र।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६६८) से। प्यारेलाल पेपर्स से भी; सौजन्य : प्यारेलाल

१. परचुरे शास्त्री
२. देखिए अगला शीर्षक भी।
३. प्यारेलाल पेपर्समें तिथि "१६ अप्रैल" है।
४. परचुरे शास्त्री वर्धाके समीप दत्तपुर कुष्ठ रोग भवनमें रह रहे थे।

इसलिए अगर मेरे पास समय हो, जो फिलहाल नहीं है, तो भी मैं इसपर बहस नहीं करना चाहता।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : जवाहरलाल नेहरू पेपर्स, भाग १, जिल्द ४। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

६४८. पत्र : चिमनलाल नटवरलाल शाहको

१५ अप्रैल, १९४५

चि० चि[मनलाल],

तुम्हारा पत्र मिला। साथके पत्र यथास्थान पहुँचाना। तुम काफी विस्तृत समाचार देते हो। दुर्गाकी गैरहाजिरीमें उसके घरके किसी हिस्सेका उपयोग करने की सुविधा मिल सकती हो तो अच्छा है। नहीं तो फिर कि०[1] का घर तो है ही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६२१) से

६४९. पत्र : जीवनजी डाह्याभाई देसाईको

१५ अप्रैल, १९४५

चि० जीवनजी,

इस पत्रके साथ [हिसाबकी] बहियोंसे सम्बद्ध आनन्दका पत्र तुम्हें पढ़ने के लिए भेज रहा हूँ। उन्होंने जो अंग्रेजी सामग्री भेजी है, वह भी भेज रहा हूँ। वह तो शायद तुम्हारे पास भी होगी। दोनों चीजें पढ़कर अपनी टिप्पणीके साथ वापस भेजना। मैंने आनन्दको अभी कुछ लिखा नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९९५४) से। सी० डब्ल्यू० ६९२८ से भी; सौजन्य : जीवनजी डा० देसाई

१. किशोरलाल मशरूवाला

६५४. पत्र : उमा अग्रवालको

बम्बई
१५ अप्रैल, १९४५

चि० ओम,[1]

उठकर कपडे कमरेमें रखते हैं उसका अर्थ हूआ कि कमरा तुमारे लिये है क्या? आदर्श यह है कि हमको सामानके लिये एक कोना मिले तो बहुत हुआ। कपडे उ० फेंकते हो कि लपटेकर सुगघडतासे रखते हो? प्रात. प्रार्थनामें जाने के पहले मुँ[ह] और चहरा साफ कर लेते हो? भोजनके बाद ३½ बजे तक की क्रियाका वर्णन हैं कपास गफाड, ओटना, धुनना, अखबार पढना, लिखना। अलग-अलग समय लेते हैं यह चाहिये। आठ घंटा काम करना अनिवार्य है। अहिंसक संस्थामें काम लेना जबर-दस्तीका रूप लेता है। काम ले क्यों? सब काम है। डायरी खानगी रखे नही। कुछ खानगी न रखना आदर्श है। संचालकके दस्तखत लेना अच्छा है।

सब काम स्वाध्याय है या होना चाहिये।

अध्यापक श्रीमननारायणकी पाठशालामें इंग्रेजी होना नही चाहिये। निकल जायगा। किम्मतकी मुझे खबर नही है। तुम्हारे तलाश करना। मुझे डायरी भेजो नही, आने पर बताओ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६५५. पत्र : पी० बी० चांदवानीको

बम्बई
१५ अप्रैल, १९४५

चि० चांदवानी,

तुमारा हिंदी खत देखकर मैं बहुत राजी हुआ। हिंदी खूब अच्छी कर लो। मैं ता० २० को महाबळेश्वर जाने की कोशिश करूँगा।

बापुके आशीर्वाद

श्री पी० बी० चांदवानी
पुराना सक्खर
सक्खर, सिन्ध[2]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. जमनालाल बजाजकी पुत्री
२. पता अंग्रेजीमें है।

६५२. पत्र : शरयू धोत्रेको — अंश[1]

१५ अप्रैल, १९४५

मेरी दृष्टिसे प्रश्न मुश्किल नहीं है। मैं तो आदर्श बताऊंगा; उससे विरुद्ध वर्तन कहांतक ठीक है, उसका सोचना प्रत्येक व्यक्तिका काम है। मैं जो आदर्श बताता हूं उससे विरुद्ध मेरा नीजी वर्तन है उसे भी सोचो। मेरा यहां आना और फिर महाबलेश्वर जाना विरोधी वर्तन है तो भी मैं कर रहा हूं। इसी तरह तुम भी कर सकती है। अगर दिल चाहे तो आदर्श नीचे है।

जो सबको न मिल सके उसका हम त्याग करें। व्यवहारमें हम नहीं करते है यह तो मैंने बताया। अब सरोज, रैहानासे या कमलनयनसे लेना या नहीं उसका निर्णय तुमारे ही बिना संकोच करना है। मुझे या किसी औरसे निर्णय करना नहीं चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८४१) से। सौजन्य : शरयू धोत्रे

६५३. पत्र : ई० डब्ल्यू० आर्यनायकम्को

१५ अप्रैल, १९४५

चि० आर्यनायकम्,

रामचंद्रनके लिये उत्तम भवनमें ही दूसरा कमरा दिलवाउं तो क्या हरज है। आखर ६ मासके लिये है ना? प्या[रेलाल]को सब कमरेका उपयोग है। बहुत कागज और पुस्तक है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. इस पत्रका केवल दूसरा पृष्ठ ही उपलब्ध है।

सत्याग्रह केवल मेरी नीति ही नहीं है। वह तो मेरा सिद्धान्त है। मैं इसके द्वारा ईश्वरसे साक्षात्कार करने की आशा रखता हूँ। अगर सत्याग्रहमें ऐसी शक्ति है तो राजनीतिक स्वराज्य हासिल करना तो मामूली बात है, बशर्ते कि सभी सत्याग्रही बन जायें।

लेकिन मेरा सत्याग्रह मुझे सिखाता है कि मैं उन लोगोंके साथ भी धीरजसे काम लूँ जिनका दृष्टिकोण मुझसे भिन्न है और जो संसदीय कार्यक्रमपर चलना चाहते हैं। आप जानते हैं कि मैंने डॉक्टर खान साहब और उनके दोस्तोंके साथ बैठकर बातचीत की है और इसी तरह एडवोकेट भूलाभाई देसाईके साथ भी। मैंने उनसे कहा कि वे अपने विश्वासके मुताबिक चलें। मैं किसीको अपना दुश्मन नहीं समझता — अंग्रेजोंको तो बिलकुल नहीं और न अंग्रेज अधिकारियोंको ही। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं उनका अनुकरण करूँ। मैं अपने रास्तेपर चलता हूँ। उन अधिकारियोंका तरीका तो भारतपर शासन करने का है, मेरा तरीका भारतकी सेवा करने का है। अधिकारियोंको सत्ता चाहिए। मैं पूर्णतः सेवा करने के पक्षमें हूँ और वह भी ईश्वरके नामपर। इसलिए मैं सारी दुनियाके विरोधका सामना कर सकता हूँ, क्योंकि मेरा विश्वास है कि ईश्वर मेरे साथ है और वह हमेशा साथ देनेवाला, सभी प्रयोजनोंके लिए समर्थ साथी और अचूक मार्ग-दर्शक है।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १६-४-१९४५

६५८. प्रश्नोत्तर[1]

[१६ अप्रैल, १९४५][2]

जातिके सम्बन्धमें मैंने क्या कहा है और क्या नहीं, यह जानने के लिए मेरे ढेरों लेखोंका मंथन करने की नाकाम माथापच्ची करने के बजाय निम्नलिखित प्रश्न भेजकर आपने ठीक किया है:

१. अपने लेखोंमें आपने जाति-व्यवस्थाके विषयमें जो विचार प्रकट किये हैं उनपर क्या आप अब भी कायम हैं?

२. जाति-व्यवस्था सर्वोत्तम सामाजिक व्यवस्था है और दुनियाको उसे ग्रहण करना चाहिए, ऐसा क्या आप अब भी मानते हैं?

१. एक पत्र-लेखकने गांधीजी के जाति-व्यवस्था विषयक लेखोंके कतिपय उद्धरणोंके साथ उन्हें कुछ प्रश्न भेजे थे। गांधीजी ने उन प्रश्नोंको सार-रूपमें देकर अपने तद्विषयक विचार संक्षेपमें प्रस्तुत किये। बादमें नवजीवन प्रकाशन मन्दिरने वर्णव्यवस्था की प्रस्तावना-स्वरूप ये प्रश्नोत्तर प्रकाशित किये। ये प्रश्नोत्तर बॉम्बे क्रॉनिकल और हिन्दू में भी प्रकाशित हुए थे।

२. १७-४-१९४५ के बॉम्बे क्रॉनिकल से

६५६. पत्र : हीरालाल शास्त्रीको

बम्बई
१५ अप्रैल, १९४५

भाई हीरालाल शास्त्री,

खत मिला। अपना काम निश्चिंत हो कर करते रहें। मुझे बीचमें न डालें। हृदय कहे वही करना, वही सच्चे आशीर्वाद हैं।

बापुके आशीर्वाद

श्री हीरालाल शास्त्री
प्रजामंडल
खेजडेका रास्ता
जयपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६५७. भाषण : प्रार्थना-सभामें

बम्बई
१५ अप्रैल, १९४५

गांधीजी ने कहा कि मैं अपने एक मित्रसे हुई बातचीतका जिक्र करना चाहता हूँ। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं बताऊँ कि गांधीवादी किसे कहना चाहिए, क्योंकि लोगों के मनमें इस विषयमें उलझन है। मैंने उत्तर दिया कि मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि भारतमें कोई गांधीवादी नहीं है। मैं खुद गांधीवादी नहीं हूँ। मैंने कोई पन्थ नहीं चलाया है। मेरा दावा है कि मैं सत्याग्रही हूँ, और इसलिए मैं अहिंसा-वादी हूँ, अथवा यों कहिए कि अहिंसावादी बनने की कोशिश कर रहा हूँ। मैं आपमें से हरएकसे कहूँगा कि आप भी अहिंसावादी बनने की कोशिश करें।

दक्षिण आफ्रिकामें, जहाँ हम बहुत कम संख्यामें थे और हमारे सामने भारी कठिनाइयाँ थीं, १९०६ में मैंने सत्याग्रहका आविष्कार किया, जिसका इस्तेमाल संसदीय कार्यक्रमके बदले किया जा सकता था। मैं कभी किसी संसद अथवा स्थानीय बोर्ड का भी सदस्य नहीं रहा हूँ। मैंने देखा कि इसके बजाय अहिंसात्मक असहयोग अत्यन्त शक्तिशाली साधन है। इसका रचनात्मक अंग १५-सूत्री कार्यक्रम है, जो आपने देखा है। इसमें स्वराज्य भी है और बहुत-कुछ और भी।

की एक लोकतान्त्रिक संस्था है और मेरी लगन-भरी देख-रेख के कारण वह दिनों-दिन अधिकाधिक ऐसी होती जा रही है।

मोहनदास करमचन्द गांधी

[गुजरातीसे]
वर्णव्यवस्था, पृ० १३-१४

६५९. तार : एलिनर रूज़वेल्टको

६½ बजे सायं, १६ अप्रैल, १९४५

श्रीमती रूजवेल्ट
हाइड पार्क
न्यूयॉर्क (यू० एस० ए०)

मेरी नम्र समवेदना और बधाई स्वीकार करें।[1] बधाई इसलिए कि आपके यशस्वी पतिकी मृत्यु उनके सक्रिय रहते और युद्धके एक ऐसे दौरमें पहुँच जानेके बाद हुई जब मित्र-राष्ट्रोंकी जीत निश्चित है।[2] वे ऐसी शान्ति-सन्धिमें भाग लेनेकी जिल्लतसे बच गये जो पहलेसे भी अधिक रक्तपातपूर्ण युद्धकी भूमिका बनती दिखाई देती है।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल। हिन्दू, १०-५-१९४५ से भी

६६०. पत्र : विश्वनाथ दासको

बम्बई
१५/१७ अप्रैल, १९४५

प्रिय दास,

मुझे आपका पत्र अच्छा लगा। मैं इस बातसे सहमत हूँ कि जो संसदीय प्रवृत्ति का अनुसरण करनेके इच्छुक हैं वे उसका अनुसरण करें। लेकिन निर्णय तो [कांग्रेस] कार्य-समितिको लेना होगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री विश्वनाथ दास
सदस्य, केन्द्रीय विधान-सभा
चाँदनी चौक
कटक, उड़ीसा

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. अमेरिकी राष्ट्रपति फ्रेंकलिन डी० रूज़वेल्टकी मृत्यु १२ अप्रैल, १९४५ को हुई थी।
२. जर्मनीने मित्र-राष्ट्रोंके सम्मुख ७ मईको और जापानने १४ अगस्तको आत्म-समर्पण किया था।

३. आज जो हजारों उपजातियाँ मौजूद हैं वे लुप्त होकर आपसमें मिल जायेंगी और अन्तमें मुख्य चार वर्णोंमें परिणत हो जायेंगी, ऐसा क्या आप आज भी मानते हैं? पिछले पच्चीस वर्षोंमें कितनी उपजातियाँ लुप्त होकर बड़ी जातियोंमें मिल गईं?

४. इतिहासमें हमें जो जातियाँ देखने को मिलती हैं वे सभी जन्म तथा उससे उत्पन्न असमानताके आधारपर बनी हैं। तो फिर जिस समानता और भ्रातृभावकी आप शिक्षा देते हैं क्या उसके साथ ऐसी समाज-व्यवस्था सुसंगत है? जैसा आपका आग्रह है, उसके मुताबिक अगर भंगी लोग कयामतके दिन तक पीढ़ी-दर-पीढ़ी झाड़ू लगाने का ही काम करते रहे तो फिर उनका भविष्य क्या होगा?

५. श्री संजाणाने "गायको राजनीति" को लेकर जो कड़ी आलोचना की है क्या वह तत्वतः सही नहीं है?

६. केन्द्रीय विधान-सभामें हिन्दू कानूनमें जातिभेद दूर करने के लिए जो प्रस्ताव पेश किया गया है उसपर क्या आप अपनी सहमति देंगे?

७. "कांग्रेस एक सनातनी हिन्दू संस्था है और गांधीजी की लगन-भरी देख-रेखमें वह जाति-व्यवस्थावाले सनातनी हिन्दु धर्मकी खैरख्वाह तथा उसके पुनरुद्धारकी मिशनरी बन गई है।" श्री संजाणाके इस आशयके कथनके बारेमें आपका क्या जवाब है? यदि श्री संजाणाका कथन सही है तो क्या इससे कांग्रेसके इस दावेको आघात नहीं पहुँचता कि वह विशुद्ध रूपसे राष्ट्रीय और कौमी भावनापर आधारित संस्था है?

८. लोकतन्त्र तथा लोकतान्त्रिक संस्थाओंके साथ जाति-व्यवस्था क्या सुसंगत है?

इन सबका मेरा उत्तर यह है:

आज मैं क्या मानता हूँ, यह बताने के लिए मुझे अपने पहलेके लेखोंको देखने की जरूरत नहीं है, क्योंकि मेरी आजकी मान्यता ही यथार्थ है। मैं यह कहना चाहता हूँ कि हिन्दू धर्ममें जाति-व्यवस्था आज जिस रूपमें मौजूद है वह एक ऐसी बेहूदी चीज है जिसका समय लद गया है। सच्चे धर्मके विकासमें इसे विघ्नरूप तो होना ही है और यदि हिन्दू धर्म और हिन्दुस्तानको जीवित रहना है तथा दिन-प्रतिदिन प्रगति करनी है तो उसका नाश होना ही चाहिए। ऐसा करने का उपाय यह है कि सभी हिन्दू अपने-अपने भंगी बनें और तथाकथित वंश-परम्परागत 'भंगियों' को अपने भाईके समान मानें।

मैं भंगीका उल्लेख इसलिए करता हूँ कि सीढ़ीके सबसे नीचेके पगपर वही खड़ा है। इसमें आपके सभी प्रश्नोंका उत्तर आ जाता है और मेरे लिए इससे विशेष कुछ कहने की जरूरत नहीं रह जाती। यह स्पष्ट है कि प्रश्नकर्त्ताने मेरे लेखोंको पढ़ने का कष्ट नहीं उठाया है। . . .[1] सभी जानते हैं कि कांग्रेस अपने जन्मसे ही सनातनी हिन्दू संस्था नहीं थी और आज भी नहीं है। वह भिन्न-भिन्न विचारोंवाले लोगों

१. रिक्त स्थान साधन-सूत्रके अनुसार है।

६६३. पत्र : प्रेमा कंटकको

बम्बई
१७ अप्रैल, १९४५

चि० प्रेमा,

तेरे पिछले पत्रका उत्तर मैंने दिया या नहीं, यह याद नहीं। दूसरा पत्र आज मिला। मैं २० तारीखको महाबलेश्वरके लिए रवाना होऊँगा और महीना-भर वहीं रहूँगा। यह घटना-चक्रपर निर्भर है। वहाँ तू आये तभी मिलना हो सकता है। जरूरत हो तो कहीं भी जाया जा सकता है। नहीं तो मैं महाबलेश्वर ही क्यों जाता?

तेरी बताई पुस्तक अभीतक तो नहीं मिली। मिल जायेगी। आचार्य भागवत शरीक होंगे,[1] यह अच्छी बात है। मेरी तबीयत ठीक कही जा सकती है।

पुस्तक मिल गई।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४३४) से। सी० डब्ल्यू० ६८७३ से भी; सौजन्य : प्रेमा कंटक

६६४. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१७ अप्रैल, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। रामप्रसादको मीराबहिनके पास भेजना है। तुम्हारे पास तो अपना काम है ही। रसोईघरका काम बारी-बारीसे एक-एक आदमी देखे। बहुत बहस नहीं करनी चाहिए। अध्यक्ष सबकी सुनकर निर्णय करे — सर्वानुमतिसे, या बहुमतसे, या अपने विवेकसे। जबतक व्यवस्था आसानीसे नहीं चल पाती, तबतक सब अधूरा है।

२५ रुपयेके बारेमें जो तुम कहते हो, ठीक है। किस मदमें उसका लेखा किया जाना है, यह तुम्हारे देखने की चीज नहीं है। इसे अस्पतालके हिसाबमें रखना ठीक मालूम होता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५९४४) से। सौजन्य : मुन्नालाल गंगादास शाह

१. कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक निधिकी महाराष्ट्र शाखा द्वारा आयोजित प्रशिक्षण-शिविरमें

६६१. पत्र : सुरेन्द्रनाथ बसुको

बम्बई
१७ अप्रैल, १९४५

प्रिय सुरेन्द्र,

मुझे भूपेनसे मालूम हुआ है कि तुम्हारे भाईका देहावसान हो गया है। मेरी सहानुभूति तुम्हारे साथ है।

तुम्हारा,
बापू

श्रीयुत सुरेन्द्रनाथ बसु
२० ए, शंकरपारा रोड
भवानीपारा
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६६२. पत्र : भूपेन्द्र नारायण सेनगुप्तको

बम्बई
१७ अप्रैल, १९४५

प्रिय भूपेन,

मैंने समवेदना-सन्देश[1] भेज दिया है।

धीरेन्द्र क्या कर रहा है, इसका ब्योरा मुझे अवश्य भेजना। और डॉ० इन्द्र चिकित्सा-कार्यके सम्बन्धमें प्रफुल्लसे मिल लें।

तुम्हारा,
बापू

श्रीयुत भूपेन्द्र नारायण सेनगुप्त
९९/२, बालीगंज प्लेस
कलकत्ता

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १००६५) से

१. देखिए पिछला शीर्षक।

६६७. पत्र : पी० सी० पाध्येको

बम्बई
१७ अप्रैल, १९४५

भाई पाध्ये,

बुद्ध मंडलीके तरफसे आपका खत मिला। मैं लाचार हूं। मैं कही जाता ही नही जिस चीजमे मैं हट सकता हू। यो भी मै तो मुबई बाहर जा रहा हूं। आपने जिस पुस्तकके बारेमे लिखा है नही मिली है। शायद मिल जायगा।

आपका,
मो० क० गांधी

एडवोकेट पी० सी० पाध्ये
बुद्ध सोसाइटी
नायर बिल्डिंग
लेमिंग्टन रोड
बम्बई[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६६८. पत्र : मुहम्मद यूनुसको

१७ अप्रैल, १९४५

भाई यूनुस,

तुम्हारा ख़त मिला। दोनोकी शादी दोनोंके लिए और मुल्कके लिए अच्छी बनो।[2] दोनो आराममे रहो और मुल्ककी खिदमत करो। दिल चाहे तब आ जाओ।

बापूकी दुआ

भाई यूनुस
खादी गेट
पेशावर[3]

उर्दूकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१ और ३. पता अंग्रेजीमें है।
२. साधन-सूत्रके अनुसार

६६५. पत्र : रामप्रसादको

१७ अप्रैल, १९४५

चि० रामप्रसाद,

तुम्हारा पत्र मिला। भले मामा भी लिखे। तुम मीरावहिनके पास जाओ। साथमें पत्र है; उसमें सारी जानकारी है। वेतनके सम्वन्धमें मीरावहिनसे कहना कि "वापूको दे। मुझे तो वापू ही देंगे। मैं तो दो महीनेके लिए तुम्हारी मदद करनेके लिए आया हूँ।"

इतना तुम सहज ही कर सकोगे।

वहाँ पहुँचकर मुझे लिखना।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६६६. पत्र : मगनभाई देसाईको

वम्वई
१७ अप्रैल, १९४५

चि० मगनभाई,

तुम्हारी योजनाके वारेमें भाई नरहरिने अपनी राय भेजी है। वह देखना और उनके साथ चर्चा करना। मुझे जो लिखना हो, लिखना।

वापूके आशीर्वाद

श्री मगनभाई देसाई
राष्ट्रीय गुजरात विद्यापीठ
अहमदावाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६७१. पत्र : चिमनलाल नटवरलाल शाहको

बम्बई
१८ अप्रैल, १९४५

चि० चिमनलाल,

सुशीलाबहिन कहती है कि जाजूजी वगैरहके साथ यह तय हुआ है कि निदान तथा सामान्य चिकित्साके बाद पेटेंट दवाओं आदिपर जो खर्च हो, वह खर्च रोगी स्वयं करें, तथा वे पेटेंट दवाएँ अस्पताल न मँगाये, बल्कि नुस्खेके अनुसार रोगी स्वयं मँगा लें। इस व्यवस्थाके अनुसार, वाष्पन-विधिसे तैयार किये गये (डिस्टिल्ड) पानी की कीमत उन रोगियोंसे वसूल की जानी चाहिए जिन्हें वह दिया जाता है, या फिर आश्रम देना चाहे तो दे। यह तो हुई हिसाब रखने की बात। सुशीलाबहिन अस्पताल को आत्म-निर्भर बनाना चाहती है। लगता है हरिइच्छा, किशोरलाल वगैरहके लिए वाष्पन-विधिसे पानी तैयार किया जाता है। उनसे उसकी कीमत लेना उचित नहीं होगा इसलिए यह खर्च आश्रमके खातेमें जाना चाहिए, ऐसा मुझे लगता है। इसमें तुम्हें कुछ और कहना हो तो लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६२२) से

६७२. पत्र : आर० के० सिध्वाको

बम्बई
१८ अप्रैल, १९४५

भाई सिध्वा,

तुम्हारा पत्र मिला।

मैं यदि ऐसा कुछ लिखूँगा जिसकी कि तुम्हें आशंका है तो उसके बारेमें मैं तुम्हें पहलेसे ही बता दूँगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री आर० के० सिध्वा, एम० एल० ए०
विक्टोरिया रोड
कराची

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

विश्व-संघ अपने सदस्य राष्ट्रोंकी स्वतन्त्रताकी, एक राष्ट्रके द्वारा दूसरेपर आक्रमणकी अथवा एक-दूसरेके शोषणको रोकने की, प्रत्येक राष्ट्रके अल्पसंख्यकोंकी रक्षाकी, सब पिछड़े प्रदेशों और पिछड़े लोगोंकी उन्नतिकी और सभीकी भलाईके लिए विश्वके साधनोंको मिलाकर काममें लाने की व्यवस्था करेगा। इस तरहके विश्व-संघकी स्थापनाके बाद सब देशोंका निःशस्त्रीकरण सम्भव हो जायेगा; राष्ट्रोंकी अपनी थल, नौ तथा वायु सेनाओंकी जरूरत नहीं रहेगी, और विश्व-संघीय सेना विश्वमें शान्ति बनाये रखेगी तथा आक्रमणको रोकेगी। स्वतन्त्र होने पर भारत ऐसे विश्व-संघमें खुशीसे शामिल हो जायेगा, और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओंको सुलझाने में दूसरे राष्ट्रोंके साथ समानताके आधारपर सहयोग करेगा।

अतः भारतकी स्वतन्त्रताकी माँग किसी तरह भी स्वार्थपूर्ण नहीं है। भारतकी राष्ट्रीयतामें अन्तर्राष्ट्रीयता निहित है।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १८-४-१९४५

६७०. सन्देश : दक्षिण आफ्रिकावासी भारतीयोंको[1]

बम्बई
१८ अप्रैल, १९४५

जिस प्रकार भारतके पास विश्वकी सभी जातियों और राष्ट्रोंकी मुक्तिकी कुंजी है उसी प्रकार दक्षिण आफ्रिकावासी भारतीयोंके हाथोंमें सभी शोषित प्रवासियोंकी रक्षा और मुक्तिकी कुंजी है। कारण, दक्षिण आफ्रिकामें ही सत्याग्रहको ठीकसे आजमाया गया और वह बहुत हदतक सफल रहा। क्या वहाँके भारतीय इस समान ध्येय के निमित्त ऐक्यबद्ध होकर आत्मबलिदान करेंगे?

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २३३४) से

१. यह सन्देश ओवरसीज इंडियन स्टुडेंट्स एसोसिएशन (प्रवासी भारतीय छात्र संघ) के संयुक्त मन्त्री जे० आर० भालाकी मार्फत पहुँचाया गया था। भालाने गांधीजी से मिलकर उन्हें प्रवासी विद्यार्थियोंकी कठिनाइयोंसे अवगत कराया था। यह सन्देश १-५-१९४५ के बॉम्बे क्रॉनिकल, और २-५-१९४५ के हिन्दू में भी प्रकाशित हुआ था।

६७५. पत्र : प्रभाकर पारेखको

बम्बई
१८ अप्रैल, १९४५

चि० प्रभाकर,

दो बातका उत्तर देना भूल गया। चि० रामदासने वजन गवाया, उसकी चिन्ता नहीं है अगर वह रोगमुक्त हो जाये और शक्ति कायम रहे। तुमारा मालीश तुमारे कर लेना सर्वोत्तम है। तुमारी उमरमें मैं अपना मालीश रोज कर लेता था। अबी भी कर सकता हूं। जिनके अवयव अशक्त हो गये हैं उसे तो मालीश करवाना ही चाहिये। यह तो मेरा अभिप्राय है। विचारपूर्वक जो उचित लगे सो किया जाये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०२८) से। सी० डब्ल्यू० ९१४८ से भी; सौजन्य : प्रभाकर पारेख

६७६. पत्र : कृष्णचन्द्रको

बम्बई
१८ अप्रैल, १९४५

चि० कृ[ष्ण] च[न्द्र],

तुमारा खत आज ही पूरा पढ सका। बालकृष्ण भले आ गये। अगर गरमी होते हुए भी खेतमें अच्छा लगे तो रहे। वहांसे पानी मगवाना कोई बडी बात नहीं है।

तुमको स्राव नहीं होना चाहीये। लसुन और प्याज बन्द करो, कटीस्नान ठीक लेना (भुखो पेट)। उससे लाभ होगा। योग्य उपाय लेने के बाद गभराना नहीं। रामनाम लेते ही रहना। वानर[1] शिक्षक याद रखो। मेरे सामने तो है। तुम्हे चाहीये और लाभ हो तो भेजु। गरमीसे हो सकता है लेकिन असली चीज मन है। पेसाब में जलन रोकने के लिए तुमारे पानी पाच रतल पीना अगर बराली [बाष्पन-विधिसे तैयार किया हुआ] लो तो अच्छा है। उबला हूआ तो होना ही है। तुमारा बिछाना पटडीका और कठिन होना चाहीये। तुमने आश्रममें ही इसका निश्चय भले किया।

१. यहाँ संकेत सम्भवतः [गांधीजी के] तीन बन्दरोंकी ओर है।

६७३. पत्र : प्राणशंकर जोशीको

बम्बई
१८ अप्रैल, १९४५

भाई प्राणशंकर,

आपका पत्र मिला। यदि मुझे एक पुस्तक भी मिले तो मुझे अच्छा लगेगा। लेकिन मुझे समय ही नहीं मिला कि मैं [आपके लिए] बचा सकूं। फिर भी मेरे महाबलेश्वर पहुँचने के दस दिन बाद आप मुझे लिखिए।

मो० क० गांधी

प्राणशंकर जोशी
फूलवाड़ी
जेतपुर (काठियावाड़)

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६७४. पत्र : शीलाको

बम्बई
१८ अप्रैल, १९४५

चि० शीला,

तेरे खत बहुत लंबे और विचार-रहित रहते है। जितना छोटा इतना मीठा। डाला करूंगा के मानी रोज नहीं। वर्षमें एक डालते रहे तो डाला करूंगा कहा जाय। जल्दीकी तो बात ही नहीं थी।

दोस्त वह है जो पत्रकी आशा न करें।

बापुके आशीर्वाद

शीलाबहन
शिक्षा सदन
मेरठ

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६७८. पत्र : किशोरलाल घनश्याम मशरूवालाको

बिड़ला भवन, बम्बई
१९ अप्रैल, १९४५

चि० किशोरलाल,

यह तो तुम जिस परम होशियारीसे काम लेते हो, उसके लिए लिख रहा हूँ। तुम्हारा पुर्जा काँटेकी पिन और रोजकी खबर!¹ साँपकी खबर तो कई ओरसे मिली। हम साँपोंके बीच ही पड़े हुए हैं। ऐसे समय ही हमारी परीक्षा भी होती है।

देवसे कहना, मैं इस बार पत्र नहीं लिख रहा हूँ।

मैं चाहता हूँ कि आपके जाने से पहले यह पत्र आपके पास पहुँच जाये। मणिलाल अकोला नहीं गया।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६७९. पत्र : मयाशंकर देसाईको

बम्बई
१९ अप्रैल, १९४५

भाई मयाशंकर,

तुम्हारा पत्र मिला। यहाँ तो अब समय नहीं रहा। महाबलेश्वर मुझे आठ दिन बाद लिखना। अपनी तबीयत देखकर मैं तुम्हें समय लिख भेजूँगा। [तुम्हारी] बात तो समझ ही लूँगा। मैं करना तो बहुत-कुछ चाहता हूँ। लेकिन सवाल यह है कि मुझमें शक्ति कितना-कुछ करने की है।

बापूके आशीर्वाद

मयाशंकर बृ० देसाई
भाई महेन्द्र भोगीलालकी पेढ़ी
हीरोंके व्यापारी
दीवानचन्द भवन
झवेरी बाजार, बम्बई

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

जितना काम आसानीसे हो सके करो। ओमप्रकाश कहते है वह गलत है। आश्रमका नहीं तो मेरा परिचय क्या करेंगे?

दूसरोंके खत को पहोंच सकु तो भेजुंगा।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

तुमने नियम अच्छे लिये है। अभयदान है ही १९ ता० तुमारा दूसरा खत मिला। इंग्रेजी बच्चे सीखना चाहें और न चाहे तो हमारी भाषा के साथ सिखावे लेकिन रमेनको कभी नहीं। सब चीजमें विवेक है ना?

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५०९) से

६७७. पत्र : अमृतलाल नानावटीको

१९ अप्रैल, १९४५

यह मैं पढ गया। अच्छा है। आलोचककी तरह नही पढ़ा। वैसे पढ़ता तो सुझाव देता, लेकिन उसमें मैं पड़ना नही चाहता। नकलें करो, तो एक प्यारेलालको देना, और एक-एक जिन्हें म० भाई जानते हों उन्हें। एक काकासाहबको भेजना। वे आलोचना करेंगे और सुझाव देंगे। इसे नदवीको[1] भी दिखाना। दो परीक्षाओंके बीच का अन्तर बताना चाहिए। सभी लिपियोंके ज्ञानके बारेमें कुछ कहा गया है। इसका अर्थ यह हो सकता है कि वे भी सिखाई जायें। निरक्षर बहुत हैं, करोड़ों हैं। उन्हें तो नागरी लिपि ही सिखाई जा सकती है, क्योंकि वह पूर्ण है। इसका मतलब यह हुआ कि संस्कृतसे उत्पन्न सब भाषाओंके लिए एक लिपि होगी। वे सब अपनी मातृभाषा भी उसी लिपिमें लिखेंगे। मातृभाषा बनी रहे, मातृलिपिकी आवश्यकता नहीं है। राष्ट्रभाषा, जबतक झगड़ा समाप्त नहीं होता, दो लिपियोंमें लिखी जाये। अरबी-फारसीके शब्दोंको छोड़कर बाकी शब्दोंमें 'स' के लिए एक ही चिह्न 'सीन'[2] काममें लाया जाये; अन्य कई अक्षरोंके बारेमें भी ऐसा ही किया जा सकता है। अब और ज्यादा नहीं लिखूंगा। जितना सोचा था, उससे अधिक लिख गया।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०८०७) से

१. इस्माइल यूसुफ कॉलेज, अन्धेरीके एक शिक्षक नजीब अशरफ नदवी
२. साधन-सूत्रमें यह उर्दू लिपिमें है।

तो है कि आप उसमें पूरी मदद दें क्योंकि आप आप ही हैं और आपके प्रति मेरा आदर है।

अगर हिन्दुस्तानी प्रचारको हिंदी प्रचारक सहज करेंगे और कृपादृष्टि रखेंगे तो जरूर फैल नहीं सकता है।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६८२. पत्र : चाँदरानीको

बम्बई
१९ अप्रैल, १९४५

चि० चाँद,

तेरा अच्छा खत मिला है। वहांका तेरा काम तो पूरा करना ही है। इतनेमें सत्यवतीके और खबर आवेंगे। मुझे महाबलेश्वर लिखा करेगी। मैं निर्णय करूँगा। सब बहनोंको मेरे आशीर्वाद।

मनुको[1] फिर बुखार आया और खून भी। दुर्बलता हुई है। वजन बहुत नहीं गवाया है।

बापुके आशीर्वाद

श्री० चांदरानी
क० बा० निधि, शिबिर
सुरेश कुटीर
मडपेश्वर रोड
बोरिवली

पत्रकी फोटो-नकलसे : चाँदरानी पेपर्स। सौजन्य : गांधी राष्ट्रीय संग्रहालय और पुस्तकालय

१. जयसुखलाल गांधीकी पुत्री

६८०. पत्र : केशव देवधरको

बम्बई
१९ अप्रैल, १९४५

चि० देवधर,

तुम्हारा खत बहुत अच्छा है। चि० देवेन्द्रनाथ बच गया सो ईश्वरकी कृपा। प्रभाकर महेनतु [मेहनती] और वाहोश है। नारायणने परमार्थके कारण ही देह लिया है। ईश्वर उसे दीर्घायु करे। दूसरे भाईयोंका मुझे बहुत परिचय नहीं है। सबको मेरे धन्यवाद। सिविल सर्जन तो हमपर बहुत कृपा करते ही हैं। देवेन्द्र अब तो बिलकुल अच्छा होगा।

बापुके आशीर्वाद

श्री केशव देवधर
खादी विद्यालय
सेवाग्राम

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६८१. पत्र : पुरुषोत्तमदास टंडनको

बम्बई
१९ अप्रैल, १९४५

भाई टंडनजी,

कलके संवादसे मुझे कुछ दुःख हुआ। मैंने आपका समय निकम्मा तो नहीं लिया? और दूसरा यह की बहुत सरल बात मैं समजा नहीं सका। हिंदीमें उर्दूका त्याग नहीं है सो तो मैंने इंदोरमे ही स्पष्ट किया था। आप भी त्याग तो नहीं करना चाहते है। तो आपका और मेरा धर्म हो जाता है कि हम दोनों लिपि और तरह जाने और अन्य राष्ट्रप्रेमी भी। हम जब राष्ट्रभाषावालोंकी गिनती करते हैं तो उसमें उर्दुवाले आ जाते हैं। इसलिये राष्ट्रभाषा हिंदी + उर्दु है। अगर संकुचित अर्थमें हिंदी समझे तो हिंदी अधुरी राष्ट्रभाषा बनती है। जिनमें राष्ट्रभावना है सो तो और दो रूप आसानीसे सीखेंगे। जो नहीं सीखेंगे वे पीछे रह जायेंगे। ऐसे मेरे विचार होते हुए मैं तो हिंदुस्तानी प्रचार करूंगा, दूसरे सहाय दे या न दे। मेरी तीव्र इच्छा

६८५. भाषण: प्रार्थना-सभामें

बम्बई
१९ अप्रैल, १९४५

गांधीजी ने प्रार्थनाकी उपयोगिताकी चर्चा की और लोगोंसे कहा कि मेरे चले जाने के बाद भी आप इसका अभ्यास जारी रखें। मैं आपसे खासकर यह प्रार्थना करने के लिए कहूँगा कि छुआछूतका कलंक जड़-मूलसे मिट जाये और आपके दिलोंमें छुआछूतके लिए कोई जगह न रहे।

साथ ही मैं आपसे यह भी कहूँगा कि प्रार्थना करना काफी नहीं है। यद्यपि हर बात अन्ततोगत्वा ईश्वरकी इच्छापर निर्भर है, फिर भी आपको अपने कर्तव्यका पालन करते रहना चाहिए। मैंने आपके सामने जो १५-सूत्री कार्यक्रम रखा है, उसमें स्वराज्यकी कुंजी छिपी है। मुझे विश्वास है कि यदि आपमें से बहुत-से लोग सच्चे दिलसे उसपर अमल करेंगे तो आपकी कोशिशें सफल होंगी।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २०-४-१९४५

६८६. तार: जयरामदास दौलतरामको

बम्बई
[२०][1] अप्रैल, १९४५ [या उसके पूर्व]

जयरामदास दौलतराम
हैदराबाद (सिन्ध)

खुशीकी बात है कि सब रिहा हो गये। स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. गांधीजी बम्बईसे २० अप्रैलको रवाना हुए थे।

६८३. पत्र : हुशियारीको

बम्बई
१९ अप्रैल, १९४५

चि० होशियारी,

तेरा खत अच्छा है। लडकेके वारेमे दृढ़तासे खत लिखा सो अच्छा किया। मैं अव तुझे मेरी गैरहाजरीमे वाचाको [बच्चेको ?] वाहर जाने देने का नही कहूगा। इतना तो है कि वयसे तो तू वच्ची नही है। तेरा कार्यक्रम अच्छा है। वहांकी गरमी कुछ कम हुई है ऐसा पढ़ा लेकिन गरमी और वढेगी तो सही। हमारा मुलक ही गरम है ना? तेरे अक्षर कुछ सुधरे हैं। और सुधार और भाषा भी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६८४. पत्र : सरस्वती गांधीको

बम्बई
१९ अप्रैल, १९४५

चि० सुरु,

तेरा खत पाकर मैं वहुत खुश हुआ। ईश्वर तुझे सफलता देगा। जो जीत मैंने हरिलाल पर नही पाई सो तुम दोनोंको मिले। तू ठीक कहती है कि दो दुर्गुण निकल जावे तो सब भाईयोंमें वह श्रेष्ठ वन सकता है। देखे तुम लोग क्या करते हैं। कांती को तो वहुत विश्वास हैं। श्रध्घा वहुत वडी वस्तु है। मैं कल महावलेश्वर जा रहा हू। वहा एक मास होगा और दूसरा पंचगनी। माधवदासने[1] जहर पीया था लेकिन अब वच गया है। मणीलाल, सुशीला और वच्चे पहुंच गये हैं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१८५) से। सी० डब्ल्यू० ३४५९ से भी; सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

१. कस्तूरबा गांधीके भाई माधवदास गोपालदास कापडिया

६८९. पत्र : स्वामी आनन्दको

बम्बई
२० अप्रैल, १९४५

चि० स्वामी,

तुम्हारा पत्र मिला। भाई छोटूभाईका काम मुझसे छिपा नही है और न उनका त्याग ही अनजाना है। अब उनकी तेईस वर्षकी कन्याका विवाह सादगी और शुद्धताके साथ होनेवाला है, ऐसा तुमने लिखा है। सो उसमें मेरा आशीर्वाद तो है ही। वर-वधू दीर्घायु हों और दोनो मिलकर देशकी खूब सेवा करें।

बापाके साथ बात करना तो रह ही गया। अब मै उन्हे पत्र लिख रहा हूँ।

चि० किशोरलाल और गोमतीको वायु-परिवर्तनसे लाभ हो। दुर्गाके बारेमें तो क्या लिखूं? वह कभी स्वस्थ होगी क्या? हो जाये तो अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

स्वामी आनन्द
मार्फत जुगलकिशोर
डाकघर करमवेल आर० एल०
बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६९०. पत्र : भोगीलालको

बम्बई
२० अप्रैल, १९४५

चि० भोगीलाल,

तुम्हारा पत्र शेवटेकी मार्फत मिला। तुम्हारी लिखावट साफ है। तुम्हारे विचार भी मुझे अच्छे लगते हैं। तुम किसके पुत्र हो, इसका तुम्हे पूरी तरहसे भान है— यह बात मुझे बहुत अच्छी लगती है।

जाने की तैयारीमें हूँ, इसलिए अधिक नही लिखता।

सारे परिवारका कल्याण चाहता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६८७. पत्र : पुरुषोत्तमदास टंडनको

बम्बई
[२० अप्रैल, १९४५ या उसके पूर्व][1]

जौनपुरके कैदियोंके[2] बारेमें आपने मुझे जो कागज-पत्र भेजे हैं, वे मैंने पढ़ लिये हैं। मैं समझता हूँ कि उन्हें फाँसीके तख्तेसे बचाना चाहिए। मैंने अष्टी और चिमूरके कैदियोंके बारेमें जो कुछ लिखा है,[3] वह इनपर भी पूरी तरह लागू होता है। आपने देखा होगा कि मैंने ऐसे सब कैदियोंको बचाने की कोशिश की है। मुझे आशा है कि इस तरहके कैदियोंको फाँसी नहीं दी जायेगी।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दुस्तान टाइम्स, २१-४-१९४५

६८८. पत्र : चिमनलाल नटवरलाल शाहको

बम्बई
२० अप्रैल, १९४५

चि० चिमनलाल,

जबसे यहाँ आया हूँ, बराबर तुम्हारी याद आती रही है। जबरदस्ती कुछ मत करना। हृदयसे किया हुआ काम सन्तोष और शान्ति देता है। शारदा चाहे रहे, चाहे जाये। हम तो बस अपने कर्त्तव्यका पालन कर सकें, तो काफी है। अपने स्वास्थ्य और शरीरका ध्यान रखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६३९) से

१. जिस रिपोर्टमें से यह पत्र लिया गया है उसकी तिथि २० अप्रैल है।

२. जौनपुरके सत्र न्यायालयमें सात कैदियोंपर मुकदमा चलाया गया था और उन्हें मौतकी सजा सुनाई गई थी। अपील करने पर इलाहाबाद उच्च न्यायालयने एक मुलजिमको बरी कर दिया, एक और मुलजिमकी सजा घटाकर ३ साल कर दी, और बाकी पाँचकी सजाएँ बहाल रखीं। संयुक्त प्रान्तके गवर्नरके पास दयाकी अपील की गई।

३. देखिए "वक्तव्य : समाचारपत्रोंको", पृ० ३६०।

६९३. पत्र : गणेश रामको

बम्बई
२० अप्रैल, १९४५

भाई गणेश राम,

तुमारा खत मिला। मेरी सलाह है कि तुम्हारे आश्रमके मंत्री जैसे कहे ऐसे करने। मेरे वापिस आने समयका ठिकाना नहीं है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५१०) से

६९४. पत्र : चिमनलाल नटवरलाल शाहको

महाबलेश्वर
२१ अप्रैल, १९४५

चि० चिमनलाल,

आज हम लोग यहां पहुंच गये। मनु यहां है, बाकी लडकियां शिविरमें हैं। मनुकी तबीयत आज तो ठीक है। हां, कमजोरी बहुत है। आशा है, यहां अच्छी हो जायेगी। प्रेमलीलाबहिन और भाई शान्तिकुमारने सारी व्यवस्था की है। अभी तो यहां ठंडा है, ऐसा कहा जा सकता है। धूप बहुत लगती है। लेकिन ऐसा तो शिमलामें भी होता है।

भाई रामप्रसाद मीराबहिनके पास चले गये होंगे।[1] किसीको वहां फौरन जाना चाहिए। मीराबहिनकी आवश्यकता तात्कालिक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६२३) से

१. देखिए "पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको", पृ० ४१७ और "पत्र : रामप्रसादको", पृ० ४१८।

६९१. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२० अप्रैल, १९४५

चि० कृ[ष्ण] चं[द्र],

यह रहा ग्रिम्स लो।[1] बड़ा मार्गदर्शक है। इसीसे हिंदुस्तानको भाषाके लिये बना सकते हैं। न बने तो मुझे पूछो। रमुजी [मजेदार] अभ्यास है। इससे लगेगा लिपि रमत [खेलकी] बात है। मेरे पास एक नकसा आया है उससे तो बहुत सहल होता है। मौलिक लिपि शायद ही है। अब मैं बहुत भीडमें हूं। इससे अधिक नहीं। थोड़े घंटेमें स्टेशन जाना होगा।

बापुके आशीर्वाद

श्री कृष्णचन्द्र
आश्रम
सेवाग्राम[2]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६९२. पत्र : बलवन्तसिंहको

बिड़ला भवन
२० अप्रैल, १९४५

चि० ब[लवन्त] सिंह,

वेटेरीनरी सीखो। चलकर जाने मे कोई हरज नहीं। लेकिन घूपमें नहीं। सवेरे जाना शहरमें रहना ६ बजेके बाद चल देना। शहेरमें लिखना-पढ़ना होशियारीका अच्छा चलता है। तुमारे सबके साथ मिलजुलकर रहना है। बात कम काम बहूत। अब रवाना होने का समय नजदीक आ रहा है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९५९) से

१. इसका नाम जर्मन वैयाकरण जैकब ग्रिम (१७८५-१८६३) के नामपर रखा गया था। इस नियममें जर्मन और अन्य भारोपीय भाषाओंमें व्यंजनोंकी समानताका निरूपण किया गया है।

२. पता अंग्रेजीमें है।

६९७. पत्र : मीराबहिनको

महाबलेश्वर
२१ अप्रैल, १९४५

चि० मीरा,

तुमारा १४ एप्रिलका खत मिला। मेरी उमीद है कि रामप्रसाद तुमारे पास पहुंचा होगा या पहुंच जायगा। बहुत होशियार है। उसे दो माससे अधिक मत रोको। जितना आराम उसे दे सकती है इतना दो। बाकी मैं दूंगा। मैं आज यहां पहोंचा हूं। मेरी हिंदी पढ़ सकती है क्या? प्रेमलीलाबहन और शांतिकुमारका महमान हूं। साथमें प्यारेलाल, सुशीला, दीनशा और प्या[रेलाल] के दो मददनीश [मददगार] है। मनु है पर वह बीमार है, इसलिये कनु है। थोडे रोजके लिये राजकोट जायगा।

बापुके आ[शीर्वाद]

श्री मीराबहिन, किसान आश्रम, मुलदासपुर
पो० ऑ० बहादराबाद, बरास्ता ज्वालापुर
हरद्वारके समीप, संयुक्त प्रान्त[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६९८. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

महाबलेश्वर
२१ अप्रैल, १९४५

भाई अमृतलाल,

तुमको महाबलेश्वर जानेके पहले खत न दे सका। खत कल ही मिला। पुष्पा[2] के पिताको खत दिया है।

बहिनोंके बारेमें मुझे सन्तोषजनक प्रमाण मिल जायगा तो मैं लिखुगा।[3]

१. पता अंग्रेजीमें है।

२. एक गुजराती बालिका, जो सेवाग्राम आश्रममें रहना चाहती थी।

३. श्री अमृतलाल चटर्जीने शिकायत की थी कि ब्रिटिश सेनाके लोग महिलाओंके साथ दुर्व्यवहार करते हैं।

६९५. पत्र : जयसुखलाल गांधीको

महाबलेश्वर
२१ अप्रैल, १९४५

चि० जयसुखलाल,[1]

यहाँ आकर ही तुम्हें पत्र लिख पा रहा हूँ। चि० मनुने कष्ट तो बहुत भोगा। नाकसे खून बहता ही रहता था। बुखार भी आता था। अब लगता है, नाकसे खून नही बहेगा और बुखार भी नही आयेगा। मनुको यहाँ ले आया हूँ। इलाज और मेहनत सुशीलाबहिनने की। मैं कभी-कभी हिम्मत करके प्राकृतिक चिकित्सा करता था। दो दिन एक होमियोपैथ आया था, उसका इलाज अलग चला। चिन्ताकी कोई बात नही है। देखता हूँ, अब इस ठंडी आबोहवामें क्या फर्क पड़ता है। लिक्विड पैराफिन से दस्त होता है। इस इलाकेमें दो महीने रहने का अनुमान है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२४) से

६९६ पत्र : अम्बालाल साराभाईको

महाबलेश्वर
२१ अप्रैल, १९४५

सुज्ञ भाईश्री,

यह तो केवल आपके पत्रकी प्राप्तिकी सूचना देने के लिए लिख रहा हूँ। उस पर से मेरा कुछ लिखना उचित लगा तो लिखूंगा। यहाँ मैं आज पहुँचा हूँ।

आपका,
मो० क० गांधी

सेठ अम्बालाल साराभाई
कैलिको मिल्स
पो० ऑ० बॉक्स १२
अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. गांधीजी के भतीजे

उन्होंने कहा कि यदि आप छुआछूतको खत्म करना चाहते हैं, तो मैं कहूँगा कि आप हरिजन-कोषके लिए चन्दा दें। दूरसे आनेवाले लोगोंकी सुविधाके लिए प्रार्थना का आयोजन हर रोज जल्दी करने की घोषणा करते हुए उन्होंने कहा कि जो लोग प्रार्थना-सभामें आते हैं उन्हें प्रार्थनामें शामिल होने की इच्छासे आना चाहिए, न कि केवल मेरे दर्शन करने के लिए।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २२-४-१९४५

७०१. तार: देवदास गांधीको

अविलम्बनीय

महाबलेश्वर
२२ अप्रैल, १९४५

देवदास गांधी
मार्फत 'टाइम्स'
नई दिल्ली

नन्देशके बारेमें कृष्णदाससे पूछो। सवेरेकी डाक देख रहा हूँ। लक्ष्मी[1] कब पहुँच रही है।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७०२. तार: एसोशिएटेड प्रेस ऑफ इंडियाको

अविलम्बनीय

महाबलेश्वर
२२ अप्रैल, १९४५

एसोशिएटेड
बम्बई

आपके अनुसार 'मॉर्निंग स्टैण्डर्ड' में खबर छपी है कि मैंने भूलाभाई देसाईको पत्र लिखा है लेकिन न मैंने कोई पत्र लिखा है और न अपने १५ अप्रैलके भाषणके[2] प्रसंगको छोड़कर कभी पत्र लिखने का सोचा है। कृपया खण्डन प्रकाशित करें।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देवदास गांधीकी पत्नी; देखिए पृ० ४४४ भी।
२. देखिए "भाषण : प्रार्थना-सभामें", पृ० ४१२-१३।

कस्तुरबा निधिके बारेमें मैंने प्रफुल्ल बाबुसे बातें कर ली है।[1] प्रांतवार या जातवार प्रतिनिधि होने ही चाहीये, ऐसा निश्चित नहीं है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०४००) से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

६९९. पत्र: आनन्द तोताराम हिंगोरानीको

महाबलेश्वर
२१ अप्रैल, १९४५

चि० आनंद,

तुमारा खत मिला। तुमने जीवणजीको भले लिखा।

तुमारी तबीयतके बारेमें मुझे ऐसा लगता है सही कि अगर भीमावरम रहते तो अच्छा था। भाई गोखले वहीं हैं। अच्छे हैं, बाबाजी नहीं है। उनको भी भीमावरम रहना था। वहां जा सकते हैं तो अब भी जाओ। अगर कराचीमें शांति है और शरीर ठीक रह सके तो मुझे कुछ नहीं कहना।

यहां आज आया।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

७००. भाषण: प्रार्थना-सभामें

महाबलेश्वर
२१ अप्रैल, १९४५

प्रार्थनाके बाद जनसमुदायको सम्बोधित करते हुए महात्मा गांधीने कहा, आप मुझे अकेला छोड़ दें, ताकि मुझे जरा आराम मिले। उन्होंने कहा:

मैं यहाँ आनन्द मनाने के लिए नहीं आया, बल्कि इसलिए आया हूँ कि मेरा स्वास्थ्य सुधर जाये और शरीरमें कुछ बल आ जाये, ताकि मै ज्यादा काम कर सकूँ।

१. श्री अमृतलाल चटर्जीने गांधीजी का ध्यान इस आलोचनाकी ओर आकर्षित किया था कि कस्तूरबा स्मारक न्यासमें कोई बंगाली प्रतिनिधि नहीं है।

७०५. पत्र : सुमित्रा गांधीको

महाबलेश्वर
२२ अप्रैल, १९४५

चि० सुमी,

तेरा पोस्टकार्ड मिला। तू कहती है कि पेटमें एक ही बार मरोड़ उठती है, मानो मरोड़ उठनी ही चाहिए और वह भी कई बार। बात यह है कि मरोड़ें उठनी ही नहीं चाहिए। मरोड़ उठती है, यह अपचकी निशानी है। मरोड़ें कतई नहीं होनी चाहिए। दिनभर खूब पानी पीना चाहिए। सवेरे उठने के साथ ही काफी पानी पीना चाहिए। भोजन धीरे-धीरे और चबाकर करना चाहिए। भोजनमें शाक-भाजी तथा फल होने चाहिए। मुझे नियमपूर्वक लिखना। हठपूर्वक पढ़ाई न करना।

बापूके आशीर्वाद

कुमारी सुमित्रा गांधी
बिड़ला हाई स्कूल
पिलानी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७०६. पत्र : चिमनलाल नटवरलाल शाहको

महाबलेश्वर
२२ अप्रैल, १९४५

चि० चिमनलाल,

आजके पत्रमें जिन दो बातोंका उल्लेख हुआ है और जिन्हें मैंने काटा नहीं है, वे ध्यान देने लायक हैं। क्या तुमने इस सम्बन्धमें कुछ किया है?

इससे प्रकट होता है कि हम नये-पुराने, स्त्री-पुरुष और बालक सभी सदस्योंको हिन्दुस्तानी सीख ही लेनी चाहिए। उसके लिए आवश्यक साहित्य इकट्ठा किया जाना चाहिए।

बैलोंवाली बातमें कोई सचाई नहीं है। कुत्तोंवाली बात बिलकुल ठीक मालूम होती है। कष्ट देना मार डालने से भी बुरा है।

मेरी गैरहाजिरीमें व्यवस्था सुधर जानी चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६२५) से

७०३. सन्देश : के० रामकृष्ण पिल्लैको[1]

महाबलेश्वर
२२ अप्रैल, १९४५

इन परिस्थितियोंमें क्या करना चाहिए, इसका निर्णय तो आप लोग ही कर सकते हैं। आप यह भी जानते हैं कि ऐसी परिस्थितिमें मैंने क्या किया है। इससे ज्यादा मैं और कुछ नही कह सकता।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २४-४-१९४५

७०४. पत्र : छोटूभाई सुथारको

महाबलेश्वर
२२ अप्रैल, १९४५

भाई छोटूभाई,

तुम्हारी भेजी [सामग्री] मैं पढ़ गया हूँ। तारक मण्डलमें मेरी रुचि जाग्रत करनेवाले काकासाहब हैं। मेरी रुचि कायम है। इसीसे तुम्हारी प्रवृत्तिका मैंने स्वागत किया है। तुम पत्रिकामें प्रकाशित प्रतिज्ञाका पालन करना। मण्डलकी प्रवृत्ति फूले-फले। अपना साहित्य मुझे भेजते रहना। यदि मैं भिखारी न होता तो चन्दा भेज देता।

बापूके आशीर्वाद

श्री छोटूभाई सुथार
तारक मण्डल
ठक्कर बिल्डिंग
आणंद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. के० रामकृष्ण पिल्लैने गांधीजी को त्रावणकोरकी सबसे ताजा राजनीतिक स्थितिके बारेमें और राज्य कांग्रेसके अध्यक्ष तथा दो मन्त्रियोंकी गिरफ्तारीके बारेमें भी बताया था।

७०९. पत्र : गोप गुरबख्शानीको

महाबलेश्वर
२२ अप्रैल, १९४५

चि० गुरबक्सानी,

तुमारा खत मिला। राजकुमारीजीसे मिला करो वह कहे सो किया करो। वीमला की तबीयत अब तो बिलकुल अच्छी होगी। मुझे लिखे। घरकाम करे लेकिन इस तरह कि जाहर सेवा भी बराबर करे। खादीशास्त्रका अध्ययन और सब क्रियाका सीखना दोनोंके लिये आवश्यक समजता हू। हम लोक कल यहा पहोचे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १३१८) मे

७१०. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

महाबलेश्वर
२२ अप्रैल, १९४५

भाई अमृतलाल,

कलके खतमें एक बात भूल गया। मनु भीमाणीके खतमें जो लिखा है, उसमें काफी फरीयाद मै जानता हू। इस बारेमें कुछ वजूद नही। अन्य चीज है। उस बारेमें मुझे प्रमाण भेजे जिसे मैं मान सकु तो तपास [जांच] करने को तैयार हूं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०४०१) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

७०७. पत्र : शकरीबहिन शाहको

२२ अप्रैल, १९४५

चि० शकरीबहिन,

तुममें आगे बढ़ने की शक्ति है। तुम्हारे पास समय है। तुम्हें गुजराती और हिन्दुस्तानी दोनों लिपियोंमें ठीक-ठीक सीख लेनी चाहिए। मराठी भी आसानीसे सीखी जा सकती है।

तुम्हें स्वास्थ्य अव्वल दर्जेका बना लेना चाहिए।

मैंने उपाय चिमनलालको बताया है। जितना सोचता हूँ, उतना ही इसका औचित्य और आवश्यकता बढ़ती जाती है। शर्त सिर्फ यह है कि दोनोंके मनमें ब्रह्मचर्यका विचार बैठ गया हो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६२४) से

७०८. पत्र : मणिबहिन पटेलको

महाबलेश्वर
२२ अप्रैल, १९४५

चि० मणि,

तूने पत्र ठीक लिखा। मैं जानता हूँ कि दूध वगैरहकी सुविधा बापू[1] प्राप्त कर ही लेंगे। इसलिए चिन्ताकी बात ही नहीं।

तेरा स्वास्थ्य सुधर जाना चाहिए। तू इतने अधिक एकाशन करती है, इसके औचित्यके बारेमें मुझे शंका है। इस सम्बन्धमें तेरे साथ मैंने चर्चा नहीं की, परन्तु मनमें यह बात बनी रही है। इस पत्रको लिखने का विशेष हेतु तो तुझे यह याद दिलाना है कि अहमदाबादका काम निबटाकर तुझे यहाँ आ जाना है।

वहाँ सबको आशीर्वाद। डाक्टर अच्छे होंगे।[2]

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहिन पटेल
मार्फत डॉ० कानूगा
एलिसब्रिज
अहमदाबाद, बी० बी० एण्ड सी० आई रेलवे

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–४ : मणिबहेन पटेलने, पृ० १३२

१. वल्लभभाई पटेल, जो उस समय अहमदनगरके क़िलेमें नज़रबन्द थे और अस्वस्थ थे।

२. डॉ० कानूगा

७१३. पत्र : रमणलाल इंजीनियरको

महाबलेश्वर
२३ अप्रैल, १९४५

भाई रमणलाल,

तुम्हारा पत्र पढ़ गया। नीबू और टमाटर खाने से क्या नुकसान होता है, सो बताना। इनका उपयोग मैंने बहुत अधिक प्रमाणमें किया और करवाया है। मुझे तो कोई नुकसान नजर नहीं आया।

मैं तो फलोंका सेवन बहुत करता हूँ। इसमें मुझे कोई नुकसान नहीं दिखाई दिया। फलोंका सेवन न करने के कारण बताना। फलोंका उपयोग कम करके शाक सस्ता होने के कारण शाकका उपयोग बढाना मुझे तो अच्छा लगेगा।

तुमने सीताफलके बीजका इस्तेमाल करके देखा है क्या? यदि यह उपाय सफल हो तो उसे मैं बहुत अच्छा और सस्ता मानता हूँ।

तुम अनुभवसे क्या कह सकते हो?

डॉ० मेहतापर तुम्हारी यह छाप पड़ी है कि तुमने अध्ययन तो बहुत किया है लेकिन लगता है, तुम्हें अनुभव नहीं है।

तुम लिंडवारकी पुस्तकके अनुवादमें लगे हुए मालूम होते हो। अच्छा यह होगा कि तुम अनुभव प्राप्त करो। या तो तुम दिनशाके अधीन काम करो अथवा यदि गर्मी बरदाश्त कर सको तो सेवाग्राम मेरी अनुपस्थितिमें भी जा सकते हो। लिंडवारकी पुस्तककी यदि अतिरिक्त प्रति हो तो पढने के लिए मुझे देना।

बापूके आशीर्वाद

रमणलाल इंजीनियर
रामनिवास भरडावाड़ी
वरसोवा रोड
अन्धेरी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७११. पुर्जा : श्रीकृष्णदास जाजूको

[२२ अप्रैल, १९४५ के पश्चात्][1]

अप्पासाहब योग्य व्यक्ति है।[2] आ सके तो उसे आने के लिए ललचाओ। मैंने तो सामान्य नियम सुझा दिया है। १७ तारीखको महाबलेश्वर आने का इरादा छोड़ दो। वापाको लिख दो।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७१२. तार : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

महाबलेश्वर
२३ अप्रैल, १९४५

राजाजी
मार्फत 'टाइम्स'
नई दिल्ली

भगवानका शुक्र है। लक्ष्मी और नवजात शिशुको मेरा आशीर्वाद।[3] अब आप आ सकते हैं। मौसम अच्छा है। सबको प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०५५५) से; सौजन्य : लक्ष्मी गांधी। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह पुर्जा श्रीकृष्णदास जाजूके २२ अप्रैलके पत्रके उत्तरमें लिखा गया था।
२. श्रीकृष्णदास जाजूने गांधीजी से पूछा था कि क्या अप्पासाहब पटवर्धन (सीताराम पुरुषोत्तम पटवर्धन) रत्नागिरिके खादी विद्यालयके आचार्य-पदके लिए उपयुक्त व्यक्ति होंगे।
३. लक्ष्मी गांधीने अपने सबसे छोटे बेटे गोपालकृष्णको जन्म दिया था।

७१६. पत्र : बारबाराको

महावलेश्वर
२३ अप्रैल, १९४५

चि० बारबारा उर्फ वासंती,

तुमसे भय उरते हैं। उसका सबब यह है कि शीत प्रदेशमें जन्म होने के कारण शायद गरमीको बरदास्त नही कर सकेगी। अनुकूल जीवन व्यतीत करने से गरमी शायद सहन कर लेगी।

तुमारा काम अच्छा चल रहा है, मुझे खुशी होती है।

हिंदुस्तानी पढ और समज लेती है क्या?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७१७. पत्र : देवेन्द्रनाथ देवधरको

महावलेश्वर
२३ अप्रैल, १९४५

चि० देवेन्द्र,

तुम बच गये हो[1] यह जानकर मुझे बहुत आनंद हुआ है। सही बात यह है कि ईश्वरने ही तुमको बचाया है। वह बचाना चाहता था इसलिये साधन अनुकूल हो गये। तुमारा जीवन तो सेवामय है ऐसा मैंने खतोंसे पाया। अब क्योंकि ईश्वरने नया जीवन दीया है, और भी पारमार्थिक बनो और परमार्थके कारण और भी सीखो और सादे बनो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ४२८।

७१४. पत्र : तुलसी मेहरको

महाबलेश्वर
२३ अप्रैल, १९४५

चि० तुलसी,

तुझे फिर बुखार आ गया, वह कैसे? मेरे आशीर्वाद पाया मेरे हाथसे खाकरा पाया सब निकम्मा जायगा क्या? नियमानुसार रहने से बीमार नहीं होगी। सबसे बड़ा नियम हृदयसे रामनाम लेना है। दूसरे सब इससे आसान होते है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७१५. पत्र : अनन्तरामको

महाबलेश्वर
२३ अप्रैल, १९४५

चि० अनंतराम,

सुनता हूं कि अब तो तुम अच्छे हो गये है और खूब सेवा करते है। यह सुनकर मुझे बहुत आनंद होता है। तुमारा जीवन ऐसे ही पारमार्थिक बना रहो। उर्दु भी सीख लो और बढ़ते जाओ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७२०. पत्र : श्रीमन्नारायणको

महावलेश्वर
२३ अप्रैल, १९४५

चि० श्रीमन्नारायण,

नायर्म दा० तारा्चन्दका खत[1] है। उसे पढो और अपना अभिप्राय भेजो।

मुझे लगता है कि खर्च पश्चीमी ढंगका बहुत है।

अगर वर्धामें करें तो हमारे पास सब सरजाम है।

छपाई तो नवजीवन प्रेस अपने ही आप कर सकता है।

मुझे स्वतन्त्र रूपसे तो कुछ करने का अखत्यार नही है। हमारे कार्यकारिणि के सामने रखना होता ना?

बापुके आशीर्वाद

पांचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३०५

७२१. पत्र : देवप्रकाश नैयरको

महावलेश्वर
२३ अप्रैल, १९४५

चि० देव,

प्रभाकर लिखता है तुम्हारा वजन कम होता है, सर दुखता है। तुमारे घी ज्यादा लेना चाहिये। मिट्टी पेढुपर रातमें रखना और दो वजे जैसे मैं टव ठंडे पानीमें घंटाभर बैठना था ऐसे बैठना चाहिये। पानी हाथसे भर लो। कुआके नजदीक एकांत मिले तो बहुत अच्छा होगा। सरपर भीगा कपडा तो रखना ही चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे : राष्ट्रीय अभिलेखागार

1. उपलब्ध नहीं है।

७१८. पत्र : गोपीनाथ बारडोलोईको

महावलेश्वर
२३ अप्रैल, १९४५

भाइ वारदलै,

तुम्हारी हिन्दुस्तानी मुझे तो वहुत मीठी लगती है। अक्षर पढने में मुझे कुछ कुछ मुश्केली नहीं आती। तुमारे हिंदुस्तानी पक्की करनी है। अक्षर भी महावीरसे अच्छे होंगे। प्रयत्न करो।

बापुके आशीर्वाद

श्री गोपीनाथ वारडोलोई
गोहाटी
असम[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७१९. पत्र : ताराचन्दको

महावलेश्वर
२३ अप्रैल, १९४५

भाई ताराचंदजी,

आपका खत कल मिला। उसे मैं अध्यापक श्रीमननारायणको भेजता हूं। उनका उत्तर आने के वाद आपको लिखुंगा।

टंडनजी मुझे मिले थे। मैं नही कह सकता वे कहां तक सहाय देंगे। सभ्य तो नहीं बनेंगे।

दा० हकसाहबका हमला आपने पढा होगा। मेरे वारेमें उनका विश्वास नही है। टंडनजी तो चाहते नहीं।

आपका,
मो० क० गांधी

डॉ० ताराचन्द
११, छातम लाइन्स
इलाहावाद[2]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१ और २. पता अंग्रेजीमें है।

देवेंद्रके बारेमें तुमने बड़ी समय सूचकतासे काम लिया। अपना मालीश अपने हाथोंसे करने से आरोग्य बढना चाहिए।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०२५) से। सी० डब्ल्यू० ९१४९ से भी; सौजन्य : प्रभाकर पारेख

७२४. पत्र : मदालसाको

महाबलेश्वर
२३ अप्रैल; १९४५

चि० मदालसा,

तेरा कैसा चल रहा है? शरीरका ठीक ध्यान रखती है न?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३२५

७२५. एक पुर्जा

२४ अप्रैल, १९४५

उन्हें[1] लिखो कि मेरा जवाब तो एक पारसी सज्जन द्वारा पूछे गये सवालके सम्बन्धमें लिखा गया था।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. डी० राघवचन्द्रेया सतशास्त्री, जिन्होंने गांधीजी से पूछा था कि उन्होंने "कास्ट सिस्टम – एन एनाक्रोनिज्म" शीर्षक लेख किस हेतुसे प्रेरित होकर लिखा था; देखिए "प्रश्नोत्तर", पृ० ४१३-१५।

७२२. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको

महाबलेश्वर
२३ अप्रैल, १९४५

चि० रामेश्वरी,

यहां कुछ तो आराम है। इसलिये जो कागद मेरे पास पड़े हैं उसे खतम कर रहा हूं। उनमें कौल दंपतिका खत है। उन्होंने रु० १००० राजा साहबने जो काम दा० महमुदके खतमें बताया था उस बारेमें यह भेजे हैं। अब मैं तो उस बारेमें निवेदन निकालना नहीं चाहता हूं। इस प्रकारका स्मरण मुझे पसंद तो है, लेकिन आरंभ पंजाबसे होना चाहिये। राजासाहबने लिखा ऐसे तो मैं नहीं मानता हूं कि हि[न्दू] मु[स्लिम] कामके लिये करोड़ रुपैया मिल सकता है। तो भी बराबर निवेदन निकल ले तो एक अच्छी रकम तो इकट्ठी हो जायेगी। तुमने लिखा है कि बहुत मुसलमान मित्र जनाजेमें आये थे। क्या वे लोग कुछ काम करेंगे? तुम मुझे बता सकती है? रा[जा] सा[हब] तुमारे पिताजी थे इस ख्यालसे रुकनेवाली तुम नहीं है। तुमारेमें काफी तटस्थता है इसलिये ख्याल करती है और दे सकती।

यहाँ मैं एक मासतक हूं। पीछे पंचगनी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८००७) से। सी० डब्ल्यू० ३१०६ से भी; सौजन्य : रामेश्वरी नेहरू

७२३. पत्र : प्रभाकर पारेखको

महाबलेश्वर
२३ अप्रैल, १९४५

चि० प्रभाकर,

चीमूरके बच्चोंके बालके बारेमें आर्यमजीसे[1] या आशा बहिनसे बात करना। बालोंमें जू असह्य हैं। जो मानें उन बच्चोंके और बड़ी बहनके भी बाल काटो। बहुत वखत बचेगा। चहरा बिल्कुल नहीं बिगड़ता। दिल चाहे तब थोड़े अरसेमें नये बाल आ सकते हैं।

१. ई० डब्ल्यू० आर्यनायकम्

७२८. पत्र : ए० वीरेश्वर रावको

महाबलेश्वर
२४ अप्रैल, १९४५

भाई वीरेश्वररावो,

आपका खत मिला। मृदुलाबहिनने ठीक ही लिखा है। वाक्यों और शब्दोंपर वजन देने में मतभेद हो सकता है। तुमारे धैर्य रखना। इंग्रेजीमें क्यों लिखते हो।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

श्री ए० वीरेश्वर राव
मार्फत मेटाफिजीशियन सेवासदन
पोड्डूर्स बिल्डिंग
टनुकू, एम० एण्ड एस० एम० रेलवे

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७२९. पत्र : घनश्याम मीरचन्दानीको

महाबलेश्वर
[२५ अप्रैल, १९४५ के पूर्व][1]

अगर मैं तुम्हारी जगहपर होता तो मैं प्रतिबन्धको कभी स्वीकार न करता, फिर चाहे मुझे जान ही क्यों न देनी पड़ती।[2] लेकिन सबके लिए कोई एक नियम नहीं है। तुम्हें केवल अपनी क्षमताके अनुसार काम करना चाहिए। बहरहाल चूंकि तुमने नोटिस नहीं लिया, इसलिए तुम्हें अधिकारियोंको सूचित कर देना चाहिए कि तुम अपने अन्त:करणके द्वारा लगाये गये प्रतिबन्धोंके अतिरिक्त अन्य किसी प्रतिबन्धको स्वीकार नहीं करोगे और यह भी कि तुम अहिंसा और सत्यमें पूर्ण विश्वास रखते हो।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, २६-४-१९४५

१. जिस समाचारके अन्तर्गत यह पत्र छपा है उसपर "कराची, २५ अप्रैल" तारीख पड़ी हुई है।

२. घनश्याम मीरचन्दानीने गांधीजी से उस निषेधाज्ञाके बारेमें सलाह माँगी थी जो सिन्ध सरकारने उनपर तामील कराई थी।

७२६. पत्र : डॉ० आनन्द कुमारी बामलेको

महाबलेश्वर
२४ अप्रैल, १९४५

चि० आनदकुमारी,

तुमारे खतका गहरा असर नही पड़ा है। अक्षर तुमारा ही है क्या। खत शास्त्रीजी को भेजुं?

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

आनंदकुमारी बामले
मार्फत डी० डी० सूद
पुरानी बस्ती
जयपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७२७. पत्र : देवेन्द्र सिंहको

महाबलेश्वर
२४ अप्रैल, १९४५

भाई देवेन्द्रसिंह,

आपका खत मिला। गौशालाके संचालक कौन है वगैरा लिखोगे तो मैं उनको लिखुंगा।

आपका,
मो० क० गांधी

वैद्यराज देवेन्द्रसिंह
आयुर्वेदिक औषधालय
गजाधरगंज
बक्सर ई० आई० रेलवे

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

गा० : निश्चय ही मैं ऐसा नहीं सोचता। अगर उनमें इतना अहंभाव है कि वे समझते हैं कि अश्वेत और तथाकथित पिछड़ी जातियोंका शोषण जारी रहने पर भी वे स्थायी शान्ति स्थापित कर सकते हैं, तो वे सर्वथा भ्रममें पड़े हुए हैं।

रै० को० : क्या आप समझते हैं कि वह दिन दूर नहीं जब उनमें आपसमें ही झगड़ा हो जायेगा?

गा० : आप तो वही बात कर रहे हैं जो मैं कहा करता हूँ। रूसके साथ झगड़ा शुरू हो चुका है। बाकी दोनों — इंग्लैंड और अमेरिका — आपसमें कब झगड़ पड़ेंगे, यह सिर्फ समयकी बात है। हो सकता है कि शुद्ध स्वार्थ ही उन्हें समझदारीका मार्ग दिखा दे और सान फ्रान्सिस्को सम्मेलनमें भाग लेनेवाले राष्ट्र कहें, "हमें एक शवको बांटने के लिए आपसमें नहीं लड़ना चाहिए।" जनसाधारणका इससे कोई हित नहीं होगा। उसके विपरीत, अहिंसात्मक रीतिसे भारतका स्वतन्त्र होना दुनियाकी शोषित जातियोंके लिए सबसे महत्त्वकी बात होगी। इसलिए मैं अपना सारा जोर इसी बात पर लगा रहा हूँ। अगर अपनी बारी आने पर भारत ईमानदारीसे काम करेगा तो वह शायद शान्ति सम्मेलनमें अपनी शर्तें नहीं मनवायेगा, बल्कि शान्ति और स्वतन्त्रता स्वयं आयेगी — भयंकर प्रवाहकी तरह नहीं, वरन् 'आकाशसे गिरनेवाली फुहारकी तरह'। अहिंसात्मक रीतिसे प्राप्त स्वतन्त्रता छोटे-से-छोटे आदमीकी भी होगी। इसी कारण मैं अहिंसाका दम भरता हूँ। जब छोटे-से-छोटा आदमी भी यह कह सकेगा कि उसे स्वतन्त्रता मिल गई है, तब मैं समझूंगा कि मुझे भी स्वतन्त्रता हासिल हो गई है।

इसके बाद इस विषयपर बातचीत हुई कि आक्रमणकारी देशोंके साथ युद्धके बाद कैसा बरताव होना चाहिए।

गा० अहिंसावादी होने के नाते मैं यह ठीक नहीं समझता कि किसी व्यक्तिको सजा दी जाये; और यह बात तो मैं और भी सहन नहीं कर सकता कि समूचे राष्ट्रको सजा दी जाये।

रै० को० : और युद्ध-अपराधियोंके विषयमें आपका क्या विचार है?

गा० युद्ध-अपराधीका मतलब क्या है? क्या युद्ध अपने-आपमें ईश्वर और मानव-जातिके प्रति एक अपराध नहीं है? इसलिए क्या वे सब लोग, जिन्होंने युद्धकी मंजूरी दी, युद्धकी योजना बनाई और युद्धका संचालन किया, युद्ध-अपराधी नहीं हैं? युद्ध-अपराधी केवल धुरी राष्ट्रों में ही नहीं हैं। रूजवेल्ट और चर्चिल भी वैसे ही युद्ध-अपराधी हैं जैसे हिटलर और मुसोलिनी, उनसे कम नहीं।

हिटलर तो "ग्रेट-ब्रिटेनके पापके प्रतीक थे"। हिटलर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रत्युत्तर-मात्र हैं। और यह बात मैं बावजूद इसके कह रहा हूँ कि मैं हिटलरवाद और उसके यहूदी-विरोधसे घृणा करता हूँ। इंग्लैंड, अमेरिका और रूस, इन सबके हाथ भी खूनमें कमोबेश रँगे हुए हैं — केवल जर्मनी और जापानके ही नहीं। जापानियोंने अपने-आपको पश्चिमका योग्य शिष्य प्रमाणित किया है। उन्होंने पश्चिमसे जो-कुछ सीखा है, उसीमें उसे मात दे दी है।

७३०. भेंट : रैल्फ कोनिस्टनको[1]

[२५ अप्रैल, १९४५ के पूर्व][2]

रैल्फ कोनिस्टन : धुरी राष्ट्रोंकी हारसे स्थायी शान्तिका उदय होने की सम्भावना के विषयमें आपको इतना सन्देह क्यों है?

गांधीजी : कारण स्पष्ट है। हिंसाका कभी-न-कभी चुक जाना तो अवश्यम्भावी ही है, लेकिन उससे शान्ति नहीं पैदा हो सकती। यह ईश्वरीय सत्य है कि अगर दुनियामें नमकहलाली नहीं आई तो हिंसा करनेवाले लोगोंका धरतीसे सफाया हो जायेगा।... जिन लोगोंके हाथ खूनसे रँगे हुए हैं, वे दुनियामें अहिंसात्मक व्यवस्था स्थापित नहीं कर सकते।

रैं० को० : बड़े राष्ट्रोंके जो प्रतिनिधि सान फ्रान्सिस्को सम्मेलनमें भाग लेने जा रहे हैं वे तो जैसे हैं वैसे हैं ही; किन्तु युद्धकी भयावहताके अनुभवके बाद आम लोग अपने-अपने देशोंकी सरकारोंको मजबूर करेंगे।

गां० : मैं यूरोपवालों के मानसको इतना तो अवश्य जानता हूँ कि मैं कह सकता हूँ कि जब उन्हें शुद्ध न्याय और स्वार्थमें से किसी एकको चुनना होगा तो वे स्वार्थ की ओर ही भागेंगे। अमेरिकामें सामान्य आदमी स्वयं बहुत सोच-विचार नहीं करता। वह रूजवेल्टकी बातको ही ठीक मानेगा। रूजवेल्ट उसके लिए मंडियों और पैसे आदिकी व्यवस्था करते हैं। इसी प्रकार चर्चिल भी अंग्रेज श्रमजीवी वर्गसे कह सकते हैं कि उन्होंने साम्राज्यको अक्षुण्ण रखा है और उनके लिए विदेशी मंडियाँ सुरक्षित रखी हैं। लोग उनका अनुसरण करेंगे, जैसाकि वे करते हैं।

रैं० को० : तो आपका विचार है कि यूरोप अथवा अमेरिकाके औसत आदमी को उन उच्च आदर्शोंकी बहुत परवाह नहीं है जिनको खातिर, कहते हैं, युद्ध किया गया।

गां० : मेरा तो ऐसा ही विचार है। अगर आप इससे भिन्न विचार रखते हैं तो उसके लिए मैं आपका सम्मान तो करूँगा, मगर मैं उस विचारसे सहमत नहीं हो सकता।

रैं० को० : तो आप यह नहीं सोचते कि पाँच या तीन बड़े राष्ट्र शान्तिकी गारंटी कर सकते हैं?

१. कोलियर्स वीकली के प्रतिनिधि

२. भेंट-वार्ताके मजमूनसे ज्ञात होता है कि यह चर्चा २५ अप्रैल, १९४५ को आरम्भ होनेवाले सान फ्रान्सिस्को सम्मेलनके पूर्व हुई थी।

सूझ जाता है। मै उस तरहका आदमी नही हूँ जो एक जगह बैठकर तर्क-शास्त्रीय पद्धतिके अनुसार समस्याओंका समाधान ढूँढता है। मै तो काम करनेवाला आदमी हूँ। किसी स्थितिके विषयमें मेरी प्रतिक्रिया अन्त.प्रेरणासे निर्धारित होती है। तर्क बादमें आता है, न कि सम्बन्धित घटनासे पहले। मै जानता हूँ कि जिस क्षण मै शान्ति सम्मेलनमें उपस्थित होऊँगा, उसी क्षण उपयुक्त बात मुझे सूझ जायेगी। लेकिन पहलेसे नही। बहरहाल, मैं इतना कह सकता हूँ कि मै जो भी बात कहूँगा वह शान्तिके पक्षमे ही होगी, युद्धके पक्षमें नही।

रै० को० : किस प्रकारकी विश्व संस्था स्थायी शान्तिकी स्थापना अथवा रक्षा कर सकेगी ?

गा० : केवल ऐसी संस्था जो मुख्यतः सत्य और अहिंसापर आधारित हो।

रै० को० : दुनिया और मानव-स्वभावके वर्तमान दोषोंके रहते आपके विचारमें शान्ति-स्थापनाका साधन क्या हो सकता है ?

गा० : पिछले प्रश्नके उत्तरमे मैंने जो शर्त रखी है उसे यथासम्भव अधिकतम सीमातक पूरा करना।

रै० को० : क्या आप विश्व सरकारकी स्थापना चाहते हैं ?

गा० : हाँ। मै व्यवहार-निष्ठ आदर्शवादी हूँ। मै तबतक समझौतेके लिए तैयार रहता हूँ, जबतक कि उसके लिए सिद्धान्तोको तिलांजलि न देनी पड़े। मै जिस तरहकी विश्व सरकार चाहता हूँ, शायद उस तरहकी सरकार अभी स्थापित न की जा सके। लेकिन यदि वह ऐसी सरकार हो जो मेरे आदर्शसे कुछ मिलती-जुलती हो, तो मै उसे एक समझौतेके तौरपर स्वीकार कर लूंगा। अतः यद्यपि विश्व संघके विचारपर मै मुग्ध नहीं हूँ, फिर भी मै उसे स्वीकार करने को तैयार हो जाऊँगा, बशर्ते कि उसकी स्थापना तत्त्वत. अहिंसाके आधारपर हो।

रै० को० : यदि दुनियाके राष्ट्र विश्व सरकारको शान्ति बनाये रखने और सब देशोंके कल्याणका साधन मानें, तो क्या आप इस बातका समर्थन करेंगे कि भारत अपनी स्वतन्त्रताकी अभिलाषा त्याग दे, ताकि वह विश्व सरकारकी योजनामें सम्मिलित हो सके ?

गा० : अगर आप कांग्रेसके अगस्त, १९४२ के प्रस्तावको[1], जिसकी बहुत निन्दा की गई है, ध्यानसे पढ़ें तो आपको पता चलेगा कि दुनियामें शान्ति बनाये रखने की किसी योजनामें भारतके कार्यक्षम साझेदार होने के लिए यह जरूरी है कि वह स्वयं स्वतन्त्र हो।

[अंग्रेजीसे]

महात्मा गांधी—द लास्ट फेज, जिल्द १, भाग १, पृ० ११३-१६

१. देखिए खण्ड ७६।

रैं० को० : आप सान फ्रान्सिस्कोमें कौन-सा कार्य सम्पन्न हुआ देखना चाहते हैं?

गां० : यही कि सर्वाधिक शक्तिशाली और सबसे कमजोर, सभी राष्ट्रोंके साथ समानताका व्यवहार हो, शक्तिशाली राष्ट्र कमजोर राष्ट्रोंके सेवक बनें, न कि उनके स्वामी या शोषक।

रैं० को० : क्या यह निरी आदर्शवादिता नहीं है?

गां० : सम्भवतः। लेकिन आपने मुझसे पूछा है कि मैं क्या सम्पन्न हुआ देखना 'चाहूँगा'। मेरा विश्वास है कि मानव-स्वभाव सदा उन्नतिकी दिशामें अग्रसर होता है। इसलिए मानव-स्वभावके भविष्यके बारेमें मेरा विचार कभी निराशामय नहीं हो सकता। यदि पाँच बड़े राष्ट्र कहें, "हमने जो पा लिया है, उसे हम छोड़ेंगे नहीं", तो उसका परिणाम भारी विपत्ति होगा और वैसी स्थितिमें दुनिया और पाँच बड़े राष्ट्रोंको भगवान ही बचाये। तब पहलेसे भी अधिक रक्तपातपूर्ण एक और युद्ध होगा और फिर एक और सान फ्रान्सिस्को सम्मेलन।

रैं० को० : क्या दूसरे सान फ्रान्सिस्को सम्मेलनके परिणाम पहले सम्मेलनसे अच्छे होंगे?

गां० : मैं आशा तो यही करूँगा। उस समयतक उनमें कुछ ज्यादा समझदारी आ गई होगी। अपने तीसरे अनुभवके बाद उनमे कुछ मानसिक सन्तुलन आ चुका होगा।

रैं० को : क्या आप उन्हें शान्तिकी कला सिखाने के लिए पश्चिमी देशोंमें नहीं जायेंगे?

गां० : दूसरे महायुद्धके दौरान कुछ ब्रिटिश शान्तिवादियोंने — जिनमें डिक शेपर्ड और मॉड रॉयडन भी थे — मुझे पत्र लिखकर पूछा था कि शान्तिका कौन-सा मार्ग है। मैंने उन्हें जो उत्तर दिया था, उसका सारांश इस प्रकार है: 'अगर आपमें से एक भी सही अर्थोंमें सच्चा अहिंसावादी बन सके, तो वह अकेला व्यक्ति ही यूरोपीय लोगोंको अहिंसाका पाठ पढ़ा सकेगा। बहुत चाहते हुए भी मैं यूरोपको आज बचा नही सकता। मैं यूरोप और अमेरिकाको समझता हूँ। अगर मैं वहाँ जाऊँ तो मैं एक अजनबी-सा लगूँगा। शायद मुझे बहुत बहादुर समझा जाये, लेकिन इससे ज्यादा कुछ नही होगा। मैं उनके सम्मुख शान्ति-शास्त्रको ऐसी भाषामें प्रस्तुत नहीं कर सकूँगा जिसे वे समझ सकते हों। लेकिन यदि मैं भारतमें अपनी अहिंसाको सफल सिद्ध कर दिखाऊँ तो वे समझ सकेंगे। तब मैं भारतके माध्यमसे अपनी बात कहूँगा।' इसलिए मैंने अमेरिका और यूरोपसे मिले निमन्त्रण अस्वीकार कर दिये थे। आज भी मेरा यही उत्तर है।

रैं० को० : यदि आप सान फ्रान्सिस्कोमें हों तो वहाँ आप किस बातकी हिमायत करेंगे?

गां० : यदि मैं यह बात जानता तो आपको बता देता। लेकिन मैं कुछ और तरहका आदमी हूँ। जब कोई स्थिति मेरे सामने होती है तो उसका समाधान मुझे

६ जनवरी, १९४५

जगत् द्वंद्वसे भरपूर है। सुखके पीछे दुःख रहा है, दुःखके पीछे सुख। धूप है तो छाया भी है, प्रकाश है तो अंधेरा भी, जन्म है तो मृत्यु भी। इस द्वंद्वसे हटना अनासक्ति है। द्वंद्वको जीतने का उपाय द्वंद्वको मिटाना नहीं है, लेकिन द्वंद्वातीत, अनासक्त होना है।

७ जनवरी, १९४५

यह पीछेका बताता है कि सबकी कूंजी सत्यकी आराधनामें है। सत्यकी उपासनासे सब चीज मिलती है।

८ जनवरी, १९४५

तब सत्यकी आराधना कैसे हो? सत्य कौन जानता है? यहां सापेक्ष सत्यकी बात है। जिसे हम सत्य रूपसे देखें वह सत्य। इतना सत्य भी बहुत कठिन है ऐसा अनुभवसे प्रतीत होगा।

९ जनवरी, १९४५

जानता हूआ आदमी सत्य कहने से क्यों झीझकता है? शर्मके मारे? किसीकी शर्म? उपरी है तो क्या? नौकर है तो क्या? बात यह है कि आदत आदमीको खा जाती है। हम सोचें और बुरी आदतसें छूट जांय।

१० जनवरी, १९४५

छूटें नहीं तो सत्यके रास्तेपर नहीं जा सकते हैं। बात यह है कि सत्यके लिये सब-कुछ कुरबान करें। हम हैं, ऐसा दीखना नहीं चाहते, लेकिन हैं उससे बहतर दीखना चाहते हैं। कैसा अच्छा हो अगर हम नीच हैं तो नीच दीखें, अगर ऊंच होना चाहें तो ऊंच काम करें, ऊंच विचारें। ऐसा न हो सके तो भले नीच ही दीखें, कोई रोज तब ऊंचे जांयगे।

११ जनवरी, १९४५

जैसे अनुभव लेता हूं, पाता हूं कि आदमी अपने-आप अपने सुख-दुःखका कारण है।

१२ जनवरी, १९४५

ऐसा होते हुए आदमी सुखी दुःखी क्यों होता है?

१३ जनवरी, १९४५

बात यह है कि आदमी ऐसे विचार करना नहीं चाहता। इसलिये मानता है ऐसे विचार करने की फुरसत ही नहीं है।

१४ जनवरी, १९४५

अगर हम सच्चा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो मानसिक आलस्य छोड़कर हमें मौलिक विचार करना होगा। परिणाम यह होगा कि हमारा जीवन बहूत सरल हो जायगा।

७३१. रोजके विचार[1]

१ जनवरी, १९४५

इसी तरह बूढ़े, बच्चे, जवान, धनिक, गरीब, सबको मरते हुए पाते हैं तो भी संतोषसे बैठना नहीं चाहते है, लेकिन थोड़े दिन जीने के लिये रामको छोड़ सब प्रयत्न करते हैं।

२ जनवरी, १९४५

कैसा अच्छा हो कि इतना समजकर हम राम भरोसे रहकर जो व्याधि आवे उसकी भी बरदास्त करें और अपना जीवन आनंदमय बनाकर व्यतीत करें।

३ जनवरी, १९४५

शरीरधारी महादेवको[2] शरीरसे और उसके लेखोंसे ही हम देखते थे। यह एक ही बात हुई। देहातीत महादेव सर्वव्यापी है और उसके गुणोंसे हम उसको पहचान सकते हैं और इसमें सब एकसा शरीक हो सकते हैं। किसीको ज्यादा कम विभाग नहीं मिल सकता है।

४ जनवरी, १९४५

जन्म और मरण शायद एक ही सिक्केकी दो बाजू नही है? एक तरफ देखो तो मरण और दूसरी तरफ जन्म। इसमें दुःख क्यों? हर्ष क्यों?

५ जनवरी, १९४५

जो जन्म-मरणकी बात सही होय तो, और है, तो हम क्यों मृत्युसे जरा भी डरें दुखी हों, और जन्मसे खुश हों? प्रत्येक मनुष्य यह सवाल अपने साथ करे।

१. आनन्द तो० हिंगोरानीके अनुरोधपर गांधीजी ने २० नवम्बर, १९४४ से रोज एक विचार लिखना शुरू किया, जिसे वे लगभग दो वर्षतक लिखते रहे। इन विचारोंको आशीर्वाद-स्वरूप मानकर आनन्द हिंगोरानीने **बापूके आशीर्वाद** शीर्षकसे पुस्तकके रूपमें प्रकाशित किया। प्रस्तुत खण्डकी अवधिमें लिखे गये उनके विचार उसकी अन्तिम तिथि अर्थात् २४ अप्रैल, १९४५ के अन्तर्गत एक ही शीर्षकके रूपमें दिये जा रहे हैं। १ जनवरी, १९४५ के पूर्वके विचारोंके लिए देखिए खण्ड ७८, पृ० ४१६-२१।

२. महादेव देसाई

२५ जनवरी, १९४५

आलस्यसे हमें दुःख होगा तो हम आलसी नही रहेंगे। ऐसे ही यदी हमें व्यभिचारसे दुःख होगा तो व्यभिचारी नही बनेंगे, नही रहेंगे।

स्वतंत्रता दिन
२६ जनवरी, १९४५

पहला काम बादमें मिले तो, दाम जितना काम। यह तो हुई परमात्मा की सेवा। अगर दाम पहले मांगोगे तो वह हुई शैतानकी सेवा।

२७ जनवरी, १९४५

कामनाको संतुष्ट नही करना अच्छा है। लेकिन शुरु करने के बाद उसे रोकना असंभव नही तो कठिन तो है ही।

२८ जनवरी, १९४५

जो मनुष्य अपनेपर काबू नही रख सकता है वह दूसरोपर कभी सच्चा काबु नही रख सकता।

२९ जनवरी, १९४५

अपनेको पहचानने के लिये मनुष्यको अपनेसे बाहर निकलकर तटस्थ बनकर अपने को देखना है।

३० जनवरी, १९४५

जो मनुष्य किसीका भी बोझ हल्का करता है वह निकम्मा नही है।

३१ जनवरी, १९४५

जिसे हम सही और शुभ माने वही करने मे हमारा सुख है, हमारी शांति है, नहीं कि जो दूसरे कहे या करें उसे करने में।

१ फरवरी, १९४५

दुःख सहनेसे शक्ति तो आती है लेकिन बिना ज्ञानके सही स्वतंत्रता नहीं मिलती।

२ फरवरी, १९४५

किसीकी मेहरबानी मांगना अपनी आझादी बेचना है।

३ फरवरी, १९४५

मनुष्यकी प्रतिष्ठा उसके दिलमें—हृदयमें है, नहि की उसके मस्तिष्कमें यानि बुद्धिमें।

१५ जनवरी, १९४५

ज्ञानीने हमें मुसाफिर कहा है। बात सच्ची है। हम यहां तो चंद रोझके लिये हैं। बादमें 'मरते' नहीं, अपने घर जाते हैं। कैसा अच्छा और सच्चा ख्याल?

१६ जनवरी, १९४५

हजारों मण कचरा बड़े परिश्रमसे निकालते हैं तब कोई हीरा हाथोंमें आता है। क्या हम इस परिश्रमका थोड़ा हिस्सा भी कचरा रूप झूठ निकालने में और हीरा रूप सत्य ढूंढ़ने में देते हैं?

१७ जनवरी, १९४५

बगैर परिश्रमसे यानि बगैर तपके कुछ भी हो नहीं सकता है तो आत्मशोध कैसे हो सके?

१८ जनवरी, १९४५

अगर सब समय भगवान्का है तो हम एक क्षण भी निक्कमी क्यों जाने दें? अगर हम भगवान्के हैं तो हमारे शरीरका एक हिस्सा भी मौज-शोख में क्यों दें?

१९ जनवरी, १९४५

अनासक्त कार्य शक्तिप्रद है क्योंकि अनासक्त कार्य भगवान् भवित है।

२० जनवरी, १९४५

जमशेद महेताने आसीसीके फ्रान्सिसकी एक प्रार्थना भेजी है। उसमें यह हिस्सा है: "हे भगवान् किसीको देने से ही हमें मिलता है, मरने से ही हम अमर पद पा सकते है।"

२१ जनवरी, १९४५

जमीनका मालिक तो वही है जो उसपर महेनत करता है।

२२ जनवरी, १९४५

जो सचमुच भीतरमें स्वच्छ है वह बाहरमें अस्वच्छ हो ही नहीं सकता।

२३ जनवरी, १९४५

सच्चा कार्य कभी निक्कमा नहीं होता, सच्चा वचन अंतमें कभी अप्रिय नहीं होता।

२४ जनवरी, १९४५

शुद्ध हृदयसे निकला हुआ वचन कभी निष्फल नहीं होता।

१२ फरवरी, १९४५

यह कितनी गलत बात है कि हम मैले रहें और दूसरोंको साफ रहने की सलाह दें?

१३ फरवरी, १९४५

दूसरे और हमारेमें सारे जगत्‌मे जो भेद है वह अंशका या दरज्जेका ही है, जातिका कभी नही, जैसे एक ही जातिके वृक्षोंमें होता है। इसमे क्रोध क्या, द्वेष क्या, भेद क्या?

१४ फरवरी, १९४५

कोई शुभ निश्चय भी मनुष्य भले न करे लेकिन विचारपूर्वक जो निश्चय करे तो उसे कभी न छोड़े।

१५ फरवरी, १९४५

आदमीको अपनेको धोका देने की शक्ति इतनी है कि वह दूसरोंको धोका देने की शक्तिसे बहुत अधिक है। इस बातका प्रत्यक्ष प्रमाण हरेक समजदार आदमी है।

१६ फरवरी, १९४५

जो गुस्सा स्वजनपर होता है उसे रोकने मे जय है। परजनपर गुस्सा रोकने के लिये हम मजबूर हो जाते है। उसमे जय कैसे?

१७ फरवरी, १९४५

जीना मानी मोज करना — खाना, पीना, कूदना नही, लेकिन ईश्वरकी स्तुती करना अर्थात् मानव जातिकी सच्ची सेवा करना।

१८ फरवरी, १९४५

मनुष्य जीवन और पशु जीवनमे फरक क्या है? इसका संपूर्ण विचार करने से हमारी काफी मुसीबतें हल होती हैं।

१९ फरवरी, १९४५

मनुष्य जब अपनी हदसे बाहर जाता है, हदसे बाहर काम करता है, विचार भी करता है तब उसे व्याधि हो सकता है। क्रोध आ सकता है। ऐसी जल्दबाजी निकम्मी है, नुकसान भी कर सकती है।

२० फरवरी, १९४५

आज प्रातःकालके भजनमे था ईश्वर हमको कभी नही भूलता, हम भूलते है वही सच्चा दुःख।

२१ फरवरी, १९४५

जब ईश्वर नही बचाना चाहता, तब न धन बचायगा, न मात पिता, न बड़ा डाक्तर!!! तब हमें क्या करना चाहीये?

४ फरवरी, १९४५

धर्म वह है जो सब धारण करता है यानि सब हिस्सेमें सब समय जीवनमें ओतप्रोत है।

५ फरवरी, १९४५

धर्म कुछ जीवनसे भिन्न नहीं है, जीवन ही धर्म माना जाय। बगैर धर्मका जीवन मनुष्य जीवन नहीं है, वह पशु जीवन है।

६ फरवरी, १९४५

जो ज्यादा काबू पाते है या ज्यादा काम करते हैं वे कम-से-कम बोलते हैं। दोनों साथ मिलते ही नहीं। देखो कुदरत सबसे ज्यादा काम करती है, सोती नहीं, लेकिन मूक है।

७ फरवरी, १९४५

जो दु:खीओका ही ख्याल करता है वह अपना ख्याल नहीं करेगा, उसको इतना समय कहांसे?

८ फरवरी, १९४५

जो मनुष्य जो देखना चाहता है वही देखेगा, सुनना चाहता है वही सुनेगा। जैसे माली बगीचेमें फुलको ही देखेगा, फिलसुफ [दार्शनिक]को पता भी नहीं लगेगा बगीचेमें क्या है। वह बगीचेके बाहर है या भीतर उसका भी पता उसे शायद नहीं होगा।

९ फरवरी, १९४५

जिनके साथ हमारा सहवास है उनसे 'अपनी तूटीआं (त्रुटियाँ) देख सकते हैं और सुधार भी सकते हैं। बहेतर है कि हम रोजके व्यवहारको शुद्धतम रखे तो सच्चे सेवक बनने की आशा रख सकते है।

१० फरवरी, १९४५

सत्यके व्रतकी शुद्ध निशानी है की सत्यार्थी मौनका सेवन करे। ऐसे होते हुए भी हम पाते हैं कि बहुत सत्यार्थी बहुत बातें करते हैं। कारण स्पष्ट है—आदत। हम इस आदतको छोड़ें।

११ फरवरी, १९४५

मृत प्रियजनका स्मरण कैसे करे? मेरा दृढ़ विश्वास है कि वे मरते नहीं, शरीर मरता है। लेकिन स्मरण तो क़ायम रखना ही है। उनके सब गुण हमारेमें यथाशक्ति उतारकर, उनकी शुभ प्रवृत्ति अपनाकर और उसमें वृद्धि कर कर। समाधि पर फूलादि रखना उसी स्मरणको बढ़ाने के लिये है। अगर फूलोंसे ही सन्तुष्ट रहें तो उसे मैं मूर्ती पूजा कहुंगा।

३ मार्च, १९४५

आइसाया ४१-१० में कहता है : डरो नही क्योंकि परमात्मा तुम्हारे पास ही है।

४ मार्च, १९४५

एक ईश्वरमें ही संपूर्ण शक्ति है। इसलिये ईश्वरमें ही हमेशाके लिये विश्वास रखा जाय, इनसानपर कभी नही। (आइसाया २६-४ से)

५ मार्च, १९४५

पानीका स्वभाव नीचे जाने का है। इसी तरह दुर्गुण नीचे ले जाता है इसलिये सहल होना ही चाहीये। सद्गुण उंचे ले जाता है इसलिये मुश्केल-सा लगता है।

६ मार्च, १९४५

मेरी कृपा तेरे लिये काफी होनी चाहीये क्योकि मेरा वल दुर्वलतामें ही पूर्ण होता है। (२ कोर १२-९)

७ मार्च, १९४५

ईश्वर हमारा आश्रय है, वही हमारा वल है और वही आपत्तिके समयमें हमारी रक्षा करता है। (साम ४६-१)

८ मार्च, १९४५

ईश्वरका कौल है: मैं आज हूं, कल था, भविष्यमें हूंगा, मैं सव जगहमें हूं, सवमें हूं, इतना जानते हूए भी हम ईश्वरसे दूर भागते है और विनाशी अपूर्ण है उसका सहारा ढुंढते है और दुखी होते हैं। इससे अधिक आश्चर्य किसीमें है?

९ मार्च, १९४५

पूर्व पश्चिममें भेद न करे। हरेक वस्तु कही की हो उसकी तुलना गुण-दोष पर करे। तव ही शुद्ध न्याय कर सकते है।

१० मार्च, १९४५

पाप-पुण्य, सुख-दुःख क्यों? ईश्वर होते हूए ईश्वर व्यक्ति नही है वह नियम है, नियंता भी। इसका अर्थ हूआ कि मनुष्य कर्मका भोग वनता है। सत्कर्मसे चडता है, दुष्कर्मसे पडता है।

११ मार्च, १९४५

समाजकी सच्ची सेवा यह है जिससे समाज यानी सव लोग उंचे चढें। समाज देखकर ही मनुष्य कह सकता है अमूक समाज कैसे उंचे चढे।

१२ मार्च, १९४५

मनुष्य जानता है कि जब मरने के नजदीक पहोंचता है सिवाय ईश्वरके कोई सहारा नहीं है। तो भी रामनाम लेते हिचकिचाहट होती है। ऐसे क्यो?

२२ फरवरी, १९४५

हमारी गंदगी हमने जब [तक] नहीं नीकाली है तबतक प्रार्थना करने का हमें कुछ हक है क्या?

२३ फरवरी, १९४५

माला लें, उसे संतने फिराई है। वह तुलसी या सुखड [चन्दन] की है, रुद्राक्ष हो, लेकिन फेरनेवाला यदि मालामें ही सर्वस्व है ऐसा मानता है तो उसे फेंक दे। यदि माला उसको परमात्माके नजदिक ले जाती है, अपने कर्तव्यमें सावधान करती है तो भले उसे विधिवत ले और फिरावे।

२४ फरवरी, १९४५

हम हैं क्योंकी ईश्वर है। इसीसे हम देखते हैं कि मनष्य मात्र, जीवमात्र है ईश्वरका अंश है।

२५ फरवरी, १९४५

नये करार [न्यू टेस्टामेंट] में एक यह वाक्य है: "तेरे दिलमें न चिंता रहे न तू किसीका भय रखे।" यह वचन उसके लिये है जो परमात्माको मानता है।

२६ फरवरी, १९४५

वही नया करार [न्यू टेस्टामेंट] कहता है कि अगर ईश्वर हमें लालचमें डालता है तो उसमें से बच जाने का रास्ता भी वही बनाता है। यह बात सही उन्हींके लिये है जो अपने आप लालचमें फसता नहीं।

२७ फरवरी, १९४५

नामकी महीमा सिर्फ तुलसीदासने ही गाई है ऐसा नही है। बाईबलमें मैं वही पाता हूं। दसवे रोमनके १३ कलममें कहते हैं जो कोई ईश्वरका नाम लेंगे वे मुक्त हो जायंगे।

२८ फरवरी, १९४५

गुन्हा छीपा नहीं रहता। वह मनुष्यके मुखपर लिखा रहता है। उस शास्त्रको हम पूरे तोरसे नहीं जानते लेकिन बात साफ है।

१ मार्च, १९४५

आजकल बाईबलके फिक्रे पढ़ रहा हूं। आज यह देखता हूं: "श्रद्धासे जो कुछ तुम मांगोगे तुम्हें मिलेगा।" [मिथी २१ : २२]

२ मार्च, १९४५

'निर्बलके बल राम' के जैसा ही साम ३४ : १८ में है। जो तूट गया हे उसके नजदीक परमात्मा है ही और जिसको सच्चा पश्चात्ताप हूआ है उसे बचा लेता है।

२३ मार्च, १९४५

गलती गलती [मिटती] है जब दूरस्ती कर लेते हैं। गलती जब दबा देते हैं तब फोड़ाके जैसी फूटती है और भयंकर स्वरुप लेती है।

२४ मार्च, १९४५

आत्माको पहचानने से, उसका ध्यान धरने से और उसके गुणोंका अनुसरण करने मे मनुष्य उंचे जाता है। उलटा करने से नीचे जाता है।

२५ मार्च, १९४५

धैर्य किसे कहूं? शंकराचार्य कहते हैं: एक सुली [तिनका] घासकी—'लो, समुद्र-किनारे बैठो और सुलीपर पानीका बुंद लो। अगर धैर्य होगा और नजदीकमें ऐसी खाई है जिसमें बुंद सुरक्षित रह सकता है तो कालवशात समुद्र खाली होगा। यह करीब २ पूर्ण धैर्यका दृष्टान्त है।

२६ मार्च, १९४५

जिसको इतना धैर्य नही है वह अहिंसा-पालन नहीं कर सकता है।

२७ मार्च, १९४५

सांप और मनुष्यमें क्या फरक? देखने में सांप पेटके बल चलता है, मनुष्य पैरोंपर टटार [तनकर] रहकर चलता है। लेकिन यह देखाव है। जो मनुष्य मनसे पेटके बल चलता है उसका क्या?

२८ मार्च, १९४५

प्रतिदिन मौनका महत्त्व मैं देखता हूं। सबके लिये अच्छा है लेकिन जो कामोंमें डूबा रहता है उसके लिये तो मौन सुवर्ण है।

२९ मार्च, १९४५

"उतावला सो ब्हावरा, धीरा सो गंभीरा।" प्रतिक्षण इसका सत्य देखा जाता है।

३० मार्च, १९४५

नियमका छुट जाना कैसा खतरनाक है। मुंबई आया और रोज लिखना छुटा। (लिखा: ३-४-४५)

३१ मार्च, १९४५

बगैर नियमके एक भी काम नही बनता। नियम एक क्षणके लिये टूट जाय तो सूर्यमंडल सारा अस्त-व्यस्त हो जायगा। (लिखा: ३-४-४५)

१३ मार्च, १९४५

अहिंसाके मार्फत स्वतंत्रता पाने का एक ही मार्ग है: मरकर जीते हैं, मारकर कभी नहीं।

१४ मार्च, १९४५

मरें कैसे? आत्महत्या करके? कभी नहीं। आवश्यकतापर मरने की तैयारी रखकर मरें तव तो जिन्दा रहने के लिये मरें।

१५ मार्च, १९४५

धैर्यसे, शांतिसे क्या-क्या नहीं हो सकता है! उसका तजर्बा जो लेना चाहे उनको रोज मिल सकता है।

१६ मार्च, १९४५

किस्मत और पुरुषार्थका झगड़ा रोज चलता है। हम पुरुषार्थ करते रहें और परिणाम ईश्वरपर छोड़ें।

१७ मार्च, १९४५

किसमतपर न सव छोडें, न पुरुषार्थका फांका [अभिमान] करें। किसमत चलती रहेगी। हम देखें कहां दखल दे सकते है, देना फर्ज होता है परिणाम कुछ भी हो।

१८ मार्च, १९४५

दु:खद वात तो यह है कि हम जानते हैं क्या करना, लेकिन उसे हम कर नही पाते। इसका उत्तर हरेक मनुष्य अपने लिये दें।

१९ मार्च, १९४५

प्रतिक्षण अनुभव लेता हूं कि मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही चाहीये तो कम-से-कम वोलो। एक शब्दसे चले, तो दो नहीं।

२० मार्च १९४५

छोटी २ वाते जव हलाक [हैरान] करे तब समजना कि कहां भी आसक्ति है उसे ढुंढो और निकालो! बड़ी वातोंमें हम सीधे रहते हैं ऐसा मानना भ्रम है। बड़ी बातोंमें हम मजवुर होते हैं। उसका नाम सीधापन नहीं है।

२१ मार्च, १९४५

ऐसे मौकेपर याद रखने का श्लोक यह है: मात्रा स्पर्ष आते हैं, जाते हैं उसे सहन करो।

२२ मार्च, १९४५

जो-कुछ करें, सुव्यवस्थित करे या न करे। इसका प्रत्यक्ष दर्शन नित्य होता है। आज खूब हूआ। बा की तिथि थी। गीता पारायण थी। उसमें कुछ भी रस नही था।

कैसे हूं सो तो ईश्वर ही जानता है, लेकिन वह तो हमें कहता नहीं है। अच्छा तो यह है कि हम अपने वारेमें कुछ जानें नही, माने नही। जैसे है वैसे है जानने से और मानने से हमें कुछ फ़ायदा नहीं पहोंचता। हमारा धर्म पालन ही सच्ची वात है।

१० अप्रैल, १९४५

अंधा वह नही जिसकी आंख फुट गई है। अंधा वह है जो अपने दोष ढाकता है।

११ अप्रैल, १९४५

मनुष्यकी शांतिकी कसोटी समाजमें ही हो सकती है, हिमालयकी टोच [चोटी] पर नही।

१२ अप्रैल, १९४५

आदर्श एक वस्तु है उसका पालन विलकुल दूसरी वस्तु है। (लिखा: १५-४-१९४५)

१३ अप्रैल, १९४५

सिवाय आदर्शके मनुष्य सुकान रहित जहाजके जैसा है। (लिखा: १५-४-१९४५)

१४ अप्रैल, १९४५

मेरे पास आदर्श है ऐसे तव ही कहा जाय जव मै उसे पहूंचने की कोशीश करता हूं। (लिखा: १५-४-१९४५)

१५ अप्रैल, १९४५

हम कोशीशसे सन्तुष्ट रहें, वशर्ते कि कोशीश सही और यथा शक्ति हो। परिणाम सिर्फ कोशीशपर निर्भर नही रहता। और चीजें होती है जिस पर हमारा कोई अंकुश नही होता।

१६ अप्रैल, १९४५

सही कोशीश किसे कहें? एक वात यह है कि सही कोशीशसे वहूत वक्त हमे इच्छित फल मिलता है इसलिये फलसे ही कहा जाता है कोशीश सही थी। लेकिन अनुभवसे मालुम होता है ऐसें हमेशा नही वनता। सही कोशीश यह है कि साधनकी योग्यताके वारेमें निश्चय है और विपरीत फल देखने पर भी साधन वदलता नही, न उद्यम वदलता है या कम होता है।

१७ अप्रैल, १९४५

यथाशक्ति किसे कहे? जिससे मनुष्य अपनी सव शक्ति वगैर संकोचके खर्च करता है। ऐसे शुभ प्रयत्नमें सफलता प्रायः होती है।

१ अप्रैल, १९४५

यह बात छोटे मोटे सबके लिये है ऐसा सोचकर हम सीखें और चलें, या जिंदा होते हूए भी मरें। (लिखा: ३-४-१९४५)

२ अप्रैल, १९४५

वगैर जरूरतके हाजत बढ़ाना पाप सा लगता है। (लिखा: ३-४-१९४५)

३ अप्रैल, १९४५

आजका दिन फांसीवालोको वचाने के लिये हड़तालका है अगर लोग मात्र समज बूझकर आजका कार्य करें तो अहिंसाके मार्गमे हमने वड़ा काम किया होगा।

४ अप्रैल, १९४५

मनुष्य जानता है कया करना लेकिन जानता है वह करता नही उसका कया कारण?

५ अप्रैल, १९४५

अगर हम बाहरके मानसिक वायुमंडल के असर नीचे आवें तो हमारा नाश ही है। चीमूरवाले केदीयोके वारेमें प्रतिदिन वायुमंडल वदलता ही रहता है। हम कर्तव्य पालन करे और अनासक्त रहें।

६ अप्रैल, १९४५

सीधी वातको भी मनुष्य टेढ़ी समजे उसे सहन करने में कितनी भारी अहिंसा चाहीये?

७ अप्रैल, १९४५

शरीरको वचाने के लिये वहूत उद्यम करता हूं, आत्माको पहचानने के लिये इतना करता हुं कया?

८ अप्रैल, १९४५

गैर-समझुतिसे मैं गुस्सा करता हूं, रोता हूं, हंसता हूं, रहम खाता हूं। यह सब छोड कर, धीरज रखकर गैर-समज मिटाना ही एक मेरा धर्म नहीं कया?

९ अप्रैल, १९४५

हम कया मानें? हमारी तारीफ़, हमारी निन्दा? दोनों गलत हो सकते हैं। तब हमारा इनसाफ हम ही करें? इसमें भी तो काफी गलती पाई जाती है। हम

परिशिष्ट

परिशिष्ट १

प्रस्तावित अन्तरिम सरकारके लिए दिशा निर्देश[1]

५ जनवरी, १९४५

इस सम्बन्धमें उठाये जानेवाले कदमोंकी चर्चा और समय-समयपर गांधीजी द्वारा दिये गये स्पष्टीकरणोंके फलस्वरूप जो विभिन्न कदम उठाने का सुझाव दिया गया वे निम्न प्रकार थे :

१. कांग्रेस और लीग केन्द्रमें ऐसी अन्तरिम सरकारके गठनमें शामिल होने को सहमत होंगे जिसमें (क) कांग्रेस और लीगके केन्द्रीय विधान-सभा सदस्योंमें से बराबर संख्यामें नामजद व्यक्ति, (ख) अल्पसंख्यकोंके प्रतिनिधि, और (ग) सेनाध्यक्ष शरीक होंगे।

२. सरकारका गठन तो वर्तमान भारत सरकार अधिनियमके ढाँचेके अन्दर ही होगा और वह काम भी उसकी मर्यादाओंके भीतर रहकर ही करेगी, किन्तु कांग्रेस और लीगके बीच यह स्पष्ट सहमति रहेगी कि जो विधान सदन द्वारा पारित न किया गया हो उसे इस संविधानमें गवर्नर-जनरलको दिये गये किसी भी अधिकारके बल पर लागू नहीं किया जाना चाहिए और लागू करने का प्रयत्न भी नहीं किया जाना चाहिए। इससे व्यवहारत: गवर्नर-जनरलका निषेधाधिकार निरस्त हो जायेगा और सरकारमें शामिल नामजद लोग निर्वाचित सदनके प्रति उत्तरदायी बनेंगे।

३. अगर सरकारमें किसी यूरोपीयको शामिल करना ही हो तो उसका चयन कांग्रेस और लीग द्वारा किया जाना चाहिए।

४. कांग्रेस और लीगके बीच पहलेसे ही इस बातपर सहमति होनी चाहिए कि अगर ऐसी अन्तरिम सरकार बनी तो उसका पहला काम कार्य-समितिके सदस्योंको रिहा करना होगा। इस सम्बन्धमें लीगकी दृढ़ और स्पष्ट प्रतिश्रुति उसकी प्रामाणिकताका प्रारम्भिक प्रमाण होगी।

५. भूलाभाईको किसी भी बातके लिए वचनबद्ध होनेके पूर्व इस सम्बन्धमें आश्वस्त हो लेना चाहिए कि उनके मनमें जिस समझौतेका खयाल है उसे जिन्नाका अनुमोदन प्राप्त है और सारी बातें स्पष्ट और लिपिबद्ध कर ली जानी चाहिए ताकि बादमें कोई सन्देह और गलतफहमी न पैदा होने पाये।

१. देखिए पृ० ११।

१८ अप्रैल, १९४५

मनुष्य अपने निर्णय नहिंवत् प्रमाणको आधारभूत करके करता है और उसी पर चलता है। ऐसी हालतमें अच्छा है कि जहां तक वन सके कुछ निर्णय करना नहीं और परिणामके बारेमें तटस्थ रहना। निर्णय करने का धर्म वन जाता है तव पूरी सावधानी रखकर ही निर्णय करना और निडरतासे अमल करना।

१९ अप्रैल, १९४५

असंगत ऐसी मोटी वस्तु छोटी लगती है, और सुसंगत जैसी सवसे छोटी वस्तुका इतना ही स्थान है जैसा मोटी का।

२० अप्रैल, १९४५

मनुष्यका लोभ आकाशसे उंचे जाता है, पातालसे भी नीचे। इसलिये उसे मर्यादा होनी ही चाहीये।

२१ अप्रैल, १९४५

आशासे पर चीज जव मनुष्य पाता है उसके आनंदकी सीमा नहीं रहती।

२२ अप्रैल, १९४५

जो मनुष्य आध्यात्मिक माना जाता है और व्याधिग्रस्त रहता है, तो उसमें कुछ न कुछ दोष है ही।

२३ अप्रैल, १९४५

अगर हम सोचे कि हमारे पास वहूत काम है तो हम गभराहटमें पड़ जायेंगे और कुछ नही होगा। अगर हम शांत रहकर पहाड जितने कामको भी एक बार शुरू कर दे तो दिन प्रतिदिन आसान होगा और खतम होगा।

२४ अप्रैल, १९४५

अपने दोष हम देखना नहीं चाहते हैं, दूसरोंके देखने में हमें मजा आता है। वहूत दुख तो इसी आदतमें से पैदा होता है।

वापूके आशीर्वाद (रोजके विचार), पृ० ४३–१५६

डॉ० महमूदसे मुझे पता चला कि आप समझते हैं कि शिकायत आपको होनी चाहिए। हमारा खयाल इससे बिलकुल उलटा है। बेशक मेरा इरादा ठेस पहुँचाने का नही था। मेरी पार्टीको जो बदनाम किया गया और सीधे दोषी करार दिया गया था, मैंने तो उसपर अपना रोष जाहिर किया था। मुझे नहीं मालूम कि मैं ऐसी हालत में और क्या कर सकता था। श्रीयुत् भूलाभाई और श्रीमती नायडूने मामलेको आगे बढ़ाने का वादा किया था लेकिन अभीतक मुझे उनका कोई उत्तर नहीं मिला है। राजाजीने मुझसे कहा था कि उन्हें जो-कुछ आपको बताना था वह उन्होंने बता दिया।

मेरा अनुरोध है कि इसका आप शीघ्रातिशीघ्र उत्तर दें और अपने सहयोगियोंसे कहें कि वे अपनी रिपोर्ट आपके पास जल्दी भेजें।

मैं जवाब लेने के लिए और अपनी योग्यतानुसार अन्य प्रश्नोंके उत्तर देने के लिए मोहनको भेज सकता हूँ। मैं आज तीन सप्ताहके लिए बंगाल जा रहा हूँ। क्या मेरी वापसीतक आपके जवाब तैयार हो जायेंगे? मेरी अनुपस्थितिमें मोहन बहुत व्यस्त रहेगा और उसके लिए फरवरीमें वहाँ उपस्थित होना मुश्किल हो जायेगा; वैसे आप खास तौरपर ही उसे वहाँ बुलाना चाहें तो बात और है। लेकिन ७ मार्चके बाद की कोई भी तारीख ठीक रहेगी।

आदरपूर्वक अभिवादन सहित,

भवदीय,
पूरणचन्द्र जोशी

[अंग्रेजीसे]
कॉरस्पॉण्डेन्स बिटवीन महात्मा गांधी एण्ड पी० सी० जोशी, पृ० ३८-३९

परिशिष्ट ३

तेजबहादुर सप्रूका पत्र[1]

१३ जनवरी, १९४५

प्रिय महात्माजी,

आशा है कि आप बेहतर होंगे। मैं आपके स्वास्थ्यकी खबरें समाचारपत्रोंमें पढ़ता रहा हूँ।

इस समय मुझे इस पत्रके साथ अपनी अध्यक्षतामें बनी समझौता-समिति द्वारा तैयार की गई प्रश्नावलीकी एक नकल आपके पास भेजने में काफी खुशी महसूस हो रही है। मैं निस्संकोच कह सकता हूँ कि इसकी ओर आपका ध्यान पहले ही दिलाया जा चुका है। यदि आप समितिके पास एक ऐसा छोटा ज्ञापन भेज सकें, जिसमें आपके आम विचारोंका उल्लेख हो, और प्रश्नोंके उत्तर हों या जिनका आप जवाब

१. देखिए पृ० ११८।

६. अगर केन्द्रमें ऐसी सरकार स्थापित हो जायेगी तो अगला कदम होगा प्रान्तोंमें गवर्नरके शासनकी समाप्ति और गठजोड़के आधारपर प्रान्तीय सरकारोंकी यथाशीघ्र स्थापना।

७. उचित समयपर गांधीजी कार्य-समितिको बता देंगे कि भूलाभाईने उनकी सहमतिसे काम किया है।

[अंग्रेजीसे]
महात्मा गांधी – द लास्ट फेज, जिल्द १, भाग १, पृ० ११७-१९

परिशिष्ट २

पूरणचन्द्र जोशीका पत्र[1]

बम्बई
१ फरवरी, १९४५

प्रिय गांधीजी,

मैंने अपना पिछला पत्र २८ सितम्बर, १९४४ को लिखा था। अपने एक पिछले पत्रमें आपने वादा किया था कि आप हमारी नैतिक प्रामाणिकताका सवाल और अपनी साम्यवाद विरोधी फाइल अपने योग्य सहयोगियोंके सम्मुख पेश करेंगे। आशा है कि उन्होंने अपने निर्णय आपको बता दिये होंगे। लेकिन अभीतक आपने इस बारेमें मुझे सूचित नहीं किया है।

शायद आप यह नहीं जानते कि हालके कांग्रेस सम्मेलनोंमें और दूसरी जगहोंमें भी हमारे विरोधमें आपके नामका उपयोग किया जा रहा है और वह भी ऐसे लोगों द्वारा जो आपके विचारों आदि को जानने का दावा करते हैं? मुझे पता है कि जो-जो बातें आपके द्वारा कही बताते है उनमें से बहुत-सी तो आपने कही ही नहीं होंगी। लेकिन आपने जो प्रश्न मुझसे पूछे हैं उनके सम्बन्धमें जबतक आपके साथ मेरा पत्र-व्यवहार खत्म नहीं हो जाता तबतक मैं चुप ही रहूँगा। ये प्रश्न भी बड़े गम्भीर किस्मके थे, जिनमें हमारी देशभक्ति और नैतिक प्रामाणिकतापर उँगली उठाई गई थी। आशा है कि कार्य-समितिके अपने सहयोगियोंकी मददसे आप इस निष्कर्षपर तो पहुँच गये होंगे कि हम भी अपने महान राष्ट्रकी अयोग्य सन्तानें नहीं हैं।

विश्वमें तो बड़ी-बड़ी चीजें हो रही हैं, लेकिन हमारा देश छिन्न-भिन्न हो रहा है। हम चाहते हैं कि हम आपको बड़े-बड़े राजनीतिक मसलोंके बारेमें लिखें, लेकिन जैसा कि मैंने आपको पहले लिखा भी है, जबतक आप हमारी बौद्धिक सत्यता और नैतिक प्रामाणिकताके प्रति आश्वस्त नहीं हो जाते तबतक वह आपके लिए और मेरे लिए तो समयका दुरुपयोग ही माना जायेगा।

१. देखिए पृ० १०५।

सामग्रीके साधन-सूत्र

'अमारां बा' (गुजराती) : वनमाला परीख और सुशीला नैयर, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५१।

असम सरकार।

उडीसा सरकार।

'कॉरस्पॉण्डेन्स बिटवीन महात्मा गांधी एण्ड पी० सी० जोशी' (अंग्रेजी) : सम्पादक: पी० सी० जोशी, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, बम्बई, १९४५।

'गांधीजी : एक झलक' श्रीपाद जोशी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९६२।

'गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४२-४४' (अंग्रेजी) : सम्पादक: प्यारेलाल, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, १९४५।

'चरखा संघका नवसंस्करण' : खादी विद्या प्रकाशन, अखिल भारत चरखा संघ, सेवाग्राम, वर्धा, १९४५।

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद।

नेहरू-स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली।

'पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद' : सम्पादक : काका कालेलकर, जमनालाल बजाज ट्रस्ट, वर्धा, १९६३।

प्यारेलाल पेपर्स : नई दिल्लीमें प्यारेलालके पास सुरक्षित कागजात।

'प्रैक्टिस एण्ड प्रिसेप्ट्स ऑफ जीसस' (अंग्रेजी) : जे० सी० कुमारप्पा, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, १९४५।

'बा बापूनी शिळी छायामां' (गुजराती) : मनुबहिन गांधी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५२।

'बापुना पत्रो–४ : मणिबहेन पटेलने' (गुजराती) : सम्पादक : मणिबहिन पटेल, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५७।

'बापुना पत्रो–९ : श्री नारणदास गांधीने', भाग २ (गुजराती) : सम्पादक : नारणदास गांधी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९६५।

'बापुनी प्रसादी' (गुजराती) : मथुरादास त्रिकमजी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९४८।

'बापूकी छायामें' : बलवन्तसिंह, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद १९५९।

'बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष' : हीरालाल शर्मा, ईश्वर शरण आश्रम, इलाहाबाद, १९५७।

'बॉम्बे क्रॉनिकल' : बम्बईसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

देना चाहें उन प्रश्नोंके उत्तर हों तो मैं आपका बहुत आभारी होऊँगा।

अबतक तो कुछ-एक हलकोंको छोड़कर समितिका सर्वत्र स्वागत ही हो रहा है। श्री जिन्नाने समितिको स्वीकार करने से अथवा मुझसे समितिके अध्यक्षके रूपमें मिलने से इनकार कर दिया है, वैसे उन्हें मुझसे मेरी व्यक्तिगत हैसियतमें मिलने में कोई आपत्ति नहीं है। पिछले नवम्बरमें दिल्लीमें हम जब डॉ० अम्बेडकरसे मिले थे तो उन्होंने समितिको अपना समर्थन देने का वादा किया था, लेकिन अब वे पीछे हट गये हैं क्योंकि उन्हें समितिके सदस्योंको लेकर आपत्ति है। अबतक सिखोंका रवैया काफी उत्साहवर्धक है। १६ जनवरीको मैं सिख और हिन्दू नेताओंसे मिलने लाहौर जा रहा हूँ और जिन मुस्लिम नेताओंको मुझसे मिलने में कोई आपत्ति नहीं होगी मैं उनसे भी मिलने का प्रयत्न करूँगा।

समितिका कार्य बड़ी तेजीसे चल रहा है। हमने काफी सामग्री इकट्ठी कर ली है और बाकी भी शीघ्र तैयार हो जायेगी। मैं यह नहीं चाहता कि आप बारीकियोंमें जाकर परेशान हों लेकिन यदि आप एक छोटा ज्ञापन मुझे भेज सकें तो मैं आपका बेहद आभारी होऊँगा। जो दो पुस्तिकाएँ पहले ही तैयार हो चुकी हैं, मैं उन्हें भी अलगसे आपके पास भेज रहा हूँ, बाकी अभी छप रही हैं।

आपके स्वास्थ्य-लाभकी शुभकामना करते हुए आदरके साथ,

भवदीय,

संलग्न : प्रश्नावली

महात्मा मो० क० गांधी
सेवाग्राम, वर्धा, मध्यप्रान्त

[अंग्रेजीसे]
गांधी-सप्रू पेपर्स। सौजन्य : नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता

तारीखवार जीवन-वृत्तान्त

(१ जनवरी, १९४५—२४ अप्रैल, १९४५)

५ जनवरी : गांधीजी की भूलाभाई देसाईसे भेंट।

११ जनवरी : हिन्दुस्तानी तालीमी संघके सम्मेलनमें शामिल हुए। गांधीजी का भाषण पढ़कर सुनाया गया।

१७ जनवरी : गांधीजी ने प्रह्लाद मेहता और टी० वी० कुन्हीकृष्णन्‌को भेंट दी।

२३ जनवरी : प्रफुल्लचन्द्र घोषसे भेंट की। लन्दनमें होनेवाले स्वतन्त्रता-दिवस समारोह के लिए सन्देश भेजा।

२६ जनवरी : प्रार्थना-सभामें दिये गये भाषणमें गांधीजी ने उस दिन सुबह आश्रमके सामने कार्यकर्त्ताओंके सामान्य ग्राम-सफाई कार्यक्रममें पुलिस द्वारा हस्तक्षेप करने की निन्दा की और स्वयंसेवकोंके शालीन और दृढ़ रुखकी प्रशंसा की।

३१ जनवरी : अनुग्रह नारायण सिंहके साथ बातचीत की।

१० फरवरी : भारतीय पंचांगके अनुसार कस्तूरबाकी पुण्य-तिथि मनाई गई।
गांधीजी ने कताई यज्ञमें भाग लिया। समग्र ग्रामसेवा शिविर समाप्त हुआ। स्वयंसेवकोंके सम्मुख भाषण दिया। मद्रासके टी० एन० जगदीशन और वेल्लूरके एम० आर० जी० कोचरेनको कुष्ठ-राहत कार्यके सम्बन्धमें सलाह दी। गोपीनाथ बारडोलोईसे भेंट की।

१२ फरवरी : गोविन्द सहायको भेंट दी।

१५ फरवरी : कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक कोषकी प्रान्तीय समितियोंके मन्त्रियों की बैठकमें भाषण दिया।

१७ फरवरी : समाचारपत्रोंको दिये गये वक्तव्यमें बिहारके कांग्रेसियोंको गिरफ्तार करने और पुरुषोत्तमदास टण्डनको दुबारा गिरफ्तार करने की सरकारी कार्रवाईकी निन्दा की और बन्दियोंपर अत्याचार और उनके साथ दुर्व्यवहार करने की प्रथा बन्द करने के लिए सरकारसे अपील की।

१८ फरवरी : 'अमारां बा' की प्रस्तावना लिखी।

१९ फरवरी : पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्तके शिष्टमण्डलको भेंट दी।

२२ फरवरी : सौर पंचांगके अनुसार कस्तूरबाकी पुण्य-तिथि।

२३ फरवरी : गांधीजी ने प्रार्थना-सभामें भाषण दिया।

२६ फरवरी : मु० अ० जिन्नाके साथ तेजबहादुर सप्रूकी बातचीत और पत्र-व्यवहारके सम्बन्धमें सप्रूके प्रश्नोंके उत्तर दिये।
अ० भा० हिन्दुस्तानी प्रचार सभा सम्मेलनकी अध्यक्षता की।

२७ फरवरी : अ० भा० हिन्दुस्तानी प्रचार सभा सम्मेलनमें भाषण दिया।

३ मार्च : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीसे भेंट की।

५ मार्च : ओरिएंट प्रेसके प्रतिनिधिको भेंट दी।

'महात्मा गांधी – द लास्ट फेज,' जिल्द १, भाग १ (अंग्रेजी) : प्यारेलाल, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, १९६५।

'राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी' : नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५६।

राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली : गांधी साहित्य और गांधीजी से सम्बन्धित कागज-पत्रोंका केन्द्रीय संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

'वर्ण व्यवस्था' (गुजराती) : मो० क० गांधी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५६।

'विप्रवर करुणाशंकरने श्रद्धांजलि' (गुजराती) : विश्वभारती, शान्तिनिकेतन।

'समग्र नई तालीम' : ई० डब्ल्यू० आर्यनायकम्, मन्त्री, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम, वर्धा, १९४६।

साबरमती संग्रहालय, अहमदाबाद : गांधीजी से सम्बन्धित पुस्तकों और कागजातोंका पुस्तकालय तथा अभिलेखागार।

'सारिका' (अप्रैल, १९६४) : बम्बईसे प्रकाशित हिन्दी मासिक।

'हितवाद' : नागपुरसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' : नई दिल्लीसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'हिन्दू' : मद्राससे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

शीर्षक-सांकेतिका

७ मार्च : 'गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेंट, १९४२-१९४४' और 'आहार अने पोषण' की प्रस्तावनाएँ लिखीं।

९ मार्च : आन्ध्रके शिष्टमण्डलको भेंट दी।

११ मार्च : अकोलामें कांग्रेस कार्यकर्त्ताओंके सम्मेलनपर लगी निषेधाज्ञाके सम्बन्धमें समाचारपत्रोंको वक्तव्य दिया।

१७ मार्च : गांधीजी ने विनोवा भावे और किशोरलाल मशरूवालाको आश्रममें अपने उत्तराधिकारी बनाने के सम्बन्धमें घोषणा की।

२० मार्च : 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के प्रतिनिधिको दी गई भेंटमें एल० एस० एमरीके वक्तव्यपर टिप्पणी करते हुए घोषणा की कि जबतक कार्य-समितिके सदस्य नजरबन्द है तबतक "वर्तमान गतिरोधके हलकी सारी चर्चा व्यर्थ है"।

२४ मार्च : अ० भा० चरखा संघकी बैठकमें भाषण दिया।

२५ मार्च : जोहानिसबर्गमें हरमन कैलेनबैकका निधन।
समाचारपत्रोंके माध्यमसे गांधीजी ने हरमन कैलेनबैकको श्रद्धांजलि अर्पित की।
अ० भा० चरखा संघकी बैठकमें भाषण दिया।

२८ मार्च : अ० भा० ग्रामोद्योग संघकी बैठकमें अध्यक्षता की।

३१ मार्च : बम्बई पहुँचे। राष्ट्रीय सप्ताहके सम्बन्धमें समाचारपत्रोंको वक्तव्य दिया।
अष्टि और चिमूरके नजरबन्दोंकी याचिका स्वीकार किये जाने के सम्बन्धमें समाचारपत्रोंको दिये गये वक्तव्यमें घोषणा की कि हालमें दी जानेवाली फाँसियों के विरुद्ध यदि भारतके लोग एकमत होकर आवाज उठायें तो उन्हें रोका जा सकता है।
रुग्ण पुरुषोत्तमदास ठाकुरदाससे भेंट की।

२ अप्रैल : चिमूर और अष्टिके नजरबन्दोंके लिए ३ अप्रैलको हड़ताल करने की अपील जारी की।

४ अप्रैल : कस्तूरबा स्मारक न्यासकी बैठकमें शामिल हुए।

६ अप्रैल : प्रार्थना-सभामें भाषण दिया।

८ अप्रैल : बी० ई० एस० टी० कर्मचारी शिष्टमण्डलको भेंट दी।

१० अप्रैल : 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' के प्रतिनिधिको भेंट दी।

११ अप्रैल : बोरिवली शिविरमें भाषण दिया। बोरिवलीमें प्रार्थना-सभामें भाषण दिया।

१२ अप्रैल : कस्तूरबा स्मारक न्यासकी बैठकमें शामिल हुए।

१४ अप्रैल : कस्तूरबा स्मारक न्यासका ऑफिस देखने गये। दक्षिण आफ्रिकासे आये मणिलाल गांधीसे भेंट

१५ अप्रैल : प्रार्थना-सभामें भाषण दिया।

१६ अप्रैल : राष्ट्रपति रूजवेल्टके निधनपर समवेदना-सन्देश भेजा।

१७ अप्रैल : सान फ्रांसिस्को सम्मेलनके संम्बन्धमें समाचारपत्रोंको वक्तव्य जारी किया।

१८ अप्रैल : दक्षिण आफ्रिकाके भारतीयोंके नाम सन्देश भेजा।

१९ अप्रैल : प्रार्थना-सभामें भाषण दिया।

२० अप्रैल : पूना पहुँचे।

२१ अप्रैल : महाबलेश्वर पहुँचे। प्रार्थना-सभामें भाषण दिया।

२२ अप्रैल : एसोशिएटेड प्रेस ऑफ इंडियाको भेजे तारमें 'मॉर्निंग स्टैण्डर्ड' में प्रकाशित भूलाभाई देसाईको लिखने की बातसे इनकार किया।

सांकेतिका

आ

इ

ई

ख

छ

ज

घ

च

ध

न

ध

न

फ

प

म

ब

भ

य

र

ह

भूल-सुधार

प्रस्तुत खण्डमें चिमनलाल शाहका पूरा नाम चिमनलाल नरसिंहदास शाहके स्थानपर भूलसे चिमनलाल नटवरलाल शाह चला गया है।